टाम काका की कुटिया

हैरियट बीचर स्टो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस उपन्यास ने

अमरीका में गुलामी की ज
काम किया था। इसके प्र
प्रथम संस्करण में केवल अम
की ३,१३,००० प्रतियां वि
के बाद दस वर्षों में इसके क
संस्करण हुए। इसके
अमरीका के गोरे व
किया कि ऐसे अत्या
किया गया है, जैसे अ
नहीं। इस पर लेखि
साबित कर दिया कि
आत्मीय जनों से सुन
का नाम-पते बदलक

इस पुस्तक को वि
का कितना बड़ा
अकथनीय है।

O-,3M11,1 २०२५
152M0
स्टो (हैरियट बीचर)
टाम काका की कुटिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0-,3M11,1
152M0
2025

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

27/3/22
29/12 15-3-83
26-2-9-84

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम काका की कुटिया

अमानुषिक अत्याचारों का
मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करने वाला
गुलामों पर विश्व-विख्यात उपन्यास

लेखिका
हैरियट बीचर स्टो
भावानुवादक
महाबीरप्रसाद पोद्दार

१६८०
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0-,3M11,1
152M0

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक.......2029........
दिनांक........................

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
एन-७७, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली

●

दूसरी बार : १९८०
मूल्य : बीस रुपये

●

मुद्रक
लखेरवाल प्रेस
नई दिल्ली-५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशकीय

हमें हर्ष है कि पाठकों के हाथों में एक ऐसी कृति पहुंच रही है, जिसका विश्व-साहित्य में बहुत ऊंचा स्थान है। उपन्यास-लेखिका ने इस पुस्तक में गुलामी की अमानुषिक प्रथा पर इतनी गहरी चोट की कि उस प्रथाका अन्त होकर ही रहा। श्रीमती स्टो अमरीका के एक मंत्री की पुत्री थीं। पुस्तक लिखने के ११ वर्ष बाद जब वहां के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन उनसे मिले, तो उन्होंने उनका अभिनंदन करते हुए कहा, अच्छा, "आप ही वह छोटी-सी महिला हैं, जिन्होंने ऐसी पुस्तक लिखी कि जिसके कारण यह भयंकर गृह-युद्ध हो गया!" सच बात यह है कि दास-प्रथा का अन्त करने वाले व्यक्तियों के तीव्रतम तर्कों से कहीं अधिक टाम काका की करुणा-जनक कहानी ने गृह-युद्ध की अग्नि प्रज्ज्वलित की। कहा जाता है कि बाइबिल के बाद सबसे अधिक पढ़ी जानेवाली और सबसे गहरा नैतिक प्रभाव डालनेवाली यही पुस्तक है।

प्रस्तुत हिन्दी-संस्करण आज से लगभग ५७ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। इसके अनुवादक हिंदी के प्रसिद्ध शैलीकार श्री महाबीरप्रसाद पोद्दार हैं। बड़े गौरव की बात है कि पुस्तक की भूमिका हिन्दी के महान लेखक श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लिखी और इसमें वर्णित कविताओं का हिंदी-रूपान्तर हिंदी के यशस्वी कवि श्री गयाप्रसादजी शुक्ल 'सनेही' ने किया।

इस उपन्यास की कहानी इतनी मार्मिक है कि इसे पढ़कर आज भी रोमांच हो आता है। ऐसी कृतियां कभी पुरानी नहीं पड़तीं। उनकी प्रेरणा हमेशा ताज़ी रहती है।

पुस्तक का पहला संस्करण 'इण्डियन प्रेस' से हुआ था। नई आवृत्ति के प्रकाशन के समय हम उनका आभार मानते हैं और पाठकों से आशा रखते हैं कि वे इसका हार्दिक स्वागत करेंगे।

—मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो शब्द

अंग्रेजी भाषा में श्रीमती हैरियट बीचर स्टो का लिखा हुआ 'अंकल टाम्स केबिन' उपन्यास बहुत ही प्रसिद्ध है। इस उपन्यास ने अमरीका में गुलामी की जड़ पर कुठार का काम किया था। इसके प्रकाशित होने पर प्रथम संस्करण में केवल अमरीका में ही इसकी ३,१३,००० प्रतियां बिक गईं और उसके बाद दस वर्षों में कम-से-कम १४०० संस्करण हुए। इस उपन्यास के प्रकाशित होने पर अमरीका के गोरे बनियों ने कहना आरम्भ किया कि जैसे अत्याचारों का वर्णन इसमें किया गया है, वैसे अत्याचार कभी होते ही नहीं। इस पर श्रीमती स्टो ने तत्काल इस उपन्यास की एक टीका प्रकाशित की और उसमें साबित कर दिया कि इसमें जो कुछ कहा गया है, उसमें ज़रा भी अत्युक्ति नहीं है। आंखों-देखी और अपने आत्मीय जनों से सुनी हुई सत्य घटनाओं का—केवल नाम और पते बदल कर—वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को लिख-कर सहृदया श्रीमती स्टो ने दासों का कितना बड़ा उपकार किया, यह अकथनीय है। इसी पुस्तक के आधार पर यथास्थान थोड़ा-सा फेर-फार करके वंग-भाषा के प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय बा० चण्डीचरण सेन ने 'टाम काकार कुटीर' नामक एक बहुत सुन्दर पुस्तक लिखी है और उस पुस्तक को सामने रखकर तथा अंग्रेजी की मूल पुस्तक से कुछ सहायता लेकर हिंदी की यह पुस्तक लिखी गई है।

इस पुस्तक के आदि में 'सरस्वती'-सम्पादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने पुस्तक का सारांश-स्वरूप एक सुन्दर वक्तव्य लिखकर पुस्तक का महत्व और भी बढ़ा दिया है।

मेरे जिन मित्रों ने मुझे इस काम के लिए उत्साहित किया, उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मैंने यथासाध्य पुस्तक को सब प्रकार से उत्तम बनाने की चेष्टा की है, पर इसका फैसला तो हिंदी-प्रेमी पाठकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के हाथ है कि मैं इस कार्य में कहां तक सफल हुआ हूं। मैं मैसर्स गुरुदास चट्टोपाध्याय एण्ड सन्स का कृतज्ञ हूं, जिन्होंने मुझे बंगला की पुस्तक का आश्रय लेने की आज्ञा सहज में दे दी। मैं अपने प्रिय मित्र पं० गौरीशंकर मिश्र को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मेरे इस कार्य के लिए अपना कुछ समय दिया। इस पुस्तक में जो कई कविताएं हैं, उनके लिए हिंदी-जगत के सुपरिचित कवि श्री गयाप्रसादजी शुक्ल 'सनेही' मेरे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। अन्य कई मित्रों ने भी इस कार्य में मेरी सहायता की है, इसके लिए वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

चैत्र शु० १, सम्वत् १९७३ —महावीरप्रसाद पोद्दार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका

स्वार्थ बड़ा प्रबल है। उसके वशीभूत होकर मनुष्य को न्याय-अन्याय का कुछ भी खयाल नहीं रहता। अपने स्वार्थ की हानि देखकर सभ्य, शिक्षित और न्यायी कहलाने वाले भी दूसरों का उत्पीड़न करने लगते हैं। उनके कोमल हृदय पाषाण-तुल्य कठोर हो जाते हैं। उनके दया-दाक्षिण्य आदि स्वर्गीय गुण विलय को प्राप्त हो जाते हैं। यदि वे सबल हुए तो अत्याचार की मात्रा और भी बढ़ जाती है। बलवानों की स्वार्थान्धता उनसे ऐसे-ऐसे पापाचार और अमानुपिक दुष्कृत्य कराती है, जिनका केवल वर्णन पढ़कर दयाशीलों और न्यायानुरक्त जनों का हृदय विदीर्ण होने लगता है।

गुलामी की प्रथा ने लाखों लोगों से रोमांचकारी काण्ड कराये हैं। उदार धर्म के अनुयायी और सुशिक्षा के मधुर फलों के भोजी होने पर भी स्वार्थ ने उन्हें अपना क्रीत दास बना लिया। औरों को दास बनानेवाले स्वयं ही उसके दास हो गये। अफ्रीका के हब्शियों को उन्होंने भेड़-बकरी की तरह बिकवाया। उनका सर्वस्व तक हरण कर लिया गया। उनकी इज्जत-आबरू ले डाली। उनके शरीरों पर हंटरों की वर्षा कराई। सैकड़ों-हजारों परिवारों का नाश करा दिया। सहस्राधिक क्या, संख्यातीत कुमारियों और कामिनियों को न इस लोक का रक्खा, न उस लोक का। यह सारी निर्दयता, यह सारी अमानुषिकता अमरीका के अधिवासियों द्वारा हुई। गुलामी की यह प्रथा यद्यपि अब उठ गई—इसे उठे बहुत समय हुआ—तथापि उस देश के निवासियों के पूर्वार्जित कुसंस्कार अबतक आमूल नष्ट नहीं हुए। अबतक भी कभी-कभी उनके अत्याचार और उत्पीड़न का अश्राव्य शंखनाद इस इतने दूरवर्ती भारत में भी सुनाई देता है।

इस पुस्तक की लेखिका ने यही करुण कहानी इस पुस्तक में कही है। उनके पात्र सजीव-से हैं। उसके कितने ही पात्र यद्यपि कल्पित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामधारी हैं, तथापि उनकी यातनाएं कल्पित नहीं। वे सच्ची हैं। सहस्राधिकों की सही हुई हैं। अनेक घटनाएं तो लेखिका की अथवा उसके आत्मीय जनों और परिचित सज्जनों की आंखों-देखी हैं। इन घटनाओं का वर्णन पढ़ते समय पाठक को रोमांच हो आता है। उसके मुंह से सहसा निकल पड़ता है, "धिक्कार है इस बल-पौरुष को ! धिक्कार है इन पाशविक अत्याचारकारियों को ! धिक्कार है इनकी स्वार्थान्धता को !"

मनुष्य को स्वाधीनता कितनी प्यारी है ! परतंत्रता से उसे कितनी घृणा है ! अपने आत्मीयों, अपने-पुत्र-कलत्रादि के लिए वह कहां तक दुःख-कष्ट सहने को तैयार रहता है, यह भी इस पुस्तक के पाठ से अच्छी तरह ध्यान में आ सकता है। इससे यह भी विदित हो सकता है कि अन्यायियों में भी न्यायी, अत्याचारियों में भी परोपकार-शील, पाषाण-हृदयों में भी दीन-दयालुओं का प्रादुर्भाव हो सकता है। उनके आविर्भाव से दीन-दुखियों का दुःख कम हो जाता है और अन्त में पर-पीड़क नर-पशुओं को हार माननी पड़ती है। हारकर उन्हें अपने रक्त-रंजित हाथों को धोना पड़ता है और परमेश्वर से अपने कृतापराधों के लिए मन-ही-मन क्षमा मांगनी पड़ती है।

इस अनुवाद को हम हिंदी-साहित्य का एक रत्न समझते हैं। आशा है, पाठक इससे यथेष्ट लाभ उठावेंगे।

जुही, कानपुर, —महावीरप्रसाद द्विवेदी
१९ मार्च, १९१६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

१.	गुलामों की दुर्दशा	१
२.	स्वतन्त्रता या मृत्यु	११
३.	विदाई की व्यथा	१३
४.	टाम की बिक्री	२०
५.	एक हृदय-विदारक दृश्य	२२
६.	इलाइजा की खोज	३०
७.	माता का रोमांचकारी पराक्रम	३४
८.	पकड़नेवालों की तैनाती	४३
९.	साम की वक्तृत्व-कला	४७
१०.	मानवता का हृदयस्पर्शी दृश्य	५३
११.	दारुण विछोह	६४
१२.	दास की रामकहानी	७१
१३.	नीलाम की मार्मिक घटना	८१
१४.	दास-प्रथा का विरोध	९७
१५.	आशा की नई किरण	१०३
१६.	टाम का नया मालिक	१११
१७.	नई मालकिन	१२८
१८.	गुलामी का समर्थन	१४३
१९.	दासता के बन्धन तोड़ने का प्रयास	१५३
२०.	सच्ची प्रभु-भक्ति	१७२
२१.	घर की देख-भाल	१७५
२२.	आपसी चर्चाएं	१८५
२३.	अफिलिया की परीक्षा	२१३
२४.	शैल्वी की प्रतिज्ञा	२२६
२५.	पुष्प की कुम्हलाहट	२३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६. हेनरिक का संकल्प	२३६
२७. मृत्यु के पूर्व लक्षण	४४२
२८. प्रेम का चमत्कार	२५२
२९. इवा की मृत्यु	२५८
३०. मृत्यु के उपरान्त	२७५
३१. पिता-पुत्री का पुनर्मिलन	२८४
३२. मेरी की क्रूरता	३००
३३. गुलामों की बिक्री के हृदय-बिदारक दृश्य	३०९
३४. नाव में	३२०
३५. नरक-स्थली	३२७
३६. अत्याचारों की पराकाष्ठा	३३५
३७. कासी की करुण कहानी	३४४
३८. भभकती यंत्रणा	३६१
३९. समवेदना का प्रभाव	३६९
४०. स्वतन्त्रता का नव-प्रभात	३७८
४१. जयोल्लास	३८५
४२. पलायन की योजना	३९८
४३. कसौटी	४०३
४४. टाम की महायात्रा	४१३
४५. लेग्री का अन्त	४२१
४६. टाम काका के बलिदान का सुफल	४२७
४७. उपसंहार	४३२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम काका
की
कुटिया

•

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहां का अनोखा ईमानदार आ गया !"

"नहीं-नहीं, वास्तव में टाम सच्चरित्र और धार्मिक है। बरसों से वह मेरा काम करता चला आया है, लेकिन कभी किसी काम में उसने मुझे धोखा नहीं दिया है।"

"हां साहब, यह तो ठीक है, पर बहुत लोगों का खयाल है कि हब्शी गुलामों को धर्म-कर्म का बिलकुल ज्ञान नहीं होता है, लेकिन हम ऐसा नहीं समझते। अभी पिछले साल हम अर्लिन्स में एक दास बेचने को ले गये थे। वह बड़ा ही धार्मिक और सीधा-सादा था। उसमें हमें खासा मुनाफा रहा। बेचने वाले ने बड़े संकट में पड़कर हमारे हाथ बेचा था। इसी से सस्ते में हाथ लग गया और बेचने में हमें बड़ा फायदा रहा। खरे धर्म की बड़ी कीमत है। यह गुण होने से दासों के दाम भी बढ़ जाते हैं, लेकिन भाई, माल ज़रा होना चाहिए असली।"

शेल्बी बोला, "मैं कह सकता हूं कि टाम के जैसे सच्चे धर्मात्मा संसार में थोड़े ही होंगे। अभी कल की बात है। मैंने उसे सिनसिनेटी में एक आदमी के यहां से अपने पांच सौ रुपये लाने को भेजा था। वह फौरन रुपये लेकर लौट आया। वहां उसे कितने ही बदमाशों ने पांच सौ रुपये लेकर चम्पत हो जाने की पट्टी पढ़ाई, बहुतेरा बहकाया, पर उसने किसी की एक न सुनी। तुम्हीं कहो, ऐसे ईमानदार दास को क्या कोई अपनी इच्छा से बेचेगा ? यह तो तुम्हारे कर्ज में जकड़ जाने से लाचार होकर बेचना पड़ रहा है। टाम का मूल्य मेरे सारे कर्ज के बराबर है। तुममें समझ हो तो ऐसे गुण-सम्पन्न टाम को लेकर मेरा पीछा छोड़ो।"

"भई, कारबारी आदमी में जितनी समझ होती है, उतनी तो हममें भी है। पर इस साल बाजार की हालत उतनी अच्छी नहीं है, नहीं तो मैं तुम्हारा ही कहना मान लेता।" हेली ने लाचारी के स्वर में कहा।

"फिर तुम क्या चाहते हो ?"

"टाम के साथ एक छोकड़ा या छोकड़ी नहीं दे सकते ?"

"मेरे पास बेचने के लिए कोई लड़का-लड़की नहीं है। मैं अपने दास-दासियों को कभी नहीं बेचता। यह तो इस बार लाचारी की हालत में बेच रहा हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी शेल्बी की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि घर का दरवाजा खोलकर एक पांच-छह वर्ष का वर्णसंकर बालक अन्दर आया। देखने में वह बड़ा सुन्दर था। काले-काले घुंघराले बाल उसके कोमल चेहरे पर चारों ओर बिखरे हुए थे। उसकी दोनों काली-काली आंखें चमक रही थीं। उसकी आंखों से नम्रता और तेज टपक रहा था। उसके सादे-स्वच्छ वस्त्र मुख की सुन्दरता को और भी बढ़ा रहे थे। बालक का लजीला और निडर स्वभाव देखते ही पता लग जाता था कि वह अपने मालिक का प्यारा है।

शेल्बी ने बालक को देखते ही कहा, "जिम, लेना यह।" और एक मुट्ठी किशमिश उसके सामने डाल दीं। किशमिश उठाने के लिए बालक को लपकता देखकर उसका मालिक हँसने लगा। किशमिश उठा लेने के बाद शेल्बी ने उस बालक को अपने पास बुलाकर प्यार से कहा, "जिम, इन्हें ज़रा अपना नाच तो दिखला!"

बालक झट तैयार होकर ठुमुक-ठुमुक नाचने लगा। इस पर हेली बड़ा खुश हुआ, खूब वाह-वाह की और एक नारंगी उस लड़के को दी।

शेल्बी ने कहा, "अब ज़रा अपने कुबड़े चाचा की तरह कमर झुका-कर लकड़ी के सहारे चलने की नकल तो कर।"

देखते-देखते बालक ने मालिक की लाठी लेकर कुबड़ों के लाठी के सहारे चलने की हूबहू नकल कर दी। बालक की इस विचित्र बाल-लीला को देखकर शेल्बी और हेली दोनों खूब हँसे। इसी भांति अपने मालिक की आज्ञा से बालक ने और भी कई नकलें करके दिखाईं।

यह सब देखकर हेली बोला, "वाहजी, खूब अलबेला छोकड़ा है यह तो! बस, इसीको टाम के साथ दे दो, फिर तुम्हारी छुट्टी, एक-दम छुट्टी! कसम से यही करो, सारा हिसाब चुकता हुआ जाता है।"

इसी समय एक वर्णसंकर युवती धीरे से दरवाजा खोलकर अंदर आई। वह बालक की माता जान पड़ती थी। दोनों की काली आंखें और घुंघराले बाल एक-से थे। हेली उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो, उसकी ओर आंखें गड़ाकर घूरने लगा। शर्म से युवती की आंखें नीची होगयीं। एक बार देखने में उसके अंगों की सुडौलता दास-व्यवसायी हेली के मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में घर कर गई।

शेल्वी ने आगन्तुक स्त्री इलाइजा को देखकर पूछा, "इलाइजा, क्या चाहती है ?"

"मैं हेरी को ढूंढ़ने आई थी।" बालक पाई हुई चीजों को लेकर मां के पास दौड़ गया।

शेल्वी ने कहा, "इसे ले जाओ।"

बालक को गोद में उठाकर युवती चली गई। इलाइजा के चले जाने पर हेली बोला, "कैसी सुन्दर छोकड़ी है। इसे अर्लिन्स में वेचो तो मालामाल हो जाओ। हमने हजार-हजार पर जिन छोकड़ियों को विकते देखा है, वे भी इससे ज्यादा खूबसूरत नहीं होतीं।"

शेल्वी—"मैं इसे वेचकर धन इकट्ठा नहीं करना चाहता।"

"क्यों ? बोलो, तुम इसे कितने का माल समझते हो ? कितने पर सौदा करने को राजी हो ? और वेचो तो क्या लोगे ?"

शेल्वी—"मैं इसे कभी नहीं वेचूंगा। बराबर का सोना लेकर भी मेरी स्त्री इसे अलग नहीं करेगी।"

हेली बोला, "वाह उस्ताद, तुमने भी खूब कही ! अरे, औरतें नफे-नुकसान की बातें क्या जानें ! रुपये के मोल का उन्हें क्या पता ! लेकिन तुम अपनी बीवी को एक बार समझाओ तो कि इसे वेच डालने पर कैसे बढ़िया-बढ़िया गहने और कपड़े हाथ लगेंगे। फिर मैं देखूंगा कि तुम्हारी बीवी इसे वेचना चाहती है कि नहीं।"

शेल्वी ने झुंझलाकर दृढ़ता से कहा, "हेली, तुम से एक बार कह दिया कि मैं इसे नहीं वेचूंगा, फिर क्यों वेकार की बातें करते हो ? एक बार जिस काम के लिए इन्कार कर दिया, उसे फिर कभी नहीं करूंगा। सच मानो !"

इस पर हेली बोला, "अच्छा, बाबा, जाने दो। लड़के को तो दोगे न ? हम ज्यादा दाम देकर इसे खरीद रहे हैं—तुम्हें वेचना ही पड़ेगा।"

शेल्वी—"तुम्हें इस लड़के की क्या जरूरत है ?"

हेली—"हमारे एक दोस्त ने वेचने के लिए कुछ खूबसूरत लड़के मांगे हैं। सच कहता हूं कि तुम्हारे-जैसे बड़े आदमी बड़े शौक से ऐसे छोकड़ों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खरीदते हैं। बाजार में इनके बड़े दाम उठते हैं। फिर यह लड़का! यही तो असल में बेचने की चीज है। कैसा बढ़िया खिलाड़ी है, कैसा गाना गाता है।"

शेल्वी—"मैं इसे नहीं बेचना चाहता। मेरे दिल में कुछ दया है। इसे इसकी मां की गोद से अलग करने की मेरी इच्छा नहीं है।

हेली—"सो तो मैं खूब समझता हूं। इन सब नन्हें-नन्हें छोकड़ों को बेचने के वक्त उनकी मां बहुत रोती-चिल्लाती हैं और तुम लोग उनका रोना सुनकर पिघल जाते हो। लेकिन ज़रा हिकमत से काम लिया जाय तो, तुम्हारे सिर की कसम, ज़रा भी हुल्लड़ नहीं मचता। सुनो, लड़के को बेचने के पहले उसकी मां को कहीं टरका दो। फिर बच्चे को खरीदार के हवाले कर देने पर जब वह औरत घर लौटे तो उसे एक जोड़ा करनफूल या और कोई दिल-बहलाव की चीज खरीदकर दे दो। बस, उसका सारा दुःख-दर्द काफूर हो जायगा, वह लड़के को याद तक नहीं करेगी। तुम्हारी कसम, यह सब तो हम लोगों के बायें हाथ का खेल है।"

शेल्वी ने दुःख के स्वर में कहा, "मैं तो नहीं समझता कि इतने से उसके दिल को सन्तोष हो जायगा।"

हेली बोला, "सन्तोष क्यों नहीं होगा? ये भी क्या कोई गोरे हैं? ज़रा चतुराई से काम लो तो बेड़ा पार है। बहुत लोग कहते हैं कि गुलामी का रोजगार मनुष्य को पत्थर बना देता है, पर यह सरासर झूठ है। बहुतेरे दास-व्यवसायी ज़रा-सी भावुकता में सारा बना-बनाया खेल बिगाड़ बैठते हैं। सच कहता हूं, उन्हें इससे बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। तुम्हारी कसम, चाल से काम न लेने की वजह से अर्लिन्स में ऐसे ही एक व्यापारी के बहुत-से रुपये मिट्टी में मिल गये। उसने एक औरत खरीदी थी। उसके एक छोटा-सा लड़का था। लड़का दूसरे के हाथ बिका था। खरीदार ने लड़के को औरत की गोद से खींचकर फेंक दिया और उसकी मुश्कें कसकर घर ले गया। इसी से वह रो-रोकर पागल हो गई और आखिर में मर गई। नफे की उम्मीद पर जो एक हजार गिने थे, उसमें नफा तो गया भाड़ में, एक हजार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में एक टका भी वसूल न हुआ। इसीसे मैं जो करता हूं, बड़े दांव-पंच के साथ करता हूं। बोलो, यह क्या अक्लमन्दी रही ? भगवान जानते हैं, मेरे काम में कभी कोई टंटा-बखेड़ा उठता ही नहीं। तुमने जो कहा, वह हमको भी ठीक जंचता है। दास-दासियों के साथ दया का बरताव तो करना ही चाहिए। हम किसी औरत की गोद से लड़का नहीं छीनते; बल्कि उसे किसी बहाने से दूसरी जगह टरका देते हैं और पीछे से लड़के को भी चम्पत कर देते हैं। देख लो, इससे दया-माया, धरम-करम सब बने रहते हैं। हम हमेशा योंही दया के साथ काम करते हैं। नुकसान किस चिड़िया का नाम है, हम जानते ही नहीं। बहुतेरे तो हमारी दया की बात का मजाक उड़ाते हैं। वे इसे दया नहीं, ढोंग बताते हैं। पर बतलाया करें, हमने कभी घाटा तो नहीं उठाया। दया से काम लेने से कभी पैसा बरबाद नहीं जाता। तुम्हीं कहो, हम झूठ कहते हैं ?"

हेली की दया की डींग ने शेल्बी को हँसा दिया। शेल्बी का हँसना देखकर हेली का उत्साह दूना हो गया। उसने फिर बातों का सूत्र आगे बढ़ाया। कहने लगा, "यह बड़ा अचरज है कि लोग ये सब बातें समझते नहीं। पहले टाम लोकर नाम का एक हमारा साझीदार था। यों तो इन कामों में वह बड़ा घाघ था, पर गुलामों के लिए तो कम्बख्त यम-राज ही था। हम उसे बहुत समझाते कि 'टाम, लड़कियां जब रोती हैं तब पीट-पीटकर उनका कचमूर निकालने से क्या फायदा ? उनके रोने-धोने से अपना क्या बिगड़ता है ? अरे, रोना-धोना तो उनका काम ही है। वह तो कभी रुकने का नहीं। फिर नाहक ठोंक-ठोंककर उनकी हुलिया बिगाड़ने से क्या फायदा ! उलटा अपना ही नुकसान है।' हम उसे दो मीठी बातें करके काम निकालने के लिए बहुत समझाते। कहते कि कोड़ों की मार से जो काम नहीं निकलता, वह दो मीठी बातों से हो जाता है, किन्तु टाम पर इसका कोई असर न होता। आखिर जब उसके साझे में हमें घाटा होने लगा, तो हमने साझा तोड़ दिया। लेकिन भई, मन का बड़ा साफ और पक्का कामकाजी आदमी था वह। उसके मुकाबले का आदमी खोजे जल्दी नहीं मिल सकता, यों तो दुनिया भरी पड़ी है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेल्वी—"तुम क्या टाम लोकर से अच्छा काम चलाते हो ?"

हेली—"वेशक, जहां ज़ारा गड़बड़ जान पड़ती है, वहां हम बहुत संभल कर काम लेते हैं। छोटे लड़के-लड़कियों को वेचने के समय हम उनकी माताओं को खिसका देते हैं। कहावत है न कि आंखों से दूर होने पर मन से भी दूर हो जाता है। गोरों की तरह लड़कों के साथ रहने की आशा करना काले गुलामों का काम नहीं। बराबर ऐसी शिक्षा पानेवाले गुलाम सपने में भी वैसी आस नहीं करते।"

शेल्वी बोला, "मालूम होता है, तब तो मेरे यहां के दास-दासियों ने सही शिक्षा नहीं पाई है।"

हेली—"हां, वेशक ! तुम सारे केण्टाकी वालों ने गुलामों को बिगाड़ रखा है। करना चाहते हो तुम भला, नतीजा होता है उल्टा। एक गुलाम आज यहां है, कल उसे टाम ले जायगा, परसों उसे डिक के घर जाना पड़ेगा और अगले दिन फिर और किसी का होगा। योंही दुनिया का चक्कर काटता रहेगा। अगर तुम उसे खूब सुख देकर, उसके मन में कुटुम्ब के साथ रहने की आशा पैदा कर देते हो तो फिर वह तकलीफ सहने लायक नहीं रह जाता। तुम लोग कालों और गोरों का भेद मिटा देना चाहते हो। पर यह क्या कभी सम्भव है ? काला गोरे की बराबरी कर सकता है ? काला काला ही है, गोरा गोरा।"

अंगरेज सौदागरों के दया-धर्म की गूढ़ व्याख्या करके ईसा से अपनी दयालुता की तुलना करते हुए हेली ने एक गिलास शेरी पीकर अपनी प्यास बुझाई और फिर शेल्वी से पूछा, "हां, तो अब कहो, तुम क्या करोगे ?"

शेल्वी ने कहा, "अपनी स्त्री से सलाह करके बताऊंगा। पर तुम किसी के सामने इन बातों की चर्चा मत करना। कहीं मेरी स्त्री के कानों तक यह बात पहुंच गई तो बड़ा बखेड़ा होगा। वह जीते-जी कभी दास-दासी वेचना स्वीकार न करेगी।"

हेली—"हम बहुत जल्दी दूसरी जगह जाना चाहते हैं। जो कुछ करना हो, आज ही तय कर डालो।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेल्वी—"अच्छा, तुम सात बजे आजाना। जैसा होगा, बतला दूंगा।"

हेली के जाने के उपरान्त शेल्वी साहब मन-ही-मन सोचने लगे कि कर्ज भी कैसी बुरी बला है, जिसके पीछे टाम-जैसे स्वामिभक्त ईमानदार नौकर को इस दुष्ट के हाथ बेचना पड़ रहा है! यदि मैं इसका ऋणी न होता तो टाम के बेचने की बात मुँह से निकालते ही मैं हंटरों से इसकी खबर लेता। पर इलाइजा के लड़के के बेचने की बात अपनी स्त्री से कैसे कहूंगा? वह तो इसे सुनते ही झगड़ने लगेगी।

इस समय केण्टाकी प्रदेश में दक्षिण की भांति दास-दासियों पर घोर अत्याचार नहीं होता था। लुसियाना आदि प्रदेशों में अंगरेज बनिये, अधिक मुनाफे के लोभ से, गुलामों से दिन-रात काम लिया करते थे और ज़रा भी भूल होते ही पीठ की चमड़ी उधेड़ देते थे। पर केण्टाकी प्रदेश के दो-एक सहृदय अंगरेज दास-दासियों के साथ सदा अच्छा व्यवहार करते थे। दास-दासियों का भी अपने मालिकों पर प्रेम होता था। किन्तु यह सब होने पर भी दासत्व-प्रथा से होने वाले कष्टों में तनिक भी कमी न होती थी। देश के प्रचलित कानून के कारण कर्ज के लिए सहृदय अंगरेजों के भी गुलामों को नीलाम होना पड़ता था। शेल्वीसाहब बहुत निर्दयी न थे, बल्कि उन्हें मामूली तौर पर सहृदय कहा जा सकता था। दास-दासियों के साथ कठोर व्यवहार करके उनका हाथ कभी कलंकित नहीं हुआ था। पर इस समय वह बेचारे क्या करें, दास-व्यवसायी हेली के कर्ज में बुरी तरह जकड़ गये थे। उससे छूटने के लिए दास-दासी बेचने के सिवा और कोई उपाय नहीं था। हेली ने उनके टाम नामक दास को खरीदना चाहा था। टाम को न बेचें तो सब-कुछ नीलाम हुआ जाता है। पहले हेली के साथ शेल्वी साहब की उसी कर्ज के विषय में बातें हो रही थीं। अंत में हेली ने टाम को खरीदने का प्रस्ताव किया और शेल्वीसाहब को उसे मानना पड़ा; पर इलाइजा के पुत्र को बेचने न बेचने का अभी तक कुछ निश्चित न हुआ था। इलाइजा जब हेरी की खोज में शेल्वीसाहब के कमरे में घुसने लगी, तभी उसके कान में भनक पड़ गई कि हेली उसके लड़के को खरी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दना चाहता है। इस पर उसने वाहर आड़ में खड़ी होकर उन लोगों की सारी वातें सुनने का विचार किया था, पर शेल्वी साहव की मेम ने उसे किसी दूसरे काम से पुकार लिया। इससे उसे तुरन्त वहां से हट जाना पड़ा। अपनी सन्तान की विक्री की बात सुनकर वह बहुत ही घवड़ा गई थी। उसकी छाती धड़कने लगी थी। उसके होश-हवास ठिकाने न रहे। शेल्वीसाहव की मेम ने उससे कपड़ा लाने को कहा और उसने लाकर रख दिया एक गिलास पानी। कहा पानी को तो उठा लाई वोतल। इससे मेम ने ऊवकर स्नेह-भरे वाक्यों से उसे डांट कर कहा, "अरी इलाइजा, आज तुझे हो क्या गया है?"

इस पर इलाइजा सिसकने लगी। शेल्वीसाहव की मेम ने पूछा, "वेटी, तुझे हो क्या गया है?"

इलाइजा और रोने लगी। थोड़ी देर वाद बोली, "मां, बावा के पास एक दास-व्यवसायी आया है। मैंने उसकी बातें सुनी हैं।"

शेल्वीसाहव की मेम बोली, "वस, तू ऐसी ही है। अरे, दास-व्यवसायी आया है तो आने दे! हुआ क्या?"

इसपर इलाइजा घवड़ाकर सिसकती हुई बोली, "मां, वावा क्या मेरे हेरी को वेच डालेंगे?"

श्रीमती शेल्वी प्रेम-भरे वचनों में बोली, "अरी, तू तो पागल हो गई है। कौन वेचता है तेरे हेरी को? तू नहीं जानती कि तेरे बाबा दक्षिणी प्रदेश के निर्दयी लोगों के हाथ दास-दासी नहीं वेचा करते। अपने दास-दासियों कोवे कभी नहीं वेचेंगे। तू नाहक ही 'हेरी-हेरी' करके पागल हो रही है! इधर आ, जल्दी से मेरा जूड़ा बांध दे।"

इन व्यर्थ की बातों को अनसुना कर इलाइजा बोली, "मां, बाबा को मेरे हेरी को मत बेचने देना।"

शेल्वी की मेम ने दया से भरकर कहा, "तू बिल्कुल वेसमझ है। तू चुपचाप बैठी रह। मुझे अपनी सन्तान वेचना स्वीकार है, पर तेरी सन्तान नहीं वेचने दूंगी। मैं देखती हूं, तू इसी तरह पागल हो जायगी। हमारे घर कोई आया, बस, तू समझ बैठी कि तेरे लड़के का खरीदार ही है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस समझाने-बुझाने से इलाइजा को कुछ सन्तोष हुआ और वह मेम के बाल ठीक करने लगी। शेल्वीसाहब की मेम बड़ी दयालु थी। उसका हृदय ज्ञान, धर्म और सद्भावों से भरा हुआ था। दास-दासियों को वह अपनी सन्तान के समान प्यार करती थी। गुलामी की प्रथा से उसे बड़ी घृणा थी। शेल्वीसाहब की धर्म पर अधिक श्रद्धा न थी। सारे सत्कर्मों का भार अपनी स्त्री के हाथों में सौंपकर वह निश्चिन्त थे। मालूम होता है, उन्होंने समझ रखा था कि बड़े-बड़े सत्कार्य करके उनकी स्त्री जो ढेर का पुण्य इकट्ठा कर रही है, उसी के प्रताप से वे दोनों तर जायेंगे, उन्हें और अलग पुण्य करने की कुछ आवश्यकता नहीं है—उतना ही पुण्य दोनों के लिए काफी होगा। आइये, एक बार शेल्वीसाहब के निर्जन घर में चलकर देखें कि वह किस सोच-विचार में पड़े हैं।

शेल्वीसाहब को अपने चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार दिखाई दे रहा है। वह सोच रहे हैं कि इलाइजा के पुत्र की बिक्री के विषय में स्त्री से क्या कहें, कैसे कहें। शेल्वीसाहब को अपनी मेम का जितना डर है, इलाइजा के दुःखित होने की उतनी फिक्र नहीं। वह केवल भय से व्याकुल हैं। उनकी समझ में नहीं आता कि वे क्या करें। मेमसाहब जानती थीं कि शेल्वीसाहब दयालु हैं। इसी से उसने इलाइजा को सरलता से इस प्रकार धीरज बंधा दिया था। स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उसके स्वामी ऐसा करेंगे। और तो क्या, इलाइजा की बात का उसने ज़रा भी खयाल न किया। इसीसे उसने अपने पति से इन बातों की चर्चा तक न की और उस दोपहर को वह किसी पड़ोसी के यहां मिलने चली गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२ :: स्वतंत्रता या मृत्यु

इलाइजा शेल्वीसाहब के घर बड़े लाड़-प्यार से पली थी। श्रीमती शेल्वी इलाइजा पर बड़ा स्नेह रखती थीं। अपनी कन्या की भांति उसका पालन-पोषण करती थीं। अमरीका में और जो बहुत-से गोरे अंग्रेज सौदागर थे, वे सुन्दर दासियों के गर्भ से लड़के-लड़की पैदा करके बाजार में उन्हें ऊंचे दामों पर बेच डालते थे। उन पापी कलंकी गोरे अंग्रेज सौदागरों के घर इन अभागी सुन्दर दासियों के सतीत्व की रक्षा की कोई सम्भावना न रहती थी। पर सौभाग्यवश इलाइजा वैसे दुःख, यन्त्रणा और पापों से बची हुई थी। शेल्वीसाहब की मेम ने उसे ईसाई धर्म की खासी शिक्षा दिलाई थी। सत्संग में रहने के कारण इलाइजा का चरित्र बड़ा पवित्र था। जब वह युवती हुई तो श्रीमती शेल्वी ने जार्ज हेरिस नाम के एक बलिष्ठ, बुद्धिमान और सुन्दर वर्ण-संकर के साथ उसका विवाह कर दिया। जार्ज शेल्वीसाहब के एक पड़ोसी का दास था। रूप-गुण, सभी बातों में वह इलाइजा के योग्य था। पर जार्ज का मालिक गुलामों से बड़ा निष्ठुर व्यवहार करता था। उन्हें सदा दुःख देता था और उनके कोड़े लगाता था। जार्ज का जन्म एक अंग्रेज बनिये और अफ्रीका की एक क्रीत-दासी के मेल से हुआ था। उस बनिये की मृत्यु हो जाने पर, उसके कर्ज के लिए, जार्ज को अपने भाई-बहनों सहित नीलाम होना पड़ा। जार्ज के वर्त्तमान मालिक ने उसे नीलाम में खरीद कर विलसन नामक एक आदमी के पाट के कारखाने में लगा दिया। जार्ज कारखाने में काम करके जो कुछ पाता था, उसे अपने मालिक को सौंप देना पड़ता था। दासों को अपने कमाये हुए धन पर कोई अधिकार नहीं था। बैल, घोड़े आदि पशुओं को किराये पर चलाकर जैसे लोग धन कमाते हैं, उसी प्रकार अमरीका के गोरे सौदागर गुलामों को किराये पर लगाकर रुपये इकट्ठे करते थे। विलसन के कारखाने में जार्ज बड़ी सावधानी और ईमानदारी से काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता था। गुलाम होने पर भी उसकी बुद्धि बड़ी तेज थी। उसने अपनी अक्ल से पाट साफ करने के लिए एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी। विलसन ने उसकी यह परिश्रमशीलता, होशियारी, चतुराई और ईमानदारी देखकर उसे अपने कारखाने का मैनेजर बना दिया। कारखाने के और नौकर-चाकर उसे बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे। पर जार्ज था तो गुलाम ही। भला उसका इतना सम्मान और यह उन्नति, उसके नीच मालिक अंग्रेज सौदागर को क्यों सुहाने लगी? जार्ज का कोई भी गुण उसे अपने दुष्ट मालिक के अत्याचारों से न बचा सका।

जार्ज का मालिक उसे इस प्रकार महत्व दिये जाते देखकर मन-ही-मन जल-भुनकर खाक हो गया। जार्ज पर लोग श्रद्धा करने लगे, यह सुनकर उसकी विद्वेष की अग्नि भभक उठी। उसने मन-ही-मन ठान लिया कि जार्ज को विलसन के कारखाने से निकालकर और किसी सख्त काम में लगाऊंगा। बस फिर क्या था? विचार उठने भर की देर थी। दूसरे दिन वह विलसन के कारखाने में पहुंचकर उससे बोला, "जार्ज को अब मैं तुम्हारे कारखाने में काम नहीं करने दूंगा।"

विलसन ने कहा, "जार्ज के परिश्रम से मेरे कारखाने की बड़ी उन्नति और हुई है। उसके अलग कर लेने से मेरी बड़ी हानि होगी।" उसने और भी कहा, "यदि तुम्हें रुपयों का लोभ हो तो मैं उसके लिए तुम्हें अब से दूनी मजूरी दे सकता हूं।" पर जार्ज के मालिक ने एक न मानी। उसे कारखाने से अलग करके मिट्टी खोदने के काम में लगा दिया और उसको मनमाने कोड़े लगाने लगा।

जार्ज ने विलसन के कारखाने में नौकर होने पर इलाइजा से विवाह किया था। जार्ज को विलसन बहुत चाहता था। इससे जार्ज रोज का काम खत्म करते ही अपनी स्त्री से मिल सकता था। पर अब उसे वहां नहीं जाने दिया जाता था। उसके मालिक ने उसे शेल्बी के यहां जाने से रोका और अपने यहां की एक दासी से नाता जोड़ने की आज्ञा दी। इलाइजा जार्ज को प्राणों से भी प्यारी थी, भला उसे छोड़कर वह कैसे दूसरी दासी को ग्रहण करे? दास-दासियों के हृदय में क्या शुद्ध प्रेम का संचार नहीं होता? इलाइजा के तीन संतानें हुईं, जिनमें केवल एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही जीवित है। यह संतान दोनों के दिलों को जोड़ती है। कोई भी आदमी ऐसे पवित्र प्रेम को कैसे भूल सकता है ? क्या वह कभी ऐसे गाढ़े स्नेह-बन्धन को तोड़ सकता है ? जार्ज गुलाम है, पराधीन है, तो क्या हुआ ! क्या वह प्रेम के इस बन्धन को तोड़ना कभी स्वीकार कर सकता है ? क्या अपनी स्त्री की जगह दूसरी स्त्री को अंगीकार कर सकता है ? जार्ज ने देख लिया कि अब कोई दूसरा उपाय नहीं है। बस, मौत ही उसे इस गुलामी की चोट से मुक्त कर सकती है। इसीसे उसने 'स्व-तंत्रता या मृत्यु' इस वाक्य को अपना मूलमंत्र बनाया।

वह भागने का उद्योग करने लगा।

३ : : बिदाई की व्यथा

दोपहर को शेल्वी साहब की मेम के बाहर चले जाने पर इलाइजा घर में अकेली बैठी हुई चिन्ता कर रही थी। इतने में किसी ने पीछे से आकर उसके कंधे पर हाथ रखा। वह चौंक उठी। पीछे घूम कर देखा तो उसका स्वामी है। जार्ज को देखते ही इलाइजा आनन्दित होकर बोली, "जार्ज. तुम बड़े वक्त से आये हो ? मां घूमने गई हैं।"

पर जार्ज, के मुख पर हँसी नहीं थी। उसका दिल बहुत ही दुःखी था। वह इलाइजा से जन्म-भर के लिए विदा मांगने आया था। आज वह और दिनों की भांति इलाइजा से हँस-हँसकर बातें नहीं कर सकता था। इलाइजा की गोद के बालक ने जार्ज का हाथ पकड़ लिया, पर आज जार्ज ने उसे प्यार नहीं किया और न आज उसने उसका कोमल मुख ही चूमा। जार्ज की यह दशा देखकर इलाइजा ने बहुत डरते-डरते पूछा, "तुम्हें क्या हो गया है ? तुम इतने उदास क्यों हो ? लो, हेरी को पकड़ो। हेरी तुम्हारी गोद में आना चाहता है।"

जार्ज ने उत्तर दिया, "बड़ा अच्छा होता, अगर हेरी का जन्म ही न होता। भगवान का मुझे इन्सान पैदा करना व्यर्थ ही रहा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इलाइजा बहुत डरी और जार्ज के कंधे पर हाथ रखकर रोने लगी। जार्ज ने फिर कहा, "इलाइजा, हम लोगों का मिलन न होना ही अच्छा था।"

इलाइजा ने गहरा दुःख प्रकट करके कहा, "जार्ज, यह तुम क्या कह रहे हो ? मैं तुम्हारे मुख की ओर देखकर अपना सारा दुःख, सारा क्लेश भूल जा सकती हूं। आज तुम्हें क्या हो गया है ?"

जार्ज ने कहा, "इस संसार में न सुख है, न शान्ति। यह जीना एक प्रकार की विडम्बना है। इससे तो ईश्वर मौत दे दे तो भला...."

"जार्ज, तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ? ईश्वर जिस तरह रखे, उसीमें सन्तुष्ट रहना चाहिए। मैं जानती हूं, विलसन के कारखाने से छुड़ा दिये जाने के कारण ही तुम कितने दुःखी हो। धीरज रखो ! देखो, ईश्वर क्या करते हैं !"

"मैंने बहुत सहा और बहुत धीरज रखकर भी देखा, पर अब नहीं सहा जाता। इलाइजा, और धीरज रखने की सामर्थ्य नहीं है। सहने और धीरज की भी हद है। हाड़-मांस के शरीर से जितना सहा जा सकता है, उससे सौगुना अधिक सह चुका। आदमी की प्रकृति जहां तक धीरज रखने में समर्थ है, उससे अधिक धीरज रख चुका। पर मैं अब और नहीं सह सकता। मैंने विलसन के कारखाने में जो कुछ कमाया, उसमें से कभी एक पैसा नहीं खाया। सब-कुछ उस दुरात्मा मालिक के हवाले कर दिया। इनाम में भी कभी कुछ पाया तो उसी को सौंप दिया। पर उस नीच की करतूत देखो, कारखाने के सब लोगों का मुझ पर प्रेम और श्रद्धा थी, मेरे साथ सबका अच्छा बरताव था, यह उस दुरात्मा मालिक से नहीं देखा गया और इसीसे कुढ़कर उसने मुझे वहां से हटा लिया। इस पर भी मैं कुछ न बोला। अपनी दुर्दशा की बात सोच कर चुपचाप उसका दुर्व्यवहार सह लिया। फिर भी वह मुझ पर अत्याचार करने से बाज न आया।"

इलाइजा ने कहा, "नहीं कैसे सहोगे, सहना ही पड़ेगा। वह मालिक और तुम नौकर....वह जो चाहे कर सकता है।"

"जो चाहे सो कर सकता है ! मुझ पर किसने उसे यह अधिकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया है? कहां से उसे यह क्षमता मिली है? मुझमें क्या मनुष्य की आत्मा नहीं है? मैं भी क्या उसी की तरह मनुष्य नहीं हूं? मैं खूब जानता हूं कि मैं उससे सौगुना सच बोलने वाला हूं। मैं जानता हूं कि मुझे उससे अच्छा लिखना-पढ़ना आता है। मैं उससे लोगों की सौगुनी श्रद्धा का पात्र हो सकता हूं। फिर कौन-सा कारण है कि वह जब चाहे, बिना कसूर के मुझे मारे? मुझे इस तरह पीटने का अधिकार उसे किसने दिया? मैंने उसके डर से छिपे-छिपे पढ़ना-लिखना सीखा, उसने मेरे पढ़ने-लिखने में क्या-क्या अड़चनें नहीं डालीं? पर अब किस अपराध के कारण वह मुझ पर ऐसा घोर अत्याचार कर रहा है? वह मुझे पशुओं के काम में लगाना चाहता है। पाप के दलदल में फंसाना चाहता है। मुझे एकदम नीचे गिराने का उसने संकल्प कर लिया है। बुरी नीयत से मुझे मिट्टी काटने के काम में लगाया है। तुम्हीं कहो, मैं अब कितना सह सकता हूं?"

"जार्ज, मुझे बड़ा डर लग रहा है। तुम्हारे चेहरे के रंग-ढंग से जान पड़ता है कि तुम कहीं आत्महत्या या और कोई पाप-कर्म न कर डालो। मैं तुम्हारे दिल का दुःख समझती हूं, पर सावधान रहो और कम-से-कम मेरे और हेरी के भले की खातिर धीरज रखो।"

जार्ज ने कहा, "अब मुझे में धीरज रखने की ताकत नहीं है। तकलीफें दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। आखिर हाड़-मांस का यह शरीर कहां तक सहेगा? यह नीच, तरह-तरह की हिकमत करके मुझे सताता है, तरह-तरह से मेरा अपमान करता है। ज़रा-सा बहाना मिला कि पीट डालता है। मेरी ओर लोगों की थोड़ी-सी श्रद्धा देखी कि जलकर कहता है, तेरे ऊंचे सिर को पैरों के नीचे रौंद डालूंगा। कल की बात है—उसका छोटा लड़का एक घोड़े को दनादन चाबुक मार रहा था। मैंने उसे मना किया। इस पर वह दुष्ट बालक मेरे ही ऊपर चाबुक बरसाने लगा। तब मैंने उसका चाबुक पकड़ लिया। इस पर वह मुझे लात मारकर अपने पिता से जाकर बोला, 'जार्ज ने मेरी बड़ी बेइज्जती की है।' इतना सुनना था कि उसके पिता ने मुझे पास के एक पेड़ से बांध दिया और अपने लड़के से बोला, 'अपने कोड़े से इसे जहां तक बने पीटो।' वह मेरी पीठ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाबुक मारने लगा। यह देखो, उस मार से मेरी सारी पीठ छिली पड़ी है।" इलाइजा को उपनी पीठ दिखाकर जार्ज फिर कहने लगा, "किसने इस नीच को मुझ पर ऐसा प्रभुत्व जमाने का अधिकार दिया है ? इलाइजा, तुम्हारे मालिक ने तुम्हें लाड़-प्यार से पाला है। इससे तुम्हारी उन पर बड़ी भक्ति है। पर मैं ऐसे नर-पिशाच की भक्ति कैसे करूं ? तुम्हारे मालिक ने तुम्हारे लिए बहुत धन खर्च किया, पर मुझे जिस मूल्य में इस नीच ने मोल लिया था, उससे सौगुना मैं उसे कमाकर दे चुका। मैं अब हर्गिज ऐसा वहशियाना व्यवहार नहीं सहूंगा—कभी नहीं, कभी नहीं !"

ये सब बातें सुनकर इलाइजा सन्न हो गई। उसके मुंह से बात न निकली। कुछ देर बाद बोली, "तो अब क्या करना चाहते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि दुःख-सुख दोनों में उसी परमपिता का भरोसा है ?"

"इलाइजा, तुम्हारे दिल में धर्म-भाव है, इसी से तुम ऐसा कहती हो, पर मेरा दिल बदले की हिंसा से भरा हुआ है। भगवान है, इस पर मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर होता तो मेरी यह दुर्दशा क्यों होती ?"

"जार्ज, यह न कहो। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, भगवान पर विश्वास करना ही चाहिए। मैं बचपन में मां से सुना करती थी कि हर हालत में मनुष्य को ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।"

जार्ज ने तीखे स्वर में कहा, "तुम्हारी मां ऐसा कह सकती हैं। जो सब तरह से सुखी हैं, आनन्द भोगते हैं, जिनके घर-द्वार हैं, धन-दौलत है और जिनको मनचाहा काम करने की आजादी है, वे सहज में ऐसा उपदेश दे सकते हैं। पर अगर वे कभी मेरी-जैसी हालत में पड़कर भी परमेश्वर पर वैसा ही विश्वास रख सकें, तो मैं जानूं। तब मैं उनकी बात पर भरोसा कर सकता हूं। मैं अगर सुखी होता, मुझे अगर मनुष्यों के अधिकार मिले होते तो मैं भी ऐसा ही करता। तुमने अभीतक मेरी दुर्दशा की सारी बातें नहीं सुनीं। लो, सुनो। मेरे मालिक ने कहा है कि वह अब मुझे तुम्हारे पास नहीं आने देगा। तुम्हारे मालिक के दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के कारण वह उनसे बहुत चिढ़ा हुआ है। कहता है, दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर वे खराब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाते हैं। वे आजाद होने की कोशिश करने लगते हैं, विशेषकर उसका विश्वास है कि तुम्हें ब्याह कर तुम्हारे भड़काने से मैं कुछ आज़ाद-सा हो गया हूं। इसी से वह मुझे तुम्हारे पास अब हर्गिज नहीं आने देगा। अपने घर की मीना नाम की दासी से वह मुझसे ब्याह करने को कहता है। इसमें कोई शक नहीं कि उससे ब्याह न करने पर वह मुझे दक्षिण देश में बेच डालेगा।"

इलाइजा ने गहरी सांस लेकर कहा, "मीना से तुम्हारा ब्याह कैसे करेगा? ईसाई धर्म के अनुसार पादरियों के सामने हम लोगों का ब्याह हुआ है।"

जार्ज बोला, "तुम्हें मालूम नहीं कि इस देश के कानून में गुलामों को ब्याह करने का अधिकार नहीं है। तुम्हारे और मेरे मालिक जबतक चाहें, तुम्हारे पास मुझे आने देंगे और तभी तक तुम मेरी बीवी हो और मैं तुम्हारा खाविन्द हूं। तुम्हारे मालिक चाहें तो अभी तुम्हें दूसरे आदमी के हाथ सौंप सकते हैं। मेरे मालिक चाहें तो मुझे दूसरी औरत से नाता जोड़ने को मजबूर कर सकते हैं। हम-सरीखे दुखियारे गुलामों का न औरत पर कोई हक है, न औलाद पर। घर के पशु-पक्षियों की जो हालत है, वही हमारी भी है। तुम्हारे बेटे को तुमसे छीनकर बेच सकते हैं। इसीसे मैंने पहले ही कहा कि तुम्हारे साथ मेरा न मिलना-जुलना होना ही अच्छा था। मुझे अगर आदमी का तन न मिलता, हम लोगों के अगर औलाद न होती तो ठीक था। हम लोगों का यह तन धारण करना ही विडम्बना-मात्र है। हम लोगों का विवाह ही सारे दुःखों का एकमात्र कारण है। हमारी औलाद हमारे दिल की आग बनकर हमारा कलेजा जलावेगी। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारी यह सन्तान ही किसी समय तुम्हारे दिल में दुःख की आग जलाने का कारण बनेगी।"

"मेरे मालिक तो बड़े दयालु हैं।" इलाइजा ने संतोष के साथ कहा।

"दयालु होने से क्या हुआ? आज अगर वह मर जायं तो तुम्हें अपने लड़के के साथ उनके कर्ज के लिए नीलाम होना पड़ेगा। इस सन्तान को जितना प्यार करोगी, इसके अफसोस में तुम्हें उतना ही ज्यादा जलना पड़ेगा—इसका न जन्मना ही अच्छा था।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज की बात सुनकर इलाइजा को इसके पहले की वे बातें याद आ गईं, जो शेल्बीसाहब और गुलामों के व्यापारी हेली के दरम्यान हुई थीं। इससे वह अधीर हो गई। पर वह थी बड़ी बुद्धिमती। जार्ज के सामने उसने अपने मन की बात प्रकट नहीं होने दी। जार्ज अपने ही दुःख से पागल हो रहा है, उसके होश ठिकाने नहीं हैं। ऐसे समय में यदि उससे यह बात कही जायेगी तो वह निस्सन्देह शोक से बिल्कुल विह्वल हो जायगा, यह सोचकर इलाइजा ने जार्ज के सामने हेरी के बिकने की आशंका के विषय में कोई बात नहीं उठाई।

फिर कुछ देर बाद जार्ज ने इलाइजा का हाथ पकड़कर कहा, "इलाइजा, मैं जाता हूं। उम्मीद नहीं कि अब फिर इस जन्म में कभी भेंट होगी। लगता है, यही हम लोगों की आखिरी मुलाकात है।"

"जाते हो ? कहां जाओगे ?" व्याकुल होकर इलाइजा बोली।

"मैं किसी तरह कैनाडा उपनिवेश में पहुंचने का यत्न करूंगा। वहां गुलामी की चाल नहीं है। वहां पहुंच सका तो स्वाधीन हो जाऊंगा। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे मालिक से खरीद ले जाऊंगा। अगर बीच ही में भागते हुए पकड़ा गया तो फिर जान देनी होगी।" इस कठोर यातना को सहने के लिए फिर इस शरीर का मोह नहीं करूंगा।"

"पर तुम मेरी एक बात मानो, इलाइजा ने डबडबाई आंखों से कहा, "पकड़े जाने पर भी आत्महत्या मत करना।"

"मुझे आत्महत्या नहीं करनी पड़ेगी। पकड़ लेने पर वे ही लोग मेरी हत्या कर डालेंगे।"

"तुम भागना चाहते हो तो भाग जाओ; पर इस अभागिनी और इस सन्तान के कल्याण के लिए आत्महत्या या नरहत्या इत्यादि किसी पाप से अपने हाथों को कलंकित मत करना। मैं फिर कहती हूं, परम पिता की प्रार्थना करो, और उसी की करुणा का भरोसा रखो।"

जार्ज बोला, "इलाइजा, मैंने मन में जो निश्चय किया है, वह तुम्हें सुनाता हूं। अभी तक मेरे मालिक के मन में मेरे भागने के विचार पर कोई सन्देह नहीं है। मैं आज ही रात को भागने की सारी तैयारी करूंगा। और भी कई गुलाम इस तैयारी में मेरी सहायता करेंगे। सब ठीक-ठाक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाने पर इसी सप्ताह में मुझे भागने का अच्छा मौका मिलेगा। तुम मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो। तुम्हारे हृदय में भक्ति, विश्वास और श्रद्धा है। ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना सुनेंगे। मेरा हृदय तो शुष्क हो गया है। अत्याचार से सताया हुआ हृदय सदा द्वेष और हिंसा से ही भरा रहता है। ऐसे हृदय में ईश्वर का स्थान नहीं। ऐसा हृदय ईश्वर के नाम पर नहीं पसीजता, न ऐसे हृदय में धर्म-विश्वास ही को स्थान मिल सकता है। यही कारण है कि जगत में किसी न्याय-परायण मंगलमय ईश्वर का राज्य है, इस पर मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता।"

"जार्ज, जार्ज, मैं बार-बार कहती हूं कि ऐसी बात तुम जबान पर मत लाओ। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, धीरज रखकर सदा एकाग्र चित्त से मंगलमय परमात्मा के चरणों में आत्म-समर्पण करो। हम-जैसे अभागे, निराश्रित, निर्बल और अनाथ गुलामों का एक ईश्वर के सिवा संसार में दूसरा कौन सहायक है? वह दयामय ईश्वर ही हम अशरणों का शरण, निरुपायों का उपाय, अनाथों का नाथ और बेसहारों का सहारा है। हृदय में उस ईश्वर का ध्यान करो—तुम्हें पाप और कलंक कभी छू नहीं सकेंगे।"

इलाइजा की बातें समाप्त होते ही जार्ज ने कहा, "अब विदा होता हूं।"

वह बारंबार सतृष्ण नयनों से इलाइजा के मुंह की ओर निहारने लगा। अब इलाइजा अपने आंसू न रोक सकी। रो पड़ी। उसके रोने से जार्ज का दिल भी पिघल गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। फिर वह आंखें पोंछते हुए हेरी का मुंह चूमकर चल पड़ा। इलाइजा हेरी को गोद में लिये हुए जार्ज के मार्ग की ओर एकटक देखती रही। कुछ देर बाद, जार्ज के आंखों की ओट हो जाने पर, उसे चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखाई देने लगा। आज सूर्यास्त के साथ-साथ इलाइजा का सुख-सूर्य भी अस्त हो गया। पर उसके दुःख की घोर अंधियारी आने में अभी कुछ देर थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४ : : टाम की बिक्री

टाम के वेचने के सम्बन्ध में हेली से शेल्वीसाहव की जो वातचीत हुई थी, वह पहले अध्याय में लिखी जा चुकी है। उसे पढ़कर पाठकों को केवल इतना मालूम हुआ होगा कि शेल्वी साहब के यहां टाम नाम का एक स्वामिभक्त क्रीत-दास था और उसे खरीदने के लिए ही हेली शेल्वीसाहव के पास आया था। इस अध्याय में हम टाम का विशेष परिचय देते हैं। टाम यद्यपि अफ्रीका-वासी काला क्रीत-दास था, फिर भी उसे धर्माधर्म का खूब ज्ञान था। वह वहुत ही सीधा, परिश्रमी और सदाचारी था। स्वार्थपरता उसे छू तक नहीं गई थी। वह सव तरह से भला था। शेल्वीसाहव पर कर्ज का वोझ न होता, तो वह उसे कभी न बेचते। शेल्वीसाहव के यहां, उनके रहने के स्थान से थोड़ी ही दूर पर, दास-दासियों के रहने योग्य कई छोटे-छोटे घर थे। अमरीका के प्राय: सभी धनाढ्य बनियों के घर अफ्रीका के अभागे काले दास-दासियों से ठसाठस भरे थे। इनमें से अधिकांश महापुरुष इन अभागे दास-दासियों को सदा सताते और उन पर घोर अत्याचार करते रहते थे। पर इनमें जहां हजार बुरे थे, वहां पांच भले भी थे। सभी जातियों में भले-बुरे दोनों होते हैं। उन सज्जन अंगरेजों के यहां दास-दासियों को थोड़ा-सा आराम रहता था। पहले कहा जा चुका है कि शेल्वीसाहव की मेम का हृदय दया-धर्मादि गुणों से अलंकृत था। दास-दासियों पर अत्याचार करना तो दूर, वह सदा उनकी आत्माओं को उन्नत करने में लगी रहती थीं। वह उन्हें लिखना-पढ़ना सीखने का अवसर देती तथा उन्हें उपदेश देकर सदा उत्तम मार्ग पर चलाने की चेष्टा करती।

शेल्वी साहव के गुलामों में टाम सबसे पुराना था। क्लोई नाम की एक दासी के साथ टाम का विवाह हुआ था। उसके गर्भ से टाम के तीन-चार सन्तानें हुईं। क्लोई शेल्वीसाहव के घर की मुख्य रसोइन थी। वह दूसरे दास-दासियों पर सदा हुक्म चलाती थी और अपने मन में ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझती थी कि केण्टाकी भर में उसकी-सी रसोइन दूसरी नहीं है। उसके बनाये भोजन में किसी तरह की भूल बताने से वह बहुत ही गुस्सा होती थी। इसलिए वह जो कुछ बनाती थी, वही सबको अच्छा जान पड़ता था। क्लोई में और भी अनेक गुण थे। वह पतिपरायण थी और अपनी सन्तान को बड़ा प्यार करती थी। टाम का घर अन्य दास-दासियों के घरों की निस्वत कुछ बड़ा था। शेल्बी साहब के तेरह वर्ष के लड़के जार्ज से टाम कभी-कभी पढ़ना सीखा करता था। प्रतिदिन संध्या-समय टाम मुहल्ले के सारे दास-दासियों को बटोरकर अपने घर में उन लोगों के साथ मिलकर ईश्वर की उपासना करता और उन्हें बाइबिल पढ़कर सुनाया करता था। अधिक पढ़ा-लिखा न होने पर भी टाम का हृदय भक्ति और प्रेम से भरा था। वह बड़ी सीधी-सादी भाषा में ईश्वर की उपासना करता था। दूसरे दास-दासी टाम को अपना पादरी मानते थे। जिस समय दास-व्यवसायी हेली ने शेल्बी के कमरे में बैठकर टाम को खरीदने का प्रस्ताव किया था, उस समय शेल्बी का पुत्र जार्ज स्कूल में था। जार्ज को इन बातों का ज़रा भी पता न था। स्कूल से लौटकर जैसे वह नित्य टाम को पढ़ाने के लिए उसके घर जाया करता था, वैसे ही आज भी उसके घर बैठा पढ़ा रहा था। पर टाम या जार्ज किसी ने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि आज टाम के सारे सुखों का सूर्य डूब जायगा, आज टाम को पतिपरायण स्त्री और सन्तान से जन्म-भर के लिए बिछुड़ना पड़ेगा।

शेल्बीसाहब ने संध्या के छः बजे दास-व्यवसायी हेली को बुलाया था। हेली ठीक समय पर शेल्बीसाहब के यहां आ पहुंचा। इधर टाम जब जार्ज के पास बैठा पढ़ रहा था, एक कमरे में बैठे शेल्बी साहब और हेली दोनों टाम की बिक्री के विषय में लिखा-पढ़ी कर रहे थे। लिखा-पढ़ी समाप्त हो जाने पर हेली बोला, "सब ठीक है, अब तुम इस बिक्री के इक़रारनामे पर दस्तखत कर दो।" शेल्बी साहब ने बड़े खिन्न मन से हस्ताक्षर करके उसे हेली को सौंप दिया। हेली ने उन्हें एक पुराना बन्धक रखा हुआ दस्तावेज़ वापस किया। इस दस्तावेज़ के लिए ही शेल्बीसाहब को स्वामिभक्त टाम और इलाइजा के नन्हें बच्चे हेरी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेचना पड़ा था। हस्ताक्षर का कार्य निबट जाने के बाद शेल्बीसाहब हेली से बोले, "तुमने वचन दिया है कि टाम को किसी निर्दयी बनिये के हाथ नहीं बेचोगे, देखना, अपनी बात मत छोड़ना।"

हेली बोला, "जब टाम को मुझे बेच ही डाला, तब इस बात को बार-बार क्यों दुहराते हो ?"

शेल्बीसाहब ने कहा, "मैंने संकट में पड़कर बेचा है।"

इस पर हेली हँसते हुए कहने लगा, "और मैं भी तुम्हारी तरह संकट में पड़ जाऊं तो ? पर हम खुद उसपर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करेंगे। तुमसे हम कह चुके हैं कि हम दया-धर्म को साथ रखकर अपना कारोबार करते हैं।"

टाम और इलाइजा के बच्चे को खरीदकर हेली जब चला गया तो शेल्बीसाहब उदास होकर अलग बैठ गये और चुरुट का कश खींचते हुए मन-ही-मन विचार करने लगे कि दास-व्यवसायी भी कैसे पाजी होते हैं ! खरीदने के क्षण भर पहले ही कहता था कि टाम को किसी भलेमानस के हाथ बेचूंगा, और इकरारनामे की लिखा-पढ़ी होते ही बदल कर बातें बनाने लगा !

५ : : एक हृदयविदारक दृश्य

टाम और इलाइजा के पुत्र को बेचकर शेल्बीसाहब रात को अपने सोने के कमरे में जाकर दुखित चित्त से कुर्सी पर पड़े चिट्ठी-पत्री पढ़ रहे थे। उनकी मेम आईने के सामने खड़ी होकर कपड़े बदल रही थी। शेल्बी साहब को इस प्रकार उदास देखते ही उसे इलाइजा के पुत्र के विक्रय की बात याद आ गई। उसने अपने पति से पूछा, "आर्थर, वह कौन था, जो आज अपने यहां बड़े ठाट-बाट से आया था ?"

"उसका नाम हेली है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हेली ! यह कौन है ? यहां क्यों आया था ?"

"नेरोज नगर में उससे मेरा कुछ काम पड़ा था, उसी सम्बन्ध में आया था।"

"बस, एक ही दिन के काम पड़ने में उसने तुमसे इतनी घनिष्ठता पैदा करली कि यहां आकर घरवालों की तरह खाया-पिया ?"

शेल्वी ने कहा, "कुछ हिसाब था, उसीको साफ़ करने के लिए मैंने उसे यहां बुलाया था।"

"क्या वह दास-व्यवसायी है ?"

यह प्रश्न सुनकर शेल्वी साहब ने और भी अधिक चिन्तायुक्त होकर कहा, "तुम यह क्यों पूछती हो ?"

मेम बोली, "दोपहर को इलाइजा ने बहुत घबराहट के साथ आकर मुझसे कहा था कि तुम उसके लड़के को बेचने के विषय में उस आदमी से बात-चीत कर रहे थे। इसपर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। वास्तव में इलाइजा बड़ी भोली है।"

यह बात सुनकर शेल्वी साहब विचलित होकर बोले, "क्या इलाइजा ऐसा कहती थी ?"

"हां, उसने यही कहा था, लेकिन मैंने उसे समझा दिया कि वह बड़ी बेवकूफ है, यों ही बका करती है।"

"एमिली, मैं ऐसे आदमियों के हाथ दास-दासी बेचना हमेशा बड़े अन्याय का काम समझता था, पर आज इस संकट की हालत में बिना बेचे काम नहीं चल सकता। हेली-जैसे निर्दयी मनुष्य के हाथ अपने किसी दास-दासी को अवश्य बेचना पड़ेगा।"

"हेली के हाथ ! असम्भव है ! तुम हँसी तो नहीं करते हो ?"

"मैं हँसी नहीं करता। मुझे बड़ा दुःख है कि टाम को बेचना पड़ा।"

"क्या ! हमारे टाम को बेचोगे? ऐसे प्रभु-भक्त विश्वासी दास को ? तुमने तो उसकी प्रभु-भक्ति के पुरस्कार में उसे कभी आजाद कर देने का वचन दिया था न ? तुम और मैं दोनों उसे गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करके स्वाधीनता देने की हजारों बार आशाएं दिला चुके हैं। उसे कैसे बेचते हो ? तुम्हारी इस बात से मुझे मालूम होता है कि तुमने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इलाइजा के बच्चे को भी बेच दिया है !"

"एमिली, अब तुमसे ये सब बातें छिपाना व्यर्थ है। मैंने सचमुच इलाइजा के लड़के और टाम को बेचना स्वीकार कर लिया है, पर महज इतने के लिए तुम मुझे निर्दयी क्यों ठहराती हो ? यह तो सभी करते हैं।"

"तो और किसी को न बेचकर टाम और इलाइजा के पुत्र को ही क्यों बेचा ?"

शेल्बी ने कहा, "टाम और इलाइजा के लड़के का मूल्य सबसे अधिक मिलने के कारण ही उन्हें बेचना पड़ा। हेली इलाइजा को इससे भी अधिक मूल्य पर लेने को तैयार था, पर इन दोनों के बदले क्या इलाइजा को देना तुम्हें स्वीकार होता ?"

"वह पापी राक्षस मेरी इलाइजा को भी खरीदना चाहता था ?"

"तुम्हारे दुःख की बात सोचकर ही मैंने इलाइजा को बेचना स्वीकार नहीं किया। इससे तुम मुझे उतना दोष नहीं दे सकती हो।"

"आर्थर, मुझे क्षमा करो। एकाएक तुम्हारे मुंह से ऐसी बातें सुनकर मैं तो दंग रह गई। तुम जरा विचार करके तो देखो, जिसके दिल है वह टाम-जैसे ईश्वर-परायण दास को कैसे बेच सकता है ? काले होने पर भी टाम का दिल बड़ा उजला है। वह बात-की-बात में तुम्हारे लिए जान दे सकता है।" श्रीमती शेल्बी ने हैरानी से भरकर कहा।

"एमिली, यह मैं खूब जानता हूं, पर करूं क्या ! मैं कर्ज में बुरी तरह फंस गया हूं....और कोई उपाय भी नहीं सूझता।"

"हम लोगों की और जो कुछ जायदाद है, वह सब क्यों नहीं बेच डालते ? धन-सम्पत्ति की मोह-ममता मैं अनायास छोड़ दूंगी। सब तरह की असुविधाएं सह लूंगी। गरीबी से जो दुःख होगा, वह हंसते-हंसते उठा लूंगी। तुम्हें मेरे दिल की व्यथा का पता नहीं। मैंने किस तरह से दास-दासियों को पाला-पोसा है, उन्हें धर्म सिखाया, उनके सारे अभाव दूर करने की कोशिश की है और उनके साथ हमेशा धर्म-चर्चा की है। पर आज यदि मैं उन्हें अपने स्वार्थ के लिए बेच डालूं, तो मैं उन्हें कैसे मुंह दिखाऊंगी ? मैंने हमेशा उन्हें स्वामी के साथ स्त्री, स्त्री के साथ स्वामी, सन्तान के साथ माता-पिता और माता-पिता के साथ संतान के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्त्तव्य की शिक्षा दी है। पर यह शिक्षा देकर फिर मैं ही सन्तान को माता की गोद से और स्वामी को स्त्री के साथ से सदा के लिए अलग करने पर तैयार होऊं ? मैंने कितनी ही वार इलाइजा को समझाया होगा कि सन्तान को सदाचारी और सुशिक्षित किये बिना माता का कर्त्तव्य पूरा नहीं होता। मैं इलाइजा को अपनी सन्तान के भले के लिए ईश्वर से वार-वार प्रार्थना करने को कहती आई हूं। आज मैं कैसे उसी इलाइजा की छाती से उसके बच्चे को हमेशा के लिए अलग करने दूंगी ? मैं इन दास-दासियों से बराबर कहती आई हूं कि संसार की सारी धन-दौलत से मनुष्य की आत्मा का मूल्य कहीं अधिक है। इससे धन-दौलत के लिए मनुष्यता को नीचे गिराना या नष्ट करना एकदम अनुचित है। पर हाय, आज मैं स्वयं ही धन के लिए उसी मनुष्यात्मा के विनाश करने को आमादा हुई हूं। ऐसे नीच निर्दयी नर-पिशाच दास-व्यवसायी के हाथ में सौंपकर भी क्या इनकी किसी प्रकार की नैतिक या आध्यात्मिक उन्नति की आशा की जा सकती है ?"

"प्यारी, तुम्हारा दुःख देखकर मुझे भी बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारा दुःख मुझसे सहा नहीं जाता। पर देखो, मेरे लिए और कोई चारा नहीं है। इन दोनों को बेचकर कर्ज न चुकाऊं, तो निर्दयी हेली डिग्री जारी कराकर हमारे घरबार और सारे दास-दासियों को नीलाम करा लेगा। दो को बेचकर सभी की रक्षा करना मुनासिब समझता हूं।"

शेल्बीसाहब की ये बातें सुनकर उनकी स्त्री बार-बार लम्बी सांसें ले-लेकर कहने लगी "गुलामी की इस घृणित प्रथा को आश्रय देने के कारण सचमुच ही ईश्वर हम पर नाराज है। इसमें शक नहीं कि यह प्रथा बहुत ही बुरी है। मालिक या दास, किसी के लिए लाभदायक नहीं है, यह दोनों को घोर नरक में डुबोती है, दोनों के ही दिलों को कलंकित करती है। मेरी यह बड़ी भूल थी, जो मैं समझती थी कि दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने भर ही से गुलामी की इस प्रथा का कलंक धुल जायगा। इस प्रथा से संबंधित देश का मौजूदा कानून हद से ज्यादा घृणित और नीति-विरुद्ध है। इस कानून को मानकर दास-दासी रखना घोर अन्याय है। दास-दासियों से अच्छा व्यवहार करने पर भी इस प्रथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कलंक दूर नहीं हो सकता। अच्छे बर्ताव से इस कुप्रथा की गन्दगी कुछ अंशों में भले ही दूर हो जाय, पर इसका भीतरी कलंक जड़ से नहीं जा सकता। मैं समझती थी कि दास-दासियों से अच्छा बर्ताव करके और धर्म की शिक्षा देकर मैं उनकी दशा सुधार लूंगी, पर यह समझकर मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की। दासत्व-प्रथा को बिलकुल आश्रय न देना ही बेहतर था।"

शेल्बीसाहब ने अपनी मेम का यह पश्चात्ताप सुनकर कहा, "प्यारी, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। तुम तो गुलामी की प्रथा के विरोधी दल की एक सदस्य बन बैठी हो।"

"आर्थर, मैं इस प्रथा को कभी न्यायसंगत नहीं समझती थी, और न कभी दास-दासी रखने की मेरी इच्छा ही होती थी।"

शेल्बी ने कहा, "पर बड़े-बड़े पादरियों ने इस प्रथा का समर्थन किया है। अभी उस दिन हम लोगों के पादरी ब्रान्सनसाहब ने गिरजे में जो उपदेश दिया था, उसे तो तुमने सुना था न ?"

"मैं तुम्हारे बड़े पादरी का उपदेश नहीं सुनना चाहती। मैं अब ब्रान्सन का उपदेश सुनने के लिए कभी गिरजे में नहीं जाऊंगी। पादरी और ख्रिस्तान पुजारी खुशामद के मारे धनी व्यापारियों की हां-में-हां मिलाने के लिए उनकी इच्छा के अनुकूल उपदेश देते हैं। क्या उनमें से कोई स्वतंत्र विचार प्रकट करने का भी साहस रखता है? अर्थ ही सारे अनर्थों की जड़ है। धन के लोभ से इस घृणित, अन्यायपूर्ण देशाचार का समर्थन करते हुए इन महात्माओं को लज्जा नहीं आती। केवल धनी व्यापारियों को खुश करने और पापी पेट को भरने के लिए वे ऐसे घृणित मतों का प्रचार करते हैं।"

"लो, अब आगे फिर कभी धर्म-धर्म की बहुत दुहाई मत देना! देख लिया न कि ये धर्म-प्रचारक समय-समय पर कैसे ऊटपटांग मतों का प्रचार करते हैं? उनके ये सब मत तो हमारे-जैसे पापियों को भी घृणित मालूम होते हैं। धर्म का तत्व समझना बहुत कठिन है। मुझ पर कर्ज का बोझ न होता तो मैं कभी ऐसा काम न करता। अब तुमने समझ लिया होगा कि कैसे संकट में पड़कर मैंने यह काम किया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तुम्हीं देख लो कि मेरा यह काम उचित है या नहीं।"

श्रीमती शेल्वी ने कहा, "हां, ठीक है, तुमने सब परिस्थिति के अनुसार ही किया है, किन्तु खेद है कि मेरा कोई ऐसा मूल्यवान गहना नहीं है, जिसे वेचकर इलाइजा के हृदय-रत्न, उस दुःखिनी के जीवन-सर्वस्व की रक्षा कर सकूं। अच्छा, क्या मेरी इस घड़ी को बेचकर उसके पैसे से इलाइजा के बच्चे की रक्षा हो सकती है! इलाइजा के बच्चे के लिए मैं अपना सब-कुछ देने को तैयार हूं।"

"एमिली, तुम्हारी ऐसी शोचनीय दशा को देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है। लेकिन बिक्री की पक्की लिखा-पढ़ी हो चुकी है। हेली ने बिक्री के दस्तावेज़ पर मेरे दस्तखत करा लिये हैं। अब कोई उपाय नहीं है। हेली के हाथ में मेरे सर्वनाश की बागडोर थी। इलाइजा के बच्चे को बेचकर ही मैंने उससे छुटकारा पाया है।"

"हेली क्या बिल्कुल ही निर्दयी है?" श्रीमती शेल्वी ने आवेश में कहा।

"निर्दयी तो नहीं कह सकता। लेकिन वैसा लोभी और अर्थ-पिशाच तो शायद ही दूसरा हो। वह धन के लिए अपनी स्त्री तक को किराये पर दे सकता है और अपनी माता तक को खुशी से बेच सकता है।"

"यह जानते हुए भी तुमने ऐसे नराधम के हाथ टाम और इलाइजा के बच्चे को सौंप दिया! ओफ, कितने दुःख की बात है!"

"क्या करूं? बिना बेचे गुजर न थी। मैं स्वयं ही ऐसे कामों से बड़ी नफरत करता हूं, पर लाचारी है! हेली कल ही आकर इन लोगों को ले जायगा। मैं सवेरे ही घोड़े पर सवार होकर दूसरी जगह चला जाऊंगा। टाम को ले जाने के समय मुझसे नहीं रहा जायगा। तुम भी इलाइजा को साथ लेकर कहीं चली जाना। हम लोगों के पीछे हेली का इन लोगों को ले जाना अच्छा होगा।"

"मैं यों कपट रचकर इलाइजा को किसी दूसरी जगह नहीं ले जा सकूंगी। मैं ऐसे निठुर काम में कोई सहायता नहीं करूंगी। टाम को ले जाते समय मैं उससे मिलूंगी। उसे आशीर्वाद भी दूंगी। पर जब मुझे इलाइजा की बात याद आती है तो मेरी छाती फटने लगती है। मुझे चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार दिखाई पड़ता है। तुम्हें नहीं मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि गोद से शिशु के छीने जाने पर माता को कितनी वेदना होती है।"

शेल्बीसाहब और उनकी मेम में जिस समय ये बातें हो रही थीं, इलाइजा पास वाली कोठरी में बैठी थी और उनकी सब बातें सुन रही थी। उनकी बातचीत समाप्त होने पर इलाइजा धीरे-धीरे, दबे-पांव, अपने घर की ओर चलीं। डर से उसका हृदय धड़क रहा था। उसने रोते हुए, "हे ईश्वर, हे दयामय, रक्षा करो!" कहकर घर में प्रवेश किया। खाट पर सोये हुए बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुंह चूमकर कहने लगी, "दुखिया के धन, तू दूसरों के हाथ बिक गया है। पर यह दुखिया मां प्राण रहते तुझे नहीं छोड़ेगी।" डर के मारे उसकी आंखों का पानी सूख गया। जब हृदय बिल्कुल सूख जाता है तो आंखों में भी पानी नहीं रहता। उस समय हृदय कटकर आंखों से खून बहने की तैयारी हो जाती है। इस समय इलाइजा का यही हाल था। उसका हृदय विदीर्ण होने की नौबत आ गई थी, परन्तु निराशा भी कभी-कभी मनुष्य के मन को ढाढ़स बंधा देती है। इस समय इलाइजा केवल साहस के बल पर खड़ी थी। वह एक कागज़ और पैंसिल लेकर लिखने लगी :

"माता, मुझे अकृतज्ञ मत समझना। बाबा के साथ शाम के समय तुम्हारी जो बातें हो रही थीं वे ,सब मैंने आड़ में बैठकर सुन ली हैं। मैं अपनी सन्तान की रक्षा के लिए भागने को मजबूर हूं। मंगल मय प्रभु तुम्हारा मंगल करे!" इस आशय का झटपट एक पत्र लिखकर उसने वहीं खाट पर छोड़ दिया।

बालक को सर्दी से बचाने के लिए कुछ कपड़े, एक चादर और एक शाल साथ लेकर, लड़के को हृदय से लगाये, वह घर से बाहर हो गयी। पहले वह प्रभु-भक्त टाम के घर की ओर गई। वहां पहुंचकर उसने टाम के दरवाजे की कुंडी खटखटाई। टाम बहुत रात गये तक भजन-ध्यान किया करता था। इससे उस समय वह जाग रहा था। टाम की स्त्री क्लोई ने द्वार खोल दिया। इस समय इलाइजा को देखकर वह चकित रह गई। इलाइजा ने बड़े करुण शब्दों में कहा, "टाम, मैं हेरी को लेकर भाग रही हूं। बाबा ने हेरी को और तुम्हें एक व्यापारी के हाथ बेच डाला है।"

टाम और क्लोई, दोनों ही इस आकस्मिक घटना को सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौंक पड़े। टाम निस्तब्ध-सा रह गया। उसके मुंह से कोई बात न निकली। किन्तु क्लोई ने कहा कि हम लोगों ने ऐसा कौन-सा अपराध किया था, जो इस तरह बेच दिया ? इसपर इलाइजा ने मेम और शेल्बीसाहब में जो बातें हुई थीं, वे कह सुनाईं और बोली, "कर्जदार होने के कारण बेचा गया है, न कि किसी अपराध के लिए। पर मां इसमें अत्यन्त दुःखित हुई हैं। उनका हृदय सचमुच ही दया-ममता से भरा है। मैं बड़ी कृतघ्न हूं, इसीसे मां को छोड़कर इस प्रकार भागने को तैयार हो गई हूं, पर भागने के सिवा मेरे पास कोई उपाय नहीं है। बिना भागे हेरी की रक्षा नही हो सकती।"

इसपर क्लोई ने टाम से कहा, "तुम भी क्यों नहीं भाग जाते ? मैं तुम्हारे कपड़े-लत्ते लाये देती हूं....तुम्हें तो दूसरी जगह जाने का पास भी मिला हुआ है।"

टाम बोला, "मैं कभी नहीं भागूंगा। मेरे बेचने से अगर दूसरे दास-दासियोंकी रक्षा होती है तोमेरा बिकना अच्छा ही है। भगवानसर्वव्यापी है। कहीं क्यों न रहूं, वह मेरे साथ है। मैं कभी विश्वासघात नहीं करूंगा। भला मैं धोखा देकर भागने में इसका उपयोग कैसे कर सकता हूं ?"

भागने की अनिच्छा दिखाकर टाम चुप रह गया और मुंह लटका कर आंसू बहाने लगा। खाट पर सोये हुए बच्चों की ओर देखकर वह बारम्बार आहें भरने लगा। फिर क्लोई चाची से इलाइजा कहने लगी कि आज संध्या को जार्ज मेरे पास आये थे। उनका मालिक उन पर घोर अत्याचार करने लगा है। सताये जाने के कारण वह भी भागने का उद्योग कर रहे हैं। भेंट होने पर मैं उनसे अपने भागने का वृत्तान्त कहूंगी। उन्हें भली प्रकार समझाऊंगी कि यदि इस लोक में उनसे भेंट न हुई तो परलोक में अवश्य मिलना होगा। मरते-मरते वही मेरी एक-मात्र गति और एकमात्र आधार है।"

इलाइजा की ये बातें पूरी होने पर क्लोई ने अश्रु पूर्ण नेत्रों से उसका मुंह चूमा और रोते हुए उसे विदा किया।

विकट अंधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा था। उसी भयंकर अंधियारी रात में बच्चे को गोद में लिये उन्नीस साल की युवती अकेली कदम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ाये जा रही है। उसके लिए चारों दिशाएं समान हैं, कहीं कोई खतरा नहीं दिखाई पड़ता, पर क्या सचमुच इलाइजा निस्सहाय और शरणहीन है? नहीं, इलाइजा सर्वथा अनाथ नहीं है। अनाथों के नाथ, दीनानाथ, दीनबन्धु भगवान अब भी उसके साथ हैं। लोभी गोरे व्यापारी कालों से भले ही घृणा करें, पर सर्वसाक्षी परमात्मा के महान दरबार में कालों और गोरों में कोई भेद नहीं है। वहां सभी बराबर हैं।

६ : : इलाइजा की खोज

रात गई। दिन निकला। प्रभात का सूर्य गगन में उदय होकर गोरे, काले सब पर समान भाव से अपनी मनोहर प्रभा फैलाने लगा। सारा संसार उठकर अपने-अपने कामों में लग गया, पर शेल्वीसाहब के कमरे के किवाड़ अभी तक नहीं खुले। कारण यही था कि कल रात को मेम और वह ठीक समय पर नहीं सो सके थे, इसी से आज बड़ी देर तक सोते रहे। मेम बिस्तर से उठते ही इलाइजा को पुकारने लगी, पर कोई जवाब न मिला। कुछ देर बाद उसने आंडी नामक दास को इलाइजा को बुलाने भेजा। आंडी ने इलाइजा के घर से लौटकर कहा कि उसका घर सूना पड़ा है। चीजें जहां-तहां बिखरी हुई हैं। जान पड़ता है कि वह भाग गई!"

इन बातों से शेल्वीसाहब और उनकी मेम ने तुरन्त समझ लिया कि अपने बच्चे को लेकर वह कहीं चली गई। मेम के मुंह से अकस्मात् निकला, "परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे।"

लेकिन शेल्वीसाहब यह सुनकर बहुत झुंझलाये और बोले, "प्यारी, तुम एकदम नासमझ की-सी बातें कर रही हो। हेली जरूर कहेगा कि मैंने ही षड्यंत्र रचकर इलाइजा को भगा दिया है। उसके कहने की कई खास वजहें भी हैं। और उसका ऐसा सोचना अकारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न होगा, क्योंकि मैंने पहले से ही इलाइजा के लड़के को वेचने की अनिच्छा प्रकट की थी।"

इसके बाद शेल्वीसाहब नीचे के घर में आये। इधर घर की नौकर-मण्डली में इलाइजा के भागने की बात पर बड़ा आन्दोलन आरम्भ हुआ। किसी ने कहा कि हेली तो सुनते ही दुःख में पागल हो जायगा; किसी ने कहा कि वह अर्थ-पिशाच यह खबर पाकर बड़ा ऊधम मचायेगा; कोई बोला कि हेली निश्चय ही गालियों की बौछार करेगा। ये बातें हो ही रही थीं कि चाबुक लिये हेली वहां आ पहुंचा। इलाइजा के भागने की बात सुनते ही दाँत पीसकर "हरामजादी, सूअर की औलाद" इत्यादि घृणित गालियों की बौछार से वह इलाइजा को याद करने लगा। अन्त में वह सहसा असभ्य व्यक्ति की भांति उस कमरे में पहुंचा जहां शेल्वी और उनकी मेम बैठे थे। वहां जाकर वह जोर से बोला, "शेल्वी, तुमने बड़ा जुल्म किया है।"

शेल्वीसाहब ने कहा, "हैली, ज़रा भलमनसाहत से बातें करो। देखते नहीं, मेरी स्त्री यहां बैठी है!"

पर अर्थ-पिशाच हेली को उस समय भले-बुरे का ज्ञान कहां था? उसने फिर उसी प्रकार चिल्लाकर कहा, "सचमुच, तुमने बड़ा जुल्म किया है!"

इस पर शेल्वीसाहब बहुत क्रुद्ध हुए और हेली को झिड़क कर बोले, "तुम क्या निरे मूर्ख ही हो! एक भद्र महिला के सामने यों सिर पर टोप डाटे खड़े हो!"

इतना कहकर उन्होंने अपने नौकर आंडी को हेली का टोप गिरा देने की आज्ञा दी। आंडी ने तुरन्त हेली के सिर का टोप और हाथ का चाबुक छीन लिया। तब हेली मिजाज को ठंडा करके बोला, "भई, तुम्हें भलमनसी से काम लेना चाहिए था।"

इतना सुनना था कि शेल्वी ने बड़े क्रोध से कड़क कर कहा, "मैंने कौन-सी बेईमानी की है? मेरी भलमनसी की बात मुंह से निकाली तो अभी धक्का देकर निकाल बाहर करूंगा।"

अर्थ-पिशाच प्रायः कायर ही होते हैं। वे कमजोरों के सामने शेर बने रहते हैं, पर जब कोई अपने से सवाया मिल जाता है तो भेड़ बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं। हेली ने शेल्वीसाहब को क्रुद्ध देख कर डरते हुए कहा, "हमारी किस्मत ही फूटी है, नहीं तो ऐसा क्यों होता ?"

शेल्वीसाहब क्रोध को रोक कर कहने लगे, "तुम्हारा इस तरह नुकसान न हुआ होता तो मैं कभी तुमको घर में न घुसने देता। पर खैर, तुम्हें मेरे साथ कारोबार करके घाटा हुआ है, इसलिए मैं तुम्हें अपने घोड़े और आदमी देता हूं। तुम इलाइजा को खोज लाओ और उसे पकड़कर अपना खरीदा हुआ माल ले जाओ।"

धन-लोलुप हेली की करतूत देखकर शेल्वीसाहब की मेम मन-ही-मन बहुत कुढ़ी और वहां से उठकर चली गई। तब शेल्वी ने आंडी को बुलवा कर कहा, "आंडी, तुम और साम दोनों हेलीसाहब के साथ घोड़ों पर चढ़कर इलाइजा की खोज में जल्दी जाओ।"

आंडी ने अस्तबल में पहुंचकर साम को ये सब बातें सुनाईं और घोड़े तैयार करने को कहा।

मालिक की आज्ञा सुनते ही साम झटपट घोड़ा तैयार करने लगा और कूद-फांद करके कहने लगा, "इलाइजा को अभी पकड़कर लाता हूं अभी लाता हूं।"

आंडी ने उसके कान में कहा, "अरे, तू समझता नहीं ? मेम साहब नहीं चाहतीं कि इलाइजा पकड़ी जाय। इससे घोड़ा कसने में ज़रा देर कर दे।"

साम बोला, "तुमने कैसे जाना कि मेम साहब नहीं चाहतीं ?"

आंडी ने कहा, "जब मैंने मेम साहब से इलाइजा के भाग जाने के समाचार कहे तो वह बोलीं, 'परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे।' पर साहब यह सुनकर झुंझला उठे। साम बड़ा नम्बरी था। जब जान लिया कि मेम साहब इलाइजा को पकड़ने के पक्ष में नहीं हैं, तब फिर वह जल्दी ही घोड़ा क्यों कसे ? अस्तबल में जाकर एक घोड़ा खोल देता है, फिर उसको पकड़ता है; फिर छोड़ देता है, फिर पीछे दौड़कर पकड़ता है, योंही समय टालरहा है। फिर अपनी सवारी के घोड़े पर काठी कसकर इस ढंग से उसके नीचे एक कांटा लगा दिया कि घोड़े पर चढ़ते ही कांटा चुभने से घोड़ा भड़क कर सवार को जमीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पटक दे। हेली के घोड़े की जीन के नीचे भी उसने एक ऐसा ही कांटा लगा दिया।

शेल्वी ने कई बार साम को पुकार कर कहा, "साम, इतनी देरी क्यों हो रही है ?"

साम ने कहा, "सरकार, बड़ा बदमाश घोड़ा है। जल्दी जीन ही नहीं धरने देता।"

इस तरह धीरे-धीरे समय निकलने लगा। इधर शेल्वीसाहव की मेम ने साम को बुलाकर कहा, "साम, दोनों घोड़ों के पैरों में न जाने क्या हो रहा है ! देखना, बहुत दौड़ाकर हैरान मत करना।"

साम को चाहे अक्ल हो या न हो, पर ऐसी बातें वह बड़ी फुर्ती से समझ लेता था। मेमसाहव का मतलब वह तत्काल समझ गया। साम को घोड़ा लाने में देरी करते देख हेली स्वयं अस्तवल में पहुंचा। साम और आंडी को झटपट घोड़े पर चढ़ने को कहकर वह अपने घोड़े पर चढ़ने लगा, परन्तु उसका पीठ पर वैठना था कि घोड़ा एकदम उछल पड़ा और वह नीचे जमीन पर आ गिरा। हेली को पटक कर घोड़ा मैदान की ओर भागा। आंडी, साम तथा शेल्वी के दूसरे नौकर "अरे, घोड़ा भाग गया ! पकड़ो, पकड़ो !" चिल्लाते उसके पीछे दौड़ने लगे। इस तरह दोपहर दिन चढ़ आया। तीसरे पहर साम घोड़े को पकड़ कर हेली के पास आया। हेली साम को डांट बतलाकर बोला, "तूने हमारे तीन घंटे योंही बरबाद कर दिये। अब फौरन घोड़े पर सवार होकर हमारे साथ चलो।"....

साम बोला, "आपका घोड़ा पकड़ने में जो मुसीबत मुझे उठानी पड़ी, उसे मेरा जी ही जानता है। और क्या कहूं ! आपको बड़ी जल्दी थी, इसीसे मैंने इतनी मेहनत की। मेरी तो जान ही निकल गई। आपका काम था, इसलिए कर दिया। अगर दूसरे का होता तो कभी नहीं करता; पर बिना पेट में दाना पड़े नहीं चला जायगा। घोड़े भी बहुत थक गए हैं। कोई खटके की बात नहीं है। इलाइजा तेज नहीं चल सकती। भोजन के बाद चलने पर भी उसे चुटकी बजाते पकड़ लेंगे।"

इसी समय शेल्वीसाहव की मेम हेली के पास आकर बड़ी नम्रता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से बोली, "महाशय, दोपहर दिन बीत चला है। अब बिना खाये, भूखे-प्यासे जाना तो ठीक न होगा। कृपा करके आज हमारे यहां भोजन कीजिये।"

सच तो यह है कि शेल्वी की मेम हेली-सरीखे नर-पिशाच से बात तक करने से नफरत करती थी; पर आज उसके साथ बैठकर भोजन तक करने में उसे घृणा नहीं हुई। व्यावहारिक कामों में हेली अपने को बड़ा चतुर समझता था, पर स्त्री की चतुराई समझना कठिन काम है। जो हेली दुनिया को चराता फिरता है, आज वही स्त्री के फन्दे में फंस कर स्वयं ठगा गया।

७ : : माता का रोमांचकारी पराक्रम

श्रीमती शेल्वी के अनुरोध पर हेली भोजन के लिए ठहर गया। पर उधर इलाइजा तेजी से क़दम बढ़ाती चली जा रही थी। उसकी उस समय की दुर्दशा सोच कर पत्थर का दिल भी पिघल जाता है। इस संसार में इलाइजा का कोई नहीं है। उसका पति घोर अत्याचार से तंग आकर भागने की फिक्र कर रहा है, पर भाग न पाया तो आत्म-हत्या कर लेगा। अब इस जन्म में इलाइजा को पति के दर्शन की आशा नहीं है। यह संसार इलाइजा के लिए अपार समुद्र है। उसे मालूम नहीं कि सांसारिक घटना-स्रोत उसे किधर बहा ले जायगा। इस संसार-समुद्र में उसके लिए कोई अवलम्ब, कोई ठिकाना, नहीं है। वह लड़के को गोद में लेकर विशाल संसार-सागर में कूद पड़ी है। पर सब प्रकार से आश्रय-हीन होते हुए भी उसके जीवन का एक लक्ष्य है। कोई ठिकाना न रहने पर भी यदि मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य रहे, तो उस तक पहुंचने के उद्योग में वह किसी कष्ट को कष्ट नहीं समझता, किसी यंत्रणा को यंत्रणा नहीं मानता। पर जिसके जीवन का कोई लक्ष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या कोई उद्देश्य ही नहीं है, ऐसा मनुष्य संसार में पग-पग पर कष्टों का अनुभव करता है, सब प्रकार के भोग उसके लिए दुर्भोग हो जाते हैं।

दास-व्यवसायी के हाथ से सन्तान की रक्षा करना ही इलाइजा के जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। जीवन के इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसे कोई भी कष्ट, कष्ट नहीं लगता—किसी भी दुःख की उसे परवा नहीं। दुबली-पतली इलाइजा छह वरस के वालक को गोद में लिये बेतहाशा चली जा रही है। वालक पैदल चलने में समर्थ था; पर उसके छिन जाने के भय की भावना उसके मन में ऐसी जम गई थी कि एक वार भी वालक को गोद से नीचे नहीं उतारा। कुछ दूर चलती और फिर पीछे घूमकर देखती जाती कि कहीं कोई आता तो नहीं है। पेड़ के पत्ते के गिरने की आहट सुनते ही चौंक पड़ती और पीछे फिर कर देखती हुई, "ईश्वर, रक्षा करो, ईश्वर, रक्षा करो!" कहकर चिल्ला उठती। वालक ने एक वार आंखें खोलीं, पर इलाइजा ने उससे कहा, "चुप रह, नहीं तो पकड़ा जायगा।" वालक तत्काल उसके गले से चिपट कर निद्रित-सा हो गया। स्नेह की भी कैसी विचित्र शक्ति है! वालक के अंग-स्पर्श से इलाइजा के शरीर में नया बल आ गया। मानसिक अवस्था मनुष्य को कितना बलवान बना सकती है, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। जो लोग यह कहते हैं कि शारीरिक बल के बिना कोई काम नहीं हो सकता, वे भूल करते हैं। मानसिक शक्ति निर्वल को भी सबल बना देती है। शरीर पर मन का अपूर्व प्रभाव और प्रभुत्व होता है। मानसिक बल कभी-कभी रक्त, मांस और नसों को इस्पात की भांति दृढ़ और मज़बूत बना देता है। वीर-शिरोमणि नेपोलियन का अपूर्व वीरत्व इसी मानसिक बल का फल था। मानसिक बल के बिना शरीर अनायास अवसन्न हो जाता है। मानसिक बल सदैव शरीर में बिजली का-सा काम करता है और शरीर में तेज बनाये रखता है। जो मानसिक वल से हीन है, वही वास्तव में निर्बल है।

इलाइजा शरीर से अवश्य दुर्बल थी, पर उसमें मानसिक बल की कमी न थी। वह वालक को गोद में लिये हुए तेज चाल से कोई दस-बारह कोस चली गई। क्षण-भर भी कहीं ठहर कर उसने दम न लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्य-साधन की प्रबल इच्छा ने ही इस अबला के हृदय को सबल बना दिया था। उसके आन्तरिक उत्साह ने ही उसके शरीर में यह अलौकिक पराक्रम भर दिया था। इस तरह चलते-चलते रात बीत चली। सड़क पर चारों ओर घोड़ा-गाड़ियां दौड़ने लगीं। इलाइजा ने यह सोच कर कि अब लड़के को गोद में लिये रहने से उस पर लोग घर छोड़कर भागी हुई होने का सन्देह करने लगेंगे, लड़के को गोद से उतार दिया और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। बालक उसके पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ दूर पर एक बाग था, वहीं जाकर वह अपने साथ लाई हुई खाने-पीने की चीजें बालक को खिलाने लगी। पर स्वयं कुछ न खाया। बालक देख रहा था कि उसकी माता ने कुछ नहीं खाया।

बालक ने स्वयं अपने हाथों से माता के मुंह में खाने की कुछ चीजें डाल दीं, पर इलाइजा से खाया नहीं गया। दुःख, भय और त्रास से उसका कण्ठ सूख गया था। बालक ने खाने को कहा तो वह बोली, "बेटा, जबतक तुझे किसी सुरक्षित स्थान पर लेकर नहीं पहुंचती हूं तबतक मैं कुछ खा-पी नहीं सकूंगी।" बालक के खा लेने पर इलाइजा फिर ओहियो नदी की ओर चल पड़ी। वह सोच रही थी, ओहियो नदी पार करते ही उसकी सारी आशंकाएं दूर हो जायंगी। धीरे-धीरे और भी दो-तीन स्थानों को लांघकर वह एक बिल्कुल अनजान जगह में जा पहुंची। यहां किसी के संदेह करने की अधिक संभावना न रही। इलाइजा अफ्रीकी दास-दासियों की भांति काली न थी। वह अंग्रेज पिता के वीर्य से पैदा हुई थी। देखने में वह कोई अंग्रेज कुलवधू-सी जान पड़ती थी। इससे इस अनजान स्थान में इलाइजा की विपत्ति की आशंका कुछ कम हो गई। पर अभी तक विपत्ति की आशंका ने ही तो उसके शरीर को ताकत दे रखी थी। आशंका घटने पर उसका शरीर भी क्रमशः शिथिल पड़ने लगा। धीरे-धीरे भूख-प्यास और थकावट ने उसे मजबूर कर दिया। यहां किसी के पहचानने का खटका नहीं है, यह सोचकर उसने निकट की एक दूकान में जाकर कुछ खाने की चीजें लीं और बालक के साथ खा-पीकर फिर चलने लगी। सूर्यास्त से कुछ पहले वह ओहियो नदी-तट के एक गांव में जा पहुंची। तट पर जाकर चाह-भरी आंखों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह बार-बार ओहियो नदी के दूसरी पार की ओर देखने लगी । अब उसे केवल नदी पार करने की फिक्र थी । बरफ गल गई थी । नाव बिना नदी पार होना असंभव था । किनारे के पास थोड़ी ही दूर पर एक सराय दिखाई दी । वहां एक बुढ़िया बैठी-बैठी कुछ कांटे-चम्मच साफ कर रही थी । इलाइजा ने बुढ़िया से पूछा कि पार जाने के लिए नाव मिलेगी या नहीं ? बुढ़िया बोली, "नाव मिलने की कोई सम्भावना नहीं है ।" इससे इलाइजा निराश हो गई । वृद्धा ने उसकी यह दशा देखकर पूछा, "क्या उस पार के किसी गांव में तुम्हारा कोई कुटुम्बी बीमार है ?" इलाइजा ने कहा, "कल मुझे खबर मिली कि मेरे एक बच्चे की हालत बहुत खराब है, इसीसे मैं घबराई हुई जा रही हूं । अगर आज नदी पार न कर सकी तो उसे देख पाऊंगी, इसमें सन्देह है ।"

बुढ़िया ने उसकी यह कातरोक्ति सुनकर एक पुरुष को बुलाया और कहा, "सालोमन भैया, जरा देखना तो, नदी पार करने के लिए कोई नाव है क्या ?"

सालोमन ने कहा कि आज पार होने की आशा नहीं है । कल कोई नाव मिल सकती है । इसके बाद इलाइजा, बुढ़िया के कहने पर रात वहीं बिताने को राज़ी हो गई । उसी सराय की एक कोठरी में जाकर उसने बालक को एक तरफ सुला दिया और स्वयं उसकी बगल में बैठकर सोचने लगी ।

उधर शेल्बीसाहब के घर भोजन करने के लिए गुलामों का व्यापारी हेली फंस गया । शेल्बीसाहब की मेम ने क्लोई को बहुत शीघ्र भोजन बनाकर लाने की आज्ञा दी । पर आज अजीब हालत है । क्लोई से झटपट भोजन तैयार ही नहीं हो पा रहा । कभी चूल्हे की आग बुझ जाती है तो कभी बनती हुई चीज ही बिगड़ जाती है और वह फिर दोबारा बनानी पड़ती है । इस तरह बड़ी गड़बड़ होने लगी । उधर शेल्बीसाहब भोजन की शीघ्र तैयारी के लिए आदमी-पर-आदमी भेज रहे हैं । एक दास आकर बोला कि देर होते देख कर हेलीसाहब बहुत घबरा रहे हैं । क्लोई झुंझलाकर बोली, "घबरा रहे हैं तो मेरी बला से, भाड़-चूल्हे में जांय, हम क्या करें !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहां जैक नाम का एक दास बैठा था। वह बोला, "भाड़-चूल्हे में ही क्यों, वह यम के यहां जाने को छटपटा रहा है। उसे अभी नरक की हवा खानी पड़ेगी।" क्लोई ने फिर कहा, "उस शैतान के लिए नरक ही ठीक है। वह सैकड़ों गरीबों के गले पर छुरी फेरता है। वह राक्षस बच्चे को जबरदस्ती मां की गोद से छीन लेता है। स्त्री को स्वामी-हीन और शिशु को पितृ-हीन करता है। क्या ईश्वर अंधा है? उस पापी को अवश्य नरक की भयंकर आग में तड़पना पड़ेगा।"

जैक बोला, "चाची, तू बहुत ठीक कहती है। नालायक की लाश को गीदड़ों और कुत्तों से नुचते देखकर मैं बड़ा खुश होऊंगा।"

इसी बीच टाम वहां आ पहुंचा। उसके हृदय में अलौकिक धर्म की धारा बहती थी। क्लोई से टाम कहने लगा, "हमारी किस्मत में जो बदा था सो हुआ। इसके लिए किसी दूसरे आदमी को कोसना और उसके विरुद्ध दिल में बुरा भाव पोसना अच्छा नहीं।"

टाम ने अपनी स्त्री से बात-चीत शुरू की ही थी कि एक नौकर उसको शेल्वीसाहब के पास बुलाने पहुंचा। शेल्वी ने हेली की ओर संकेत करके कहा, "टाम, मैंने इनके हाथ तुम्हें बेचा है। यह अभी किसी काम से जा रहे हैं। आज तुम्हें नहीं ले जा सकेंगे। दो-चार दिन बाद आकर ले जायंगे। जब यह लेने आवें तो तुरन्त इनके साथ चले जाना। नहीं गये तो अपनी लिखा-पढ़ी के अनुसार इनको मुझे एक हजार हरजाना देना पड़ेगा। देखो, इस बात में ग़लती मत करना।"

टाम बोला, "आपकी आज्ञा सिर-माथे है। मैं छोटी उम्र में आपके यहां आया था। जिस समय आप एक साल के थे, उसी समय आपकी माता आपको मुझे सौंपकर बोली, "टाम, यही भविष्य में तुम्हारा मालिक होगा। इसे जतन से पालना। उस समय से आपको गोदी में खिलाया, आपको पाला-पोसा और आपका सारा काम किया। पर कहिये, आजतक क्या कभी किसी काम में मैंने आपको धोखा दिया है?"

टाम की यह बात सुनकर शेल्वी का सिर झुक गया। उनकी आंखों में पानी भर आया। कहने लगे, "टाम, तुमने हमेशा बड़ी सचाई से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा काम किया है, पर कर्ज में फंस जाने के कारण लाचारी में मुझे तुमको वेचना पड़ा है।"

शेल्वीसाहव की मेम ने कहा, "टाम, तुम घवराना मत, मैं रुपया इकट्ठा करके फिर तुम्हें जरूर इनसे खरीद लूंगी।"

साथ ही मेम ने हेली से कहा, "टाम को आप जिसके भी हाथ वेचें कृपया उसका नाम-पता हमें अवश्य लिख भेजियेगा।"

हेली ने कहा, "मैं तो दस रुपयों के फायदे के लालच से यह काम करता हूं। शायद कुछ दिनों बाद फिर आप ही के हाथ वेच दूं।"

शेल्वीसाहव की मेम हेली-सरीखे नर-पिशाच से बात करने में बड़ी नफरत करती थी। फिर भी आज वह बहुत-से विषयों पर उससे बातें करने लगी। इस वातचीत का उद्देश्य था कि किसी तरह समय वीत जाय।

दोपहर के जब दो वज गये, तब साम और आंडी अपने घोड़े लेकर दरवाजे पर आ गये। शेल्वीसाहव और उनकी मेम से विदा मांग कर हेली इलाइजा को पकड़ने चला। घोड़े पर चढ़ते समय उसने साम से पूछा, "क्या तुम्हारे मालिक के यहां शिकारी कुत्ते हैं?" साम खूब जानता था कि उनके यहां एक भी शिकारी कुत्ता नहीं है, लेकिन फिर समय गुजारने के लिए वह दुष्टता से वोला, "हां, हमारे यहां बहुत कुत्ते हैं। आप ठहरिये, मैं अभी लाता हूं।" और फिर कई पालतू कुत्ते लाकर उसके सामने पेश कर दिये। उन्हें देखकर हेली बहुत कुढ़ा और बोला, "अरे गधे, ये कुत्ते हम नहीं चाहते। भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए शिकारी कुत्ते हुआ करते हैं। तू बहुत बदमाश है। चलो, तुम्हारे कुत्ते लाने की जरूरत नहीं है।" थोड़ी दूर जाकर हेली ने कहा, "ओहियो नदी की ओर चलो।"

साम ने बड़ी गम्भीरता से मुंह बनाकर कहा, "जनाब, नदी को दो रास्ते गये हैं, एक तो अच्छा खासा नया रास्ता है, दूसरा खराब हो गया है। इससे अब उधर होकर बहुत लोगों का आना-जाना नहीं है। बतलाइये, आप किस रास्ते से चलना चाहते हैं?"

साम की दो रास्तों की बात सुनकर आंडी की हँसी न रुकी। वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिलखिलाकर हँस पड़ा। पर साम फिर बड़ी गम्भीर सूरत बनाकर आंडी को डांट कर कहने लगा, "आंडी, तू बड़ा बेवक़ूफ है। तू वक़्त-बेवक्त कुछ भी नहीं देखता। यह भी क्या हँसने का वक्त है? जिसमें हेलीसाहब का काम हो जाय, वही देखना चाहिए।" वह फिर हेली से कहने लगा, "जनाब, मालूम होता है कि इलाइजा खराब रास्ते ही गई है, क्योंकि उधर बहुत लोगों का आना-जाना नहीं है। लेकिन हम लोगों को उस रास्ते से जाने में सुभीता न होगा। वह रास्ता जगह-जगह से कट गया है। इससे चलिये, हम लोग इस नये रास्ते से ही चलें। अच्छे रास्ते से ही जाने में ठीक रहेगा।"

साम की ये बातें सुनकर हेली सोचने लगा कि इलाइजा निर्जन रास्ते से ही भागी होगी, पर यह लड़का बड़ा धूर्त्त है। पहले भूल से उस रास्ते का नाम ले गया, अब बहकाकर मुझे दूसरे रास्ते से ले जाना चाहता है, इससे पुराने से ही जाना ठीक होगा। सचमुच इस संसार में वहमी आदमी एकाएक झूठ-सच का निर्णय नहीं कर सकते। हेली ने बीहड़ रास्ते से ही जाना ठान कर साथियों को उसी ओर चलने की आज्ञा दी।

साम ने बहुत मना किया, "साहब, इस रास्ते से मत चलिये। जरूर कहीं-न-कहीं भटक जायंगे। रास्ता साफ नहीं है। जगह-जगह कट गया है।"

साम की इन बातों से हेली का सन्देह और बढ़ गया। वह साम को डपटकर कहने लगा, "हम तेरी बात नहीं सुनना चाहते। इसी रास्ते चलना होगा।"

असल में वह सुनसान रास्ता बहुत दिन से बन्द हो गया था। साम यह बात खूब जानता था। उसकी चालाकी न समझ कर हेली ने उसी रास्ते से जाने का तय किया, यह देख वह मन-ही-मन खुश होकर हँसने लगा। थोड़ी दूर चला और फिर बोला, "अजी साहब, यह रास्ता बड़ा खराब है। इससे चलना दुश्वार मालूम होता है।" उसकी बातों से हेली को बहुत ही क्रोध आ गया और वह कहने लगा, "तू चुप रह! तेरे कहने से हम रास्ता नहीं छोड़ेंगे।" इस पर साम चुप रह गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अत्यन्त नम्रता दिखाकर वोला, "तो जिधर से आपकी इच्छा हो, चलिये।"

इस तरह चलते-चलते साम और आंडी बीच-बीच में झूठ-मूठ चिल्लाने लगते, "वह रही इलाइजा !....देखो-देखो, कपड़ा दीख पड़ता है !...वह इलाइजा दीख पड़ती है।" इनकी चिल्लाहट से घोड़ा बार-बार चौंकता था, और वेकार देर होती थी। अन्त में करीव एक घण्टे के बाद वे एक लम्वे-चौड़े मैदान में पहुंचे। आगे बढ़ने का रास्ता न था, जो था वह वहीं खत्म हो गया था। तव साम ने हेली से कहा, "देख लीजिये साहव, मैंने आपसे पहले ही कहा न था कि यह रास्ता वन्द हो गया है। पर आपने मेरी बात सुनी नहीं। अपने यहां के रास्तों का हाल हम लोगों को अच्छी तरह मालूम है। आप दूसरी जगह के आदमी ठहरे। आपको इन बातों का क्या पता ?" हेली क्रोधित होकर कहने लगा "तू वड़ा बदमाश है। तूने यह सब जान-बूझकर किया है।"

साम ने इस प्रकार डांट खाकर धीरे-धीरे कहा, "साहव, मैंने तो आपसे पहले ही इस रास्ते से चलने को मना कर दिया था, पर आप नहीं माने तो मैं क्या करूं ? इसमें मेरा क्या कसूर है ?"

अब हेली क्या कहे ! असल में साम ने दो बार खुल्लमखुल्ला इस रास्ते से जाने को मना किया था। अब वे घोड़ों को घुमाकर अच्छे रास्ते की ओर जाने को वेग से बढ़े। शाम भी न हो पाई थी कि वे उसी सराय के सामने, जिसमें इलाइजा ठहरी थी, आ पहुँचे। इलाइजा को यहाँ पहुंचे एक ही घण्टा हुआ था। अपने बच्चे को सुलाकर वह खिड़की में खड़ी होकर नदी की ओर देख रही थी। इसी समय साम की निगाह उस पर जा पड़ी। हेली और आंडी साम के पीछे थे। उन्हें इलाइजा नहीं दिखाई दी। साम ने बदमाशी से हवा में अपनी टोपी फेंक दी और जोरों से चिल्लाने लगा, "मेरी टोपी हवा में उड़ गई.... अरे, मेरी टोपी उड़ गई !" यह चिल्लाना इलाइजा को सुनाई पड़ा। उसने उधर आंखें घुमाते ही साम और हेली को देख लिया। फिर क्या था ! सोते बालक को गोद में लेकर उछलती हुई पीछे का दरवाजा खोलकर भागी। हेली ने उसे देख लिया। वह तत्काल घोड़े से उतरकर वाघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तरह उसके पीछे लपका। उधर इलाइजा के उस थके हुए शरीर में अकस्मात् मानो हजारों हाथियों का बल आ गया। वह बिजली की भांति तड़प कर निकट की ओहियो नदी में कूद पड़ी। जल पर उस समय बर्फ तैर रही थी। बर्फ पर कूदते ही वह हिम-खण्डों के साथ बहने लगी। उसके बोझ से बर्फ का टुकड़ा ज्योंही डूबने को होता कि वह कूद कर दूसरे टुकड़े पर जा पहुंचती। इस तरह एक खण्ड से दूसरे पर कूदती हुई आगे बढ़ने लगी। उसके जूते टुकड़े-टुकड़े हो गये। बर्फ़ की रगड़ से छिल कर उसके दोनों पैरों से खून बहने लगा। पर बालक को उसने ऐसी दृढ़ता से पकड़ रखा था कि एक बार भी वह गोद से छूटने न पाया।

थोड़ी ही देर में इलाइजा नदी को पार करके दूसरे किनारे पर पहुंच गई। वहां उसे एक आदमी किनारे पर खड़ा दिखाई दिया। उसने इलाइजा को हाथ पकड़कर किनारे पर चढ़ा लिया और पूछा, "तुम कौन हो ? तुम तो बड़ी बहादुर जान पड़ती हो।" इलाइजा ने आवाज से उसे पहचान लिया। वह शेल्बीसाहब के घर के पास ही कहीं खेती करता था। अतः इलाइजा ने उसका नाम लेकर कहा, "सिम, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ! मुझे बताओ कि मैं कहां छिप कर रह सकती हूं। मेरे इस बच्चे को मालिक ने बेच दिया है। खरीदार इसे पकड़ने आया है। सिम, तुम भी बाल-बच्चोंवाले हो।"

सिम ने कहा, "मुझसे जहां तक बनेगा, मैं तुम्हारा उपकार करूंगा। तुम्हें कोई खटका नहीं। निश्चिन्त हो जाओ। तुम पास के ही इस गांव में चली जाओ। सामने वह जो सफेद घर दिखाई दे रहा है, वहां जाने से तुम्हें शरण मिलेगी।"

इस पर इलाइजा सिम को आशीर्वाद देती हुई बच्चे को छाती से लगाकर उसी घर की ओर चली।

इलाइजा के चले जाने पर सिम सोचने लगा—इसे मैंने पकड़ा नहीं, उल्टा भागने का रास्ता बता दिया। इससे कहीं शेल्बीसाहब मुझ पर नाराज न हो जांय। बला से, हो जायंगे तो क्या है ! इस आफत की मारी स्त्री पर क्या कोई सख्ती कर सकता है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिम अपढ़ और गंवार है। उसपर बनावटी धर्म की छाया नहीं पड़ी है। उसके हृदय में ऐसे भाव का आना असम्भव नहीं है। पर यदि कहीं वह पढ़ा-लिखा शहरी होता तो प्रचलित कानून के गौरव की रक्षा के लिए जरूर इलाइजा को पकड़कर पुलिस के हवाले कर देता।

हम लोग अब सिम और इलाइजा से विदा होकर पाठकों को हेली की खबर सुनाना चाहते हैं। इलाइजा को जल्दी-जल्दी वर्फ पर जाते देख कर हेली भौचक्का-सा रह गया। साम तथा आंडी से बोला, "अरे, उसके सिर पर भूत सवार है। देखो, ठीक बिल्ली की तरह कूदतीजा रही है!"

हेली की बात सुनकर दोनों हँस पड़े। इस पर हेली दोनों को कोड़ा लगाने के लिए उतारू हो गया। वे ज़रा हटकर बोले, "साहब, हमारा काम हो गया, अब हम जाते हैं। घोड़ा लेकर अधिक दूर जाने से मेम साहब नाराज होंगी। यहां और ठहरने की जरूरत नहीं दीख पड़ती।" इतना कहकर दोनों हँसते हुए वहां से चल दिए।

८ : : पकड़नेवालों की तैनाती

सन्ध्या के पहले ही इलाइजा नदी पार करके दूसरे किनारे पहुंच गई। धीरे-धीरे अंधेरा छा गया। इससे अब वह हेली को दिखाई न पड़ी। हेली निराश होकर सराय में वापस चला आया। उस घर में अकेला बैठा-बैठा अपने भाग्य को कोसता हुआ मन-ही-मन कहने लगा, "इस संसार में न्याय नहीं है। यदि न्याय होता तो मेरे इतने रुपयों का नुकसान क्यों होता ?"

इसी समय वहां दो आदमी और आ गये। उनमें एक ज्यादा लम्बा था। उसके चेहरे से निर्दयता टपकती थी। जान पड़ता था, मानो नरक का द्वारपाल है। उसके कपड़े और चाल-ढाल भी इसी बात की गवाही दे रहे थे। उसे देखकर हेली बहुत संतुष्ट हुआ। बोला, "लोकर, आज तो तुम बड़े मौके से आये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस आदमी का नाम टाम लोकर था। पहले हेली इसके साझे में काम करता था। लोकर का दूसरा साथी कद का नाटा था। उसका नाम था मार्क। हेली ने उसे देखकर पूछा, "लोकर, यह आदमी तुम्हारा साझीदार जान पड़ता है।"

इस पर लोकर ने हेली और मार्क दोनों का आपस में परिचय करा दिया। फिर वह तीनों व्यवस्थापिका सभा के मेम्बरों की भांति मेज पर बैठ गये। पहले हेली ने अपनी दुःख-कहानी बड़े करुण शब्दों में आरम्भ की। वार-बार वह अपने भाग्य को कोसकर कहने लगा, "औरत की जाति बड़ी दुष्ट होती है। उसे न्याय-अन्याय का जरा भी विचार नहीं होता। हमने कितने रुपये देकर तो इसके छोकड़े को खरीदा और वह औरत एक छोकड़े की माया न तज सकी। देखो, उस औरत का कितना अन्याय है? वह छोकड़े को लेकर भाग गई!"

हेली की बातें सुनकर लोकर का साथी मार्क बड़ी गम्भीरता से अपना मन्तव्य प्रकट करने लगा, "आज-कल खेती-बाड़ी, वाणिज्य, शिल्प और विज्ञान आदि सभी विभागों में नये-नये आविष्कार हो रहे हैं। यदि सन्तान की मोह-माया न रखनेवाली जाति की स्त्रियों के पैदा करने की कोई कल निकल आवे तो उससे संसार का बड़ा भला हो और सब भांति के आविष्कारों की अपेक्षा ऐसी स्त्रियां पैदा करने का आविष्कार सबसे अधिक उपयोगी होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।"

हेली ने उसका हृदय से अनुमोदन करके कहा, "तुम बहुत ठीक कहते हो। कसम है, ऐसी औरतों के पैदा हुए बिना तो रोजी-रोजगार करना दुश्वार है। छोटे-छोटे बच्चे माताओं के सिर का एक बोझ ही हैं। भाई, तुम्हीं कहो, बच्चों से औरतों को क्या लाभ होता है? कुछ भी नहीं। लेकिन वे बच्चों को छोड़ना नहीं चाहतीं। वे यह भी नहीं समझतीं कि दुःख देने के सिवा बच्चे उनका कोई फायदा नहीं करते, खास करके चुपचाप लड़कों को खरीदारों के हवाले न कर देने से कितना पाप लगता है, यह उन अल्हड़ों के दिमाग में नहीं बैठता।"

हेली की बात समाप्त होते ही मार्क फिर कहने लगा, "भाई,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिछले माह मैंने एक रोगी लड़के के साथ एक दासी मोल ली थी। सोचा था कि रोगी लड़के को मां को गोद से लेकर बेचने में उसकी मां कोई आपत्ति नहीं करेगी। लेकिन स्त्रियों की माया समझ में नहीं आती। रोगी लड़कों पर स्त्रियों का स्नेह और अधिक होता है। भाई, क्या कहूं, उस रोगी लड़के के बेचने के थोड़े ही दिनों बाद उसकी मां भी मर गई।"

मार्क की यह बात सुनते ही हेली ने कहा, "तुम्हारे सिर की कसम, भाई, सच कहता हूं, हम पर भी एक बार ऐसी ही बीती थी। हमने एक बार एक अन्धे छोकड़े और उसकी मां को खरीदा था। खरीदने के समय छोकड़े के अंधे होने का पता नहीं था, पीछे से पता चलने पर उसे दूसरी जगह बेच दिया। फिर क्या था ? उसकी मां उसे गोद में लेकर नदी में डूबकर मर गई। हमारे सारे रुपये पर पानी फिर गया।"

टाम लोकर अबतक ब्रांडी की बोतल में ही मस्त था। अबतक उसे बातें करने की फुर्सत न मिली थी। जब पूरी बोतल खाली कर चुका तब बोला, "भाई, मेरे काम का तो ढंग ही निराला है। लड़का-लड़की पुरुष-स्त्री, कोई हो, मैं पहले से ही कह रखता हूं कि बेचने के समय ज़रा भी रोना-पीटना सुना कि मारे बेंतों के चमड़ी उधेड़ दूंगा। युवतियों को खास तौर से समझा देता हूं कि तुम्हारी गोद के बच्चे पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। मैंने रुपया देकर मोल लिया है, जो जी चाहेगा, करूगा। इससे फिर किसी को चूं करने का साहस नहीं होता और अगर कोई ऐसी निकलती है कि समझाने पर भी रोने-पीटने से बाज़ नहीं आती तो मेरे ये मजबूत हाथ उसे दुरुस्त करने के लिए तैयार रहते हैं।" इतना कहते-कहते उसने मेज पर इतने जोर से हाथ से पटका कि मेज के टुकड़े-टुकड़े हो गये।

हेली ने कहा, "लोकर, हंटरों से यों खबर लेने को हम कोई तुम्हारी अक्लमन्दी नहीं समझते। ये बातें कोई कारोबार की नहीं हैं। समझदार लोग कभी मार-पीट नहीं करते। आत्मा सब में है। चमड़ी उधेड़ने से तुम्हारी और उसकी सबकी आत्मा में बराबर दर्द होता है। हमको इस बात का तजुरबा है कि बिना मार-पीट के कारोबार में ज्यादा फायदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है ।"

हेली की यह बात लोकर को बहुत चुभी। उसने कहा, "अरे बच्चू, मेरे सामने बहुत 'आत्मा-आत्मा' मत बको। तेरी आत्मा का हाल मैं खूब जानता हूं। तेरे शरीर को पीसकर चलनी में छान डालने से भी आत्मा का एक कण नहीं निकलेगा।"

हेली ने मुंह बनाकर कहा, "लोकर, इतने झुंझलाते क्यों हो ? मुनासिब बात कहने से जल कर खाक हो जाते हो !"

अब लोकर और भी बिगड़ कर बोला, "तेरी धर्म की बातें मैं नहीं सुनना चाहता। तू मुझे उपदेश देने चला है ? मैं तेरी नस-नस पहचानता हूं। तू अपने मन में अपने को बड़ा धार्मिक समझता है, लेकिन क्या मुझे खबर नहीं कि तेरा धर्म और भलमनसी लोगों को ठगने के लिए एक तरह का जाल है। लोगों को कर्ज देते समय तू बड़ी भलमनसी दिखाकर मीठी-मीठी बातें बनाता है, और जब रुपया वसूल करने का समय आता है तब तू गला घोंटकर आदमी को मार डालता है और उसका सब-कुछ हजम कर जाता है। यही है न तेरी आत्मा ?"

बात बढ़ती देख टाम लोकर के साथी मार्क ने दोनों हाथ फैलाकर कहा, "भाई, इन झगड़े-टंटों में क्या रखा है ! कुछ काम की बातें करो। सबके अपने अलग-अलग मत होते हैं। हेली का अच्छापन उसकी दो-ही-चार बातों से मुझे मालूम हो गया। अब हेली ने जो बात कही है, उसे झटपट तय कर डालो।" फिर हेली से बोला, "भाई, उस स्त्री को पकड़ाने पर क्या दोगे ?"

"उस औरत से मेरा क्या मतलब ! मैं तो सिर्फ लड़के को चाहता हूं। उस लड़के को खरीदकर ही मुझे बेवकूफ बनना पड़ा है।"

लोकर ने कहा, "तुम बच्चू, आज के नहीं, हमेशा के बेवकूफ हो।"

मार्क ने कहा, "लोकर, तुम फिर टायं-टायं करने लगे। इन सब बखेड़ों से क्या मतलब ? मतलब से मतलब रखो, देने-लेने की बातें करो।"

हेली बोला, "हाँ, बोलो न, तुम लोग कितना चाहते हो ? हम कहते हैं कि लड़के को बेचने पर जो मुनाफा मिलेगा, उसमें से दस रुपया सैकड़ा तुम लोगों को देंगे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकर ने कहा, "अजी, अपनी ये चालाकियां रहने दीजिये, हमसे नहीं चलेंगी। तुम्हीं बड़े उस्ताद हो, उसकी खोज में सिर हम खपायेंगे, और जो न पकड़ पाया तो हमारी सारी मेहनत मिट्टी में मिली। पहले हम लोगों की मेहनत के पचास रुपये हाथ पर रखो, तब बात करो।"

मार्क बोला, "इसमें क्या कहना है! यह तो कायदा ही है। कहीं बिना बयाना दिये कोई काम होता है? मेरा तो वकालत का पेशा ही ठहरा, मैं यह सब खूब जानता हूं।"

बड़ी दलील और हुज्जतों के बाद हेली ने उन लोगों को पचास रुपये दिये। मार्क और लोकर ने उस भगोड़ी को पकड़ने का बीड़ा उठाया। वकालत ही की भांति यह पेशा भी उस समय बड़े गौरव का समझा जाता था। इससे केवल रुपयों ही की आमद नहीं थी, बल्कि यह पेशा देश-हितैषिता और देशी कानून के गौरव की रक्षा का समझा जाता था, अतः उस काम का बीड़ा उठाकर उनके लज्जित होने का कोई कारण न था। हेली से रुपये पाकर वे नदी पार करने का उपाय खोजने लगे।

९ :: साम की वक्तृत्व-कला

हेली को ओहियो नदी के किनारे ही छोड़कर साम और आंडी घोड़े लेकर घर की ओर लौट पड़े थे। राह में साम को बड़ी हँसी आ रही थी। उसने आंडी से कहा, "आंडी, तू अभी कल का लड़का है। आज मैं न होता तो तुझमें इतनी अक्ल कहां थी? देख, दो रास्तों की बात बनाकर मैंने हेली को दो घंटे तक कैसा हैरान किया। यह चाल चल कर दो घंटे की देर न की जाती तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती।"

इस प्रकार बातें करते हुए रात के दस-ग्यारह बजे वे शेल्बी के घर पहुंच गये। घोड़े की टापों की आहट कान में पड़ते ही श्रीमती शेल्बी बड़ी तेजी से घर के बाहर आईं और उत्कण्ठा से बार-बार पूछने लगीं, "हेली और इलाइजा कहां हैं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साम ने मुस्कराते हुए कहा, "हेलीसाहब मुंह लटकाये सराय में चित पड़े हैं।"

"और इलाइजा का क्या हुआ ? वह कहां गई ?"

"ईश्वर की कृपा से इलाइजा ओहियो नदी पार करके कैनन प्रदेश में पहुंच गई है।"

"कैनन प्रदेश में पहुंच गई ! मतलब ?" शेल्बीसाहब की मेम ने समझा कि शायद इलाइजा की मृत्यु हो गई।

"मेमसाहब, ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा आप करता है। इलाइजा ओहियो नदी को मानो साक्षात विमान पर चढ़कर पार कर गई। मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी अद्‌भुत घटना कभी नहीं देखी।"

श्रीमती शेल्बी से इस प्रकार बातें करते-करते साम के हृदय में धर्म-भाव लहराने लगा। वह इलाइजा के भागने के वृत्तान्त को धर्म-शास्त्र के भांति-भांति के रूपकों से सजा कर कहने लगा। इतने में शेल्बी-साहब ने स्वयं बाहर आकर साम से कहा, "घर के अन्दर जाकर मेम-साहब से सब बातें कहो।" फिर मेमसाहब से बोले, "तुम इतनी घबरा-कर इस सर्दी में बाहर क्यों चली आई हो ? सर्दी लग जायगी। अंदर जाकर सब बातें क्यों नहीं सुन लेतीं ? तुम तो इलाइजा के लिए बहुत ही घबरा रही हो।"

मेम ने कहा, "आर्थर, मैं स्त्री हूं, मेरे भी बच्चा है। सन्तान का स्नेह माता के सिवा दूसरा नहीं जान सकता। इलाइजा की कैसी दुर्दशा हुई और हम लोगों ने उसके साथ कैसा कठोर व्यवहार किया, इसे सन्तान-वत्सल माता और पतिव्रता स्त्री के अलावा और कोई नहीं समझेगा। सच पूछो तो इलाइजा के साथ ऐसी निर्दयता का व्यवहार करके मैं और तुम दोनों ईश्वर के सामने पाप के भागी हैं।"

"पाप ? इसमें पाप की क्या बात है ? हारे दर्जे उसे बेचना पड़ा। इसमें भी पाप है ?" शेल्बी बोला।

"आर्थर, मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहती। मैं अपने मन में भली भांति समझती हूं कि हम लोगों ने इलाईजा पर घोर अत्याचार किया है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसपर शेल्बी ने मेम से और कुछ नहीं कहा। केवल साम से बोले, "अन्दर आकर मेमसाहब को इलाइजा के भागने का हाल विस्तार से सुना दो।"

साम कहने लगा, "मैंने अपनी आंखों से देखा है। इलाइजा बिना नाव-बेड़े के ओहियो नदी को पार कर गई। बर्फ के टुकड़े बह रहे थे, उन्हीं पर होकर गई। एक टुकड़ा डूबने को होता तो वह झट दूसरे पर कूद जाती। इस तरह बर्फ पर कूदती-फांदती उस पार निकल गई। उधर एक आदमी ने हाथ पकड़कर उसे किनारे पर कर लिया। इसके बाद अंधेरा ज्यादा हो जाने के कारण और कुछ नहीं दिखाई दिया।"

शेल्बी ने विस्मित होकर कहा, "यह बड़े आश्चर्य की बात है! वह बहती हुई बर्फ पर से कूदती हुई चली गई? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि आदमी सहज में यों जा सकता है।"

साम बोला, "हुजूर, सहज में कैसे जाया जा सकता है? ईश्वर की विशेष कृपा के बिना कोई भी इस तरह से नहीं जा सकता। सुनिये, संक्षेप में सारा हाल सुनाता हूं। आप सुनकर चकित रह जायंगे। साक्षात ईश्वर के सहारे के बिना यह नहीं हो सकता। मैं, आंडी और हेलीसाहब शाम के कुछ पहले ही ओहियो नदी के इस पार पहुंचे। मैं सबके आगे-आगे था। वे दोनों कुछ पीछे थे। मैंने ही सबसे पहले इलाइजा को देखा। वह पास की सराय के जंगले के सहारे खड़ी थी। मैंने झूठ-मूठ सिर की टोपी फेंक दी, और 'हवा में उड़ी-उड़ी' करके चिल्लाने लगा। जिंदे की तो बात क्या, मेरी इस चिल्लाहट से मुर्दा भी जाग सकता था। बस, इलाइजा हम लोगों की ओर देखते ही कोई पिछवाड़े के दरवाजे से भाग चली। हेलीसाहब की नजर पड़ गई। वह उसके पीछे ऐसे लपका जैसे भेड़ के पीछे बाघ दौड़ता है। इलाइजा ने जब देखा कि अब तो वह पकड़ी जायगी, कोई उपाय नहीं रहा, तो नदी में कूद पड़ी और बहती हुई बर्फ पर से कूदती हुई उस पार निकल गई।"

शेल्बी की मेम बड़े ध्यान से सब बातें सुन रही थीं। वह बोल उठीं, "भगवान, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है। तुम्हें सहस्रों बार धन्यवाद है। तुम्हारी ही कृपा से आज इलाइजा की जान बची।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना कहकर फिर साम से पूछा, "इलाइजा का लड़का तो जिन्दा है ?"

साम बोला, "जी हां, वह जिन्दा है। पर आज मैं न होता तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती। ईश्वर भी बड़ा कारसाज़ है। अच्छे कामों के लिए वह कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही देता है। आज सवेरे घोड़े कसने में उत्पात मचाकर हेली के दो घण्टे खराब किये और फिर राह में कम-से-कम अढ़ाई कोस का उसे वेकार चक्कर दिलाया। ऐसा हैरान किया कि उसे भी याद रहेगा। यह सब ईश्वर ही की कृपा समझनी चाहिए।"

शेल्वीसाहब साम के मुंह से ईश्वर की दया की यह व्याख्या सुन कर बहुत ही नाराज़ हुए और साम से कहने लगे, "यदि तू फिर कभी हमारे यहां रहते हुए ईश्वर की विशेष दया का ऐसा काम करेगा, तो तेरी खूब मरम्मत होगी। किसी का काम करना स्वीकार करके इस प्रकार कपट करना बड़ा अन्याय है। मैं तुम्हारी ऐसी दुष्टता और धोखेबाजी के काम को नहीं सराह सकता।"

श्रीमती शेल्वी को अपने पक्ष में देखकर साम बड़ी गम्भीरता से कहने लगा, "हुजूर, आप या मेमसाहब थोड़े ही ऐसा करती हैं। हम नौकर-चाकर कभी-कभी ऐसी दुष्टता किया ही करते हैं।"

साम के इस काम में श्रीमती शेल्वी का भी हाथ था। अतः साम को वहां से शीघ्र हटाने के लिए उन्होंने कहा, "तुम स्वयं ही समझते हो, ऐसी दुष्टता करना बुरा है। अतः तुम्हारा दोष क्षमा करने योग्य है। तुम दोनों बहुत भूखे होगे। शीघ्र क्लोई के पास जाकर खाना मांगकर खालो।"

साम एक अच्छा वक्ता था। अच्छे भाषणों के लिए वह प्रसिद्ध था। शेल्वीसाहब जब किसी राजनैतिक सभा में या और कहीं व्याख्यान सुनने जाया करते तो साम को अक्सर साथ ले जाते थे। इस प्रकार साथ रहते-रहते साम बहुत-सी सभाएं देख चुका था और कितने ही व्याख्यान सुन चुका था। कितनी ही जगहों में शेल्वीसाहब जब सभा-मण्डप में चले जाते, तब साम अपनी मण्डली के दासों को लेकर वहीं बाहर दूसरी सभा किया करता और उसमें व्याख्यान दिया करता था। इसीसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

O-,5M11,1
152MO

उसकी भाषण-शक्ति बढ़ी-चढ़ी थी। उसे मन-ही-मन इस बात का बड़ा दुःख रहा कि इलाइजा के भागने के सम्बन्ध में वह आज जी भरकर व्याख्यान नहीं दे पाया। ईश्वर की विशेष करुणा की बात कहते ही शेल्बीसाहब ने धमकाकर उसका उत्साह भंग कर दिया। रसोईघर में जाते हुए वह मन-ही-मन सोचने लगा, बड़े दुःख की बात है कि ऐसा गंभीर विषय बिना लम्बे व्याख्यान के योंही हाथ से निकला जा रहा है। अतः उसने निश्चय किया कि पाकशाला में दास-दासियों के सामने इस विषय में अवश्य ही व्याख्यान देगा। 2029

क्लोई चाची से भोजन को लेकर कभी-कभी चखचख हो जाया करती थी। पर आज तेज भूख हो जाने के कारण उसने मेल ही से काम लेना उचित समझा। इससे पाकशाला में पहुंचकर क्लोई को देखते ही उसके रसोई बनाने की लम्बी-चौड़ी तारीफ करने लगा। साम के प्रशंसा-वाक्य क्लोई के कानों में सुधा ढालने लगे। घर में जितने प्रकार की खाने की चीजें थीं, उसने सबमें से थोड़ी-थोड़ी साम को परोसीं। इस संसार में आत्म-प्रशंसा सभी को भाती है। ऐसे आदमियों की संख्या इनी-गिनी होगी, जो आत्म-प्रशंसा नहीं सुनना चाहते, जिन्हें अपने खुशामद-पसन्द न होने का गर्व है। जो ऐसा कहते हैं कि हम खुशामदियों को अपने पास तक नहीं फटकने देते, उन्हें भी खुशामद पसन्द है, यह साबित करने के लिए विशेष कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। आप एक बार उनसे कहिये, "अजी साहब, आपको तो खुशामद बिलकुल ही पसन्द नहीं है। आपको भला कोई खुशामदी अपनी बातों में क्या लावेगा?" इसमें संदेह नहीं कि इस ठकुरसुहाती से वह साहब तुरन्त पानी-पानी हो जांयगे। वास्तव में अपनी प्रशंसा किसी को बुरी नहीं लगती। लेकिन बात यह है कि जितने आदमी हैं, उतनी ही तरह की खुशामदें भी हैं। किसी को किसी ढंग की खुशामद पसन्द है, किसी को किसी ढंग की।

साम जब रसोईघर में बैठकर पेट-पूजा करने लगा, तब सब दास-दासी वहां इकट्ठे होकर बड़े चाव से इलाइजा और उसके पुत्र के विषय में पूछताछ करने लगे। दास-दासियों से घर भरा हुआ देखकर साम

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के आनन्द की सीमा न रही। इससे उसको एक लम्बा व्याख्यान झाड़ने का दुर्लभ अवसर मिल गया। उसकी अपूर्व वक्तृत्व-शक्ति इस प्रकार प्रवाहित होने लगी :

"प्यारे स्वदेश-बन्धुओ, देखो, तुम लोगों की रक्षा के लिए मैं किसी भी कठिन-से-कठिन कार्य में अग्रसर हो सकता हूं। हम लोगों में से किसी एक पर भी यदि कोई अत्याचार करे तो समझना चाहिए, अनुभव करना चाहिए कि उसने हम सब पर अत्याचार किया है। तुम लोग समझ सकते हो कि इसके अन्दर एक प्रकार की गूढ़ नीति है। इसलिए प्राण देकर तुम लोगों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।"

साम के इतना कहते-कहते आंडी ने टोककर कहा, "सवेरे तो तुम इलाइजा को पकड़वा देने को कहते थे ?"

आंडी की बात सुनकर साम ने और अधिक गम्भीर बनकर कहा, "आंडी, इन गहरी बातों को समझने की अक्ल तुझमें नहीं है। तेरे-जैसे भोले-भाले बालक के हृदय में केवल सद्भाव और सदिच्छा ही हो सकती है। तू इतनें जटिल विषयों के नैतिक तत्व समझने के लायक नहीं है।"

'नैतिक तत्व' शब्द सुनकर आंडी चुप हो रहा। पर साम की जीभ फिर डाकगाड़ी की तरह खटाखट चलने लगी :

"मैं सदा सोच-समझकर, यानी विवेक से काम लेता हूं। विवेक ही मेरी बागडोर है। पहले मैंने देखा कि शेल्बीसाहब चाहते हैं कि इलाइजा पकड़ी जाय, अतएव विवेक के अनुरोध से मैंने उसी के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया। फिर जब यह सुना कि मेमसाहब ऐसा नहीं चाहतीं, तब मेरा विवेक दूसरे रास्ते पर चलने लगा। मेमसाहब के पक्ष में विवेक के रहने से अधिक लाभ की आशा रहती है। इसलिए अब तुम लोग अनायास समझ सकते हो कि मैं नीति के रास्ते, विवेक के रास्ते और लाभ के रास्ते ही अधिक जाता हूं। कहो आंडी, अब समझे असल बात ?"

साम के श्रोतागण हुंकारी भरते हुए उसकी बातें सुन रहे थे। यह देखकर साम से चुप न रहा गया। वह एक मुर्गी की टांग मुंह में डाल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर फिर कहने लगा :

"विवेक, नीति, अध्यवसाय यह इतना सहज विषय नहीं है। देखो, किसी काम को करने के लिए मैंने पहले एक रास्ता पकड़ा और फिर उसी कार्य को करने के लिए दूसरे रास्ते का सहारा लेता हूं। ऐसा करने में क्या कम मेहनत और नीति खर्च करनी पड़ती है ?"

साम के लम्बे भाषण से क्लोई कुछ घबरा-सी गई। अतः लाल झंडी दिखाने के लिए बोली, "अब तुम जाकर सो रहो और दूसरों को भी सोने की छुट्टी दो।"

क्लोई की बात सुनकर मेल-गाड़ी रुक गई। साम ने वहीं अपना व्याख्यान समाप्त कर दिया और सबको आशीर्वाद दे विदा किया।

१० : : मानवता का हृदयस्पर्शी दृश्य

जिस दिन संध्या को इलाइजा ओहियो नदी पार हुई थी, उस दिन साढ़े सात बजे व्यवस्थापिका-सभा के सदस्य वार्डसाहब घर में बैठे अपनी स्त्री से तरह-तरह की बातें कर रहे थे। नीति-विशारद वार्ड-साहब और उनकी मेम के बीच जो बातें हो रही थी, वे इस प्रकार थीं :

मेम ने कहा, "मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती थी कि तुम आज घर आ सकोगे।"

"हां, मेरे आने की कोई आशा नहीं थीं; पर दक्षिण देश की ओर जाना है, इससे सोचा कि आज की रात घर पर बिताकर कल सवेरे चला जाऊंगा। मेरा तो नाकों-दम आ गया। कितने जोर से सिर में दर्द हो रहा है।"

सिर दुखने की बात सुनकर वार्डसाहब की मेम कपूर की शीशी लाने के लिए उठीं। पर वार्डसाहब ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "दवा की जरूरत नहीं है, योंहीआराम हो जायगा। मारे काम के मेरा जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घबरा उठा है। नित्य नये कानून की धाराओं का मसविदा घड़ना बड़ी आफत का काम है।"

मेम बोली, "आजकल व्यवस्थापिका-सभा में किन-किन कानूनों का मसविदा पेश है?"

वार्डसाहब ने बड़े अचरज में आकर मन-ही-मन कहा—स्त्रियां भी कानून की खबर रखती हैं। फिर प्रकट में बोले, "आजकल किसी भारी कानून का मसविदा नहीं बन रहा है।"

"आप यह क्या कहते हैं? मैंने पत्रों में देखा है कि व्यवस्थापिका-सभा से एक ऐसा कड़ा कानून जारी होनेवाला है कि कोई भागे हुए दास-दासियों को शरण नहीं दे सकेगा। चाहे वे भूख-सर्दी से मर भले ही जांय, पर उन्हें कोई एक पैसे या कपड़े तक की सहायता न दे सकेगा। क्या यह सच है? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि जिनके हृदय में कुछ भी दया-धर्म है वे ऐसा कानून जारी करेंगे! सोचिये, इससे कैसी भयंकर दशा हो जायगी। मान लीजिये, कोई दास या दासी कहीं से भागी और दस दिन की राह काट कर यहां आ पहुंची, पेट भरने के लिए उसके पास एक पैसा तक नहीं है, और न सर्दी से बचने के लिए कोई फटा कपड़ा ही उसके तन पर है, भला कहिये, ऐसे अनाथ और निस्सहाय व्यक्ति को कौन ऐसा निर्दयी होगा, जो एक समय भोजन और टिकने को स्थान देने से इन्कार करेगा? मेरा तो इस बात को सुनकर ही कलेजा कांपता है। यह कानून धर्म और नीति के बिलकुल विरुद्ध है।"

वार्डसाहब हंसते हुए कहने लगे, "प्यारी, मुझे नहीं मालूम था, तुम तो एक खासी नीति-विशारद पंडिता बन गई हो।"

मेम बोली, "मैं आपके कायदे-कानून अथवा राजनीति की कुछ परवा नहीं करती। पर यह मुझे स्पष्ट दिखाई देता है कि ऐसा कानून जारी करना केवल निर्दयता का प्रचार करना है। जिनके पालन करने के लिए यह बनाया जा रहा है, उन्हें भी विवश होकर अपने हृदय की दया और धर्म को सर्वथा तिलांजलि दे देनी पड़ेगी। आप ही कहिये, क्या यह कानून धर्म या न्याय के अनुकूल होगा?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इसके न्यायसंगत होने में क्या सन्देह है ?"

"मैं तो कभी विश्वास नहीं कर सकती कि तुम ऐसे कानून को न्याय-संगत मानते हो। मैं समझती हूं कि तुमने कभी ऐसे कानून के पक्ष में राय नहीं दी होगी।"

"मैंने तो इस कानून का बड़े जोरों से अनुमोदन किया है।"

"बड़ी लज्जा की बात है कि तुमने भी ऐसे कानून के पक्ष में राय दी है। इससे बढ़कर घृणित और नीच कोई कानून हो नहीं सकता। मैं निश्चयपूर्वक कहती हूं कि मैं इस कानून को कभी नहीं मानूंगी। देख लेना, कोई ऐसा अवसर मिला तो फिर मैं निश्चय ही इसका उल्लंघन करूंगी। ओफ, कैसा आश्चर्य है! कोई बेचारा दीन-दरिद्री मनुष्य, काला होने के कारण, गोरों के अत्याचार से दुःखी होकर भूख से मरता मेरे दरवाजे पर किसी दिन आ जाय और मैं उसे एक मुट्ठी अन्न न दे पाऊं! मैं नहीं जानती कि किस स्त्री का हृदय विधाता ने ऐसा पत्थर का बनाया है कि ऐसे विपदा-ग्रस्त मनुष्य को आश्रय देने से वह इन्कार कर देगी!"

"मेरी, तुम मेरी बात सुनो। मैं खूब जानता हूं कि तुम्हारा हृदय बड़ा कोमल है। दया और स्नेह से भरा है, पर कभी-कभी ऐसी दया और धर्म का फल उल्टा भी हो जाता है। सर्व-साधारण के हित के विचार से हमें कभी-कभी दया, माया और स्नेह-ममता को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। आजकल जो राजनैतिक आन्दोलन चल रहा है, इसमें किसी पर विशेष दया दिखलाने से मुंह मोड़े रहना बहुत जरूरी है। इसलिए इस कानून को न्याय-विरुद्ध नहीं कहा जा सकता।"

"जान, मैं तुम्हारे राजनैतिक आन्दोलन को नहीं समझती। पर यह मुझसे छिपा नहीं है कि कौन-सी बात धर्म-विरुद्ध है और कौन-सी धर्म-संगत। मेरी समझ में दीनों पर दया दिखाना, भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देना तथा दुखियों का दुःख दूर करना, मनुष्य के जीवन के प्रधान कर्तव्य है।

"पर इन कर्तव्यों के पालन करने में यदि सर्व साधारण का अहित होता हो, तब क्या करोगी ?" वार्डसाहब ने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मेरा अटल विश्वास है कि कर्तव्य-पालन से सर्व-साधारण का अहित कभी हो हीं नहीं सकता।"

"मेरी, सुनो मैं तुम्हें अपने कथन की सचाई समझाये देता हूं। यह बहुत सहज-सी बात है।"

"मैं खूब जानती हूं कि तर्क में तुमसे कोई जीत नहीं सकता। तुम सारी रात तर्क में बिता सकते हो और सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हो। पर इसे जाने दो। मैं तुमसे पूछती हूं कि अभी तुम्हारे दरवाजे पर भागा हुआ निराश्रित दास आकर एक मुट्ठी दाना मांगे, तो क्या तुम उसे भागा हुआ समझकर अपने दरवाजे से भगा दोगे? ऐसे आदमी पर क्या तुम्हें दया नहीं आवेगी?"

वार्डसाहब बोले, "ऐसे आदमी को दरवाजे से भगा देना अवश्य ही बहुत खेदजनक है; पर कर्तव्य के लिए क्या नहीं करना पड़ता?"

"ऐसे निठुर व्यवहार को क्या तुम कर्तव्य समझते हो? इसे कभी कर्तव्य नहीं कहा जा सकता। गुलामों पर लोग ज़ोर-जुल्म करते हैं, उन्हें बहुत सताते हैं, इसी से वे भाग जाते हैं। उन पर अत्याचार न हों तो वे न भागें। दास-दासी रखनेवाले यदि उन्हें न सतावें, तो फिर किसी कानून की जरूरत ही न पड़े।"

"मेरी, सुनो, मैं तुम्हें एक युक्ति से इस क़ानून की आवश्यकता को समझा दूं।"

"मैं ऐसे निष्ठुर आचरण के सम्बंध में तुम्हारी युक्ति या दलीलें नहीं सुनना चाहती। मैं पहले ही कह चुकी हूं कि तुम लोगों—जैसे क़ानूनी आदमी भांति-भांति के कुटिल तर्कों द्वारा सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हैं।"

साहब और मेम में बातें हो रही थीं कि इतने में काजो नाम का एक नौकर वहां आया और बड़ी घबराहट से बोला, "मेमसाहब, ज़रा नीचे आकर देखिये, कैसा भयानक दृश्य है।"

नीचे पहुंचते ही मेम ने जो देखा, उससे घबराकर वह बार-बार साहब को पुकारने लगीं। साहब ने वहां जाकर देखा कि एक दुबली-सी स्त्री एक बच्चे को छाती से चिपटाये हुए उनके दरवाजे पर अचेत पड़ी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके दोनों पैर बहुत छिले हुए हैं। उनसे लगातार खून वह रहा है। उसके कपड़े चिथड़े हो गये हैं। वार्डसाहब देखते ही समझ गये कि वह भागी हुई दासी है। उन्होंने ऐसी सुन्दर दासी कभी नहीं देखी थी। उसकी सुन्दरता और उसके सुख की सुदृढ़ता देखकर साहब के हृदय में करुणा का स्रोत वह चला। वह थोड़ी देर पहले की बात-चीत को भूल गये। उस स्त्री को होश में लाने के लिए वह भांति-भांति के उपाय करने लगे। उन्होंने बेहोश स्त्री की छाती से बालक को उठाकर अपनी गोद में ले लिया था। होश में आते ही स्त्री ने अपने बच्चे को गोद में न देखा तो "हेरी-हेरी!" कहकर चिल्लाने लगी। चिल्लाहट सुनते ही बालक काजो की गोद से अपनी माता की गोद में चला गया। तब वह कुछ शांत होकर वार्डसाहब की मेम से कहने लगी, "मुझे बचाइये! मुझे शरण दीजिये! दुश्मन के हाथ से मेरे बच्चे की रक्षा कीजिये!"

वार्डसाहब की मेम ने कहा, "बेटी, तू डर मत। यहां कोई तेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। तू यहां बेधड़क होकर रह।"

यह सुनकर उस रमणी ने कहा, "भगवान, आपका भला करें!"

फिर मेम ने रसोईघर के पास उसके विश्राम का प्रबन्ध कर देने की आज्ञा दी और दास-दासियों से उसकी सेवा-टहल करने के लिए कहकर आप भोजन करने घर में चली गई। वार्डसाहब उस स्त्री का दुःख देखकर पिघल गये थे। वे अपनी स्त्री से जाकर बोले, "कुछ समझ में नहीं आता कि यह स्त्री कहां से आई है। पर यह युवती बड़ी सुन्दर है।"

मेम बोली, "अभी तो वह सोई है, उठने पर उससे उसका नाम-धाम पूछूंगी।"

कुछ देर रुक कर वार्डसाहब ने फिर कहा, "प्यारी, जो कपड़ा वह पहने है, वह बहुत पुराना हो गया है। देखो तो, तुम्हारा कोई गाउन उसके आ सकता है या नहीं। वह तुमसे थोड़ी लम्बी है।"

वार्डसाहब की स्त्री मन-ही-मन में हँसने लगी और सोचने लगी कि स्वामी की कानूनी विद्या धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है। पर प्रकट रूप में केवल इतना ही बोली, "अच्छा, देखती हूं।"

वार्डसाहब कुछ देर बाद फिर बोले, "प्यारी, यह स्त्री बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी खा गई जान पड़ती है। इसे कुछ ओढ़ने को भी देना चाहिए। मेरी पुरानी चादर इसे दे दो।"

इतने में ही दीना नामक दासी ने आकर कहा, "मेमसाहब, वह स्त्री जाग गई है। आपसे कुछ कहना चाहती है।"

वार्डसाहब और उनकी मेम, तत्काल दोनों उस स्त्री के पास गये। मेम ने पूछा, "हम लोगों से तुम जो कुछ कहना चाहती हो, सो कहो। उस स्त्री के मुंह से बात नहीं निकलती थी। वह बार-बार लम्बी सांसें ले रही थी और रो रही थी। तब वार्डसाहब की मेम उसे ढाढ़स देकर कहने लगी, "बेटी, डरो मत। हम तुम्हारा कुछ भी अहित नहीं करेंगे। तुम साफ-साफ कहो—कहां से आई हो और क्या चाहती हो?"

कुछ देर बाद स्त्री ने कहा, "मैं केण्टाकी से आ रही हूं।" इस पर वार्डसाहब ने उससे जिरह-सी आरम्भ कर दी, "केण्टाकी से तुम किस तारीख को चली थीं?"

"आज ही रात को आई हूं।"

"रात में कैसे आईं?"

"बर्फ के टुकड़ों के सहारे चलकर।"

सब लोग अचरज में आकर कहने लगे, "बर्फ पर से कैसे आईं?"

"परमात्मा ने ही मुझे पार लगाया। पकड़नेवालों ने मेरा पीछा कर रखा था। ऐसी दशा में नदी पार करने के सिवा मेरे बचने की और कोई सूरत न थी।"

वार्डसाहब का दास काजो बोला, "बाप-रे-बाप! कैसा अचरज है! गली हुई बर्फ टुकड़े होकर जल पर तैर रही थी, उसी पर से पार चली आई!"

आर्त्त स्वर में स्त्री बोली, "मैं जानती थी कि बर्फ गल रही है। मुझे मालूम था कि इस तरह बहती हुई बर्फ पर से किसी का जाना असंभव है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं नदी पार कर सकूंगी। मैं तो मौत का आलिंगन करने के लिए नदी में कूदी थी, पर ईश्वर की महिमा अपार है। मनुष्य उसे नहीं समझ सकता। मनुष्य नहीं जानता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि निर्बल के बल एकमात्र भगवान हैं। ईश्वर की महिमा से क्या नहीं हो सकता ? मैं केवल उसी की महिमा से पार हुई।"

इतना कहकर आकाश की ओर इस तरह देखने लगी, मानो वह ईश्वर-दर्शन करने की प्रतीक्षा कर रही हो।

वार्डसाहब ने पूछा, "तू क्या किसी की खरीदी हुई दासी है ?"

"हां, पर मेरे मालिक बड़े दयालु थे।"

"तो तेरी मालकिन तुझे बहुत सताती होंगी ?"

"नहीं-नहीं, वह तो माता की भांति मेरा दुलार करती थीं।"

"फिर तुमने ऐसे मालिक को छोड़कर ऐसी भयानक विपत्ति का रास्ता क्यों अपनाया ?"

यह बात सुनकर स्त्री वार्डसाहब की मेम के मुंह की ओर आंसूभरी आंखों से देखने लगी और बोली, "मेमसाहब, पुत्र-शोक कितना दुःख-दायी होता है, यह आप अवश्य समझ सकती हैं। आपको क्या कभी पुत्र का वियोग सहना पड़ा है ?"

इस प्रश्न से वार्डसाहब की मेम का हृदय एकदम विदीर्ण हो गया। वह अपने आंसू न रोक सकी। अभी एक महीना हुआ, उनका इकलौता बेटा उन्हें छोड़कर चला गया था। मेम को रोते देखकर काजो और दीना इत्यादि सभी आंसू बहाने लगे। वार्डसाहब बड़े कष्ट से आंसू रोक कर हृदय के उमड़े हुए शोक के आवेग को छिपाने की चेष्टा करने लगे। वह ठहरे व्यवस्थापिका-सभा के सदस्य ! आंसू बहाते देखकर कहीं लोग उन्हें निर्मल आत्मा न समझने लगें।

कुछ देर बाद मेम ने उससे पूछा, "तुमने मुझसे ऐसा सवाल क्यों किया ? आज एक महीना हुआ होगा, मेरे हृदय का सर्वस्व हेनरी मुझे अनाथ करके चला गया।"

"तब आप मेरा दुःख समझ सकती हैं। एक-एक करके मेरी दो सन्तानें काल की भेंट हो चुकीं, अब यही एक बच्चा मेरे जीवन का आधार है। मैं पलभर के लिए भी इसे आंखों की ओट नहीं कर सकती। लेकिन मेरे मालिक ने इस दुध-मुंहे बच्चे को दास-व्यवसायी के हाथ बेच दिया। वह निर्दयी इसे दक्षिण देश में ले जाने की तैयारी कर रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह दुध-मुंहा बच्चा मां को छोड़कर कभी नहीं रह सकता। मैं इसे कैसे छोड़ दूं? इसी से दास-व्यवसायी के चंगुल से बचाने के लिए मैं इसे लेकर भाग आई हूं। किन्तु मेरे भागने के बाद खरीदार ने, मेरे मालिक के दो दासों को साथ लेकर मेरा पीछा किया। ओहियो नदी के उस पार पकड़े जाने के डर से मैं प्राणों की ममता छोड़कर नदी में कूद पड़ी। नदी को पार कैसे किया, यह मुझे याद नहीं। बस, इतना ही ध्यान है कि इधर किनारे पर आते ही सिम नामक एक दास ने मेरा हाथ पकड़कर किनारे पर उठा लिया और उसीकी सलाह से मैं इस घर में आई हूं।"

"तब तुमने कैसे कहा कि तुम्हारे मालिक और मालकिन बड़े दयावान हैं? इस बालक को बेचकर उन्होंने तुम्हारे साथ बड़ी ही कठोरता का बर्ताव किया है।"

"मैं कभी कृतघ्न नहीं होऊंगी। जबतक जीती रहूंगी, कहूंगी कि मेरे मालिक और मालकिन बड़े दयालु हैं। उन्होंने किसी भी दास-दासी पर कभी बेरहमी नहीं दिखाई। मालिक ने दास-व्यवसायी के कर्ज में जकड़ जाने के कारण लाचार होकर मेरे बच्चे को बेचा।"

"क्या तुम्हारे पति नहीं हैं?"

"हां, हैं। पर वह दूसरे के दास हैं। उनका मालिक बड़ा कठोर है। उसके अत्याचार से मेरा पति बड़ा कष्ट पा रहा है। सुना है कि वह मेरे पति को दक्षिण में बेचनेवाला है। अब इस जीवन में उससे भेंट होती नहीं दिखाई देती।"

"तो अब तुम कहां जाना चाहती हो?"

"मैं कैनाडा जाना चाहती हूं। यहां से कैनाडा कितनी दूर है?"

मेमसाहब मन-ही-मन सोचने लगीं कि हाय, कैसी शोचनीय स्थिति है! यह कैसे कैनाडा पहुंचेगी? प्रकट रूप से बोलीं, "बेटी, कैनाडा बड़ी दूर है। पर हमसे जहां तक हो सकेगा, तुम्हारी मदद करने का यत्न करेंगे। आज की रात यहीं रहो। कल जैसा होगा, देखा जायेगा!"

वार्डसाहब की मेम ने दीना को उसके सोने का प्रबन्ध करने का आदेश दिया और फिर अपने सोने के कमरे में चली गईं। वहां पहुंचते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही वार्डसाहव बोले, "प्यारी, इस स्त्री के सम्बन्ध में अव क्या करना चाहिए ? मैं वड़ी आफ़त में फंस गया हूं। इस स्त्री की तलाश में कल ख़रीदार यहां अवश्य आवेगा। मेरे यहां भगोड़ी दासी का निकलना वड़ी लज्जा का विषय होगा। व्यवस्थापिका सभा का सदस्य होकर मैंने ही कल क़ानून वनाया कि भगोड़े दास-दासियों को जो कोई अपने यहां ठहरने देगा, उसे दण्ड मिलेगा और आज मैं ही उस कानून को तोड़ूं ! अच्छा होगा कि इस विषय में जो कुछ करना हो, आज रात ही को कर डाला जाय।"

"आज रात को क्या किया जा सकता है ?"

मेम अच्छी तरह जानती थीं कि साहब का मन बड़ा दयालु है। वह अवश्य उस अनाथ के लिए कोई-न-कोई ठीक व्यवस्था कर देंगे। मन-ही-मन यह सोचकर वह चुप रह गईं और साहव का कानून का पक्षपात स्मरण करके मन्द-मन्द मुस्कराने लगीं। कुछ देर वाद साहब बूट पहन-कर खड़े हो गये और कहने लगे, "प्यारी, इसके सम्बन्ध में मैं जो कुछ करना चाहता हूं, वह तुम्हें वतलाता हूं। इसे किसी निरापद स्थान पर पहुंचा देना ठीक होगा। यहां से थोड़ी दूर पर वान ट्राम्प नामक मेरा मुवक्किल है। पहले उसके यहां दास-दासियों का बड़ा जमघट था, पर समय के फेर से उसकी ऐसी कायापलट हुई कि नर-नारियों को गुलाम बनाकर रखना वह पाप समझने लगा। उसने अपने सारे दास-दासियों की भलाई के लिए और भी कई काम किये। आजकल उसने यहां से तीन-चार कोस की दूरी पर ज़मीन लेकर वहां भागे हुए दास-दासियों के लिए ऐसे घर बना दिये हैं, जिनमें ये शरण ले सकें। वह स्वयं भी वहीं रहता है। वहां पहुंचा आने से कठोर दास-व्यवसायी के चंगुल से यह अभागिनी स्त्री बच सकती है। पर मेरे अलावा किसी का रात को गाड़ी हांककर इसे वहां पहुंचा आना सम्भव नहीं।"

"क्यों ? काजो खूब गाड़ी हांक सकता है। क्या वह नहीं पहुंचा आ सकता ?"

"वहां का मार्ग वड़ा दुर्गम है, राह में दो बड़ी खाड़ियां पार करनी पड़ती हैं। काजो को उस रास्ते का भी पता नहीं होगा। इससे मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वयं ही जाना पड़ेगा। काजो को १२ बजे गाड़ी तैयार कर रखने की कह दो। मैं स्वयं ही इसे पहुंचा आऊंगा और लौटती बार कोलम्बस होता हुआ आऊंगा, जिससे लोग समझ लेंगे कि मैं वहीं किसी काम से गया था।"

"नाथ, दूसरों के दुःख से सदैव तुम्हारा हृदय पसीज जाता है। तुम्हारी यह सहृदयता ही तुम्हारे ज्ञान और विज्ञता की अपेक्षा लोगों के मन में तुम पर अधिक भक्ति और श्रद्धा उपजाती है। तुम जब-तब अपने को पहचानना भूल जाते हो, पर मैं तुम्हारे हृदय से खूब परिचित हूं। तुम चाहे जिस खयाल से चाहे जैसा कानून क्यों न बनाओ, किन्तु दूसरे कानूनबाज़ों की तरह तुम आत्मा-विहीन होकर निष्ठुर काम में अपने को नहीं लगा सकते। यह मैं भली भांति जानती हूं कि व्यवस्थापिका सभा के सभी सदस्यों में मानवात्मा है।"

वार्डसाहब अपनी स्त्री के मुख से अपनी सहृदयता की प्रशंसा सुनते ही प्रेम से पुलकित हो गये। सोचा कि जिन्हें ऐसी स्त्री का सुख प्राप्त नहीं, उनका मनुष्य-जन्म वृथा है। यह सोचते-सोचते वह दरवाजे पर देखने के लिए आये कि गाड़ी तैयार हुई या नहीं। फिर मेम के पास जाकर बोले, "प्यारी, मुझे एक बात याद आई है। हेनरी के जो कुछ कपड़े हैं उन्हें चाहो तो इस अनाथ बालक के लिए दे डालो।"

मेम ने अपने मृत पुत्र के कपड़े और खिलौने इत्यादि चीज़ों की एक गठरी बांध दी। फिर रात को १२ बजे वार्डसाहब इलाइजा को लेकर गाड़ी पर चढ़ने लगे। उस समय वह गठरी इलाइजा के हाथ में दे दी। इलाइजा उस समय बार-बार मेम के प्रति अपनी हार्दिक भक्ति और कृतज्ञता प्रकट करने की चेष्टा करने लगी, पर उसमें बोलने की शक्ति न थी। उसके हृदय की उस समय की अवस्था शब्दों द्वारा प्रकट नहीं की जा सकती। वह गाड़ी में चढ़ी हुई घूम-घूमकर मेम की ओर देखने लगी। उसकी आंखों में आंसू भर आये।

आज वार्डसाहब में भी विचित्र परिवर्तन हो गया था। कल उनकी वक्तृता से व्यवस्थापिका-सभा का भवन गूंजता था, कल उन्होंने अनेक बार इस बात को दुहराया था कि सर्वसाधारण के हित की दृष्टि से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक छोटे-वड़े का कर्त्तव्य है कि स्त्री-जाति की-सी सहृदयता को छोड़-कर भागे हुए दास-दासियों को पकड़ा दे। कल उन्हें स्त्री-जाति मानव-हृदय की दुर्वलताओं की खान जान पड़ी थी; पर आज वही वार्डसाहव स्वयं उस दुर्वलता के शिकार बन वैठे! केवल अखबारों और रिपोर्टों में पढ़कर भगोड़ों की दुर्दशा का अनुमान नहीं हो सकता था। इसी से कल तक 'भगोड़ा' शब्द देखकर उनके हृदय में तनिक भी दया नहीं उपजती थी। पर आज सामने साक्षात भगोड़े की दुर्दशा देखते ही उन्हें चक्कर आ गया, उन्हें सच्ची स्थिति का ज्ञान हो गया और जिस जाति की कमजोरी की उन्होंने निन्दा की थी, उसीने आज उनके मस्तिष्क को चकरा दिया। इससे मालूम होता है कि व्यवस्थापिका सभा के सदस्यों में भी मानव की आत्मा मौजूद है। उनमें भी मनुष्यत्व है। उन्हें सदैव समाचार-पत्रों और रिपोर्टों के सिवा देश की सच्ची दशा जानने का अवसर नहीं मिलता। अपनी आंखों से वे लोगों की दुर्दशा का दृश्य नहीं देखते, इसीसे उनके कथन में और वास्तविक स्थिति में बहुत अंतर होता है और जान पड़ता है कि वे मनुष्यत्व-विहीन हैं।

वार्डसाहव ने कल जिस कानून को जारी किया था, उसका फल आज उनको ही भोगना पड़ा। घोर अंधेरी रात है। मूसलाधार वर्षा हो रही है। रास्ता कीचड़ से लथपथ है। घोड़ा इस रास्ते से गाड़ी को खींच-कर आगे वढ़ने में असमर्थ है। व्यवस्थापिका सभा के माननीय सदस्य अपने नौकर काजो के साथ गाड़ी से उतर पड़े। काजो ने घंटों घोड़े की लगाम पकड़कर आगे वढ़ाने की कोशिश की और वार्डसाहव ने पीछे से गाड़ी को ठेला, तव कहीं जाकर बड़ी कठिनाई से गाड़ी आगे बढ़ी और धीरे-धीरे उस आश्रम के पास पहुंची। घर का मालिक अभी सो रहा था। उसे बड़ी मुश्किल से जगाया। थोड़ी देर में आंखें मलते हुए वह गाड़ी के पास आया और वार्डसाहव को देखकर नमस्कार करने के लिए हाथ उठाया। मकान-मालिक का नाम था जान वानट्रम्प। वह पहले केण्टाकी नगर में रहता था। उसके पास अनगिनत गुलाम थे, पर अर्थलोलुपता और स्वार्थपरता के कारण उसके हृदय के उत्तम और स्वाभाविक भावों का सर्वथा नाश नहीं होनेपाया। उसके दिल में यह बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठ गई कि देशभर में प्रचलित गुलामी प्रथा और दासों को सताना, दास और मालिक दोनों ही की आत्मा को नीचे गिराता है। दासों की दुर्दशा पर विचार करते-करते उसका हृदय पसीज गया। फिर उसने तुरन्त अपने सारे दास-दासियों को गुलामी की बेड़ी से मुक्त कर दिया। साथ ही उसे दासों के दुःख दूर करने की चिन्ता हुई। इस निर्जन भूमि में अनाथ दासों को शरण देने के लिए जो स्थान बना है, वह उसी चेष्टा का फल है।

वार्डसाहब ने जैसे ही उसे इलाइजा की दुरवस्था की बात सुनाई, उसने तुरन्त इलाइजा को गाड़ी से उतारकर अपने घर की एक कोठरी में उसके रहने के लिए जगह कर दी। उसे ढाढ़स देकर वह कहने लगा, "बेटी, यहां तुम बेफ़िक्र होकर रहो। मजाल नहीं कि यहां से तुम्हें कोई पकड़ ले जाय। मेरे यहां बहुत आदमी हैं। यहां पकड़नेवालों की पैठ नहीं हो सकती।"

वानट्रम्प ने वार्डसाहब से वह रात वहीं बिताने का अनुरोध किया, पर वह राज़ी न हुए। उन्होंने पहले से ही कोलम्बो होकर लौटने का निश्चय कर रखा था। लोगों के संदेह करने के डर से वह झटपट गाड़ी पर सवार हो गये। चलते समय इलाइजा की सहायता के लिए वानट्रम्प के हाथ में दस रुपये का एक नोट देते गये।

११ : : दारुण विछोह

गोरे बनियों की अर्थ-लोलुपता के कारण अफ्रीकी उपनिवेशों के जो अभागे काले हब्शी अमरीका में ले जाकर दास बनाकर बेचे जाते थे, उनकी स्वभाव-प्रकृति से हम भारतवासियों की किसी-किसी विषय में बड़ी समानता है। भारतवासियों की भांति इन अभागे क्रीत दास-दासियों में भी सन्तान-वात्सल्य, दाम्पत्य-प्रेम, पारिवारिक स्नेह और कृतज्ञता की मात्रा बहुत अधिक दिखाई पड़ती थी। परिवार से किसी एक व्यक्ति को पृथक् करके बेचने में इन्हें कैसा भयानक कष्ट होता था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था, इसे वज्र-हृदय अर्थ-पिशाच गोरे बनिये क्या समझ सकते थे ?

शेल्वीसाहब ने टाम को हेली के हाथ बेच तो डाला ही था, पर इलाइजा की खोज से हेली के लौटने तक, कम-से-कम दो-तीन दिन, टाम को अपने परिवार में रहने का सुअवसर मिल गया। जिस दिन हेली के साथ उसके जाने की बात थी उस दिन उसने बड़े तड़के उठकर अपने बाल-बच्चों और स्त्री के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, फिर उपासना के उपरान्त अपने सोये हुए बालकों के बिस्तर के पास खड़ा होकर वह एकटक उनकी ओर देखने लगा। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। कुछ देर बाद एक आह भर कर वह बोला, "जान पड़ता है, तुम लोगों से मेरी यही अंतिम भेंट है।" उसकी यह बात क्लोई के कान में जा पड़ी और उसका हृदय भर आया। उसने रोते हुए पति से कहा, "तुम मुझे ईश्वर पर भरोसा रखकर शोक न करने को कहते हो, पर मैं ईश्वर पर भरोसा नहीं रख सकती। मेरे मन में कितनी ही आशंकाएं उठ रही हैं। न मालूम वह तुम्हें कहां-का-कहां ले जायगा, और जब-तब कितना दुःख देगा। मेम दो-एक बरस में रुपये इकट्ठे करके तुम्हें फिर मोल लेने का प्रयत्न करेंगी, पर उतने ही दिनों में न जाने तुम पर कितनी आफ़तें आ सकती हैं। दक्षिण गये हुओं में बहुत थोड़े ही लौट कर आते हैं। दक्षिण के चाय के बगीचों और तम्बाकू के खेतों में बेहद परिश्रम करके सैकड़ों दास-दासी असमय काल के गाल में चले जाते हैं। तुम्हीं कहो, यह सब जानते हुए मैं अपने हृदय के आवेग को कैसे रोक सकती हूं।"

टाम ने कहा, "दीनबन्धु भगवान सब जगह मौजूद है। वह मेरे साथ रहकर सदा मेरी खबर लेगा।"

"परमेश्वर के साथ रहते हुए भी तो समय-समय पर कितनी ही घोर विपदाएं आ पड़ती हैं। इसी से परमेश्वर पर भरोसा रखकर मैं अपने मन को नहीं समझा सकती।" क्लोई ने रुंधे गले से कहा।

"हम सब मंगलमय ईश्वर के मंगल-शासन में हैं। उसकी मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। जिसे लोग विपद समझते हैं, वही सम्पद का मूल कारण है। देखो, मुझे बेचकर मालिक ने तुमको और बाल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को बचाने की चेष्टा की। तुम लोग तो निरापद रहोगे। हम सब-के-सब जहां-तहां तीन-तेरह नहीं बिके, यही क्या कम सौभाग्य की बात है। मालिक ने केवल मुझे ही बेचा, इसके लिए मैं उनका बड़ा अनुगृहीत हूं।"

"मुझे तो इसमें मालिक के अनुग्रह की कोई बात नहीं दीख पड़ती। तुम्हारे-जैसे प्रभुभक्त और विश्वासी दास को बेचना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। वह तुम्हारी प्रभुभक्ति से प्रसन्न होकर एक बार तुम्हें दासत्व से मुक्त कर देने का वचन दे चुके हैं, पर आज उसे भूल कर ऋण से छुटकारा पाने के लिए बेखटके तुम्हें बेच डाला! गोरी जाति दूसरे के दुःख का खयाल कभी नहीं करती। वह सदा अपने ही सुख में मस्त रहती है। जो मनुष्य स्त्री को पति-हीन और बालकों को पितृ-हीन करता है, उसका विचार ईश्वर के यहां अवश्य होगा।"

"क्लोई मालिक की शान में ऐसी बातें मुंह से न निकालो। इससे मेरे हृदय को बड़ी वेदना होती है। मेरे साथ यही तम्हारी अंतिम भेंट है। इस समय मेरे सम्मुख ऐसी बातें मत कहो। दूसरे दासों के मालिकों से हमारे मालिक कहीं अच्छे हैं। वह दास-दासियों को कभी व्यर्थ तंग नहीं करते। वह किसी को बेंत नहीं मारते। किसी की विवाहिता स्त्री को कभी रखैल बनाकर उसका धर्म नहीं बिगाड़ते। इसीलिए ईश्वर के सामने ऐसे मालिक के कल्याण के लिए प्रार्थना करना अपना कर्त्तव्य है। इसी केण्टाकी में देख लो; सैकड़ों लोगों के असंख्य दास-दासियां हैं। जरा उनकी दुःख-दायक घोर यन्त्रणा से अपना मिलान तो करो।"

क्लोई फिर कुछ नहीं बोली। मन-ही-मन वह सोचने लगी कि आज सदा के लिए उसके स्वामी का सुख-सूर्य अस्त हो जायगा। अब ऐसी एक भी संध्या आने की आशा नहीं, जब उसको अच्छा भोजन मिलेगा। इसी से क्लोई ने स्वामी के भोजन के निमित्त भांति-भांति की चीजें बनाईं और तैयार हो जाने पर बड़े प्रेम से उसको खिलाईं। भोजन कर चुकने पर टाम ने अपनी दो बरस की छोटी कन्या को गोद में उठा लिया और बार-बार उसका मुंह चूमने लगा। क्लोई उस बालिका का हाथ पकड़ कर कहने लगी, "न जाने कब इसको भी मां की गोद छोड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर अलग हो जाना पड़ेगा। दास-दासियों की सन्तान होना केवल एक खेल ही है।" क्लोई की बातें समाप्त न होने पायी थीं कि शेल्बीसाहब की मेम वहां आ पहुंची। टाम और क्लोई को आंसू बहाते देखकर उन की भी आंखें डबडबा आईं। ज्यों-त्यों धीरज रखकर वह कहने लगीं, "टाम, मैं चाहती थी कि तुम्हें कुछ रुपये दूं। पर विचार कर देखा कि उससे तुम्हारा कोई फायदा न होगा। तुम्हारे पास जो कुछ होगा, उसे वह अर्थ-पिशाच दास-व्यवसायी हेली कभी हड़प किये विना न छोड़ेगा। टाम, तुमसे मैं अब क्या कहूं! मैं कुछ भी कहने के योग्य नहीं। पर मैं तुमसे इतनी प्रतिज्ञा अवश्य करती हूं कि रुपये जुड़ते ही मैं तुम्हें तत्काल छुड़ा लूंगी। जबतक रुपया इकट्ठा नहीं होता, तबतक अपने को ईश्वर के हाथों में सौंपकर धीरज रखना!"

इसी समय वहां हेली आ पहुंचा। आते ही टाम से बोला, "चलो बच्चू, और देर करने की जरूरत नहीं।"

टाम यह सुनते ही उसके पीछे जाकर गाड़ी पर सवार हो गया। क्लोई इत्यादि घर के सब दास-दासी उस गाड़ी के पास जम कर खड़े हो गये। हेली ने टाम को गाड़ी में बैठाकर लोहे की जंजीर से उसके दोनों पैर कस दिये। यह देख कर और सब दास-दासियों के हृदय को बड़ी भारी चोट लगी। वे सब मन-ही-मन हेली को गालियां देने लगे। उन लोगों की टाम पर बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी, उसे वे अन्तःकरण से प्यार करते थे। इससे टाम को लोहे की सांकल से बांधे जाते देखकर वे बार-बार लम्बी सांसें भरने लगे। टाम के दो बड़े लड़के भी पिता की यह दशा देखकर चिल्लाने लगे। तब शेल्बीसाहब की मेम ने हेली से कहा, "महाशय, टाम भागनेवाला आदमी नहीं है। इसे आप नाहक बांधते हैं। इसके बन्धन खोल दीजिये।" हेली ने उत्तर दिया, "मेम-साहब, बस, अब आप माफ कीजिये। आपके यहां सौदा करके मैं पांच सौ रुपया दण्ड भुगत चुका हूं। अब मैं इसे ढीला नहीं छोड़ने का!"

इतना कहकर उसने गाड़ी हांकने की आज्ञा दी। जाते-जाते टाम ने कहा, "मेमसाहब, मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि चलते समय मास्टर जार्ज से भेंट नहीं हुई।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम के बिकने की बात-चीत प्रकट होने के पहले ही जार्ज कुछ दिनों के लिए किसी आत्मीय के यहां चला गया था। टाम के बिकने के सम्बन्ध में अभी तक उसे कुछ पता न था। टाम के ले जाने के समय शेल्वीसाहब ने पहले वहां न रहने का निश्चय कर लिया था और तदनुसार वे कहीं दूसरी जगह चले गये थे। टाम को साथ लेकर हेली पहले एक लोहार की दूकान पर आया। वहां जेब से दो हथकड़ियां निकाल कर लोहार से बोला कि इसके हाथ में पहना दो। टाम को देखते ही लोहार चौंक कर बोला, "ऐं, यह तो शेल्वीसाहब का टाम है ! इसे क्या बेच डाला ? भला ऐसे स्वामि-भक्त दास को भी क्या कोई बेचता है !" फिर हेली से बोला, "साहब, आप अपनी हथकड़ी अपने हाथों में ही रखिये, इसे डालने की आवश्यकता नहीं। मैं इसे खूब जानता हूं। यह बड़ा ईमानदार आदमी है।"

हेली बोला, "ज्यादा ईमानदार ही घोखा देते हैं। तुम अपनी बातें रहने दो। इसे हथकड़ियां पहना दो।"

लोहार ने पूछा, "टाम, अपनी स्त्री को छोड़ चला क्या ?"

उसके उत्तर में हेली ने कहा, "जहां यह बिकेगा, वहां क्या और दासियां ही न मिलेंगी ? इन लोगों को औरतों की क्या कमी है ? दक्षिण देश में पैर रखते ही एक-न-एक को तुरन्त पटा लेगा।"

हेली से जब लोहार की ये बातें हो रही थीं, उसी समय बड़े वेग से घोड़ा दौड़ाता हुआ एक तेरह वर्ष का लड़का वहां आया। वह घोड़े से उतरकर एकदम टाम के गले से लिपट गया। टाम उसे गोद में लेकर कहने लगा, "मास्टर जार्ज, मुझे बड़ा आनन्द हुआ कि जाते समय तुमसे भेंट हो गई।"

टाम के पैर लोहे की जंजीर से बंधे देखकर जार्ज की आंखें लाल हो गईं। वह क्रुद्ध होकर बोला, "मैं अभी बदमाश हेली का सिर फोड़ता हूं।"

टाम ने उसे मना करके कहा, "अब तुम हेली के साथ झगड़ोगे तो वह तुम्हें और सतायेगा। इसलिए तुम कुछ मत बोलो।"

यह सुनकर जार्ज सिर झुकाकर चुप रह गया, लेकिन उसकी आंखों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंसुओं की धारा बहने लगी । कुछ देर बाद शान्त होकर जार्ज कहने लगा, "कैसी लज्जा का विषय है....कितनी कठोरता का व्यवहार है ! बाबा ने तुम्हारे वेचने की वात मुझसे एक बार भी नही कही, यदि मेरा साथी लिंकन मुझसे तुम्हारे विक्रय की बात न करता, तो मुझे कुछ भी पता न चलता । मेरा जी चाहता है कि मैं अपना घर-द्वार सब फूंक दूं । यह कष्ट तो सहा नहीं जाता ।"

टाम ने कहा, "जार्ज, ऐसी बात मत कहो । अपने पिता के विषय में तुम्हें ऐसी वात कहना उचित नहीं ।"

टाम के लिए जार्ज एक मोहर साथ लाया था, किन्तु टाम ने मोहर लेने से इन्कार करके कहा, "जार्ज, यह मोहर मेरे किस काम आयगी ? हेलीसाहब देखते ही इसे ले लेंगे ।"

जार्ज ने कहा, "मैंने इसे हेली के हाथ से बचाने का उपाय सोच लिया है । उसमें डोरा डालकर तुम्हारे गले में बांध देने से हेली की नजर से बची रहेगी । तुम्हारे कपड़ों के नीचे छिपी रहेगी ।" इतना कहकर जार्ज ने मोहर तागे में पिरो कर टाम के गले में लटका दी । टाम बड़े स्नेह से जार्ज को उपदेश देने लगा और बोला, "बच्चा जार्ज, सदा ध्यान से अपनी माता के सद्विचार और सदाचार पर चलना । परमात्मा संसार में सारी चीजें दो बार दे सकते हैं, पर 'मां' दुबारा नहीं मिलती । इस प्रदेश में दया-धर्म और सद्गुणों से भूषित कोई दूसरी स्त्री तुम्हारी मां के समान नहीं है । ऐसी स्नेहमयी जननी संसार में दुर्लभ है । तुम कभी अपने मन-वचन-कार्य द्वारा उनके हृदय को मत दुखाना । देखना, उनके आदर-सत्कार में कभी त्रुटि न करना, उनकी आज्ञा का उल्लंघन न होने पावे । मनुष्य का स्वभाव है कि युवावस्था में उसका मन पाप की ओर ढलता है । लेकिन सत्संग मनुष्य को उससे हटाकर सत्य-पथ की ओर ले जाता है । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि अपनी माता के आदर्श चरित और सत्कर्मों के प्रभाव से तुम एक बड़े पवित्र, साधु-प्रकृति मनुष्य बन सकोगे । बचपन से ईश्वर की भक्ति करना सीखोगे तो निर्विघ्न संसार में आगे बढ़ते जाओगे ।"

जार्ज ने टाम का उपदेश सुनकर कहा, "टाम काका, तुम मुझे सदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदुपदेश देते रहे हो। तुम्हारे आज के उपदेश का मैं तन-मन से पालन करूंगा और सदैव सन्मार्ग पर चलने की चेष्टा करूंगा। जब मैं बड़ा होकर स्वयं काम-काज करूंगा, तब तुम्हारे रहने के लिए एक अच्छा घर बनवा दूंगा। वृद्धावस्था में तुम उसमें भले आदमियों की भांति रहना। फिर तुम्हें गुलामी का दुःख नहीं भोगना पड़ेगा।"

जार्ज की बात समाप्त होने के पहले ही हेली हथकड़ी लेकर गाड़ी के पास आया। उसने टाम के हाथों में हथकड़ी डाल दी। इस पर जार्ज ने कहा, "हेली, तुमने टाम को बेड़ी और हथकड़ी से जकड़ दिया है; यह बात मैं अभी जाकर पिता और माता से कहूंगा।"

"जाओ, कह दो, हमारा उससे क्या बनता-बिगड़ता है?"

जार्ज ने फिर कहा, "हेली, क्या तुम जन्म-भर यही नीच काम करते रहोगे? क्या सदा तुम नर-नारियों का क्रय-विक्रय करोगे और कैदियों की भांति उन्हें हथकड़ी-बेड़ी से जकड़कर यंत्रणा देते रहोगे? क्या तुम्हें इस व्यवसाय के करने में ज़रा भी शर्म नहीं आती?"

हेली बोला, "तुम लोगों जैसे अमीर आदमी जबतक दास-दासी खरीदना नहीं छोड़ेंगे, तबतक हम लोगों का यह पेशा बन्द नहीं होगा। तुम लोग खरीद सकते हो तो फिर हम लोग बेच क्यों नहीं सकते? जो खरीदें वे तो बड़े अच्छे, बड़े धर्मात्मा रहे....उनका तो कोई क़सूर ही नहीं.. और सारा दोष हम बेचनेवालों के सिर!"

जार्ज ने कहा, "ईश्वर से यही मनाता हूं कि मुझे यह दास-दासियों के लेने-बेचने का नीच काम न करना पड़े!"

इतना कहकर जार्ज चला गया। हेली ने भी टाम को साथ लेकर गाड़ी हांकने का हुक्म दिया। जार्ज जिस मार्ग से जा रहा था, उसी ओर टाम की टकटकी लगी थी। वह मन-ही-मन कहने लगा, "ईश्वर इस बालक को चिरंजीवी करें। केण्टाकी प्रदेश में इसके समान उच्च हृदय-वाले थोड़े ही लोग निकलेंगे।"

थोड़ी दूर आगे जाकर हेली ने टाम का बन्धन खोल दिया और उससे कहा, "देखो, भागने की कोशिश नहीं करोगे तो अब तुम्हें हथकड़ी नहीं पहनावेंगे।" टाम ने कहा, "मैं कभी नहीं भागूंगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२ : : दास की रामकहानी

दिन ढल चुका है। आकाश मेघाच्छन्न है। थोड़ी बूंदा-बांदी हो रही है। बटोही सन्ध्या का आगमन देखकर होटलों में आश्रय लेने लगे। एक होटल केण्टाकी प्रदेश के सदर रास्ते के बहुत निकट था। यहां सदैव लोगों का आना-जाना बना रहता था। इस होटल के सामने की कोठरियां औरों की निस्वत अधिक गन्दी थीं। बड़े आदमियों के नौकर-चाकरों तथा मजदूरों ही से ये कोठरियां भरी हुई थीं। पीछे की ओर की कोठरी में राह की थकावट मिटाने के लिए दो आदमी बैठे हुए हैं। उनमें एक का नाम विलसन है। विलसन ने जवानी बिताकर बुढापे में पैर रक्खा है। इसीसे उसमें जवानी का जोश नहीं है। अधिक जाड़े के कारण वह सिकुड़ गया है। दूसरे आदमी में उतनी भलमनसाहत नहीं है और न उतना पढ़ा-लिखा है। वह भेड़ें चराकर अपनी जिंदगी बिताता है। थोड़ी ही देर बाद भेड़वाले ने इस प्रकार बातचीत का सिलसिला शुरू किया :

"आपने यह विज्ञापन देखा है ?"

विलसन ने कहा, "कैसा विज्ञापन ?"

भेड़वाला बोला, "यह देखिये !"

इतना कहकर उसने विलसन के हाथ में एक छपा हुआ विज्ञापन दे दिया। विलसन चश्मा लगाकर उस विज्ञापन को पढ़ने लगा—

"कुछ दिन हुए, मेरा जार्ज नामक एक दास भाग गया है। कद में साढ़े तीन हाथ लम्बा और रंग में गोरा है। अंग्रेजी खूब अच्छी बोलता है और समझ लेता है। उसके पेट और गले पर बेंतों की मार के निशान हैं। उसके बाएं हाथ की कलाई पर लोहे की दहकती हुई छड़ से दाग कर 'एच' का निशान कर दिया गया है। जो कोई उसे पकड़वा देगा उसे ४०० रुपया इनाम दिया जायगा। यदि कोई उसे जीता न पकड़ पावे तो मार कर कम-से-कम उसकी लाश हमारे यहां पहुंचाने से भी इतना ही इनाम मिलेगा।"

यह विज्ञापन पढ़कर विलसन कहने लगा, "इस विज्ञापन में उल्लि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खित गुलाम को मैं अच्छी तरह पहचानता हूं। वह छह साल तक मेरी अधीनता में काम कर चुका है। उसकी तीव्र बुद्धि, भलमनसी और सुशीलता देखकर मैं उस पर बहुत प्रसन्न था। उस आदमी ने पाट साफ करने के लिए अपनी अक्ल से एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी। उसकी बनाई हुई कल का बड़ा आदर हुआ। आज वह प्रायः सर्वत्र काम में लाई जाती है। कल बनाने का ठेका उसके मालिक को मिला हुआ है और इससे वह मालामाल हो गया है।"

यह सुन कर भेड़वाला अचम्भे में आ गया। बोला, "साहब, देखिये, उसमें इतने गुण और यह अन्याय! आप लोगों की चाल-ढाल भी बड़ी अजीब है। आप लोग अपने गुलामों को जितना दुःख देते हैं, उतना तो मैं भेड़ों को भी नहीं देता। ओफ़, आप लोगों के बड़े घरों की स्त्रियां अपने दास-दासियों की सन्तानों पर ज़रा भी दया नहीं दिखातीं। आप कहते हैं कि विज्ञापन में जिस गुलाम का ज़िक्र है वह बड़ा बुद्धिमान है। उसने अपनी अक्ल से एक कल बना डाली है। लेकिन इस तीव्र बुद्धि का उसे क्या फल मिला? कल के बनाने का ठेका मालिक को मिला और उसके सद्‌गुणों के बदले में मालिक ने लोहे की छड़ से उसका हाथ दाग दिया! वाह री भलमनसी!"

वहीं एक तीसरा आदमी और बैठा था। वह कहने लगा, "इसमें बेजा क्या किया! गुलाम पर मालिक का अधिकार है, उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करे। गुलाम मालिक की मर्जी के मुताबिक चलें तो क्यों मारे जांय, पर गोरे दास सहज में दुरुस्त नहीं होते!"

इस आदमी की बात समाप्त नहीं होने पाई थी कि होटल के दरवाजे पर एक गाड़ी आ लगी। उसमें से बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए एक गोरा नवयुवक उतर कर होटल में आया। विलसन आदि जहां बातें कर रहे थे, वहां पर वह पहुंच गया। उसने घर के दरवाजे पर चिपका हुआ वह विज्ञापन देखकर अपने दास से कहा, "जिम, कल उस होटल में जिस आदमी को देखा था, वही इस विज्ञापनवाला गुलाम जान पड़ता है।"

जिम बोला, "जी हां। उसे पकड़ लेता तो इनाम मिलता। पर इस विज्ञापन का हाल ही नहीं मालूम था।" फिर नवागन्तुक युवक ने होटल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मालिक को अपना नाम हेनरी वटलर वतलाया और रात-भर ठहरने के लिए एक अलग कमरे का प्रवन्ध कर देने को कहा। होटलवाला उधर अलग कमरे का प्रवन्ध करने चला गया, इधर विलसनसाहव उस व्यक्ति के चेहरे को वार-वार घूर कर सोचने लगे कि मैंने इसे कहीं-न-कहीं देखा है। यह परिचित-सा जान पड़ता है।"

विलसन के मन की वात को युवक ताड़ गया और उसके पास जाकर बोला, "साहव कहिये, पहचानते हैं? मैं वेक लैंग ग्राम का रहनेवाला बटलर हूं।"

विलसन कुछ निश्चय न कर सका कि उसकी बात का क्या उत्तर दे, पर सभ्यता के लिहाज से बोला, "पहचानता हूं।"

फिर वटलर उसका हाथ पकड़ कर एकान्त कमरे में ले गया। कमरे के किवाड़ भीतर से वन्द कर लिये और वह विलसन के मुंह की ओर ताकने लगा। कुछ देर वाद विलसन बोला, "जार्ज!"

वटलर—"जी हां।"

विलसन—"मुझे सन्देह तक नहीं हुआ कि तुम ऐसे गुप्त वेश में आये हो।"

वटलर—"अच्छा कहिये, विज्ञापन पढ़कर मुझे कोई मेरे इस वेश में पहचान सकता है?"

विलसन—"जार्ज, तुमने बड़े ही भयंकर मार्ग पर पैर रक्खा है। मैं तुम्हें कभी ऐसा करने की सलाह न देता।"

वटलर "इसके सिवा और कोई चारा ही नहीं है।"

विलसन—"तुम्हारे इस प्रकार भागने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ।"

वटलर—"मैं तो तुम्हारे दुःख का कोई कारण नहीं देखता।"

विलसन—"क्यों, क्या तुम नहीं जानते कि तुम अपने देश में प्रचलित कानून के विरुद्ध जा रहे हो?"

वटलर—"मेरा देश? कहाँ है मेरा देश? क्या इस पृथ्वी पर कोई ऐसा स्थान भी है, जिसे मैं अपना देश कह सकूं? मेरा देश कब्रस्तान है। जहां मुझे समाधि मिलेगी, वही मेरा देश है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह शीघ्र ही मुझे उस देश में पहुँचा दे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलसन—"राम-राम, जार्ज, मुंह से ऐसी बात निकालना बाइबिल के विरुद्ध है। मैं इससे इन्कार नहीं करता कि तुम्हारा मालिक बड़ा अत्याचारी है, पर बाइबिल की आज्ञा को मानो तो दास-दासियों को मालिक के वशीभूत होकर रहना पड़ेगा।"

बटलर—"विलसन, दासत्व-प्रथा के समर्थन में बाइबिल या अन्य किसी धर्मशास्त्र की दुहाई मत दो। यदि गुलामी की प्रथा जैसी घृणित प्रथा भी बाइबिल के मत से ठीक है तो लानत है उस बाइबिल पर। मैं उसे हजार बार पैरों से रौंद दूंगा। ऐसी बाइबिल का नाम संसार से जितनी जल्दी मिट जाय, उतना ही अच्छा। मैं सर्व-शक्तिमान परमात्मा से पूछता हूं कि अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए और अत्याचार से अपना निस्तार करने के लिए भागना क्या धर्म-विरुद्ध है? मुझे विश्वास है कि मेरा यह कार्य ईश्वर की दृष्टि में कभी धर्म-विरुद्ध न होगा।"

विलसन—"तुम पर जैसे घोर अत्याचार हुए हैं उनसे तुम्हारा यों जोश में आ जाना, तुम्हारे मन में ऐसे भावों का उठना स्वाभाविक है, पर फिर भी मैं तुम्हारे इस कार्य को धर्मानुकूल नहीं कह सकता। क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि ईसाई धर्म के महात्माओं ने मनुष्य को अपनी भली-बुरी चाहे जैसे स्थिति हो, उसी में सन्तुष्ट रहने का उपदेश दिया है? हम सबको अपनी स्थिति में संतुष्ट रहना चाहिए।"

बटलर—"ठीक है, मैं भी यदि तुम्हारी भांति स्वाधीन होता तो अपनी स्थिति में ही संतुष्ट रहता। मनुष्य धनी हो अथवा दरिद्र, यदि प्रकृति के दिये हुए मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार उससे कोई न छीने तो वह ईश्वर पर भरोसा करके सन्तोष कर सकता है। पर मनुष्य को प्रकृति तो मनुष्य की दी जाय और उसे जीवन बिताना पड़े पशुओं का-सा, और मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों से उसे सर्वथा वंचित रखा जाय, तो ऐसी दशा में सृष्टिकर्त्ता की करुणा में उसे अवश्य ही संशय होने लगेगा। तुम लोगों को शर्म नहीं आती कि प्रमाण देकर गुलामों को सन्तुष्ट रहने की सीख देते हो! तुम्हारे स्त्री-पुत्रों को तुमसे छीनकर यदि कोई जहां-तहां बेच डाले तो क्या फिर भी तुम संतुष्ट बने रहोग?

बटलर—"नामधारी छद्मवेशी जार्ज की ऐसी बातें सुनकर विलसन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकदम अचम्भे में आ गया। उसके मुंह से बात न निकली। थोड़ी देर बाद कहने लगा, "जार्ज, मैंने सदैव तुम्हारे साथ मित्र-जैसा व्यवहार किया है। तुम्हें विपत्ति से बचाने की चेष्टा की है। पर अब मैं देखता हूं कि तुम विपत्ति के घोर समुद्र में कूद रहे हो। पकड़े गये तो फिर तुम्हारे बचने की क्या सूरत है? तब तो इससे भी अधिक दुर्दशा में पड़ोगे। ताज्जुब नहीं कि तुम्हारा मालिक तुम्हें जान से भी मार डाले।"

जार्ज—"विलसन, यह मैं खूब जानता हूं। पर पकड़े जाने पर मेरे छुटकारे का उपाय मेरी जेब में है।"

यह कह कर उसने जेब से पिस्तौल निकाल कर कहा, "यदि पकड़ा गया तो इसी पिस्तौल से तुम लोगों के इस केण्टाकी प्रदेश में साढ़े तीन हाथ जगह लेकर दासत्व-शृंखला से इस शरीर को मुक्त करूंगा।"

विलसन—"जार्ज, तुम तो बिलकुल पागल हो गये हो। ओफ! कैसी भयंकर बातें कर रहे हो। तुम आत्म-हत्या करना चाहते हो? तुम अपने देशीय क़ानून के विरुद्ध काम करने पर तुले हुए हो।"

जार्ज—"फिर तुम मेरे देश का नाम लेते हो? कहां है मेरा देश? यह तो तुम्हारा देश है। क्रीत-दासी के गर्भ से उत्पन्न मेरे-जैसे मनुष्यों के लिए क्या कहीं स्वदेश है? हम लोगों के लिए न कहीं अपना देश है, न अपना घर है। हम लोगों का अपनी स्त्री पर भी कोई अधिकार नहीं है। यहीं तक नहीं, हमारे शरीर पर भी हमारा अधिकार नहीं है। बिना अपराध के मालिक हमें हजार बार पीट सकता है, पर ऐसा कोई कानून नहीं जो हम लोगों के शरीर की रक्षा कर सके। देश में जितने कानून हैं, सभी हम लोगों के नाश के लिए हैं। ये सब कानून हम लोगों के बनाये हुए नहीं हैं और न उनके बनाने में हम लोगों की राय ही ली गई है। फिर ऐसे कानून के विरुद्ध चलने से क्या कोई कभी धर्म-भ्रष्ट होता है? विलसन, मुझे बिल्कुल गंवार मत समझो। चौथी जुलाई का भाषण मुझे खूब याद है। तुम्हारे कानून-विधाता साल में एक बार कहा करते हैं न कि प्रजा की सम्मति के बिना राजा या शासन-कर्त्ता कोई कानून नहीं बना सकते। पर तुम्हीं बताओ, यहां जितने कानून प्रचलित हैं उनमें किसी कानून के बनने या प्रचार करने के पहले क्या कभी उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय में हम लोगों का मत लिया गया है ? जिस क़ानून के बनाने में हम लोगों का मत नहीं लिया गया, उस क़ानून को मानने के लिए भी मैं कभी मजबूर नहीं। विलसन, मेरी जो-जो दुर्दशा हो चुकी है, उन सबका तुम्हें पता नहीं है, इसी से तुम ऐसा कहते हो। जन्म से आजतक मैंने कैसे दुःख झेले हैं, इसका वर्णन करना असम्भव है। तुम्हारे इस केण्टाकी प्रदेश के एक रईस अंगरेज के वीर्य से मेरा जन्म हुआ था। मेरी माता उस गोरे की क्रीत-दासी थी। क्रमशः उसके सात बच्चे हुए। मैं उनमें सबसे छोटा हूं मेरी छह बरस की उम्र में उस पाषाण-हृदय गोरे की मृत्यु हो गई। उसका कर्ज अदा करने के लिए उसके घर की और सब चीजों के साथ-साथ हम लोगों का भी नीलाम हुआ। एक-एक करके हम छह भाई-बहनों को भिन्न-भिन्न लोगों ने खरीदा। इसके बाद माता मुझे छाती से चिपटाकर रोते-रोते मेरे वर्तमान मालिक से बोली, 'महाशय, मुझे और इस बालक को एक साथ ख़रीद लीजिये। मेरी छाती से इस अबोध बालक को अलग न कीजिये।' वह नर-पिशाच भला क्यों मानता ! उसने बारम्बार मेरी माता को ठोकरों से पीछे हटा कर उसकी छाती से मुझे छीन लिया, और तुरन्त मुझे बांध कर अपने घर की ओर ले आया। मैं एक बार आंख उठा कर माता की ओर देखने भी न पाया। दो-तीन बार केवल उसके आर्त्त-नाद के शब्द मेरे कानों में पड़े। इसके कई दिनों बाद मेरा मालिक मेरी बड़ी बहन को उस व्यक्ति से, जिसने उसे नीलाम में ख़रीदा था, मोल ले आया। इस बात से पहले मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। सोचने लगा कि बड़ी बहन के साथ रहकर मां के वियोग का शोक कुछ हलका पड़ जायगा। पर शीघ्र ही मेरी वह आशा बेकार सिद्ध हुई। बड़ी बहन मेरी माता की भांति बहुत ही सुन्दर थी। धर्म-अधर्म का उसे बड़ा ख़याल था। मेरा मालिक उसे उपपत्नी बनाने की बहुत चेष्टा करने लगा। पर वह किसी तरह धर्म छोड़ने पर राज़ी न हुई। इससे मालिक को बड़ा क्रोध आता और वह उसे रोज बेंतों से खूब पीटता। एक दिन उसकी मार देख कर मैं शोक और दुःख से अधीर हो गया। अन्त में मेरे मालिक ने जब देख लिया कि मेरी बहन जान निकल जाने पर भी धर्म नहीं छोड़ेगी तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे किसी दक्षिण-देशीय अंग्रेज-बनिये के हाथ बेच डाला। पर अब वह कहां है, जीती है या मर गई, मुझे मालूम नहीं। इस जन्म में फिर उससे भेंट होने की आशा नहीं। इसके बाद मैं अकेला उस कठोर-हृदय मालिक के यहाँ रहने लगा, कभी-कभी मुझे भूखे ही दिन काटने पड़ते। कभी-कभी उसकी खाकर बाहर फेंकी हुई हड्डियों को भूख मिटाने के लिए चूसता था, पर मैं भोजन या और किसी शारीरिक कष्ट की परवा न करता था।

"मैं दिन-रात माता और भाई-बहनों के शोक में पागल हुआ रहता था। ध्यान आता था कि मुझे प्यार करनेवाला, मुझ पर दया करनेवाला, मुझसे मीठा बोलनेवाला अब इस संसार में कोई नहीं। बचपन में मेरी माता कहा करती थी कि विपत्ति में ईश्वर का स्मरण करने से वह सब दुःख दूर कर देता है। माता की वह बात याद करके कभी-कभी ईश्वर को पुकारता था। इससे मन में कुछ आशा का संचार होने से जीता रहा। कुछ दिनों बाद मालिक ने मुझे तुम्हारे कारखाने में लगा दिया। तुम्हारे यहां ही पहले-पहल इस जन्म में मैंने दया और स्नेह का अनुभव किया। तुम्हीं ने पहले मेरे लिखने-पढ़ने का सुभीता कर दिया था, और तुम्हारे कारखाने में रहते समय ही शेल्बीसाहब की दासी इलाइजा से मेरा विवाह हुआ था। क्रीत-दासी होने पर भी इलाइजा का हृदय स्वच्छ और धर्म-पूर्ण था। उसके उस अकृत्रिम और अकपट प्रणय ने मुझमें फिर जान डाल दी। उसके सहवास से माता और बहनों का शोक कुछ-कुछ हल्का होता गया। पर जबतक यह देश में फैला घृणित कानून दूर न हो, तबतक क्रीत-दासों को सुख की सम्भावना कहां! मेरे निर्दयी मालिक से मेरा यह सुखी जीवन नहीं देखा गया। वह द्वेष की अग्नि से जल उठा और इलाइजा को छोड़ कर उसने मुझे अपने घर की, अपनी पुरानी उपपत्नी, मीना नाम की क्रीत-दासी से विवाह करने की आज्ञा दी। भला मैं इलाइजा को छोड़ कर मीना से कैसे विवाह करता! क्या यह काम धर्म या बाइबिल के मत के अनुकूल है? धिक्कार है तुम्हारे ईसाई धर्म को! धिक्कार है तुम्हारी बाइबिल को! और सौ-सौ धिक्कार है तुम्हारे देश में प्रचलित कानून को! इस घृणित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानून की आड़ में नित्य लाखों मनुष्यों का नाश हो रहा है और तुम मुझे इसी घृणित कानून का पालन करने को समझाते हो। यदि सचमुच ही इस संसार की रचना करनेवाला कोई न्यायी मंगलमय ईश्वर है तो इस घृणित कानून के विपरीत चल कर मैं उसका प्रिय कार्य पूरा कर रहा हूं। मैं भाग कर कैनाडा जा रहा हूं। यदि किसी ने मुझे पकड़ने की हिम्मत की तो मैं तुरंत उसकी जान ले लूंगा, और यदि हार कर पकड़ा गया तो अपनी जान देकर साढ़े तीन हाथ भूमि पर आनन्द-पूर्वक अनन्त काल के लिए सुख की सेज बिछा कर सोऊंगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वाधीनता की रक्षा के लिए युद्ध करने में कोई पाप नहीं है। तुम्हारे बाप-दादे भी तो स्वाधीनता की रक्षा के लिए लड़े थे। उस युद्ध में यदि उन्हें कोई पाप नहीं लगा तो अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए किसी आदमी को मार डालने में मुझे भी कोई पाप नहीं लगेगा।"

जार्ज की यह रामकहानी सुनकर विलसन का हृदय पसीज गया। उसके दिल पर यह बात जम गई कि गुलामी की इस प्रथा के उठ जाने में ही कल्याण है। वह फिर बोला, "जार्ज, इस दशा में मैं तुम्हें भागने से नहीं रोकूंगा, पर किसी की जान मत लेना। हां, यह तो कहो कि अपनी स्त्री के विषय में क्या करोगे? तुम्हारी स्त्री इस समय कहां है?"

जार्ज ने कहा, "मैं नहीं जानता कि मेरी स्त्री इस समय कहां है। पर सुना है कि उसके मालिक ने उसके बच्चे को बेचने का प्रस्ताव किया था, इससे वह अपने बच्चे को लेकर भाग गई है। मालूम नहीं कि उससे कब भेंट होगी, अथवा इस जन्म में भेंट होगी भी या नहीं।"

विलसन—"यह बड़े अचम्भे की बात है। ऐसे दयालु परिवार ने तुम्हारे बच्चे को बेचने की बात ठान ली!"

जार्ज—"अक्सर होता है कि दयालु परिवार भी कर्ज में फंस कर धर्म-अधर्म की कुछ भी परवा नहीं करता और सामाजिक मर्यादा को बचाने के लिए माता की गोद से शिशु को छीन कर बेच देता है, क्योंकि देश में प्रचलित इस घृणित कानून ने इस प्रकार की कठोरताओं को सदा आश्रय दिया है। केवल दयालु परिवार मिलने से ही किसी दास का कोई उपकार नहीं हो सकता।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलसन के हृदय पर जार्ज की इन बातों का बड़ा असर हुआ। उसने जेब से कुछ नोट निकाल कर जार्ज को दिये और कहा, "ये रुपये तुम्हारे बहुत काम आवेंगे।"

जार्ज ने रुपया लेने से इन्कार करते हुए बहुत नम्रतापूर्वक कहा, "विलसन, तुमने समय-समय पर मेरा बहुत उपकार किया है। मैं तुमसे और रुपये नहीं लेना चाहता। यों रुपये देते रहने से तुम स्वयं कर्ज में फंस जाओगे।"

पर विलसन ने उसकी एक न सुनी और जबरदस्ती उसकी जेब में रुपये डाल दिये। लाचार जार्ज को लेने पड़े। जार्ज ने विलसन से कहा, "यदि मैं कभी तुम्हारे रुपये चुकाने लायक हुआ, तो तुम्हें वापस लेने पड़ेंगे।"

विलसन—"तुम कितने दिनों तक इस प्रकार गुप्त वेश में रहोगे ? तुम्हारे साथ यह काला आदमी कौन है ?"

जार्ज—"यह आदमी भी गुलाम था। एक बरस हुआ, यह किसी तरह भागकर कैनाडा चला गया था। इसके भाग जाने से इसका मालिक मारे गुस्से के पागल होकर इसकी माता को दिन-रात मारने और सताने लगा। माता के दु:ख की बात सुनकर उसे चुपके से भगा ले जाने के लिए यह फिर आया है।"

विलसन—"तो क्या उसकी माता का उद्धार कर लाये ?"

जार्ज—"अभी मौका नहीं मिला। पहले यह मुझे किसी सुरक्षित स्थान में पहुंचा देगा और फिर अपनी माता के उद्धार के लिए इस प्रदेश में आकर उसे ले जायगा।"

विलसन—"यह तो बड़ा हिम्मतवाला बहादुर आदमी है, भाई ! पर जार्ज, देखना तुम बड़ी सावधानी से रहना, कहीं पकड़ न जाना।

जार्ज—"मैं गुलामी से छूट चुका हूं। भाग कर बच गया तो भी स्वाधीनता है हाथ और पकड़ा गया तो भी समाधि में जाकर पूरी स्वाधीनता से सुख की नींद सोऊंगा। यदि तुम कभी सुनो कि मैं पकड़ा गया हूं तो मन में निश्चय समझ लेना कि मैं मर गया हूं।"

इन बातों के बाद विलसन ने जार्ज से विदा मांगी, पर घर के बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैर रखते ही जार्ज ने उसे फिर पुकार कर कहा, "विलसन, मेरी एक बात सुन कर जाओ। यदि मैं पकड़ा गया तो अवश्य ही मेरी जान जायगी और मालिक मुझे मुर्दे कुत्ते की तरह कहीं फिकवा देगा। उस समय इस संसार में मेरे लिए मेरी स्त्री के सिवा और कोई एक बूंद आंसू भी न गिरावेगा। मैं तुम्हें अपना एक चित्र देता हूं। मेरी स्त्री से भेंट हो जाय तो उसे दे देना और कहना कि जीते-मरते मैं उसी का हूं। उसे बच्चे को लेकर कैनाडा जाने को समझा देना और बच्चे को गुलामी की जंजीरों से बचाये रखने की चेष्टा करने का मेरी ओर से अनुरोध कर देना। उससे कहना कि दासों के मालिक चाहे जितने दयालु हों, पर उनके दासों के दुःख-कष्ट दूर नहीं हो सकते, क्योंकि मालिक के कर्जे के लिए दूसरों के हाथ में जाने का सदा ही खटका बना रहता है।"

विलसन—"तुम्हारी स्त्री से भेंट होने पर मैं अवश्य ये सब बातें कहूंगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह निर्विघ्न तुम्हें निरापद स्थान पर पहुंचने में समर्थ करें। तुम सदा ईश्वर का स्मरण करते रहना।"

जार्ज—"क्या संसार में कहीं कोई ईश्वर है? संसार में सदा यह अविचार और अन्याय देखकर मेरे मन में शंका होती है कि इस संसार में न्यायी परमेश्वर नहीं है। हां, यदि कोई ईश्वर हो भी तो वह तुम्हीं लोगों का रक्षक है। ईश्वर के अस्तित्व पर मुझे विश्वास नहीं होता।"

विलसन "जार्ज, ऐसी बातें मुंह से न निकालो। मन में कभी ऐसे संशय को स्थान मत दो। परमेश्वर प्रत्यक्ष इस संसार का शासन करता है। वह सर्वत्र व्यापक है। उस पर विश्वास करो। अपने को उसी के सहारे छोड़कर न्याय और सत्पथ पर बढ़ते जाओ। निश्चय ही उसकी करुणा से निर्विघ्न सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाओगे। इस संसार में व्यक्ति-विशेष को जो कष्ट और यन्त्रणाएं मिलती हैं, वे सब उनके कर्मों का फल हैं। मनुष्यों को कभी-कभी अपने बाप-दादों के पाप का फल भी भोगना पड़ता है। मंगलमय ईश्वर पर अटल विश्वास, पूर्ण भरोसा और उसके हाथों में आत्मसमर्पण किये बिना उन कर्मों के फल से छुटकारा नहीं मिल सकता।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलसन की बात सुनकर जार्ज बोला, "मैं तुम्हारे इस उपदेश के अनुसार कार्य करने की चेष्टा करूंगा।"

यह कहकर वे दोनों एक-दूसरे से विदा हुए।

१३ : : नीलाम की मार्मिक घटना

टाम को साथ लिये हुए हेली चलते-चलते एक नगर के निकट पहुंचा। मार्ग में दोनों ही चुप थे। कोई किसी से कुछ न बोलता था। दोनों अपनी-अपनी धुन में मस्त थे। देखिये, इस संसार में लोगों की प्रकृति में कितना निरालापन दिखाई पड़ता है। दोनों एक ही जगह बैठे हुए थे। आंखों के सामने का दृश्य भी दोनों के लिए एक ही-सा था, पर विचारों की लहर एक-दूसरे से बिलकुल ही भिन्न थी। उनके पृथक्-पृथक् विचारों का नमूना देखिये। हेली सोच रहा था कि खूब लम्बा-चौड़ा और ताकतवर मर्द है। इसे दक्षिण के देश में बेचूंगा तो कम-से-कम दो-तीन सौ रुपये नफे के तो जरूर ही मिल जायंगे। फिर तरंग जो उठी तो सोचने लगा कि दास-व्यवसायियों में मुझ-जैसे दयालु मनुष्य बिरले ही निकलेंगे। देखो न, मैंने थोड़ी ही दूर आकर टाम के हाथ खोल दिये, केवल पैर-भर बांध रखे हैं। फिर संसार का व्यवहार सोचकर मन-ही-मन कहने लगा कि मैंने टाम के साथ इतनी भलमनसी की है, पर वह अकृतज्ञ क्रीत-दास है। वह कभी मेरी इस भलमनसी की दाद न देगा।

उधर टाम के विचार देखिये, वे और ही तरह के थे। टाम सोच रहा था कि मंगलमय परमात्मा इस संसार का शासन करता है। इसलिए अपने को उसी पूर्ण ब्रह्म के हाथों में सौंप देना चाहिए। फिर किसी अमंगल का कोई डर न रहेगा। मनुष्य ईश्वर के उद्देश्य को समझने में सर्वथा असमर्थ है। इसी से वह जीवन की किसी-किसी घटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को विपत्ति या दुर्घटना समझ बैठता है । पर जब मनुष्य का मोह दूर हो जाता है तब वह समझने लगता है कि ईश्वर जो कुछ करता है, सब उसके भले के लिए ही करता है।

ऐसे ही भावों के सहारे टाम अपने उमड़े हुए शोक को रोकता था। टाम और हेली के ये चिन्ता-स्रोत अभी समाप्त न होने पाये थे कि वे सामने के नगर में आ पहुंचे । वहां हेली ने अपनी जेब से एक गजट निकाला और बड़ी तत्परता से उसमें छपा हुआ एक विज्ञापन इस प्रकार पढ़ने लगा :

नीलाम

अदालत की आज्ञानुसार आगामी मंगलवार, २०वीं फरवरी को वाशिंगटन नगर की दीवानी कचहरी के सामने, परलोकवासी ब्रान्सन-साहब का ऋण चुकाने के लिए, नीचे लिखे हुए दास-दासी सबसे ऊंची डाक बोलनेवाले के हाथ बेचे जांयगे :

नीलाम की सूची

नम्बर	दास-दासी	उम्र
१	हागर (दासी)	६० बरस
२	जॉन	३० ,,
३	बेंजमिन	२१ ,,
४	सेल	२५ ,,
५	अलबर्ट	१४ बरस

२०जनवरी, दस्तख़त

१८५० "सेमुअल नरिश, टामस फ्लिट "मुंशी अदालत"

विज्ञापन पढ़ कर हेली ने टाम से कहा, "यहां हम कई और दास-दासी खरीदेंगे । इसलिए तुम्हें थोड़ी देर को जेलखाने में रखकर हम कचहरी जाते हैं।"

यह कहकर वह टाम को जेल में रखकर आप नीलाम-घर की ओर चला गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोपहर हो चली है। कचहरी में लोगों की भीड़ जमा हो रही है। वहां से थोड़ी ही दूर, बिना छत का, लोहे की छड़ों से घिरा हुआ माल-गोदाम-सरीखा एक घर था। पैरों की धूल से वह घर भरा हुआ था। इस घर के एक कोने में कई काले दास-दासी बैठे बात कर रहे थे। इनमें हागर नाम की जो दासी थी, उसकी उम्र अस्सी से ऊपर जान पड़ती थी। पर असल में वह ६० से अधिक की न थी। दिन-रात की बेहिसाब मेहनत और भांति-भांति के कष्टों तथा भूख के दुःख से वह ऐसी जीर्ण हो गयी थी। चलने में लकवे के रोगी की भांति उसका सारा शरीर कांपता था। उस हतभागिनी की बगल में एक १४ बरस का लड़का बैठा हुआ था। हागर के और सब लड़के-लड़कियों को उसके मालिक ने पहले ही जहां-तहां बेच डाला था। कम से कम १०-१२ सन्तानों में केवल यही लड़का आज तक इसके साथ है। हागर बालक के गले में बांह डाले बैठी थी। जब कोई खरीदार बालक के शरीर की जांच करने आता, तब वह बुढ़िया चौंक जाती और कहती, "हम दोनों एक साथ ही बेचे जायंगे।" इतना कहकर बालक को और भी जोर से जकड़ लेती थी। वहीं तीस वर्ष का एक और दास बैठा था। वह बोला, "हागर मौसी, तुम क्यों डरती हो? मुन्शीजी तो कह चुके हैं कि वह तुम्हें और अलबर्ट को एक ही साथ बेचने का यत्न करेंगे।"

इसी समय हेली वहां आया। वह एक-एक दास के शरीर की जांच करके देखने लगा। उसने हर एक के मुंह में अंगुली डालकर पहले दांत गिने, फिर खड़ा करके शरीर की लम्बाई नापी। वह शरीर को जगह-जगह से टटोल कर देखने लगा। अन्त में देखते-दिखाते हागर के पास पहुंचा और उसके चौदह वर्ष के पुत्र अलबर्ट की जांच करने के लिए झटके से उसका हाथ खींचकर उठाया। यह देखकर वृद्धा माता बोली, "साहब, हम दोनों साथ ही बेचे जायंगे, मैं अभी खूब काम-काज करने लायक हूं।"

हेली ने हंसकर पूछा, "तुम तम्बाकू के खेतों या चाय के बगीचों में काम कर सकोगी?"

बुढ़िया ने कहा, "हां-हां, खूब कर सकूंगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेली ने हँसते हुए एक दूसरे खरीदार के निकट जाकर कहा, "हम इस छोटे छोकड़े को लेना चाहते हैं। लड़का खूब मजबूत है।"

इस पर उस दूसरे खरीदार ने कहा—"मैंने सुना है कि बुढ़िया और लड़का दोनों साथ ही बेचे जांयगे।"

तब हेली बोला, "बुढ़िया की कीमत तो कोई एक छदाम भी नहीं देगा, हवा से इसकी कमर टेढ़ी हो गई है। एक आंख की कानी अलग है। ऐसी मरी हत्या को लेकर कौन अपनी पूंजी नष्ट करेगा। हमें तो कोई मुफ्त में दे तो भी नहीं लें। अगर बालक और बुढ़िया साथ बिकें तो बालक के दाम भी घट जांयगे।"

हेली की बातें समाप्त न होने पाई थीं कि नीलाम का घंटा बजा। अदालत के मुन्शी सेमुअल नरिश और टामस फिलट नाक पर चश्मा चढ़ाये नीलाम-घर में आये। नीलामवालों ने डाक की हांक लगाई। वृद्धा हागर ने अलबर्ट से कहा—"बेटा, मुझे पकड़ कर बैठ जा, जिससे हम दोनों एक ही हांक में बिक जांय।" बालक ने आंखों में आंसू भर-कर कहा, "मां, तू नाहक यों क्यों कर रही है? हम लोग एक साथ नहीं बेचे जांयगे।"

हागर बोली, "जरूर बेचे जांयगे, जरूर! तू मुझे पकड़कर बैठ जा।"

कुछ देर बाद जब कई नीलाम हो चुके, तब उस बालक को हाथ पकड़ कर खड़ा किया। यह देखकर बुढ़िया चिल्लाकर बोली, "दोनों को एक साथ बेचो। हम दोनों को एक साथ नीलाम करो!"

पर नीलामवालों ने धक्का देकर उस बेचारी बुढ़िया को दूर धकेल दिया। बालक की बोली आरम्भ हुई। एक-दो तीन के बाद अन्त में हेली ने बालक को खरीदा। तब बालक की माता ने हेली के पास आ-कर कहा, "साहब, मुझे भी आप ही खरीद लीजिये। बालक से अलग होने पर मेरी जान नहीं बचेगी।"

हेली बोला, "तुम्हें खरीदा जाय चाहे न खरीदा जाय, मरोगी तुम जल्दी ही। तुम्हारे मरने में अब बहुत दिन नहीं हैं।"

इसके बाद बुढ़िया की बोली भी आरम्भ हुई। एक आदमी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत थोड़े दामोंमें उसे खरीद लिया, पर बुढ़िया ने बड़ा रोना मचाया। 'हाय-हाय' कर कहने लगी, "मेरे एक बच्चे को भी मेरे संग नहीं छोड़ा ! मालिक ने मरते समय कह दिया था कि इस बच्चे को वह मेरी गोद से अलग नहीं करेंगे। पर हाय, लोगों ने उसे भी न छोड़ा—मुझसे छीन लिया !"

उनमें एक बूढ़ा गुलाम था। उसने कहा, "हागर मौसी, ईश्वर की मर्जी ऐसी ही समझ कर तुम सन्तोष करो। अब रोने-धोने से क्या होगा ! हम लोगों के लिए और कोई चारा नहीं है।"

पर हागर को शान्ति कहां ? वह और अधिक रोने लगी, बोली, "बतलाओ, ईश्वर कहां है ? एक बार उसे देखूं तो सही। एक-एक करके तेरह लड़के मेरी गोद से छिन गये, पर ईश्वर ने इसका कुछ भी विचार न किया !"

तब बालक अलबर्ट कातर होकर कहने लगा, "मां, रोओ मत, अपने मालिक के साथ चली जाओ। यह लोग कहते हैं कि तुम्हें खरीदनेवाला भला आदमी है।" किन्तु उस शोक-सन्तप्त माता के मन को इतने से कब ढाढ़स होता। उसने फिर दौड़कर बालक को पकड़ लिया। पागल की भांति चिल्लाकर कहने लगी, "यही मेरा आखिरी लड़का है। मेरा सबसे छोटा बच्चा है। इसे छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊंगी।" बड़ी मुश्किल से हेली ने उसके हाथ से बालक को छीनकर अपना रास्ता लिया। इधर वह स्त्री अचेत होकर पड़ रही।

इस नीलाम में हेली ने उस बालक के सिवा और भी चार गुलामों को खरीदा था। उन्हें साथ लेकर वह जेल में आया। और वहां से टाम को लेकर सबको नदी की ओर ले गया। फिर दक्षिण देश की ओर जाने के लिए हेली अपने दासों-सहित एक स्टीमर पर सवार हुआ।

जहाज के ऊपरी हिस्से में दस-बारह सजे-सजाये कमरे थे। इन कमरों को धनाढ्य यात्रियों ने किराये पर ले रखा था। हँसी-ठट्ठे और दिल्लगी-मजाक से ये कमरे गूंज रहे थे। एक कमरे में हंसी के फुहारे-से छूट रहे थे। जान पड़ता था, मानो इस कमरे में किसी नये दुलहे-दुलहिन का दखल है। दूसरे कमरे में सन्तान-वत्सला माता अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चे का मुख चूम-चूम कर आनन्द-मग्न हो रही थी। किसी-किसी कमरे में शूर्पनखा की बहनें अंग्रेज कुलकामिनियां कई अन्य यात्रियों को अपने से अच्छे कमरों में बैठा देखकर अपने स्वामियों से लड़-भिड़ रही थीं, अपने भाग्य को कोसती थीं और कार्य-कारण भाव की कड़ी मिलाकर समालोचना करते हुए अन्त में अपने इस दुर्भाग्य की जड़ अपने वर्तमान स्वामी को ही ठहराती थीं।

पर इस प्रकार के सजे हुए कमरों और इस आनन्द-वहार को देख कर मन केवल क्षण-भर के लिए आनन्दित हो सकता है। यह बाहरी ठाठ-वाट, यह बनाव-ठनाव और कारीगरी के दृश्य मनुष्य के हृदय में कोई जीती-जागती कविता की तस्वीर नहीं खींच सकते।

पाठक, हमारे साथ आइये, हम आपको एक वार जहाज के गोदाम का दृश्य दिखावें। जरा लोहे की जंजीर से जकड़े हुए और अपनी प्यारी पत्नी तथा वाल-वच्चों से जन्म-भर के लिए बिछुड़े हुए शोक-विह्वल टाम के मुख की ओर देखिये। माता की गोद से बिछुड़े हुए मातृ-वत्सल चौदह साल के वालक की आहें कान देकर सुनिये। साथ ही हेली के दूसरे चार गुलामों की ओर तनिक ध्यान देकर देखिये कि वे क्या कह और कह रहे हैं। यहां आपको जीती-जागती कविता की छवि दिखाई देगी। इस प्रत्यक्ष काव्य के रस से आपका हृदय भर उठेगा।

हेली के चारों गुलाम इस अंधेरे गोदाम में बैठे आंसू वहा रहे हैं और एक-दूसरे को अपने दुःख की मार्मिक कहानी सुना-सुनाकर धीरज रखने की चेष्टा कर रहे हैं। इनमें तीस साल की उम्र का जान नामक एक गुलाम था। उसने टाम के जंजीर से जकड़े घुटनों पर अपना हाथ टेककर कहा, "भाई, मेरी स्त्री यहां से थोड़ी दूरी पर रहती है। मेरे बिकने के विषय में उसे कुछ भी नहीं मालूम है। बहुत जी चाहा है कि जन्म भर के लिए चलते-चलाते एक वार उसे देख आऊं। अब इस जिन्दगी में तो फिर उससे भेंट नहीं होगी।"

इतना कहकर जान रोने लगा, आंसुओं से उसकी छाती भीग गई। टाम उसे ढाढ़स दिलाने का यत्न करने लगा, पर उसको सूझ ही नहीं कि जान को कैसे समझावे। इसी समय एक बालक जहाज के कमरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उतर कर नीचे आया। वह इन गुलामों को देखते ही अपनी मां के पास दौड़ा गया और कहने लगा, "मां, इस जहाज के गोदाम में चार गुलाम बंधे बैठे हैं। वे बहुत रो रहे हैं।"

बालक की माता ने उसके मुंह से यह बात सुनकर बड़े दुःख से कहा, "यह गुलामी की प्रथा हमारे देश के लिए बड़ा भारी कलंक है। जिस मनुष्य के हृदय है, वह क्या ऐसी शोचनीय स्थिति देख सकता है?"

पास ही के कमरे में एक और अंग्रेज स्त्री बैठी थी। आंखें उसकी बिल्ली की-सी थीं। यह बात सुनकर वह बोल पड़ी, "आपकी समझ में क्या गुलामी की प्रथा बहुत बुरी है? मैं तो नहीं समझती कि इसमें केवल दोष-ही-दोष हैं, कोई गुण नहीं है। इसमें गुण भी हैं, और दोष भी हैं। भलाई भी है और बुराई भी। मान लीजिये कि आज ही सारे गुलामों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर दिया गया तो क्या आप कह सकती हैं कि इससे उन्हें अधिक सुख मिलेगा! आप अच्छी तरह गौर से देखिये तो आपको मालूम हो जायगा कि गुलाम लोग जिस हालत में हैं, उसे वे बहुत पसन्द करते हैं, उसमें उन्हें स्वच्छन्दता का आनन्द आता है। यदि इन्हें स्वाधीनता दे दी जाय तो इनकी दशा बहुत ही खराब हो जायगी।"

इस सभ्य रमणी की बात सुनकर बालक की माता ने कहा, "यदि यह घृणित गुलामी की चाल न होती तो माता की गोद से बालक को और स्वामी से स्त्री को बिछुड़ कर जबरदस्ती दूसरे आदमी के साथ न रहना पड़ता। इन सब भयानक नृशंस व्यवहारों को स्मरण करके हृदय कांप उठता है। आप एक बार विचार करके देखिये कि यदि आपकी गोद से आपके बच्चे को कोई जबरदस्ती अलग कर दे तो आपको कितना अखरेगा, कैसा असहनीय कष्ट होगा?"

बालक की माता की बात समाप्त होने पर वह सभ्य स्त्री हँसकर बोली, "जो स्त्रियां आपकी भांति हृदय के उच्छ्वास के वश में होकर काम करती हैं, उनमें कई विषयों के गुण-दोषों की परख करने की शक्ति नहीं रहती। हृदय का उच्छ्वास विचारशक्ति को निस्तेज बना देता है और मनुष्यों के भले-बुरे का ज्ञान हर लेता है। आपके हृदय में जैसा प्रेम-भाव है वैसे प्रेम का संचार क्या काले दास-दासियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय में भी हो सकता है ? केवल अपने हृदय के अनुसार उनके सुख-दुःख और भले-बुरे का अन्दाज न कीजिये। गुलामी की प्रथा पर मैंने बहुतेरी पुस्तकें पढ़ डाली हैं। इस विषय पर मेरी बहुत बड़े-बड़े विद्वानों से भी बातचीत हुई है। मेरी समझ में गुलामी की प्रथा में किसी प्रकार की कठोरता नहीं है। यदि गुलामों को गुलामी की बेड़ी से मुक्त कर दिया जाय, तो इसमें संदेह नहीं कि वे इससे भी अधिक आफत में पड़ जायंगे ! मेरा तो खयाल है कि गुलामों की वर्तमान दशा बहुत अच्छी है।"

यह सभ्य स्त्री एक गोरे पादरी की स्त्री थी। इसका स्वामी सिर से पांव तक काले कपड़े पहने हुए पास ही खड़ा था। अपनी स्त्री को एक दूसरी स्त्री से दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में बातें करते देख कर उससे न रहा गया। उसने झट जेब से बाइबिल की पोथी निकाली और उनके पास जाकर कहने लगा, "नाहक आप लोग तर्क-वितर्क कर रही हैं। गौर से आप लोगों ने बाइबिल पढ़ी होती तो इस झूठे तर्क-वितर्क की नौबत ही न आती। बाइबिल में तो लिखा है कि कैनान देश के आदमियों को दासों के दास बनकर रहना पड़ेगा। दासत्व-प्रथा का विरोध करना बाइबिल का विरोध करना है, ईसा के धर्म का अपमान करना है। ऐसे धर्म-विरोधी नास्तिक भावों को आप लोग कभी अपने हृदयों में स्थान न दीजिये। ध्यान से बाइबिल पढ़िये, फिर इसमें सन्देह ही नहीं रहेगा कि दासत्व-प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है।"

पास ही एक लम्बा आदमी खड़ा हुआ इन लोगों की बातें सुन रहा था। पादरी साहब की बातें सुनकर उसने हँसते हुए वहां आकर कहा, "क्यों पादरी साहब, सचमुच गुलामी की प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है ? तब हम सभी लोगों को एक-एक दो-दो गुलाम खरीदने चाहिए।"

फिर वही आदमी हेली से बोला, "सुन लीजिये भाई साहब, पादरी महाशय क्या कहते हैं। आप दासत्व-प्रथा को ईश्वरीय आज्ञा बतलाते हैं। यदि पादरी साहब की बात सच्ची हो तो इसमें जरा भी सन्देह नहीं हो सकता कि अपनी इस नई आज्ञा का प्रचार करने के लिए ही ईश्वर ने खुद आपको हमारे देश में भेजा है। नित्य ही तो आप हजारों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री-पुरुषों को यहां खरीद कर वहां वेचा करते हैं और यही कार्य करके महान पुण्य लूट रहे हैं। न जाने आप कितनी ही माताओं की गोद से शिशुओं को छीन लेते हैं, कितनी ही स्त्रियों का सदा के लिए स्वामी से विछोह करा देते हैं। भाई साहब, आप-सरीखे पुरुषों की तो देवताओं की-सी पूजा होनी चाहिए।"

हेली ने उत्तर दिया, "जनाव, हम बाइविल की कुछ परवा नहीं करते। हमने तो अपनी जिन्दगी में कभी बाइविल पढ़ी नहीं। बाइबिल पढ़ने का काम पादरियों का है। हमें तो दो पैसे के नफे से काम है, उसी के लिए रोजगार करते हैं। इस पेशे में जबतक फायदा है, कभी नहीं छोड़ेंगे—चाहे वाइबिल नहीं, बाइबिल का बाप कहे, नफा होते यह काम नहीं छोड़ते। हां, अगर यह रोजगार बाइविल के मत से भी ठीक है तो हम लोगों के लिए और भी अच्छा है।"

केण्टाकी प्रदेश के राजमार्ग के पास के होटल में जिस भेड़वाले से गुलामी की प्रथा के संबंध में विलसन की बातें हुई थीं, यह लम्बा-सा आदमी वही भेड़वाला है। यह भेड़ें चरा कर अपना जीवन-निर्वाह करता है, इसी से पादरीसाहब की तरह वाइविल का विशेष जानकार नहीं है। जब पादरीसाहव ने बाइबिल निकाल कर तर्क शुरू किया तब इसने हार मान ली और पास ही जो एक युवा पुरुष बैठा था, उसके पास जाकर बैठा गया। उससे बोला, "क्यों साहब, क्या बाइबिल में दास रखने की आज्ञा है ? अभी पादरीसाहब ने बाइबिल के आधार पर बतलाया है कि काबुल देश के लोगों पर ईश्वर नाराज है। इसलिए वे दासों के दास होंगे।"

युवक पहले जरा मुस्कराया, फिर बोला, "पादरी साहब ने काबुल नहीं कैनान कहा है।" फिर बड़ी घृणा प्रकट करके वह कहने लगा, "भाई, इन धर्म-ध्वजी पादरियों की बातें बस रहने ही दो। जिस बात से देश के धनी बनियों और राजा-रईसों को सुभीता पहुंचे, उसी को पादरीसाहब की बाइबिल समझिये। जिन धनवानों के टुकड़ों से इन धर्म-ढोंगियों का पेट भरता है, उनके स्वार्थ को सिद्ध करनेवाले मतों को ही ये पादरी ईश्वर का आदेश बतलाते हैं। क्या ये कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाइबिल के सच्चे धर्म-प्रचार का भी साहस करते हैं ? महर्षि ईसा की नजरों में काले-गोरे सब समान थे, कोई भेदभाव न था । उन्होंने साफ-साफ कहा है कि संसार की समस्त जातियों के अधिकार समान हैं । बाइबिल में इस मत का कहीं उल्लेख नहीं है कि एक जाति दूसरी जाति पर अत्याचार करे। आजकल तो स्वार्थपरता ही बाइबिल है। गुलामों के नीलाम-घर को गिरजा समझिये। जुआड़ी-खाना न्यायालय है। चोरों का सम्मिलन-स्थल व्यवस्थापिका-सभा है। उस समदर्शी परमात्मा के यहां क्या कभी काले और गोरे में भेद समझा जा सकता है ? पर इन काले वस्त्र-धारी—ऊपर से गोरे और अन्दर से दिल के काले-पादरी साहबों ने बाइ-बिल की दुहाई देकर फतवा दे दिया कि परमेश्वर ने कालों को गोरों के दास होने के लिए पैदा किया है । और उसी मत का सहारा लेकर व्यव-स्थापिका-सभा के माननीय सदस्य खुल्लमखुल्ला भाषण देते हुए नई-नई आज्ञाएं निकाल कर कहते हैं कि गोरों के दास होने के लिए ही काले बनाये गये हैं।"

इस आदमी की बात समाप्त होने के पहले ही जहाज एक नगर के पास जा पहुंचा । वहां किनारे लगने पर कई यात्री उतरने की तैयारी करने लगे । इसी समय घाट पर से एक काली स्त्री बड़ी तेजी से दौड़ती हुई आकर गोदाम में घुसी और जंजीर से जकड़े हुए जान नामक गुलाम के गले से लिपट कर रोने लगी । पाठक समझ गये होंगे कि यह काली स्त्री जान की पत्नी थी । जान ने टाम से इसी की बात कही थी । स्वामी के बिकने की बात सुन कर वह तीस कोस पैदल दौड़ी आई थी और किनारे पर बैठी जहाज की बाट देख रही थी । इसकी दुख-भरी बातों और विलाप का विशद वर्णन अनावश्यक है । दास-दासियों के जीवन में ऐसे हृदय-भेदी दृश्य सदैव दिखाई देते हैं। जहाज खुलने की तैयारी हुई । युवती सदा के लिए विदा होते समय स्वामी से रोती हुई कहने लगी, "जान ! अब इस जन्म में तुमसे भेंट होने की आशा नहीं । मैं ईश्वर पर भरोसा करके इस दुःख को सह लूंगी । लेकिन अपने भविष्य की ओर देखकर मेरा कलेजा फटा जाता है । तुम्हारे चले जाने पर, बच्चों को बेचकर रुपये बटोरने के लिए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालिक अवश्य ही मुझे दूसरे आदमी के साथ रहने को मजबूर करेगा। पर मैं तुमसे कहे देती हूं कि मुझे आत्म हत्या स्वीकार है, मार खाते-खाते मर जाना मंजूर है ; पर मालिक की मार के डर से दूसरा पति करके मैं उसे बच्चे बेचने का मौका न दूंगी।"

इतना कह कर जान की स्त्री चली गई। जहाज लंगर उठाकर दक्षिण देश की ओर रवाना हुआ। चलते-चलते जहाज एक दूसरे नगर के पास पहुंचा। हेली यहां उतरा और थोड़ी देर बाद एक क्रीत-दासी को साथ लेकर जहाज पर आ गया। उस दासी की गोद में एक साल भर का शिशु था। स्त्री बड़ी प्रसन्न दिखाई पड़ती थी। पर जब जहाज चलने लगा, तब हेली ने फिर उस स्त्री के पास आ कर कुछ कहा। इस पर वह स्त्री अत्यन्त उदास हो गई। कहने लगी. "मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं करती।"

हेली बोला, "इस कागज को देख तो तुझे मेरी कही बात का विश्वास हो जायगा। जहाज में बहुतेरे पढ़े-लिखे आदमी हैं। जिससे तेरा जी चाहे, पढ़वा कर सुन ले।"

स्त्री ने कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता कि मालिक ने मेरे साथ ऐसा छल-कपट किया है। मुझ से तो उन्होंने कहा था कि तेरे स्वामी को लूविल नगर का होटल किराये पर दिया है, वहीं जाकर मुझे मजदूरिन का काम करना पड़ेगा। तुम्हारे हाथ मुझे लड़के-सहित बेच डाला, यह तो बिल्कुल नहीं कहा।"

हेली बोला, "तू दक्षिण देश के बनिये के हाथ बिकना सुन कर चिल्लायेगी, इसी से तेरे मालिक ने तुझे यह पट्टी पढ़ा दी है। तू इस कागज को जहाज के किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिखा ले। तुझे सच-झूठ का पता चल जायगा।" फिर हेली ने एक दूसरे आदमी से कहा, "जरा इस कागज को पढ़ कर इस औरत को सुना दीजिये।" उस आदमी ने पढ़कर बतलाया कि जान फरसडिक नाम के साहब ने अपनी क्रीत-दासी लूसी और उसके बच्चे को हेली के हाथ बेचा है, उसी का यह दस्तावेज है।

यह बात सुन कर वह स्त्री चीख उठी। उसका चीखना सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाज के बहुत-से आदमी वहां जमा हो गये। तब स्त्री कहने लगी, "मेरे मालिक ने मुझे तो इसके साथ यह कह कर भेजा है कि तुझे तेरे स्वामी के पास भेजते हैं। पर अब भेद खुला कि यह निरी झांसेबाजी थी। हाय, न जाने मेरे भाग्य में क्या दुःख लिखे हैं।"

बस, वह स्त्री आगे एक शब्द भी न बोली। हेली ने मन-ही-मन कहा कि चलो, इतने ही में इसका झगड़ा खतम हो गया।

उस स्त्री की गोद का बच्चा देखने में खूब हृष्ट-पुष्ट था। जहाज में एक आदमी था। उसने हेली से कहा, "जान पड़ता है, तुम इस स्त्री को दक्षिण देश में रुई के खेतवालों के हाथ बेचने को लिये जा रहे हो। पर यह समझ लो कि वे लोग लड़के समेत इस स्त्री को कभी नहीं खरीदेंगे, क्योंकि बालक साथ रहने से कुलियों को खेत का काम करने में बड़ी अड़चन पड़ती है। इससे तुम्हें लड़के को कहीं-न-कहीं दूसरी जगह बेचना ही पड़ेगा। अगर सस्ते दाम में बेचो तो मैं ही इस लड़के को ले लूं।" हेली ने कहा, "हां-हां, खरीदार होना चाहिए, हमें बेचने में कोई उज्र नहीं है।"

उस भलेमानस ने पूछा, "अच्छा, बोलो, इसके क्या दाम लोगे?"

हेली—"यह लड़का खूब तैयार है। कीमत बहुत होगी। माल बड़ा चोखा है।"

भलामानस—"लेकिन छोटा कितना है, ज़रा इसे भी तो देखो। लेनेवाले को कई बरस तो इसे यों ही खिलाना-पिलाना पड़ेगा।"

हेली—"ऐसे लड़कों के पालने में खर्च ही क्या होता है? जैसे कुत्ते-बिल्ली के बच्चे ज़रा बड़े होने पर चलने-फिरने लगते हैं, वैसे ही ये भी चलने-फिरने लगते हैं।"

भलामानस—"मेरी एक क्रीत-दासी के साल भर का एक बच्चा था, जो पानी में डूबकर मर गया है। वह इस बालक को पाल लेगी। इसी से मैं इसे लेना चाहता हूं। दस रुपये लो तो दे डालो।"

हेली—"यह माल दस रुपये में! कभी नहीं बेचूंगा। तुम्हें खबर भी है, इसे छः महीने पाल करके सौ रुपये खड़े करूंगा। तुम्हें लेना हो तो पचास से कौड़ी कम न लूंगा।"

भलामानस—"अच्छा, तीस रुपये ले लेना।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेली—"अच्छा, तुम इतना दबाते हो तो इस तरह करो, न हमारे न तुम्हारे तीस, पैंतालीस कर लो।"

भलामानस—"खैर पैंतालीस ही सही।"

हेली—"तुम कहां उतरोगे ?"

भलामानस—"मैं लूविल नगर में उतरूंगा।"

हेली—"तो ठीक है। शाम के वक्त जहाज लूविल पहुंचेगा। उस वक्त बालक नींद में रहेगा। मजे में ले जाना। रोवे-चिल्लावेगा नहीं।"

संध्या हो गई। जहाज ने लूविल नगर में पहुंचकर लंगर डाला। जहाज में "लूविल नगर, लूविल नगर" की घूम मच गई। जो यात्री यहां उतरनेवाले थे वे हड़बड़ा कर अपना माल-असबाव बांधने लगे। लूसी का स्वामी इसी नगर में काम करता था। लूसी अपने बच्चे को गोदाम में सुला कर जहाज के किनारे जा खड़ी हुई। नदी के किनारे सैकड़ों आदमी आते-जाते थे। शायद उनमें उसका स्वामी भी हो। इसी आशा पर चाह-मरी आंखों से टकटकी लगा कर वह नदी की ओर देखने लगी। खयाल करने लगी कि सम्भव है, पानी भरने के लिए उसका स्वामी भी वहां आया हो। कोई घन्टे भर तक जहाज किनारे पर ठहरा रहा. पर लूसी ने अपने स्वामी को न देखा। इससे निराश होकर वह गोदाम में लौट आई, यहां देखा तो बच्चा नारद। अब वह पागल की तरह अपने बच्चे को इधर-उधर जहाज में ढूंढ़ने लगी। यह दशा देखकर हेलीसाहब ने धीरे-धीरे उसके पास आकर कहा, "लूसी, तेरी फिक्र की कोई बात नहीं। तेरे लड़के को हमने एक बड़े दयावान आदमी के हाथ बेच दिया है। वह उसे बहुत मजे में पालेगा। लड़का साथ लेकर दक्षिण देश में जाने पर तुझे बड़ी दिक्कत होती। उसके लालन-पालन के लिए जरा भी फुर्सत न मिलती। अब मैंने तेरी सारी चिन्ता मिटा दी। जहां तक होगा हम तेरे भले ही का उपाय करेंगे।"

हेली की बात सुनकर स्त्री पर वज्रपात-सा हो गया। उसके मुंह में बात नहीं, काटो तो बदन में खून नहीं। उसे ज्ञान न रहा कि वह बैठी हुई है या खड़ी, सोई हुई स्वप्न देख रही है या जागती है। उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुंह सफेद पड़ गया। ऐसी सोचनीय दशा देखकर पत्थर का हृदय हो तो वह भी पिघल जाय। पर दिन-रात दास-दासियों की ऐसी विह्वल अवस्था देखते-देखते हेली का दिल पत्थर से भी सख्त हो गया था। उसे डर था कि स्त्री कहीं चिल्ला न उठे, जिससे जहाज भर में हुल्लड़ मच जाय। पर उसका वह डर जाता रहा, क्योंकि ऐसे भयानक शोक की हालत में कंठ और हृदय दोनों सूख जाते हैं। उस दशा में गले से आवाज नहीं निकलती, आंखों में आंसू नहीं आते। उस स्त्री की ऐसी दशा हो गई मानो किसी ने उसका हृदयं बरछी से छेद कर उसे भारी पत्थर से दबा दिया हो। न तो वह चिल्लाई न उसकी आंखों से एक बूंद पानी ही गिरा। कठपुतली की तरह उसके हाथ जैसे-के तैसे रह गये। आंखों की पलकें ऊपर को चढ़ गईं। यह नहीं जान पड़ता था कि वह आंखों से कुछ देख रही है।

उसकी यह निस्तब्ध दशा देखकर हेली मन-ही-मन प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यह स्त्री शोरगुल नहीं मचावेगी। फिर हजरत उस स्त्री को इस तरह समझाने लगे, "लूसी, हम समझते हैं कि तेरे मन को कुछ दुख होता है। पर तू समझदार है। ऐसी मामूली-सी बात को लेकर खामखा उदास होने से क्या फायदा है। तू खुद ही समझ सकती है कि ऐसा किये विना काम नहीं चलता, क्योंकिद क्षिण देश में रूई के खेतों पर काम करनेवाला मजदूर बच्चे को साथ में नहीं रख सकता।"

लूसी का कंठ रुक गया था। इससे वह अस्फुट स्वर में बोली, "मुझे माफ करो, मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती।"

हेली इतने पर भी चुप न रहा, फिर बोला, "लूसी, तू बड़ी अक्ल-मन्द है। जिसमें तेरा भला हो, वही हम करेंगे। दक्षिण देश में चल कर तुझे शीघ्र ही एक नया शौहर जुटा देंगे।"

इस पर वह स्त्री बाण से बिंधी सिंहनी की भांति कर्कश स्वर में बोल उठी, "मुझसे आप न बोलिए, मैं आपकी कोई बात नहीं सुनना चाहती।"

हेली समझ गया कि उसका तीर निशाने पर नहीं लगा। इसलिए वह अपने कमरे में चला गया और वह स्त्री अपने को सिर से पैर तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े से ढंक कर वहीं पड़ी रही।

उस स्त्री की ऐसी असहनीय मनोवेदना देखकर टाम अपना दुःख एकदम भूल गया और शोक भरे हृदय से उसके लिए ठण्डी सांसें लेने लगा। टाम का हृदय आप-ही-आप इस प्रकार भर आता था। उसने ईसाई पादरियों की भांति बाइबिल से स्वार्थपरता की शिक्षा नहीं पाई। वह नीति-निपुण पंडितों की बखानी हुई राजनीति के गूढ़ तत्वों से बिल्कुल बेखबर है। वह अमरीका-वासी श्वेतांग-शार्दूलों के नैतिक व्यवहार का मर्म समझने में सर्वथा असमर्थ है। वह मौखिक सहानुभूति प्रकट करना नहीं जानता। शोक-विह्वला जननी के दुःख से उसका हृदय विदीर्ण होने लगा, और वह उसे धीरज बंधाने का उपाय सोचने लगा। बहुत सोच-विचार के बाद उस स्त्री के सिरहाने बैठकर टाम कहने लगा, "माता, तुम ईश्वर पर भरोसा रखकर अपनी हृदय-वेदना घटाने की चेष्टा करो। तुम्हारी इस दुःख-मंत्रणा का कुछ ही दिनों बाद अवश्य अंत हो जायगा।"

स्त्री शोक से अधीर हो गई थी। उसका हृदय स्तंभित हो गया था। टाम के सांत्वना वाक्य उसके कानों में पड़े। टाम की सहानुभूति उसके हृदय तक नहीं पहुंची।

देखते-देखते घोर अंधेरी रात आ पहुंची। सारे संसार में सन्नाटा छा गया। संसार के सब जीव-जन्तु निद्रा में लीन हो गये और अपने-अपने हृदय के सुख-दुःखों को उसी अनन्त तिमिर सागर में डुबो दिया। पर सन्तान-शोक से विह्वल जननी के हृदय की आग न बुझी। पुत्र-शोक से विदग्ध लूसी की आंखों में नींद नहीं है। पर-दुःख प्रपीड़ित टाम के हृदय में भी शांति नहीं है। जहाज के बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी सभी नींद में मस्त पड़े हैं, पर लूसी को चैन कहां? वह बार-बार पुकारती है, "हे परमात्मन्, इस यातना से उद्धार करो, अपनी गोद में स्थान दो।" लूसी के शब्द टाम के सिवा दूसरों के कानों में नहीं पड़े। जहाज पर उस समय और कोई नहीं जागता था। इसके कुछ देर बाद जहाज से नदी में, धम से किसी चीज के गिरने का शब्द टाम को सुनाई दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात बीती। तड़का हुआ। गुलामों को देखने के लिए हेली गोदाम में पहुंचा। वहां लूसी न दिखाई दी। लूसी को उसने एक हज़ार में ख़रीदा था। इससे उसे न देख कर हेली पागल-सा हो गया और जहाज़ में इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। कहीं पता न पाकर अन्त में टाम के पास आकर बोला, "तू जरूर लूसी की बात जानता होगा।"

टाम बोला, "साहब, मैं और तो कुछ नही जानता। हां, थोड़ी रात थी तब नदी में किसी के कूदने का-सा शब्द सुना था।"

यह सुनकर हेली ने समझ लिया कि लूसी ने आत्म-हत्या कर ली है। पर इससे उसे कुछ दुःख न हुआ, क्योंकि वह बहुत बार दास-दासियों को आत्म-हत्या करते देखता था। इसी से इस घटना से उसके हृदय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसे केवल अपने घाटे-मुनाफे का ही खयाल हुआ। वह मन-ही-मन में कहने लगा कि इस बार काम में घाटा छोड़ मुनाफा नहीं दिखता। शेल्बी के यहां के काम-काज में पांच सौ मिट्टी में मिले और अब पूरे एक हजार पर पानी फिर गया।

पाठक, आप कहते होंगे कि हेली बड़ा निर्दयी है। आप हेली को मन-ही-मन बार-बार धिक्कारते और कोसते होंगे। पर इसके पहले एक बार वास्तविकता पर विचार कीजिये। हेली अपढ़ है और अभी तक वह सामाजिक जगत के गहरे अन्धकूप में पड़ा हुआ है। सभ्य समाज से उसका वास्ता नहीं है। वह दास-व्यवसायी है। पर बतलाइए, किसने उसे दास-व्यवसायी बनाया है? क्या दासत्व-प्रथा का बनानेवाला हेली है? कभी नहीं। जो सुशिक्षित हैं; शिष्ट कहलाते हैं, सब से आदर पाते हैं, देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लिये हुए हैं, जो देश के उपकार के निमित्त कानून गढ़ते हैं और न्यायासन पर बैठ कर इन कानूनों को काम में लाते हैं, वही हेली को दास-व्यवसायी बनानेवाले हैं, उन्हीं ने आज लूसी के बच्चे को गोद से अलग कराके उस निरपराध अबला के प्राण लिये हैं। देश के शासनकर्त्ताओ, विचारको, तुम ठगों को सजा देते हो, चोरों को जेलखाने भेजते हो और खूनियों को सूली पर चढ़ाते हो; पर तुम लोग स्वयं नित्य जो नर-हत्यायें करते हो, नर-नारियों पर घोर अत्याचार करते हो, दूसरों का धन-दौलत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरते हो, उन बातों पर क्या भूल कर भी ध्यान नहीं देते ? समझ रक्खो, परम न्यायी परमेश्वर के न्यायदंड से कोई बचा नहीं रह सकता। पुत्र-शोक में प्राण खोकर लूसी उसी अमृतमय के अमृतधाम को चली गई है। वह अब मंगलमय ईश्वर की गोद में विराज रही है। उस न्यायमूर्ति के निकट उसकी सुनवाई हो रही है। वहीं उसका न्याय होगा। पर अरे, ज्ञान-विज्ञानाभिमानी शासनकर्त्ताओ और विचारको, तुम लोग ऐसे विषयांध हो रहे हो कि पलभर भी उस अंतिम दिन की सुध नहीं करते। नहीं जानते कि लूसी की हत्या के अभियोग में तुम लोगों में से हरएक को उसी राजाधिराज के दरबार में कभी अभियुक्त होना पड़ेगा और वहां जवाबदेही करनी पड़ेगी।

१४ : : दास-प्रथा का विरोध

समय सदा एक-सा नहीं रहता। आज जिस प्रथा को सब लोग अच्छा समझते हैं, कुछ दिनों बाद कितने ही उसका विरोध करने लगते हैं। धीरे-धीरे दासत्व-प्रथा की बुराइयां कितनों ही को खटकने लगीं। उन्होंने इस प्रथा का विरोध करना आरंभ कर दिया। सन् १८६५ ईसवी में अमरीका से यह प्रथा दूर हो गई। पर पहले दासत्व-प्रथा के विरोधियों को समय-समय पर बड़े-बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़ते थे, और लोगों के ताने और गालियां सुननी पड़ती थीं। जो लोग गिरजों में या और कहीं इस घृणित प्रथा का समर्थन करते थे, वे ही सच्चे देश-हितैषी समझे जाते थे। अमरीका में नोयर और वेस्टर सरीखे सुशिक्षित और ज्ञानी पुरुष भी इस दास-प्रथा के हिमायती थे। सच तो यह है कि स्वार्थ-परता को तिलांजलि दिये बिना मनुष्य सच्ची देश-हितैषिता का मर्म नहीं समझ सकता। स्वार्थपरता पढ़े-लिखे आदमियों की बुद्धि पर भी पर्दा डाल देती है। सच्चे देशहितैषी जीते-जी कभी देश-हितैषी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहलाते। समाज में प्रचलित पाप और कुसंस्कारों से उन्हें जन्म-भर लड़ाई लड़नी पड़ती है, इसी से वे समाज के प्रिय नहीं हो सकते। इधर सैकड़ों यश के लोभी, स्वार्थ-परायण मनुष्य उनके मार्ग में कांटे बोते रहते हैं। लोगों में प्रचलित पापों और कुसंस्कारों का समर्थन करके वे देश-हितैषी की पदवी धारण कर समाज में अनुचित सम्मान पाते हैं।

महात्मा ईसा मनुष्य-जाति के सच्चे हितैषी थे, पर उनके हाथ-पैरों में कीलें ठोंक कर उन्हें सूली दी गई। लूथर सच्चा धर्म-सुधारक था, इसी से उसे बड़े-बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़े। ऐसे सच्चे देश-हितैषी और समाज-सुधारकों के लिए इस जीवन में दुःख, कष्ट और दरिद्रता ही एकमात्र पुरस्कार है। किन्तु जो लोग और व्यवसायों की भांति देशहितैषिता को भी एक व्यवसाय-सा बना लेते हैं तथा लोकप्रिय आडम्बर रचते हैं, वे इस व्यवसाय की बदौलत खूब धन कमाते और मौज उड़ाते हैं।

पर-दुःख-कातर, स्वार्थहीन, अनासक्त, दरिद्र क्वेकर-मण्डली के जिस उदार सज्जन ने भगोड़ी दासी इलाइजा को शरण दी थी, उसे क्या कोई देश-हितैषी अथवा परोपकारी समझता था? संसार के लोगों की आंखों पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है, वे भला कैसे क्वेकर-दल को परोपकारी समझेंगे? उक्त दल के लोग देश-हितैषिता का जामा पहन कर, गले में देश-हितैषिता का ढोल डाल कर तथा सिर पर देश-हितैषिता का झंडा फहराते हुए नहीं घूमते। हां, दूसरे का दुःख देखकर उनका हृदय भर आता है, परन्तु परमात्मा के सिवा उनके हार्दिक भावों को कौन देख सकता है? वे आफ़त में फंसे हुए नर-नारियों के आंसू अपने हाथ से पोंछ देते थे। दुखियों की आंखों में पानी देख कर उनकी भी आंखें भर आती थीं। वे चुपचाप सच्चा काम करते थे। कभी "परोपकार, परोपकार" का ढोल नहीं पीटते थे। यही कारण है कि दुनिया के लोग उन्हें नहीं पहचानते थे और उनकी लानत-मलामत करते थे।

ऐसी ही एक पर-दुःख-कातर राचेल नाम की बुढ़िया के पास बैठी हुई इलाइजा बातें कर रही थी। उक्त बुढ़िया क्वेकर-मण्डली के एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धार्मिक इसाई साइमन हालीडे की पत्नी थी। वृद्धा राचेल कहती थी, "बेटी इलाइजा, क्या तुमने कैनेडा ही जाने का निश्चय कर लिया है ? यहां तुम जितने दिन चाहो, निर्भय होकर रह सकती हो।"

इलाइजा—नहीं, मैं कैनेडा ही जाऊंगी। यहां ज्यादा ठहरने में डर लगता है कि कहीं कोई बच्चे को मेरी गोद से छीन न ले। कल रात ही मैंने स्वप्न देखा कि एक मनुष्य आया और मेरे बच्चे को गोद से छीन ले गया। इससे मैं बहुत भयभीत हो गई हूं।

राचेल—बेटी, तुम यहां। बेखटके रहो। यहां कोई तुम्हारे बच्चे का बाल तक बांका नहीं कर सकता। यहां हम लोग चार-पांच परिवारों के बहुत-से आदमी रहते हैं। सताये हुए मनुष्य को शरण देना ही हम लोगों के जीवन का एकमात्र उद्‌देश्य है। यहां जितने लोग हैं, वे सब अपनी जान देकर भी तुम्हारे बच्चे की रक्षा करेंगे।

इतने में वहां रूथ नाम की एक युवती आई। वह इलाइजा के पुत्र को गोद में लेकर प्यार करने लगी और उसे कई प्रकार के खाने की चीजें दीं और बहन की भांति इलाइजा से बातें करने लगी।

रूथ बोली, "प्यारी बहन इलाइजा, तुम्हें बच्चे समेत सकुशल यहां पहुंचे देख कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ।"

अभी इलाइजा के हृदय का दुःख दूर नहीं हुआ था। इससे वह बातचीत के द्वारा प्रकट रूप में रूथ के प्रति कुछ कृतज्ञता प्रदर्शित न कर सकी। पर इन क्वेकर-दल की स्त्रियों के सदव्यवहार को देख कर उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया।

इलाइजा को चुप देख कर वृद्धा राचेल बोली, "रूथ, अपने लड़के को कहां छोड़ा ?"

रूथ—साथ ही लाई हूं। तुम्हारी मेरी ने उसे ले लिया है। वह उसे खिला रही है।

राचेल—छोटे बच्चों को मेरी बहुत प्यार करती है।

तभी दरवाजा खुला और प्रफुल्लमुखी मेरी रूथ के छोटे बच्चे को गोद में लिये वहां आ पहुंची।

मेरी के गोद से लड़के को अपनी गोद में लेकर वृद्धा राचेल ने कहा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"रूथ, बड़ा सुन्दर बच्चा है !"

रूथ ने लजा कर कहा, "मां, उसे ऐसा ही सब कहते हैं।"

वृद्धा राचेल ने पूछा, "रूथ, अविगेल पीटर्स कैसे हैं ?"

रूथ—अब तो वह बहुत अच्छे हैं। सवेरे मैं उनका कमरा झाड़-बुहार आई थी, दोपहर को श्रीमती लियाहिल ने वहां जाकर उनके पथ्य और आहार का प्रबन्ध कर दिया। सन्ध्या-समय मुझे फिर जाना होगा।

राचेल—मेरा भी कल जाने का विचार है। मेरी ने उनके छोटे लड़के के लिए एक जोड़ी मोजा बुन रखा है।

रूथ ने कहा, "मां, मैंने सुना है कि हमारे हानस्टन उड की तबियत बहुत खराब हो गई है। जॉन कल सारी रात वहीं था। कल मैं भी उनके यहां अवश्य जाऊंगी।"

राचेल—कल रात को अगर तुम्हें वहां जागना पड़े तो उनको यहां भोजन करने के लिए कह देना।.

रूथ—अच्छा, मैं यहीं भोजन करने को कह दूंगी।

इसी समय वृद्धा राचेल के स्वामी साइमन हालीडे वहां आ पहुंचे। साइमन हालीडे लम्बे-चौड़े और बड़े ताकतवर जान पड़ते थे। चेहरे से उनके दया और स्नेह टपकता था। साइमन ने पूछा, "रूथ, कहो, तुम अच्छी हो ? जॉन अच्छी तरह है ?"

रूथ—जी हां, सब सकुशल हैं।"

राचेल ने अपने स्वामी को देखते ही पूछा, "क्यों, कोई नई खबर मिली ?"

साइमन ने उत्तर दिया, "पीटर स्टीवन ने कहा है कि वे आज ही तीन भागे हुए दास-दासियों को साथ लेकर यहां पहुंचेंगे।"

राचेल ने स्वामी के मुख से यह शुभ संवाद सुनकर इलाइजा की ओर देखते हुए प्रसन्न मुख से पूछा, "सच्ची बात है ?"

साइमन ने उस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर बदले में पूछा, "क्या इलाइजा के पति का नाम जार्ज हेरिस है ?"

उनका प्रश्न सुनकर इलाइजा शंकित होकर बोली, "जी हां !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे खटका हुआ कि कहीं विज्ञापन तो नहीं निकला है। राचेल ने इलाइजा का यह भाव ताड़ लिया और अलग ले जा कर अपने स्वामी से पूछा, "इस प्रश्न से तुम्हारा क्या मतलब था ?"

साइमन ने कहा, "आज ही रात को इसका पति सकुशल यहां पहुंच जायगा। हमारे आदमियों की सहायता से इसका पति, एक और गुलाम और उसकी माता भागने में सफल होकर शरण लेने के लिए यहां आ रहे हैं। मुझे जैसे ही खबर मिली, मैंने तुरन्त उनके लिए गाड़ी और आदमी भेज दिये हैं कि उन्हें निर्विघ्न यहां ले आवें।"

राचेल—क्या इलाइजा को यह खबर नहीं सुनाओगे ? यह सुन कर तो उसके आनन्द की सीमा न रहेगी।

इलाइजा को खबर सुनाने की सम्मति देकर साइमन अपने कमरे में चले गये। राचेल ने तुरन्त इलाइजा को बुला कर कहा, बेटी, "मैं तुम्हें एक खबर सुनाती हूं।"

यह सुनकर इलाइजा बहुत घबराई। सोचने लगी—न जाने क्या आफत आ पड़ी है। पर राचेल ने उसे धीरज देकर कहा, खबर अच्छी है, डरो मत। तुम्हारा स्वामी भागने में सफल हो गया है। आज रात को यहां आजावेगा।

इलाइजा के दिल पर उस समय क्या बीत रही थी, यह वही जानेगा, जिसने कभी ऐसी दशा का सामना किया है। एकाएक यह शुभ संवाद सुनने से उसके हृदय में इतना आनन्द हुआ कि वह उसके वेग को संभाल न सकी। देखते-देखते इलाइजा बेसुध हो गई। रूथ और राचेल उसे होश में लाने के लिए उसके मुंह पर पानी छिड़कने लगीं। बहुत रात बीतने पर उसे होश हुआ। चेत होने पर जब इलाइजा ने आंखें खोलीं तो देखा कि उसके स्वामी की गोद में उसका सिर है। देखते-देखते सवेरा हो गया और सूर्य निकल आया। राचेल सबके भोजन का प्रबन्ध करने लगी। दोपहर को सब-ने मिल कर एक साथ भोजन किया। इसके पहले जार्ज ने कभी किसी पुरुष के साथ भोजन नहीं किया था। घर के पालतू कुत्ते-बिल्लियों की तरह उसे खाना पड़ता था। दास-व्यवसायी के यहां जार्ज मनुष्य के आकार का एक पशु विशेष था, किन्तु यहां पर-दुःख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कातर साइमन हालीडे की दृष्टि में वह वास्तविक मनुष्य है। हालीडे के अकृत्रिम स्नेह और सहृदयता ने आज जार्ज के हृदय में ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ विश्वास ला दिया। संसार के अन्याय और अविचारों को देख कर जार्ज को ईश्वर की करुणा पर विश्वास नहीं होता था। उसकी यह धारणा हो गई थी कि इस संसार में ईश्वर नहीं है, पर ईश्वरभक्त हालीडे का सदाचरण देख कर उसकी नास्तिकता दूर हो गई। इतने दिन बाद जार्ज को ईश्वर पर भरोसा हुआ।

साइमन हालीडे के बारह वर्ष का एक छोटा लड़का था। उसने पिता से कहा, "बाबा, अगर पुलिस तुम्हें पकड़ ले तो वह तुम्हारा क्या करेगी ?"

साइमन ने कहा, "पकड़ लेगी तो सजा देगी। तब क्या तुम और तुम्हारी माता मिल कर खेती से अपनी जिन्दगी बसर नहीं कर सकोगे ? ईश्वर सबका रक्षक है, वह तुम लोगों की भी रक्षा करेगा।"

उनकी बातें सुन कर जार्ज ने बड़ी घबराहट से पूछा, "क्यों साहब, क्या मुझे बचाने में आप लोगों पर कोई आफत आने का डर है ?"

साइमन ने कहा, "तुम इससे वेफिक्र रहो। अच्छे कामों के लिए मैं सदा अपनी जान देने को तैयार रहता हूं। बलवान के अत्याचार से निर्बल की रक्षा करना ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। मेरी विपत्ति के लिए तुम्हारे संकोच करने की आवश्यकता नहीं। मैंने तुम्हारे उपकार के लिए कुछ नहीं किया है। जिस परमात्मा की कृपा से हमें दोनों समय रोटियां मिलती हैं, केवल उसी का यह प्रिय कार्य है। तुम यहां आराम करो। आज ही रात को हमारे दो आदमी तुम्हें पास के दूसरे ठिकाने पर पहुंचा आवेंगे। मुझे खबर लगी है कि पकड़नेवाले और पुलिस के लोग तुम्हारी खोज में यहां आ रहे हैं।

"जार्ज ने शंकित होकर कहा, "साहब, तब तो अभी चल देना अच्छा होगा।"

साइमन हालीडे ने उसे धीरज देकर कहा, "डरो मत ! मंगलमय ईश्वर की कृपा से हमारे आदमी तुम्हें रात को सुरक्षित स्थान में पहुंचा आवेंगे। दिन में यहां किसी आफत का खटका नहीं है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५ : : आशा की नई किरण

जिस जहाज पर दास-व्यवसायी हेली सवार था वह चलते-चलते मिसीसिपी नदी में पहुंच गया। इस जहाज पर रुई के ढेर-के-ढेर लदे हुए थे। इस कारण दूर से यह एक सफेद पहाड़-सा दिखाई देता था। जहाज के डेकों पर बड़ी भीड़ थी। सबसे ऊंचे डेक के एक कोने में एक रुई के गट्ठे पर टाम बैठा हुआ था।

कुछ तो शेल्बीसाहब के कहने से और कुछ टाम का सीधा स्वभाव देखकर, हेली को उसपर विश्वास हो गया था। पहले वह उसे हर समय अपनी आंखों के सामने रखता था और जंजीर से जकड़े रहता था। पर जब उसने देख लिया कि टाम अपनी वर्तमान दशा में कोई असन्तोष नहीं प्रकट करता तब उसके बन्धन खोल दिये और उसे इच्छानुसार घूमने का अधिकार दे दिया। दूसरे दासों के साथ यह रिआयत नहीं थी। काम न रहने पर टाम ऊपर डेक के एक रुई के गट्ठे पर जाकर बैठ जाता और एकाग्रचित्त से बाइबिल पढ़ा करता। इस समय भी वह बाइबिल पढ़ रहा था।

नदी के किनारे खेत-ही-खेत दिखाई पड़ रहे थे। उनमें हजारों दास-दासी फूस की झोंपड़ी डाल कर रहते थे। इनसे थोड़ी ही दूर पर खेत के मालिकों के सुन्दर बंगले और आराम-बाग थे। यह हृदय-स्पर्शी दृश्य देखते-देखते टाम के हृदय में पिछली बातें जाग उठीं। उसे केन्टाकी के मालिक के खेत और उसंसे सटी हुई अपनी हवादार कुटिया का ध्यान आ गया। संगी-साथियों की दावतें उसकी आंखों के सामने नाचने लगीं। उसकी स्त्री संध्या-समय का भोजन बना रही है। उसके पुत्र हँस-हँसकर खेल रहे हैं। सबसे छोटा लड़का उसकी गोद में बैठा हुआ अपनी तोतली बोली से उसे खुश कर रहा है। टाम एकाएक चौंक पड़ा, देखा, पेड़-पल्लव, खेत-बाड़ी सब एक-एक करके पीछे छूटे जा रहे हैं। जहाज के कल-पुरजों की आवाज फिर सुनाई देने लगी। तब उसे अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्तमान अवस्था का स्मरण हुआ और जान पड़ा कि अब वे सुख के दिन सदा के लिए उसे छोड़ गये। उसके हाथ में जो बाइबिल थी, उस पर आंसू टपकने लगे। आंखें पोंछ कर टाम बाइबिल में शान्ति के उपदेश ढूंढ़ने लगा। उसने बड़ी उम्र में पढ़ना सीखा था, इससे उसे जल्दी-जल्दी पढ़ने का अभ्यास नहीं था। वह एक-एक शब्द का अलग-अलग उच्चारण करते हुए पढ़ रहा था, "अपने हृदय-में....अशान्ति मत पैदा होने दो। पिता के यहां बहुत स्थान है। मैं वहां....तुम्हारे लिए जगह....करने... जा रहा हूं।"

"इस संसार में तुम्हारा जीवन चाहे किसी दशा में क्यों न कटे, किन्तु परम-पिता की मंगलमय भुजाएं तुम्हारे लिए सदा फैली हुई हैं।" बाइबिल में यह शान्तिप्रद और आशाप्रद उपदेश पढ़कर टाम के हृदय में धीरज आ गया। वह बड़ा पक्का विश्वासी है। कुटिल दर्शनशास्त्र की विषाक्त युक्तियां और जटिल विज्ञान के तर्क-वितर्क उसके स्वभाव-सिद्ध विश्वास की जड़ पर कुठार नहीं चला सकते। यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता कि बाइबिल की बात भी झूठी हो सकती है। यही कारण है कि हजार निराशा रहने पर भी उसे आशा है, हजार कष्टों के रहते भी उसके हृदय में शांति है। पुस्तक इस समय भी उसके सामने खुली रक्खी है। इसकी प्रत्येक पंक्ति में अतीत जीवन की सुख-स्मृति जड़ी हुई है। भावी जीवन की सारी आशाएं उसी पर निर्भर हैं।

इस जहाज के यात्रियों में एक अर्लिन्स-निवासी धनवान सज्जन थे। वह वारमन्ट प्रदेश से अपने घर को लौट रहे थे। उनके साथ पांच-छः वर्ष की एक बालिका और एक आत्मीया रमणी थी। टाम इस बालिका को बीच-बीच में इधर-से-उधर फिरते देखता था। वह एक जगह नहीं ठहरती थी, इससे वह मन भर कर उसे नहीं देख सकता था। लेकिन बालिका की सूरत इतनी मनोहारी थी कि उसे जो एक बार देखता, उसका जी बार-बार उसे देखने को करता था। बालिका का शरीर शैशव की सुकुमारता और अनुपम सौंदर्य से चमक रहा था। पर सौन्दर्य के सिवा इस बालिका में और भी कुछ विशेषता थी। सौन्दर्य से भी अधिक शोभाप्रद किसी अलौकिक माधुर्य से इस बालिका की मूर्ति चमचमा रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी, जिससे देखने में वह साक्षात देव-कन्या जान पड़ती थी। उसके मुख पर एक अपूर्व एकाग्रता का भाव था। उस पर एक विलक्षण कान्ति थी, जिसे देखकर प्रभु के उपासक भावुक का मन स्वयं मोहित हो जाता था। जो निरे नीरस और भावहीन हैं, उनके नेत्र भी आकर्षित हो जाते थे। यद्यपि उस आकर्षण का मतलब उनकी समझ में नहीं आता था, तथापि उनके हृदय में उस मुख की छाया प्रतिबिम्बित होने लगती थी। इन भावों के होते हुए भी बालिका के मुख पर विशेष गम्भीरता या विषाद के चिह्न नहीं दीख पड़ते थे, बल्कि वह चपल और खिलाड़ी जान पड़ती थी। देर तक एक जगह नहीं टिकती थी। अलमस्त, मन-ही-मन गाती हुई, कभी इधर तो कभी उधर फिर रही थी। पिता और वह आत्मीया रमणी बराबर उसकी ताक में लगे थे। जहां वह उनके पास पहुंची कि वे उसे पकड़ लेते थे, पर वह फिर अपने को छुड़ा कर भाग जाती थी, लेकिन वह उसे कहते कुछ नहीं थे। वह सदा ही सादे सफेद वस्त्र पहने रहती थी और मजा यह कि बराबर नाना स्थानों में दौड़-धूप करते रहने पर भी उसके उन स्वच्छ-सफ़ेद वस्त्रों में दाग या धब्बा नहीं लगने पाता था।

जहाज के मल्लाह और खलासी अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं। बालिका एक-एक कर हर एक के पास जाकर खड़ी होती है, सरल नेत्रों से उसकी ओर देखती है और सोचती है कि इसे कोई दुःख तो नहीं है, इसे कोई पीड़ा तो नहीं है। बालिका कभी-कभी भीड़ में घुस जाती है और उसे देखकर कितने ही कोमलता-रहित शुष्क अधरों पर स्नेहमयी मुस्कराहट छा जाती है। यदि कहीं बालिका को जरा भी ठोकर लगी या फिसलने की सम्भावना हुई, तो उसी दम कितने ही कठोर हाथ उसे पकड़ कर उठा लेने के लिए फैल जाते हैं। जब वह सामने से निकलती है तो सब उसके लिए मार्ग छोड़ देते हैं।

टाम का हृदय स्वभाव से ही कोमल था। सुकुमारता पर मोहित होना सहृदय नीग्रो लोगों का एक जातीय गुण है। पहली बार देखते ही टाम इस बालिका को मन-ही-मन प्यार करने लगा। वह इस सुकुमारी बालिका को देवदूत समझने लगा। बालिका कभी-कभी जंजीर से बंधे हुए हेली के दासों के पास खड़ी होकर खिन्न-चित्त से उनकी ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखती है, उनकी जंजीरों को हाथ में लेकर हिलाती-डुलाती है, अन्त में ठण्डी सांस लेकर वहां से हट जाती है। वालिका की ओर टाम बड़ी उत्सुकता से देखता था और जब वह पास आती तब उससे बातें करना चाहता था, पर एक साथ ऐसा करने की उसकी हिम्मत नहीं होती।

बालक-बालिकाओं को खुश करने में टाम बहुत ही कुशल था। वह तरह-तरह के बाजे, गुड़ियां और खिलौने बनाने में बड़ा उस्ताद था। जब वह शेल्बीसाहब के यहां था तब बालक-बालिकाओं के लिए खिलौने बनाने की सामग्री अपनी जेब में रखता था। उनमें से कुछ चीजें अबतक उसकी जेब में पड़ी थीं।

एक दिन वह बालिका उसके पास आकर खड़ी हो गई। मौका देख कर टाम बातचीत करने की इच्छा से एक-एक करके जेब से तरह-तरह की चीजें निकालने लगा। बालिका शर्मीली थी। पहले तो वह कुछ न बोली, पर धीरे-धीरे उसके मन में कौतूहल और प्रसन्नता का रंग जम गया। टाम जब खिलौने बना रहा था, तब वह कुछ दूर बैठी बड़े ध्यान से उसके बनाने का ढंग देख रही थी। जब खिलौने बनकर तैयार हो गये तब टाम एक-एक करके बालिका के हाथ में देने लगा। बालिका संकोच सहित उसके हाथ से खिलौने लेने लगी। धीरे-धीरे बालिका की लज्जा दूर हुई और दोनों में परिचितों की भांति बातें होने लगीं।

टाम ने पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है?"

बालिका बोली, "मेरा नाम इवान्जेलिन सेण्टक्लेयर है। पर मुझे बाबा तथा सब लोग 'इवा' कहते हैं। तुम्हारा क्या नाम है?"

टाम—मेरा नाम तो टाम है, किन्तु केण्टाकी में मुझे लड़के 'टाम काका' कहते थे।

बालिका—तो मैं भी तुम्हें टाम काका ही कहा करूंगी। टाम काका, तुम्हारा नाम तो बड़ा प्यारा है। अच्छा काका, तुम कहां जाओगे?

टाम—मुझे मालूम नहीं, कहां जाना होगा।

बालिका—(आश्चर्य करके) एं! अपने जाने का ठिकाना भी नहीं जानते?

टाम—दास-व्यवसायी मुझे जिसके हाथ बेचेगा, उसी के घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाऊंगा और मुझे यह क्या मालूम कि वह किसके हाथ वेचेगा ?

वालिका – मेरे पिता तुम्हें ख़रीद सकते हैं । हमारे यहां तुम सुख से रहोगे । मैं अभी जाकर पिता से तुम्हें खरीद लेने के लिए कहूंगी।

टाम—अच्छा, कहना ।

इन वातों के जरा ही देर बाद जहाज लकड़ी लाने के लिए रुक गया। कुलियों के काम में सहायता करने के लिए टाम किनारे पर जा रहा था। इसी समय इवा अपने पिता से वातें करते-करते अकस्मात् जहाज से नदी में गिर पड़ी। उसका पिता उसके पीछे कूदने ही वाला था कि पीछे से एक आदमी ने उसे पकड़ लिया। इधर टाम ने इसके पहले ही पानी में कूदकर इवा को पकड़ लिया था। इवा धारा में कुछ दूर बह गई थी, पर टाम अच्छा तैराक था। वह उसे पकड़ कर तैरकर जहाज पर चढ़ आया। इवा वेहोश हो गई थी। उसके पिता उसे अपने कमरे में लेजाकर होश में लाने के लिए नाना प्रकार के उपाय करने लगे। इधर भिन्न-भिन्न कमरों से स्त्रियों का दल-का-दल सेण्टक्लेयर के कमरे में पहुंच कर बनावटी सहानुभूति प्रकट करने लगा। इस सहानुभूति से होना तो क्या था, उल्टा इवा को होश में लाने के कार्य में कुछ देर के लिए व्याघात पहुंचा। वास्तव में इस संसार में वहुतेरे रोगियों को रोग-शैया पर इन सब परोपकारियों के ही कारण असामयिक मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है।

इवा बहुत शीघ्र होश में आ गई, पर उसके शरीर में कमज़ोरी कई दिनों तक वनी रही। चलते-चलते जहाज़ अर्लिन्स पहुंचा। यात्रियों ने अपना सामान बांधना आरम्भ किया। टाम ने नीचे के गोदाम से देखा कि इवान्जेलिन का हाथ पकड़े हुए सेण्टक्लेयरसाहब हेली के पास खड़े बातें कर रहे हैं और जव-तब हेली की बातें सुन कर हँस पड़ते हैं। कुछ पल के बाद सेण्टक्लेयर ने कहा, "अजी, समझ लिया कि तुम्हारा यह काला गुलाम बड़ा धर्मात्मा है। देश भर का सारा ईसाई धर्म इसी काले चमड़े में भरा है। अब यह बोलो कि इस मरक्को चमड़े में भरे हुए ईसाई धर्म के क्या दाम लोगे ? ज्यादा-से-ज्यादा मुझे कितना ठगना चाहते हो ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेली—साहब, आपसे हम मजाक नहीं करते। तेरह सौ से एक कौड़ी कम नहीं लेंगे। आप के सर की कसम खाकर कहते हैं, हमें इन तेरह सौ में कोई बड़ा नफा नहीं है, लेकिन....

सेण्टक्लेयर—लेकिन जान पड़ता है, आप तेरह सौ में बेचकर मुझपर बड़ी मेहरबानी कर रहे हैं।

हेली—यह बालिका इस गुलाम को खरीदने के लिए आग्रह कर रही है, इसीसे तेरह सौ में दिये देते हैं।

सेन्टक्लेयर—(हँसते हुए) जी हां, तो यह कहिये न कि मुझ पर नहीं, आप इस लड़की पर मेहरवानी कर रहे हैं। खैर, तो अब यह बतलाइये कि टाम के ठीक दाम क्या लीजियेगा?

हेली—साहब, ज़रा एक बार माल की तो परख कीजिये। कैसा हट्टा-कट्टा-चौड़ा मज़बूत आदमी है! क्या बड़ी खोपड़ी है! जान पड़ता है, अक्ल से भरी हुई है। आपकी सौगन्द, चीज आला दर्जे की है। ऐसे गुलामों के बड़े दाम होते हैं। अपने मालिक का सारा काम वह बड़ी ही ईमानदारी से करता था। बड़े काम का आदमी है। एक बार इसके पहले मालिक का सार्टिफिकेट देख लीजिये, फिर कहियेगा। यह बड़ा धर्मात्मा है। इसे केन्टाकी भर के गुलाम अपना पादरी मानते थे।

सेण्टक्लेयर—(हँसते हुए) खूब तब तो! हम इसे अपने घर का पादरी बना लेंगे। लेकिन हमारे यहां धर्म का आडम्बर बहुत थोड़ा है। इससे शायद पादरी साहब के लिए काम न मिले।

हेली—आप तो सभी बातें मजाक में उड़ा देते हैं। हम आपसे क्या कहें?

सेण्टक्लेयर—यह कैसे? हमने आपकी कौन-सी बात मज़ाक में उड़ाई है? आप ही ने तो अभी फरमाया कि यह आदमी पादरी का काम करने की योग्यता रखता है। हां, ज़रा दिखलाइयेगा तो इसके पास किस विश्वविद्यालय या किस लर्डबिशप का सर्टिफिकेट है?

इसी समय इवान्जेलिन ने चुपके से अपने पिता के कान में कहा, "बाबा, इसे खरीद लो। ये थोड़े-से रुपये तुम्हारे लिए कुछ नहीं हैं। इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी को खरीदने की मेरी बड़ी इच्छा है।"

इस पर सेण्टक्लेयर ने इवा की ठोड़ी पकड़कर हँसते हुए पूछा, "क्यों इवा, इसका क्या करेगी ? क्या इसे घोड़ा बनाकर खेलेगी ?"

इवा—बाबा, मैं इसे सुख से रखूंगी। इसका दुःख दूर करने के लिए इसे खरीदना चाहती हूं।

सेण्टक्लेयर—वाह, यह नई बात सुनी। इसे सुखी करने के लिए तू खरीदना चाहती है !

इतने में हेली ने शेल्बीसाहब के दिये हुए टाम के सर्टिफिकेट को निकाल कर सेण्टक्लेयर के हाथ में दिया। सेण्टक्लेयर ने अक्षर देख कर कहा, "लिखावट तो भले आदमी की-सी है।" फिर सर्टिफिकेट में 'धर्म' शब्द देखकर हंसते हुए कहा, "अरे भाई, इस धर्म के मारे तो देश का सत्यानाश हो जायगा। अब इस देश की खैर नहीं जान पड़ती। क्रिश्चियन-धर्मावलम्बी भाइयों के धर्म-व्यवहार से तो नाकों दम आ ही रहा था, अब ये गुलाम भी धार्मिक बनने चले तो कहिये कुशल कहां ! हमारे देश में धार्मिक पादरी, व्यवस्थापिका-सभा के धार्मिक मानवीय सदस्य, धार्मिक शासन-कर्त्ता, धार्मिक वकील और धार्मिक विचारपति, नित्यप्रति धर्म का ढोंग रच कर देश भर के लोगों को चकमा दे रहे हैं। नित नई जालसाजी और फरेब के फन्दे देखने में आते हैं। पर ये गुलाम भी अब धार्मिक बनने चले हैं, यह बड़ी कठिनाई है। लगता है, अब धार्मिक बन कर काम करना मुश्किल हो जायगा। आजकल तो गोरे इन गुलामों के लिए धर्म का काम करते हैं। इससे काम की कमी नहीं, परन्तु अब जब ये गुलाम भी धार्मिक होने लगे तो देश में ऐसा कोई आदमी ही नहीं रह जायगा, जिस पर धर्म की मूठ चलाई जा सके। खैर, बोलिये इस धर्म की आप क्या कीमत चाहते हैं ? क्या धर्म का भाव आजकल कुछ बढ़ गया है ? किसी समाचार-पत्र में तो नहीं देखा। हां, तो कहिये जनाब, इसके लिए क्या भेंट चढ़ानी पड़ेगी ?

हेली—असल में आप इसे खरीदना नहीं चाहते, यों ही मजाक कर रहे हैं। हम आपकी इस बात को मानते हैं कि इस दुनिया में कितने ही आदमी धर्म का जामा पहन कर लोगों पर हाथ साफ करते हैं, लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच्चे आदमी भी दुनिया से निर्बीज नहीं हुए हैं। जो सच्चा धार्मिक है, वह दुनिया को कभी धोखा नहीं देता। आप इस सर्टिफिकेट पर गौर क्यों नहीं करते? टाम केपहले मालिक ने इसकी कितनी बड़ाई की है, देखिये!

सेण्टक्लेयर—यदि आप निश्चयपूर्वक मुझसे यह कह सकें कि धार्मिक आदमी को खरीदने से परलोक में भी मैं उसके धर्म का मालिक हो सकूंगा, उसके धर्म का फल भोग सकूंगा, तो मैं धर्म के नाम पर तुम्हें कुछ अधिक रुपये दे सकता हूं।

हेली—वाह साहब, भला ऐसा भी कहीं हुआ है? परलोक में एक के धर्म का मालिक दूसरा कैसे हो सकता है? जीते-जी यह आपका गुलाम है, इसलिए आपका माल है, लेकिन परलोक में इसका धर्म आपका माल कैसे होने लगा? हम तो ऐसा ही समझते हैं। आपको अधिक पूछताछ करनी हो तो पादरियों से सलाह कीजिये।

सेण्टक्लेयर—मिस्टर हेली, तब देखिए, जब इसका धर्म इसी के साथ रहेगा, मेरा उससे कोई सम्बन्ध न होगा, तब उस धर्म के लिए अधिक दाम मांगना अनुचित है।

इतना कह कर सेण्टक्लेयर ने हंसते हुए हेली के हाथ में नोटों की गड्डियां पकड़ा दीं। कहा, "लीजिये, गिन लीजिये।"

हेली ने नोट गिनकर प्रसन्नतापूर्वक जेब के हवाले किये और बिक्री का दस्तावेज लिखकर सेण्टक्लेयर को दे दिया। सेण्टक्लेयर इवा को साथ लेकर टाम के पास आया और मुस्कराते हुए उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "आज से मैं तुम्हारा मालिक हुआ। कहो, अपने नये मालिक को कैसा समझते हो?"

टाम ने घूम कर ज्योंही सेण्टक्लेयर की ओर देखा, उसकी आंखों से आनन्द के आंसू टपकने लगे। वास्तव में जो कोई सेण्टक्लेयर के सदा हंसमुख, प्रसन्न, स्नेहमय चेहरे की ओर देखता था, उसी का हृदय आनन्द से भर जाता था। टाम ने कुछ देर बाद सेण्टक्लेयर के प्रश्न के उत्तर में कहा, "श्रीमन्, परमात्मा से आपके कल्याण के निमित्त प्रार्थना करता हूं। वह आपको सुखी रक्खे।"

सेण्टक्लेयर ने टाम से पूछा, "तुम्हारा नाम टाम है न! तुम गाड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हांकना जानते हो ?"

टाम ने कहा, "मैं अपने पुराने मालिक शेल्बीसाहब के यहां बराबर गाड़ी चलाता था ।"

यह सुन कर सेण्टक्लेयर ने कहा, "तो ठीक है, तुम्हें गाड़ी हांकने का काम दिया जायगा । लेकिन देखना, विना जरूरत सप्ताह में एक बार से ज्यादा शराब मत पीना । रोज शराब पीकर गाड़ी हांकोगे तो किसी-न-किसी दिन जान से हाथ धोना पड़ेगा ।"

पहले तो टाम को यह बात सुन कर बड़ा अचम्भा हुआ, फिर उसने दुःख भरे शब्दों में बड़ी नम्रता से कहा, "जी, मैं शराब नहीं पीता ।"

सेण्टक्लेयर ने टाम के ये कातर वचन सुनकर कहा, "हां, मैंने सुना है कि तुम शराब नहीं पीते । यह बहुत अच्छा है । पर तुम्हारे दुःखित होने की कोई बात नहीं है । मैंने तो यों ही कह दिया था । तुम्हारी बातचीत से मालूम होता है कि तुम सब काम अच्छी तरह निभा लोगे ।"

टाम ने कहा, "जी, कोई भी काम हो, उसे मैं जी से करने की चेष्टा करता हूं ।"

इसी बीच इवान्जेलिन ने टाम का हाथ पकड़ कर कहा, "टाम काका, तुम्हें कोई डर नहीं । हमारे यहां तुम बड़े आनन्द से रहोगे । बाबा कभी किसी को कष्ट नहीं देते । बाबा से कोई बात करने आता है तो वे हँसते ही रहते हैं ।"

सेण्टक्लेयर ने प्यार से इवा के सिर पर हाथ फेर कर कहा, "इस प्रशंसा के लिए मैं तेरा कृतज्ञ हूं ।"

१६ : : टाम का नया मालिक

यहां से टाम के जीवन के इतिहास के साथ और भी कई व्यक्तियों का सम्बन्ध आरम्भ होता है । अतः उन लोगों का कुछ परिचय देना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यक है।

अगस्टिन सेण्टक्लेयर के पिता लुसियाना के एक रईस और जमींदार थे। इनके पूर्वज कैनेडा-निवासी थे। अगस्टिन के पिता जन्मभूमि छोड़कर लुसियाना चले आये और वहां कुछ जमीन लेकर बहुत से गुलामों से काम लेने लगे और धीरे-धीरे एक अच्छे जमींदार हो गये। अगस्टिन के चाचा वारमण्ट में जा बसे और वहां खेती करने लगे।

अगस्टिन की माता का जन्म हिउग्नो सम्प्रदाय के एक फ्रांसीसी उपनिवेशी के घर हुआ था। अगस्टिन का शरीर जन्म से ही अपनी माता की भांति दुर्बल था। वारमण्ट का जलवायु बड़ा अच्छा समझा जाता था, इससे बहुत बचपन में ही अगस्टिन को अपने चाचा के यहां भेज दिया गया था।

अगस्टिन सेण्टक्लेयर में बचपन से ही कोमलता, उदारता और दयालुता के चिह्न स्पष्ट झलकते थे। ज्यों-ज्यों सेण्टक्लेयर की उम्र बढ़ती गई, उसके इन गुणों में भी वृद्धि होती गई। उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। उदारता और महत्ता उसके हृदय के स्वभाविक गुण थे। क्षुद्रता और नीचता आदि भाव उसके पास नहीं फटकने पाते थे। काम-काज में उसका मन नहीं लगता था। इससे उसके पिता ने सारे काम का भार अपने दूसरे लड़के अलफ्रेड पर डाल दिया था।

अगस्टिन की विश्वविद्यालय की पढ़ाई शीघ्र ही समाप्त हो गई। फिर उसके जीवन में उस लहर का संचार हुआ, जो एक बार सबके हृदयों को चंचल बना देती है। उस लहर से उसका प्रेमी हृदय नवीन अनुराग से उमड़ उठा, उसके जीवन-सरोवर में नया कमल खिल गया। जो हो, रूपक जाने दीजिए, संक्षेप में सुनिये, क्या बात थी। सेण्टक्लेयर एक बुद्धिमती, रूप-गुणशीला रमणी के विशुद्ध प्रेम का पात्र हो गया। दोनों का विवाह तय हो गया। युवक अपने घर बड़े उत्साह से विवाह की तैयारियां करने लगा। इसी बीच उसकी प्रेमिका के अभिभावक का पत्र आया। लिखा था :

"यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचने के पहले ही तुम्हारी मनोनीता कुमारी किसी दूसरे की पत्नी हो जायगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी के साथ सेण्टक्लेयर के वे सब प्रेम-पत्र भी वापस आये, जो समय-समय पर उसने अपनी प्रेमिका कुमारी को भेजे थे।

इस पत्र को पाकर सेण्टक्लेयर दुःख और आहत अभिमान से पागल-सा हो गया। हृदय की अनिवार्य यन्त्रणा के वेग से अधीर होकर उसने निश्चय किया कि अब सारी पिछली बातों को हृदय से एकदम भुला देगा। अदम्य अभिमान के कारण उसने इस वेढंगी कार्रवाई का कारण भी न पूछा। उस पत्र के पाने के दो सप्ताह के भीतर ही उसी नगर के एक धनवान वणिक की अति रूपवती कन्या से उसका विवाह ठीक हो गया। यह संसार एकमात्र ख़रीद-फरोख्त का बाजार है। विशुद्ध प्रेम और अकृत्रिम परिणय का सौदा इस बाजार में बहुत कम होता है, शायद ही कभी होता हो। अगस्टिन इसका अपवाद न था। उसे लाचार होकर संसार-प्रचलित क्रय-विक्रय की प्रथा का अवलम्बन करना पड़ा। देखते-देखते उसका विवाह हो गया। जिस स्त्री से सेण्टक्लेयर का विवाह हुआ था, उसकी जमा-पूंजी बस रुपया और सौंदर्य, यही दो चीजें थीं।

विवाह के उपरान्त नव-दम्पती इष्ट-मित्रों के बीच हँसी-खुशी में दिन बिताने लगे।

किन्तु एक महीना भी न होने पाया था कि एक दिन अगस्टिन के नाम एक पत्र आया। पत्र के सिरनामे पर वही परिचित अक्षर थे। पत्र देखकर सेण्टक्लेयर का मुंह पीला पड़ गया। कांपते हाथों से उसने पत्र लिया। जिस समय सेण्टक्लेयर को पत्र मिला था, उस समय मित्रों से उसका घर भरा हुआ था। वह एक आदमी से हँस-हँस कर बातें कर रहा था। ज्यों-त्यों अपनी बातें समाप्त करके वह चुपके से निकल पड़ा। एकान्त में जाकर उसने पत्र खोला। हाय! आज इस पत्र को पढ़ने से ही क्या लाभ है?

वह पत्र सेण्टक्लेयर की पूर्व प्रेमिका के पास से आया था। उसे पढ़कर विवाह का पूरा रहस्य मालूम हो गया।

पहले जिस अभिभावक का उल्लेख किया गया है, उस नर-पिशाच ने अपनी अधीनस्थ इस कुमारी को अपने पुत्र के साथ ब्याहने की बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेष्टा की; पर जब कन्या किसी तरह राजी न हुई तब वह उस पर मन-माने अत्याचार करने लगा। इससे भी जब सफलता न मिली, तो इस दगाबाज ने ऊपरवाली चाल चल कर सेण्टक्लेयर से उसका पवित्र नाता तोड़ दिया। इधर सेण्टक्लेयर का पत्र न पाने के कारण वह दिन-पर-दिन चिन्तित रहने लगी। पत्र पर पत्र लिखे, पर उत्तर न मिला। हजार सोचा, पर कोई कारण समझ में नहीं आया। धीरे-धीरे उसके मन में तरह-तरह के संदेह और आशंकाएं उठने लगीं। इसी सोच में वह दिन-पर-दिन सूखने लगी। अंत में एक दिन उस पापी अभिभावक की शठता उसे मालूम हो गई। वह जान गई कि इस नराधम ने उनके पारस्परिक प्रेम में बाधा डालने की कुचेष्टा की है।

पत्र पढ़कर सेण्टक्लेयर को सब बातों का पता चला। पत्र का अंतिम भाग आशापूर्ण वाक्यों और प्रेमोक्तियों से भरा हुआ था। रमणी ने लिखा था—"मैं जीते-जी तुम्हारी ही हूं।" अभागा युवक उसे पढ़ कर छटपटा कर रह गया, उसे मौत से भी अधिक दुःख हुआ। पर क्या करता! सोचा, अब दुःख करने से पुरानी बात नहीं लौटती। उसने तुरन्त उत्तर दे दिया। लिखा :

"तुम्हारा पत्र मिला, किंतु समय पर नहीं। अब मिलना न मिलना दोनों बराबर हैं। मुझे जो खबर मिली थी, उसे मैंने सच मान लिया। मैं उस समय पागल-सा हो गया था। मेरा विवाह हो गया। जो कुछ होना था, हो गया। कुछ भी बाकी नहीं रहा। अब सब बातें मन से भुला दो। जो हो गया सो हो गया।"

इस घटना से सेण्टक्लेयर का सुख-स्वप्न भंग हो गया। उसका प्रेमी हृदय शुष्क हो गया। उस काल्पनिक सुख-शान्ति-पूर्ण संसार को कल्पना से विदा कर देने पर सेण्टक्लेयर को प्रकृत संसार-पथ का पथिक होना पड़ा। वह कल्पनानुरंजित संसार यथार्थ संसार से कितना भिन्न है, इसका अनुभव उस संसार में प्रवेश किये बिना नहीं हो सकता।

उपन्यासों में प्रणय-निराशा और मृत्यु मानो एक साथ ही डोर में बंधे रहते हैं। ज्योंही कोई प्रणय से निराश होता है, तुरन्त मृत्यु महा-रानी पहुंच कर उसके भग्न हृदय की दारुण जलन को सदा के लिए ठंडा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर देती है।

परन्तु प्रकृत जीवन और उपन्यास में बड़ा भेद है। प्रकृत जीवन में उपन्यास की भांति मृत्यु इतनी पास नहीं खड़ी रहती। संसार में नित्य कितने ही लोगों का प्रणय टूटता है, पर कितने आदमी हैं, जो उसके लिए प्राण देते हैं ? जीवन चारों ओर से दुःखों और यन्त्रणाओं से घिर जाता है, सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है। हृदय घोर निराशा में डूब जाता है। इतने पर भी मनुष्य नहीं मरता। जैसे समय पर पहले खाता-पीता था, काम करता था, सोता-घूमता था, वैसे ही अब भी सारे-के-सारे काम करता है। अगस्टिन के हृदय को बहुत गहरी चोट लगने पर भी संसार की इसी गति के अनुसार उसे सारे काम करने पड़ते थे। किंतु उसकी पत्नी मेरी योग्य होती तो उसका अन्धकारमय जीवन फिर भी प्रकाशमान हो सकता था, पर मेरी की अदूरदर्शी दृष्टि अगस्टिन के हृदय तक न पहुंचती थी। उसने यह बात जानने की कोशिश तक नहीं कि उस हृदय पर कोई घाव लगा है। हम पहले ही कह आये हैं कि विपुल सम्पत्ति और रूप-लावण्य के सिवा मेरी में और कोई भी गुण न था। पर इन दोनों में एक भी गुण जी की जलन को ठंडा नहीं कर सकता था, हृदय के घाव को नहीं भर सकता था।

पत्र पाने के बाद अगस्टिन एक निर्जन कमरे में जाकर लेट गया। बड़ी देर के बाद पत्नी ने आकर पूछा, "तुम्हें क्या हो गया है ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मेरा सिर दर्द कर रहा है।"

बुद्धिमती मेरी ने इसीको सच मान लिया, फिर कोई और बात न पूछ कर औषधि की व्यवस्था कर दी। किंतु वह सिर-दर्द क्या एक दिन का था ? उसके बाद अक्सर सेण्टक्लेयर को उसी प्रकार सिर दर्द हुआ करता था। जब देखते-देखते कई दिन बीत गये, तब एक दिन मेरी ने कहा, "विवाह के पहले नहीं जानती थी कि तुम ऐसे रोगी हो। मैं देखती हूं कि तुम्हें तो बराबर ही सिर-दर्द हुआ करता है। मेरे फूटे भाग ! अभी हाल में हम लोगों का विवाह हुआ है और अभीसे मुझे लोगों के घर अकेले घूमने जाना पड़ता है। तुम साथ नहीं जा सकते। मुझे बड़ा नागवार मालूम होता है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्नी की मोटी बुद्धि देखकर पहले-पहल तो सेण्टक्लेयर मन-ही-मन सन्तुष्ट हुआ, परंतु जब विवाहित जीवन के कुछ आरंभिक दिन बीत गये और आदर-सत्कार का बंधन कुछ ढीला पड़ने लगा, तब सेण्टक्लेयर ने देखा कि रूप और गुण दोनों एक साथ नहीं रहते और लावण्य तथा सौन्दर्य मनुष्य को अधिक दिनों तक सुख नहीं दे सकते। उनका आनन्द शीघ्र ही फीका पड़ जाता है। उसने अनुभव किया कि ऐश्वर्य की गोद में पली हुई और पिता की लाड़ली सुन्दरी से इस जीवन-यात्रा में सुख पाने की कोई सम्भावना नहीं है। जिसे लोग प्रेम कहते हैं, उस प्रेम की मात्रा मेरी के हृदय में एक तो थी ही बहुत थोड़ी, और जो नाममात्र को थी भी वह भी तो अपने ही ऊपर थी, दूसरों पर नहीं। मेरी अपने पिता की इकलौती बेटी थी। पिता के घर नौकर-चाकरों तथा कुटुम्बियों पर हुकूमत करती आई थी। उसे जब जिस बात की चाह होती थी, वह तुरन्त पूरी होती थी। उसने जब चाहा, वह सुलभ हो या दुर्लभ, पिता ने उसे देकर राज़ी किया। दास-दासियों पर वह जैसा रौब-दाब रखती थी और दबाव डालती थी, उसका ठिकाना न था। वे बेचारे हर घड़ी मालिक की लड़की को खुश करने की चिंता में लगे रहते थे। कहीं ज़रा-सी भी भूल हो जाती थी, तो वह उन्हें बड़ा कठोर दण्ड देती थी। ऐसी दशा में पल कर मेरी का हृदय केवल अहमन्यता और स्वार्थपरता का घर हो गया था। अपने सुख के सिवा उसे और कुछ सुहाता ही न था। अपनी बात के सामने उसे पल भर के लिए भी दूसरे की बात का ध्यान न आता था। साथ ही उसे अपने परम सुन्दरी होने का पूरा भान था।

उसका विचार था कि यदि वह असामान्य रूपवती न होती तो लुसियाना प्रदेश के असंख्य नवयुवक उससे विवाह करने के लिए इतनी व्याकुलता क्यों दिखाते? पर मूल कारण कुछ और ही था। असल बात यह थी कि उससे विवाह करने की इच्छा रखने वाले युवक यह सोच कर उसके आगे शीश झुकाते थे कि जो उससे विवाह करेगा, वही उसके पिता के अपार धन का मालिक होगा। मेरी अपने स्वामी का बड़ा सौभाग्य समझती थी कि उसे उस जैसा स्त्रीरत्न मिला। स्वामी के साथ व्यवहार में भी उसका यह आन्तरिक विश्वास पग-पग पर झल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कता था। कभी-कभी वह बातों-बातों में, बड़े साफ शब्दों में, स्वामी से यह कह भी डालती थी।

ऐसी स्त्री के साथ रह कर गृहस्थी चलाना सेण्टक्लेयर के लिए बड़ा कठिन हो गया। एक ओर तो वह अपनी पूर्व प्रेमिका को अपने हाथों दिये आघात का स्मरण करके दुःखी हो रहा था, अपने को मन-ही-मन बराबर धिक्कारता था और दूसरी ओर इसी समय श्रीमती मेरी महारानी के वचन-बाण उसके हृदय को वेंधते थे। इससे वह प्रायः काम का बहाना करके घर से चला जाया करता था। पर ऐसी स्वार्थ-परायण स्त्री सदा स्वामी के अन्दर का सारा प्रेम सोखने की इच्छा किया करती है। जो स्त्री स्वामी को प्यार करना नहीं जानती, वह उतना ही अधिक स्वामी का प्रेम चाहती है। अतः सेण्टक्लेक्यर को घर से भाग कर भी छुटकारा नहीं मिलता था।

विवाह के एक साल बाद मेरी के एक कन्या उत्पन्न हुई। इस कन्या का मुख-कमल देखते ही दयालु सेण्टक्लेकर का हृदय गम्भीर सन्तान-वात्सल्य से भर गया। वह कन्या ज्यों-ज्यों बढ़ने लगी, सेण्टक्लेयर का प्रेम भी उस पर बढ़ता गया। किंतु सेण्टक्लेयर का इस कन्या को प्राणों से अधिक प्यार करना उसकी स्त्री मेरी को असह्य हो गया! वह मन-ही-मन विचार करने लगी कि सेण्टक्लेयर के हृदय में एक तो यों ही प्रेम नहीं है, फिर मुश्किल से जो थोड़ा-बहुत था भी, सो वह इस कन्या ने ले लिया। मैं तो अब स्वामी के प्रेम से बिल्कुल ही खाली रह गई। यह सब सोचकर वह कन्या का जैसा चाहिए, वैसा लालन-पालन नहीं करती थी। कन्या के जन्म लेने के उपरान्त मेरी को प्रायः सिर-दर्द बना रहता था। वह सदा पलंग पर पड़ी रहती थी। कन्या के पालन-पोषण का भार दास-दासियों के जिम्मे कर दिया गया। बीच-बीच में सेण्टक्लेयर स्वयं उसको संभाल लिया करता था।

चार-पांच वर्ष की हो जाने पर बालिका के प्रत्येक कार्य और आचरण से विशेष दया, स्नेह और ममता का भाव प्रकट होने लगा। सेण्टक्लेयर ने कन्या की ऐसी कोमल प्रकृति और सहृदयता देखकर अपनी माता के नाम पर उसका नामकरण किया। सेण्टक्लेयर की जननी बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दयालु थी। दूसरे का जरा भी दुःख देखकर उसका हृदय भर आता था। अगस्टिन अपनी माता पर असीम श्रद्धा और भक्ति रखता था। उसकी माता का नाम इवान्जेलिन था। इससे उसने अपनी कन्या का भी वही नाम रखा।

इधर मेरी की हालत सुनिये। उसे नित्य एक नया मन गढ़न्त रोग होने लगा। दिन भर अहदी की तरह पलंग पर पड़े-पड़े शरीर में पीड़ा होने लगती थी और वह सोचती थी कि उसे कोई नया रोग हो गया है। उन रोगों की चिकित्सा और सेवा उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होती, इसकी उसे सदा ही शिकायत बनी रहती और इसके लिए वह सदैव स्वामी पर चिड़चिड़ाया करती। कभी-कभी अभिमान के वशीभूत होकर रोने लगती और कभी अपने भाग्य को कोसती। वह अपने मन में इसे केवल विधि की विडम्बना ही समझती थी कि जो उसकी-सी रूपवती, गुणवती, पुण्यवती और बुद्धिमती नारी को ऐसी दुरवस्था में पड़ना पड़ा। कभी-कभी तो ऐसा होता था कि किसी-किसी मनोकल्पित रोग के कारण वह लगातार तीन-तीन, चार-चार दिन तक बिस्तर न छोड़ती थी। इसलिए घर का सब काम दास-दासियों के ही भरोसे था। इसके सिवा इवा का भी लालन-पालन अच्छी तरह न होने के कारण वह भी कुछ दुबली हो गई थी। यह देखकर सेण्टक्लेयर घर के प्रबंध एवं इवा के लालन-पालन के लिए वारमण्ट से अपने चाचा की लड़की मिस अफि-लिया को लाने के लिए वारमण्ट रवाना हो गया। जहाज में सेण्टक्लेयर के साथ जिस महिला की बात पहले कही गई है, वह मिस अफिलिया ही थी। इसे साथ लेकर अगस्टिन इस जहाज में घर लौट रहा था।

चलते-चलते जहाज नवअर्लिन्स आ पहुंचा। इन लोगों के उतरने के पहले मिस अफिलिया के संबंध में दो-एक बातें कहना उचित जान पड़ता है। मिस अफिलिया की अवस्था ४५ वर्ष की है। घर के काम-काज में वह बड़ी होशियार है। उसके हर काम से उसकी सहनशीलता और फुर्तीलेपन का परिचय मिलता है। उसके सारे काम और व्यवहार नियमपूर्वक तथा उत्कृष्ट प्रणाली एवं परिपाटी से होते हैं। काम के लिए यदि वह कोई नियम बना लेती है तो उसे कभी नहीं तोड़ती। नियम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तो वह बड़ी ही पक्की है। असावधानी को वह बहुत बड़ा पाप समझती है। वह औरों को भी किसी काम में लापरवाही करती देखकर बड़ी झुंझलाती और उन पर घृणा प्रकट किया करती है। कर्तव्य-पालन में वह बड़ी कठोर है। जिस काम को वह अपना कर्तव्य समझती है, उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं रखती। वह सदा विवेक से काम लिया करती है। यदि उसे 'विवेक की दासी' कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

वास्तव में अंग्रेज-ललनाओं में बहुतेरी विवेक के वश में होती हैं, पर उनका वह विवेक-यन्त्र अंकुश की भांति उन्हें चलाता है। मनुष्य-समाज में दो तरह के प्राणी दिखाई पड़ते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो केवल कर्तव्य मान कर विवेक के आदेश का पालन तो करते हैं, पर उसका पालन करने से उनके हृदय में आनंद की धारा नहीं बहती। कुछ ऐसे होते हैं, जो हृदय के वेग में पड़कर विवेक के आदेश का पालन करने में उन्मत्त हो जाते हैं। पहले प्रकार के विवेक का आदेश लोहे के चने चबाने से भी कठिन काम है। जो लोग पहले प्रकार के विवेक के आदेश पर काम करते हैं, उन्हें दुनिया कर्तव्य-परायण कहती है। पर दूसरे प्रकार का विवेक मनुष्य को कर्तव्य-प्रमत्त बना देता है। ऐसी दशा में विवेक और आवेग इन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता। महाराजा जयसिंह को कर्त्तव्य-परायण कहा जा सकता है, पर वह कर्त्तव्य-मत्त अथवा कर्तव्य-नेता कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। दूसरी पवित्र श्रेणी में बुद्ध, ईसा और चैतन्य आदि के पवित्र नाम गिनाने योग्य हैं। कर्तव्य-परायण मनुष्य मशीन की भांति कर्तव्य के अनुरोध का पालन करता है, परन्तु कर्तव्य-मत्त व्यक्ति हृदय के उमड़े हुए वेग से तन्मय होकर कर्तव्य को पूरा करता है।

मिस अफिलिया कर्तव्य-परायण थी। हम उसे कर्तव्य-मत्त नहीं समझते। कर्तव्य-पालन में वह कभी पीछे नहीं हटती, दुर्गम पर्वत उसके कर्तव्य-मार्ग में कभी बाधा नहीं डाल सकता। अगाध समुद्र या प्रचण्ड अग्नि उसे कर्तव्य-पालन से विमुख नहीं कर सकती। हृदय की अनिवार्य निर्बलता के साथ वह सदा घोर संग्राम किया करती थी। यदि वह उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकट संग्राम में कभी हार जाती तो अपनी निर्बल प्रकृति का ध्यान करके बहुत खिन्न होती थी।

अतः इन कारणों से उसका हार्दिक धर्म-विश्वास उसे प्रसन्न न बनाकर उल्टा कभी-कभी उसके अन्तःकरण को विषाद के अन्धकार से पूर्ण कर देता था।

पर बड़ा आश्चर्य तो यह देखकर होता था कि अफिलिया-जैसी कर्तव्य-परायण, धीर-गम्भीर प्रकृति वाली और विवेकशील स्त्री, चंचल-मति अगस्टिन को प्यार करे। इन दोनों की प्रकृति में जरा-भी समता नहीं थी। दोनों के स्वभाव में ३६ का-सा सम्बन्ध था। लेकिन मिस अफिलिया लड़कपन से ही बड़े चाव से अगस्टिन को धर्म-शिक्षा दिया करती और अपने सगे छोटे भाई की भांति उसका दुलार करती थी। अगस्टिन का स्वभाव चंचल होने पर भी वह बड़ा स्नेहशील था। इसी से मिस अफिलिया लड़कपन से उसे प्यार करती थी और यही कारण था कि अगस्टिन के प्रस्ताव पर वह तुरन्त उसके घर आने को राजी हो गई। अगस्टिन के घर का काम-काज संभालने तथा इवान्जेलिन के पालन-पोषण का भार उठाने के लिए वह बड़ी खुशी से अगस्टिन के साथ नवअर्लिन्स आ गई। जहाज नवअर्लिन्स पहुंचने को हुआ तो मिस अफिलिया बड़ी फुर्ती से माल-असवाब बांधने लगी। इधर इवा से बार-बार कहने लगी—"तेरी गुड़िया कहां है? कैंची कहां है! खिलौने कहां हैं? अपने सब खिलौने गिन डाल। कितनी लापरवाही रखती है। अभी तक इन चीजों को नहीं गिना?"

इवा ने कहा, "बूआ, अब तो हम लोग घर ही चलते हैं, इन सब चीजों को लेकर क्या होगा?"

अफिलिया—क्या होगा? घर ले चल, वहां ठिकाने से रख देना। बच्चों को अपनी वस्तुएं सावधानी से रखनी चाहिए।

इवा—बुआ, मुझे यह सब रखना नहीं आता।

अफिलिया—अच्छा, तू देख, मैं सब ठीक किये देती हूं। एक यह तेरा बक्स है। यह खिलौना दो; कैंची तीन और फ़ीता चार। सब चार चीजें हुईं। बेटी, मैं जानती हूं, तू अकेली अपने बाबा के साथ आती तो ये सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीजें खो जातीं।

इवा—हहं, मैंने योंही कितनी ही बार कितनी चीजें खो दीं और बाबा ने सब चीजें मुझे फिर खरीद दीं।

अफिलिया—वाह, कैसी अच्छी बात है। एक बार एक चीज को खो देना और फिर उसी को खरीद लेना।

इवा—बूआ, यह तो बड़ी सीधी बात है।

अफिलिया—सीधी बात है ! यह हद दर्जे की लापरवाही है। घोर लापरवाही !

योंही बार-बार "लापरवाही ,लापरवाही" करते हुए मिस अफिलिया सारी वस्तुएं बक्स में भरने लगी। जब बक्स भर गया तो इवा ने कहा, "बूआ, बक्स तो भर गया, अब इसमें और चीजें नहीं समायेंगी। अब क्या करोगी ?"

यह सुनकर अफिलिया बोली, "नहीं समायेंगी। जरूर समायेंगी; क्यों नहीं समायेंगी ?"

इतना कहकर बक्स के कपड़ों को जोर से दबाने लगी। अफिलिया का रुख देखकर मानो सन्दूक बेचारा डर गया। अफिलिया ने सारी चीजों को सन्दूक में रख कर हँसते हुए कहा, "अभी तो सन्दूक में और भी चीजें रख देने को जगह खाली है। तू इस सन्दूक पर खड़ी हो जा, मैं चाबी बन्द कर दूं।"

इस प्रकार अफिलिया सन्दूक से संग्राम में जीतकर इवा से बोली, "तेरे बाबा कहां हैं ? जा, उन्हें बुला ला। कह दे, हम लोग तैयार हैं।"

इवा—बाबा तो नीचे के कमरे में खड़े एक आदमी से बातें कर रहे हैं और नारंगियां खा रहे हैं।

अफिलिया—जा, दौड़कर बुला ला। जहाज अब घाट-किनारे पहुंचने ही वाला है।

इवा—बाबा कभी जल्दी नहीं करते। बूआ, तुम इधर आओ। वह देखो, अपना घर दीख पड़ता है।

अफिलिया—हां, देख लिया। जा, झटपट अपने बाबा को बुला ला। लो, जहाज किनारे आ गया और अगस्टिन अभी भी देर कर रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाज घाट पर आ लगा। सैकड़ों कुली जहाज पर चढ़ आये। उनमें से एक मिस अफिलिया से बोला, "मेम साहब, अपना बक्स मुझे दीजिये।" दूसरा कुली बोला, "मेम साहब, ये बिस्तरे मैं उठाता हूं।" तीसरा बोला, "मेम साहब, यह सन्दूक मेरे सिर पर उठा दीजिये।" कुलियों का तो यह हाल था और मिस अफिलिया अपनी सारी चीजों को अपने सामने रख कर खड़ी खजाने के संतरी की भांति पहरा दे रही थी। उसके मुख का रुख और तीव्र दृष्टि देखकर कुली डर के मारे वहां से खिसकने लगे। इधर अगस्टिन को देर करते देखकर अफिलिया छटपटाने लगी। कोई पन्द्रह मिनट के बाद बिना किसी घबराहट के अगस्टिन ने अफिलिया के पास आकर अन्यमनस्क भाव से पूछा, "बहन, तुम तैयार हो ?"

अफिलिया बोली, "मैं एक घंटे से तैयार बैठी हूं। मैं तुम्हारे देर करने से बहुत उकता रही थी।"

अगस्टिन ने कहा, "उकताने की कौन-सी बात थी ! अपनी गाड़ी किनारे खड़ी है। भीड़ छंट जाने दो तो आराम से उतर कर चले चलेंगे।"

इतना कहकर अगस्टिन ने एक कुली से कहा, "अरे, हमारा सामान गाड़ी पर रखवा देना।"

यह सुन कर मिस अफिलिया ने कहा, "मैं उसके साथ जाकर अपने सामने सब चीजें ठीक से गाड़ी पर रखवाती हूं। तुम यहां खड़े रहो।"

अगस्टिन—तुम्हारे साथ आने की आवश्यकता नहीं है। यह सब आपही ठीक से रख देगा। हम लोग साथ ही चलते हैं।

अफिलिया—लेकिन यह बैग और बक्स तो मैं कुली को नहीं दूंगी। मैं इन दोनों को स्वयं ही ले चलूंगी।

अगस्टिन—अपनी वह उत्तर प्रदेश की चाल छोड़ दो। इस देश की रीति-नीति सीखो। बक्स और बैग तुम ढोओगी तो लोग तुम्हें दासी समझेंगे। डरो मत ! सब चीजें इस आदमी को उठाने दो। वह सब चीजें बड़ी सावधानी से गाड़ी पर रख देगा।

इसी समय इवा बोली, "टाम कहां है ?"

अगस्टिन ने उत्तर दिया, "टाम नीचे है। इवा, टाम को अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मां के पास ले जाना। कहना कि टाम को गाड़ी हांकने के लिए लाये हैं। अब उस शराबी कोचवान को गाड़ी नहीं हांकने दी जायगी।"

इवा—बाबा, टाम बड़ा अच्छा कोचवान रहेगा। वह कभी शराब नहीं पीयेगा।

इसके बाद मिस अफिलिया और इवा को साथ लेकर अगस्टिन जहाज से उतरकर अपनी गाड़ी पर चढ़ा। मिस अफिलिया ने गाड़ी पर चढ़ने के पहले सब चीजें एक-एक करके संभाल लीं। थोड़ी ही देर में गाड़ी एक सजे-सजाये द्वार पर पहुंच गई। बाहरी दरवाजा पार कर गाड़ी के भीतर पहुंचते ही इवा उतरने के लिए छटपटाने लगी और अफिलिया से बार-बार कहने लगी, "बूआ, देखो, हमारा घर कैसा सुन्दर है? तुम्हारे घर ऐसा बगीचा नहीं है!"

अफिलिया मुस्करा कर बोली, "हां घर तो सुन्दर है, पर ईसाई का-सा घर नहीं जान पड़ता। मालूम होता है, किसी गैर-ईसाई का घर है।"

सेण्टक्लेयर को अपने लिए 'गैर-ईसाई' शब्द सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। गाड़ी दरवाजे पर लगते ही टाम सबसे पहले उतरा और घर की शोभा देखकर आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा। मिस अफिलिया के साथ सेण्टक्लेयर के गाड़ी से उतरने पर घर के बहुत-से हब्शी दास-दासी दरवाजे पर आकर जमा हो गये। सेण्टक्लेयर दास-दासियों पर कभी अत्याचार नहीं करता था। उसके घर इन दास-दासियों को किसी प्रकार की तकलीफ न थी। खाने-पीने का सब तरह आराम था। इससे उसके लौटने पर सबको विशेष आनन्द हुआ। उसका हँसमुख चेहरा देखने के लिए वे सब बड़े उत्सुक थे। इन दास-दासियों में एक लम्बा पुरुष था। वह बड़ा ठाट-बाट बनाकर दरवाजे पर सब के आगे आकर खड़ा हुआ। उसके पहनावे और रौब-दाब से लग रहा था कि वह इस घर के गुलामों का सरदार है। अपने पीछे बहुत-से दास-दासियों को एकत्र देखकर, उन पर रौब झाड़ने के लिए उसने तोबड़ा-सा मुँह बनाकर कहा, "अरे काले भाई-बहनो, तुम लोगों की करतूतों से मुझे कभी-कभी बहुत ही शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। अपने पैर मिलाकर, एक लाइन में, खड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होओ। आजतक तुम लोगों ने विलायती ढंग पर खड़े होना तक भी नहीं सीखा। तुम लोगों के इस तरह खड़े रहने से मालिक के घर में जाने का रास्ता रुक गया है।"

यह वक्तृता सुनकर सब दास-दासी एक किनारे हट कर खड़े हो गये।

सेण्टक्लेयर ने दरवाजे पर पहुंचते ही एडाल्फ नामक इस प्रधान से हाथ मिलाया और उसका नाम लेकर कहा, "एडाल्फ, अच्छे तो हो?"

इस प्रकार सेण्टक्लेयर द्वारा आदर पाने पर एडाल्फ ने मालिक के स्वागत के लिए जो भाषण रट रक्खा था, वह सुनाना शुरू किया। एडाल्फ का भाषण सुनकर सेण्टक्लेयर ने हंसते हुए कहा, "भाषण तो खूब तैयार किया है।"

इतना कहकर वह तुरन्त घर में चला गया।

मकान में जाते ही इवा दौड़ती हुई अपनी मां के कमरे में पहुंची। पलंग पर लेटी अपनी माता के गले से लिपट गई और वार-वार उसका मुख चूमने लगी। पर उसकी माता ने अपने कल्पित रोग के कारण कमजोर बनी रहने की वजह से उसको गोद में तो लिया ही नहीं, बल्कि गले से लिपटकर इवा के वार-वार मुंह चूमने से कुछ झुंझलाकर बोली, "जा-जा, बहुत हो गया, बहुत हो गया! ठहर जा, मेरे सिर में दर्द बढ़ जायगा।"

सेण्टक्लेयर ने अपनी स्त्री के कमरे में पहुंच कर उसका मुंह चूमा और मिस अफिलिया की ओर उंगली करके कहा, "प्यारी! देखो तुम्हारे रोग की बात सुनकर अफिलिया बहन आई हैं।"

मेरी पलंग से नहीं उठ सकी। केवल अधखुले नेत्रों से अफिलिया की ओर एक बार देख कर बड़े धीमे स्वर से उसका स्वागत किया। सब दासियां जब कमरे के द्वार पर आकर खड़ी हुईं तो उनमें मामी नाम की एक दासी के गले लिपट कर इवा उसका मुंह चूमने लगी। उस वृद्धा ने इवा को अपनी छाती से लगा कर उसका मुंह चूमा। उसकी आंखों से आनन्द के आंसू बहने लगे। वह बड़ी चाह से इवा के मुंह की ओर देखने लगी। उसने जिस प्रकार इवा को अपनी छाती से लगाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था, उससे तो यही जान पड़ता था कि वही इवा की माता होगी। कुछ देर के वाद इवा ने मामी की गोद से उतर कर घर की हर दासी का मुख चूमा।

इवा को इस भांति दासियों का मुंह चूमते देखकर मिस अफिलिया को बड़ा अचम्भा हुआ। इस पर वह सेण्टक्लेयर से बोली, "अगस्टिन, क्या तुम्हारे इस दक्षिण देश में दास-दासियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है? भाई, हम लोग तो दास-प्रथा के विरोधी होते हुए भी नौकरों को इतना मुंह नहीं लगाते, इतना आदर नहीं देते। हम लोग वेतनभोगी चाकरों को कभी अपने समान नहीं समझते। दास-दासियों पर दया करना उचित है, लेकिन इतना बढ़ावा नहीं देना चाहिए। दास-दासियों का मुंह चूमने में हम लोगों को घृणा आती है।"

अफिलिया वहन के ईसाई धर्म संवंधी भाषण का स्मरण करके सेण्ट-क्लेयर मन-ही-मन हँसा, पर प्रकट में कुछ नहीं वोला। फिर वह कमरे से वाहर निकल कर मामी, जिमी, पली, सूकी इत्यादि हर एक दासी का हाथ पकड़ कर कुशल पूछने लगा। किसी-किसी दासी के गोद के वच्चे के सिर पर हाथ रखकर दुलार करने लगा। सेन्टक्लेयर के चले जाने पर इवा ने नारंगी की टोकरी उठाकर उसमें से एक-एक नारंगी सब दास-दासियों के बच्चों को दी। उन लोगों को वे खिलौने भी बांट दिये, जो वह उनके लिए लाई थी। फिर सेण्टक्लेयर ने बरामदे में आकर एडाल्फ से कहा, "एडाल्फ, यह जो नया आदमी मेरे साथ आया है, इसका नाम टाम है। सब पर तुम बड़ी हुकूमत दिखाया करते हो, पर देखना, ख़बरदार, इस आदमी पर कभी रौब न गांठना। तुम्हारे-जैसे काले बन्दरों के मूल्य की अपेक्षा इसके दूने दाम लगे हैं।"

एडाल्फ ने कहा, "सरकार, आप तो मजाक करते हैं।"

सेण्टक्लेयर ने एडाल्फ के कोट की ओर देख कर कहा, "वाह-वाह! तुमने मेरा यह कोट कैसे पहन लिया!"

एडाल्फ कुछ शरमा कर बोला, "हुजूर, इस कोट में ब्रांडी के बहुत दाग लग गये थे। इससे बड़ी बदबू आती थी। मैंने सोचा, अब आप इसे थोड़े ही पहनेंगे। इसे आप जरूर ही फेंक देते, इसी से मैंने पहन लिया।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एडाल्फ की बात पर सेण्टक्लेयर हँसने लगा। इसके बाद वह टाम को लेकर अपनी स्त्री के कमरे में गया। स्त्री से कहा, "प्यारी, तुम सदा शिकायत किया करती हो कि मैं तुम्हारे आराम का ख़याल नहीं करता। यह देखो, तुम्हारी गाड़ी हांकने के लिए एक अच्छा कोचवान लाया हूं। यह आदमी कभी शराब मुंह से नहीं लगाता। गाड़ी हांकने में बड़ा निपुण है। यह इस तरह गाड़ी हांकेगा कि गाड़ी में चढ़ने पर तुम्हें ज़रा भी तकलीफ़ न होगी। आराम से ले जायगा।"

सेण्टक्लेयर की स्त्री मेरी ने फिर आंखें खोल कर एक बार टाम की ओर देखा और दबे स्वर से बोली, "कुछ दिन हमारे यहां रहा कि शराब पीना सीखा।"

सेण्टक्लेयर—नहीं, यह कभी शराब नहीं पीयेगा। यह शराब के पास नहीं फटकता।

मेरी—न पीना तो अच्छा ही है। पर मुझे यकीन नहीं आता।

फिर सेंटक्लेयर ने एडाल्फ को बुलाकर कहा, "एडाल्फ! टाम को रसोईघर में ले जाओ। देखो, मैंने जो कहा है, सो याद रखना। टाम पर बहुत हुकूमत मत जताना।"

एडाल्फ के चले जाने पर सेण्टक्लेयर ने अपनी स्त्री को बुला कर कहा, "प्यारी, ज़रा इधर आओ।"

मेरी—रहने दो अपना यह बनावटी प्यार। तुम्हें यहां से गये पन्द्रह दिन से ज्यादा हो गये, बीच में कभी खोज-खबर भी ली कि मैं मरती हूं कि जीती हूं।

सेण्टक्लेयर—क्या इन पन्द्रह दिनों में मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा?

मेरी—बस, वही दो लाइनों का कार्ड। ऐसी चिट्ठियां तो नौकरों को लिखी जाती हैं। इतने दिनों में बस दो लाइनों का एक कार्ड मिला था।

सेण्टक्लेयर—डाक निकलने ही वाली थी, इससे जल्दी में कार्ड लिख कर डाल दिया था। अब उस बीती बात पर झगड़ने से क्या लाभ है? देखो, यह फोटो देखो। मैं इवा का हाथ पकड़े खड़ा था। क्यों, तसवीर अच्छी आई है या नहीं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी—यों हाथ पकड़ कर क्यों खड़े हुए ? कोई लड़की का हाथ इस तरह पकड़ कर खड़ा होता है ?

सेण्टक्लेयर—ख़ैर, मान लो खड़े होने का ढंग बुरा था, पर देखो, तसवीर अच्छी आई है या नहीं ?

मेरी—मेरी राय से तुम्हें क्या लेना-देना ! तुम्हें क्या मेरी राय कभी पसन्द आती है ?

इतना कहकर मेरी ने तसवीर उठाकर सिरहाने पटक दी। सेण्ट-क्लेयर मन-ही-मन कहने लगा—पापिनी का मन किसी तरह नहीं भरता। चूल्हे में जाय ऐसी स्त्री। (प्रकट रूप में) अच्छा, बोलो, तसवीर अच्छी आई है या नहीं ?

मेरी—सेण्टक्लेयर, मुझे परेशान न करो। तुम्हें अक्ल तो कुछ है नहीं। तुम मेरा दुःख नहीं समझते। मैं इधर तीन दिन में बड़ी कमजोर हो गई हूं। मुझे हल्ला-गुल्ला बिल्कुल नहीं सुहाता। घर में तुम्हारे आने से मानो बाज़ार-सा लग गया है। मेरा दम निकला जाता है। सिर-दर्द के मारे मरी जाती हूं।

मिस अफिलिया अभी तक बिल्कुल चुपचाप बैठी थी। सिर-दर्द की बात सुन कर उसे बातें करने का मौका मिला। वह बोली, "क्या योंही बराबर आपको सिर-दर्द सताया करता है ? मैं समझती हूं, आप सवेरे उठते ही यदि चिरायते का काढ़ा पीयें तो आपको कुछ आराम हो सकता है। इब्राहिमसाहब की स्त्री इन सब रोगों की खूब दवाइयां जानती हैं। उनसे मैंने सुना कि इस रोग के लिए चिरायते का काढ़ा बड़ा गुणकारी है।

यह सुन कर सेण्टक्लेयर ने कहा, "तो कल ही मैं एक बोतल चिरायते का अर्क ला दूंगा। अच्छा, दीदी, अब तुम अपने कमरे में जाकर कपड़े बदल डालो।"

मामी को बुला कर कहा, "अफिलिया बहन के लिए जो कमरा ठीक किया हो वह बतला दो। देखो, बहन को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे। बहुत अच्छी तरह से इसकी सेवा करना।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७ : : नई मालकिन

मिस अफिलिया के आने के कुछ दिनों बाद की बात है। एक दिन सब लोग साथ बैठे भोजन कर रहे थे। उस समय सेण्टक्लेयर ने अपनी स्त्री का नाम लेकर कहा, "मेरी, लो, अब तुम बैठी चैन की वंशी बजाओ। घर के झगड़े-झंझटों से तुम्हें छुट्टी मिल जायगी।

"अफिलिया बहन घर के काम-काज में बड़ी निपुण हैं। वह सारा काम बहुत ही नियमित रूप से करती हैं। वह घर भर का काम सम्हाल लेंगी और तुम बैठी आराम करना। अब तुम घर का पूरा बोझ और ताला-कुंजी उन्हें सौंप कर निश्चित हो जाओ।"

मेरी—मैं तो इससे बड़ी प्रसन्न हूं। पर तुम्हारी बहन को शीघ्र पता चल जायगा कि तुम्हारी गृहस्थी निभाना कितना कठिन है। इस घर में उलटे हमीं लोग नौकर हो रहे हैं।

सेण्टक्लेयर—हां, मेरी बहन को धीरे-धीरे इस घर की बहुत-सी बातों से जानकारी हो जायगी।

मेरी—तुम सोचते हो कि इन क्रीत दास-दासियों द्वारा हम लोगों को सुख मिलता है। लेकिन मेरे तो ये जी के जंजाल हो रहे हैं। ये यहां से विदा हो जांय तो अच्छा है।"

मेरी की ये बातें सुनकर इवान्जेलिन ने बड़े आश्चर्य से माता की ओर देखा और कुछ देर बाद कहा, "मां दास-दासियों से आराम नहीं मिलता तो इन्हें छोड़ देना चाहिए। फिर इन्हें रख क्यों छोड़ा है?"

मेरी—मैं स्वयं नहीं बता सकती कि ये किस-लिए रखे गए हैं। ये सब-के-सब मुसीबत हैं। मैं इन्हीं की वजह से इतनी बीमार हो गई हूं।

सेण्टक्लेयर—मेरी, तुम कहती तो हो, पर बतलाओ कि यह बुढ़िया दासी मामी न होती तो तुम्हें कितनी तकलीफ़ होती? मामी बिना एक दिन भी तुम्हारा काम चल नहीं सकता। है न!

मेरी—हां, और दास-दासियों के बीच मामी कुछ अच्छी है, यह मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानती हूं, लेकिन मामी है बड़ी खुदगरज़। इसकी खुदगरज़ी हद से ज्यादा है। इसी की नहीं, खुदगरज़ी तो इन गुलामों का जातीय दुर्गुण है, वह इनकी रग-रग में घुसी हुई रहती है।

सेण्टक्लेयर—(मन का भाव छिपा कर, बड़ी गंभीरता से) असल में खुदगरजी के बराबर दुनिया में कोई पाप नहीं है।

मेरी—मैं इस मामी की क्या कहूं, यह इतनी खुदगरज़ है कि मैं कह नहीं सकती। मामी को अच्छी तरह मालूम है कि रात-भर मेरे बदन पर हाथ न फेरा जाय और मुझे हवा न की जाय तो चैन नहीं पड़ती। इतने पर भी किसी-किसी रात को यह सो जाती है। चार-पांच रातों के बाद जब किसी रात को वह सो जाती है तो उसे जगाना इतना मुश्किल हो जाता है कि चिल्लाते-चिल्लाते मेरा गला सूख जाता है। तब भी उस नालायक की नींद नहीं टूटती। कल रात को उसे जगाने में मुझे जो हैरानी उठानी पड़ी, उसे मेरा जी ही जानता है।

इवा—मां, इसके पहले मामी पांच-छः रात तुम्हारे पास बैठी जाग चुकी थी न?

मेरी—तूने किससे सुना? हां-हां, मामी ने ही तुमसे शिकायत की होगी।

इवा—नहीं-नहीं, मां, मामी ने मुझसे कुछ नहीं कहा। वह तो सिर्फ यही कहती थी कि पिछली रातों में तुम्हारी तबीयत बहुत ख़राब थी।

सेण्टक्लेयर—पांच-छः दिनों तक लगातार एक आदमी रात-भर नहीं जाग सकता। क्या मामी के बदले एक दिन जेन या रोज़ा को तुम्हारे पास रखने से काम नहीं चल सकता?

मेरी—सेण्टक्लेयर, मैं तो सदा से जानती हूं कि तुम्हारे-जैसे नासमझ आदमी दुनिया में कम ही होंगे। वास्तव में तुम्हें बिल्कुल ही समझ नहीं है। होती तो तुम ऐसे प्रबन्ध की बात कभी न कहते। जानते नहीं, कि अपरिचित हाथ लगते ही मेरी नींद टूट जाती है। यह कोई बात नहीं है, मामी यदि मुझे प्यार करती होती तो वह जरूर जाग सकती। कितने ही ऐसे प्रभु-भक्त दास-दासियों की बातें सुनी जाती हैं, जिन्होंने अपने मालिक के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करदी। लेकिन विधाता की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ मर्जी ही ऐसी है कि मेरे भाग्य में प्रभु-भक्त दास-दासी लिखे ही नहीं।

मिस अफिलिया बड़ी ही गंभीरता के साथ सेण्टक्लेयर और मेरी की बातें सुन रही थी। उसने अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं कहा, पर मेरी मिस अफिलिया की ओर देखकर फिर कहने लगी, "मैं मानती हूं कि मामी जरूर थोड़ी भलीमानस है। वह मेरा सम्मान करती है, परन्तु उसका मन सदा ही स्वार्थ की ओर झुका रहता है। वह अपने स्वामी की ही धुन में पागल रहती है। मामी ने बचपन से ही मेरा लालन-पालन किया है, इसी से मैं यहां इसे अपने साथ लेती आई हूं। मामी का पति मेरे पिता के कारखाने में काम करता है। बाबा उसे छोड़ नहीं सकते। इसी से मामी को अपने पति का साथ छोड़ कर आना पड़ा। मैंने मामी से बहुतेरा कहा कि अब उस स्वामी से मिलने-जुलने का अधिक सुभीता नहीं रहेगा, सो कोई दूसरा नया स्वामी बना ले, पर वह इस विषय में इतनी कठोर है कि किसी तरह नया स्वामी नहीं करना चाहती। मुझसे बड़ी गलती हुई कि मैंने उसे मजबूर करके किसी दूसरे आदमी के साथ उसका विवाह नहीं करवा दिया, इसी से उसका दिमाग़ बढ़ गया है। दास-दासी चाहे अच्छे ही हों, लेकिन उन्हें सदा दबाये रखना चाहिए।

यह बात सुन कर मिस अफिलिया ने पूछा, "क्या मामी के लड़के-लड़कियां भी हैं?"

मेरी—हां, काले-काले भूत की शक्ल के दो लड़के हैं।

मिस अफिलिया—मुझे जान पड़ता है कि उन लड़कों को छोड़ आने के कारण ही वह सदा दुःखी बनी रहती है।

मेरी—पर इससे क्या? मैं क्या उन दोनों काले-काले भूतों को अपने साथ ला सकती थी? मैं उन दोनों को साथ ले आती तो मामी तो बस उन्हीं की हो रहती। मेरा वह क्या काम करती! फिर तो सारे दिन वह उन्हीं लड़कों के पीछे फिरा करती। आप नहीं जानतीं कि मामी कैसी खुदगरज़ है। मैंने उससे नया पति चुनने को बहुत कहा, पर उसने नहीं ही चुना। और देखिये, वह जानती है कि मेरी तबीयत बहुत खराब हो रही है और उसके एक घड़ी रहे बिना काम नहीं चल सकता, लेकिन आज अगर मामी को लड़कों के पास जाने के लिए दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सप्ताह की छुट्टी दे दी जाय तो वह तुरन्त चली जायगी। इसका उसे ज़रा भी खयाल न होगा कि मालकिन की तबीयत खराब है। मैं सदा से जानती हूं कि इन गुलामों की जाति बड़ी ही स्वार्थी होती है।

सेण्टक्लेयर—(बड़ी मुश्किल से हँसी रोक कर तथा मन का भाव छिपाकर) ओह, इतनी स्वार्थपरता ! सोचते ही कलेजा मुंह को आता है।

मिस अफिलिया सेण्टक्लेयर की ओर एकटक देख रही थी। उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव से उसने सहज में मालूम कर लिया कि सेण्टक्लेयर बड़ी कठिनाई से अपने मन का भाव छिपा कर बातें कर रहा है।

सेण्टक्लेयर की बात पूरी होने पर मेरी ने फिर कहना आरम्भ किया, "देखो, मैं मामी को हमेशा चाहती हूं। मैं उसे पहनने को अच्छे कपड़े देती हूं। जन्म-भर में मैंने उसे दो-तीन बार से अधिक नहीं पीटा। मैं उसका तिरस्कार भी नहीं करती। अपने भोजन की बची-खुची अच्छी-अच्छी चीजें खाने को देती हूं। इतने पर भी उसका स्वार्थीपन दूर नहीं होता और वह जी लगाकर मेरी सेवा नहीं करती। कारण यह है कि सेण्टक्लेयर ने नौकर-चाकरों का पक्ष ले-लेकर उन्हें इस तरह बिगाड़ रक्खा है कि क्या कहूं। सेण्टक्लेयर के निजी दास-दासी नीचे के कमरे में बैठ कर ठीक वही भोजन करते हैं, जो हम लोग करते हैं। और भी कितनी ही बातें हैं। इन्हीं सबके कारण इन दास-दासियों का दिमाग चढ़ गया है। वे बातें सेण्टक्लेयर को कहते-कहते मेरी नाक में दम आ गया है, पर इनके कान पर जूं भी नहीं रेंगती।

सेण्टक्लेयर—(मन का भाव छिपाकर) और मेरा तो कुछ हाल ही मत पूछो।

कोमल-हृदया इवान्जेलिन ये बातें ध्यान से सुन रही थी। उसके हृदय पर इन बातों से चोट पहुंची। उसकी आंखें डबडबा आईं। वह अपने स्थान से उठी और जाकर अपनी माता से लिपट गई।

माता चौंक कर बोली, "एं, यह क्या ? क्या बात है ?"

इवा—मां, तुम एक रात मामी को सो लेने दो। मैं रात-भर तुम्हारी खाट के पास बैठी रहूंगी। तुम्हें हवा करूंगी और तुम्हारे बदन पर हाथ फेरूंगी। मैं बहुत बार रात को जागती रहती हूं। मुझे कोई कष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होगा। तुम एक रात के लिए मामी को छुट्टी दे दो।

मेरी—यह बड़ी विचित्र लड़की है ! ऐसी लड़की तो मैंने कभी नहीं देखी।

इवा—मां, मैं तुम्हारे पास बैठी रहूंगी। मामी बहुत बीमार हो रही है। मैंने सुना है, दस-बारह दिन से वह रात को बिल्कुल नहीं सो पाई। इससे उसका सिर नहीं उठता है, उससे खड़ा भी नहीं हुआ जाता।

मेरी—मैं मामी की सब चालाकियां जानती हूं। वह भी आजकल बिल्कुल और दासियों की तरह हो गई है। मैं उसकी सब चालाकियां भुला दूंगी। (फिर मिस अफिलिया की ओर देखकर) नौकर-चाकरों पर कभी मेहरबानी नहीं करनी चाहिए। इन्हें तनिक भी कोई तकलीफ हुई कि ये काम नहीं करना चाहते, काम से जी चुराने लगते हैं। पर मैं इस समय बीमारी से कितनी तकलीफ पा रही हूं, यह किसी को क्या मालूम ! मैं किसी के सामने अपना दुःख नहीं प्रकट करती। चुपचाप कष्ट सहना मैं अपना कर्तव्य समझती हूं।

मेरी की ये बातें सुनकर मिस अफिलिया की तो अक्ल ही चकरा गई। उस समय इस बात की उसे तरकीब न सूझी कि अपनी भाभी से किन शब्दों में सहानुभूति दिखलावे। उसकी भाभी ने अपने भाग्य को कोसते हुए जिस ढंग से दुर्दशा की व्याख्या की थी, उसके लिए उसे सहानुभूति प्रकट करनेवाले वाक्य ही न मिले। इससे लाचार होकर वह चुप ही रही। मिस अफिलिया की संकट की हालत देखकर सेण्टक्लेयर की हँसी न रुकी। पर मेरी अपने पति को यों हँसते देखकर बड़ी नाराज हुई और किसी सताये हुए आदमी की भांति कहने लगी, "मैं जब अपनी बीमारी की बात कहती हूं तभी सेण्टक्लेयर हँसने लगते हैं। यह कभी मेरी व्यथा नहीं समझेंगे। सेण्टक्लेयर की समझ में मेरी यह अस्वस्थता कुछ है ही नहीं। भगवान ही मेरे इस कष्ट को जानता है।"

मेरी के इतना कह चुकने पर सेण्टक्लेयर ने जेब से घड़ी निकालकर देखी और फिर उसे जेब में रखकर कहा, "आज मेरा एक जगह निमन्त्रण है। वक्त हो गया है।" इतना कहकर वह घर के बाहर चला आया। इवा भी अपने पिता के पीछे-पीछे बाहर गई। सेण्टक्लेयर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के जाने पर भी मेरी की बातों का सिलसिला नहीं टूटा। वह फिर अफिलिया से कहने लगी, "देख लिया न सेण्टक्लेयर का वर्ताव ! उसके मन में एक वार भी इस बात की चिंता नहीं होती कि मैं कैसी असह्य पीड़ा भोग रही हूं। आशा भी नहीं कि वह इस जन्म में कभी मेरे दुःख से दुःखी होंगे। क्या सेण्टक्लेयर ने कभी खयाल किया है कि मैं वर्षों से कैसी बीमारी की हालत में पड़ी हूं। हां, मैं यदि दूसरी शिकायत करनेवाली स्त्रियों की भांति होती और सदा अपने दुख की बातों से उन्हें हैरान करती रहती तो वह खूब समझते। शिकायत करनेवाली स्त्री के पाले पड़कर आदमी को आटे-दाल का भाव मालूम हो जाता है, पर मैं तो चुपचाप अपने मन की व्यथा मन ही में रख लेती हूं, और यही कारण है कि सेण्टक्लेयर सोचने लगे हैं कि मैं सब कष्ट सह सकती हूं।"

मिस अफिलिया की समझ में नहीं आया कि इसका क्या उत्तर देना चाहिए।

वह जिस समय उत्तर देने की बात सोच रही थी, मेरी आंखों में आंसू भरकर, फिर पोंछ-पोंछ कर घर-गृहस्थी की बातें कहने लगी। घर के साज-सामान, खाने-पीने, कपड़े-लत्ते आदि की बाबत मिस अफिलिया को समझाया। उसके बाद बोली, "मैं समझती हूं कि मैंने सब बातें तुम्हें बतलादी हैं, जिससे मुझे बीमारी का दौरा होने पर मुझसे कुछ पूछने की आवश्यकता न रहे। सब काम मजे में चल जाय। केवल इवा की वावत कहना है कि उसकी सदा देख-रेख रहनी चाहिए।

मिस अफिलिया—वह तो बड़ी सीधी लड़की जान पड़ती है। मैंने तो ऐसी सीधी लड़की ही नहीं देखी।

मेरी—इवा अद्‌भुत लड़की है। मेरी प्रकृति से तो वह ज़रा भी नहीं मिलती-जुलती है।

मेरी ने ऐसी आह भरी, मानो सचमुच यह एक दुर्भाग्य का विषय हो।

मिस अफिलिया ने मन-ही-मन कहा—अच्छा ही है कि वह तुम्हारी प्रकृति से नहीं मिलती-जुलती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी—इवा सदैव नौकरों के साथ रहती है। बच्चों के लिए यह बुरा नहीं है। मैं भी बचपन में अपने पिता के दास-दासियों के बच्चों के साथ खेला करती थी। मुझको इससे हानि नहीं हुई। पर इवा में बड़ा दोष यह है कि वह दास-दासियों के बच्चों को अपने ही समान समझती है। इस दोष के लिए मना करना तो दूर रहा, उल्टा सेण्टक्लेयर उसे इस विषय में उत्साहित करते रहते हैं, असल बात तो यह है कि वह मुझे छोड़कर इस पृथ्वी के जीव-मात्र का आदर करते हैं।

मिस अफिलिया की चुप्पी ज्यों-की-त्यों रही।

मेरी फिर बोली, "यहां तो नौकरों को कोई कुछ कहने वाला ही नहीं है। जो मन में आता है, करते हैं; जो नहीं आता, नहीं करते। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि नौकरों का दिमाग कभी बढ़ने नहीं देना चाहिए। उनपर सदा शासन रखना चाहिए। बचपन से ही मेरा यह स्वभाव रहा है। पर इवा इसके बिल्कुल विपरीत है। मेरी समझ में नहीं आता कि इवा जब बड़ी होकर घर-गृहस्थी चलाने लायक होगी तो वह क्या करेगी। उसकी क्या गति होगी। मैं भी सदा नौकरों पर दया रखती थी और अब भी सदा रखती हूं, पर उनका जो स्थान है, उसी पर उन्हें रहना होगा। इवा इसे बिल्कुल नहीं समझती। वह जानती ही नहीं कि नौकरों से हमारा दर्जा ऊंचा है। आपने अभी-अभी सुना कि वह रात-भर मेरे पास बैठने को तैयार है और मामी को सोने की छुट्टी दिलाती है। इसी से मैं कहती हूं कि इवा पर सदा नजर रखनी चाहिए, नहीं तो उसे ऐसी भूल करने की आदत पड़ जायगी।"

मेरी—अवश्य। आप क्या समझती हैं कि मैं इन्हें विश्राम का अवकाश नहीं देती? मैं सदा इन्हें सोने की छुट्टी देती हूं। पर आप मामी के सोने को क्या कहेंगी? वह तो निद्रा-देवी का अवतार ही है। काम करते-करते, पंखा झलते-झलते, सीते-सीते और खड़ी-खड़ी, चाहे जब सो जाती है। क्या दास-दासियों का यह आचरण कभी सहा जा सकता है? बहन, मैं अक्सर अपने लिए किसी को नहीं कहती। मेरा स्वभाव ही नहीं है कि मैं अपनी शारीरिक अस्वस्थता के लिए किसी को कुछ कहूं-सुनूं और इन सब बातों के लिए झगड़ने की मुझमें हिम्मत भी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रह गई है। किन्तु तुम्हारे भाई मेरा कष्ट नहीं समझते। इसी से मुझे बड़ा दुःख होता है। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा भाई मन का साफ आदमी है। लेकिन पुरुषों की जाति ही स्वार्थपरायण है, और स्त्रियों की ओर से लापरवाह हैं। मेरा तो यही विश्वास है।

ये सब बातें सुनकर मिस अफिलिया ने समझ लिया कि उसकी भावज कैसे स्वभाव की है। अतः अब वह हर एक बात कहने से पहले विदेशी राजदूत की भांति, उसके फलाफल की विवेचना करने लगी। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि जबतक बिना बोले काम चलेगा, तबतक नहीं बोलेगी। किन्तु लाचारी से यदि बोलना ही पड़ा तो बहुत कम बोलकर चुप हो रहेगी। यह सोच कर वह चुप रही और पास पड़े हुए ऊन और कांटों को उठाकर मोजे बुनने लगी।

मेरी मिस अफिलिया के मन की बात बिल्कुल नहीं समझी। स्वार्थी आदमी किसी बात के सम्बन्ध में दूसरे के मन के भाव नहीं समझ सकता। वह अपनी-ही-अपनी गाता है। अतः मेरी ने फिर बातें करनी आरम्भ कर दीं और वह अफिलिया को घर के गूढ़ तत्व बतलाने लगी। वह फिर बोली, "देखो, मैं अपने विवाह के बाद अपनी निजी सम्पत्ति और उसी के साथ अपने दास-दासियों को, अपने साथ यहां ले आई। मुझे अपने नौकरों के साथ अपनी इच्छानुसार बर्ताव करने का कानूनन अधिकार है। सेण्टक्लेयर अपने नौकरों से चाहे जैसा बर्ताव कर सकते हैं, किन्तु मेरे काम में दखल देने का उन्हें अधिकार नहीं है। दास-दासियों के साथ सेण्टक्लेयर का बड़ा विचित्र बर्ताव है। इन दास-दासियों को उन्होंने एकदम बाबू बना दिया है। इनको वे कभी दण्डगृह में नहीं भेजते। वहां बेंत खाये बिना दास-दासी क्या कभी दुरुस्त रह सकते हैं? सेण्टक्लेयर का कहना है कि दास-दासियों को या तो वही मारें या मैं ही, दूसरा कोई नहीं मार सकता। पर मैं ऐसी कमजोर हो गई हूं कि हमेशा इन्हें पीटना मेरे लिए असम्भव है और स्वयं सेण्टक्लेयर, कुसूर हो जाने पर भी, कभी इन पर हाथ नहीं उठाते। देखो तो कैसी भयानक दशा है?"

अफिलिया ने बहुत संक्षेप में कहा, "मैं इस विषय में कुछ नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानती। हमारे उत्तरी प्रान्त में तो दास-प्रथा नहीं है। ईश्वर को धन्य-वाद है कि मुझे ये सब बातें नहीं जाननी पड़ीं।"

मेरी—पर यहां तुम कुछ दिन रहोगी तो तुम्हें सब पता चल जायगा। तुमको मालूम हो जायगा कि ये अभागे दास-दासी कैसी आफत की पुड़िया हैं।

इतना कहते-कहते मेरी के निर्बल शरीर में तत्काल बल आ गया और वह बड़ी तेजस्विता से फिर कहने लगी, "तुम देखोगी कि इन दास-दासियों को लेकर काम चलाने में कैसी मुसीबत है। पर सेण्टक्लेयर से इन बातों की शिकायत करना व्यर्थ है। वह तो कहते हैं कि हमीं लोगों ने इन्हें दुष्टता और शठता सिखाई है। हमीं लोगों के दोष से इन्होंने ऐसी बुरी शिक्षा पाई है। हमीं लोगों ने इन्हें बिगाड़ा है। हम लोगों को भी ईश्वर ने दास बनाया होता तो हम भी ऐसे ही बुरे होते। परन्तु मैं इन बातों का कुछ भी मतलब नहीं समझती। हमने इन दास-दासियों को कैसे बुरा बनाया? हमने इन्हें कैसे बिगाड़ा?"

अफिलिया—यह तो आप मानती हैं कि हमें और दास-दासियों को ईश्वर ने एक ही तरह के रक्त-मांस से बनाया है?

मेरी—मैं यह नहीं मानती। ये काले नीच जाति के हैं।

अफिलिया—इनमें आत्मा तो है!

मेरी—हां, इसे मैं स्वीकार करती हूं। इनमें आत्मा है बेशक, इसमें कोई संदेह नहीं कर सकता। पर ये गोरों के तुल्य कदापि नहीं हैं। काला क्या कभी गोरे के समान हो सकता है? यह बिल्कुल असंभव है। सेण्टक्लेयर का कहना है कि उनके बिछुड़ने से मुझे जितना कष्ट होता है, उतना ही कष्ट मामी को भी अपने स्वामी से बिछुड़ने का हो रहा है। भला यह भी कोई तुलना है? मामी अपने स्वामी पर मेरे जितना प्यार कभी नहीं कर सकती। मामी के साथ मेरी तुलना कभी नहीं हो सकती। पर सेण्टक्लेयर के-से अविचारी मनुष्य इन बातों को नहीं समझ सकते। वह सोचते हैं कि इवा पर मेरा जितना स्नेह है, उतना ही स्नेह मामी का भी अपने दोनों गन्दे भुतहे लड़कों पर है। जान पड़ता है, यही सोच-कर उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था कि अपने लड़कों को देख आने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए मामी को एक सप्ताह की छुट्टी दे दो। यह बात सुनकर मुझे बड़ा क्रोध आया। मेरे शरीर की ऐसी नाजुक हालत और इस समय मामी को छुट्टी! भरसक मैं बरदाश्त ही करती हूं, पर सेण्टक्लेयर की बात या बर्ताव असह्य हो जाने से मेरा गुस्सा नहीं रुकता। मैंने सब प्रकार के कष्ट और यातनाएं चुपचाप सहने का प्रण कर लिया है। न मैं क्रोध करूंगी और न कभी कोई बात कहूंगी। पर सेण्टक्लेयर की उस दिन की बात मुझसे सहन न हो सकी। उस दिन मुझे बड़ा ही क्रोध आया। उस समय जो मेरे मुंह में आया, बक गई। इसके बाद लगातार तीन दिन तक हम लोगों की बोल-चाल बंद रही। परन्तु तब से फिर कभी सेण्ट-क्लेयर ने मामी को छुट्टी देने की बात नहीं उठाई।

इन बातों के उत्तर में मिस अफिलिया कुछ कहनेवाली थी, पर अकस्मात न मालूम क्या सोच कर रुक गई। उसने वहां से उठने का विचार किया। कोई समझदार होता तो उसके रुख से उसके मन की बात ताड़ जाता। पर मेरी को इतनी अक्ल कहां थी! उसने अपनी बातों का सिलसिला न तोड़ा। वह बोली, "अब तो आपने समझ लिया होगा कि इस घर का प्रबंध करना कितना कठिन है। यहां की भांति जिस घर में दास-दासियों पर शासन नहीं रहता, जहां दास-दासी मनमाना कांम करते हैं, जो चाहते हैं पाते हैं, उस घर का भी कोई ठीक-ठिकाना है? मैं अपनी नाजुक हालत में भी चाबुक सिर-हाने रखती हूं। पर अपनी निर्बलता के कारण पांच-छः से अधिक चाबुक लगाते ही मैं थक जाती हूं। और लोग जैसा करते हैं, उनकी तरह सेण्टक्लेयर अगर इन्हें दण्डगृह में भेजते तो मेरा दुःख दूर हो जाता।"

अफिलिया—दण्डगृह किसे कहते हैं?

मेरी—दास-दासियों को दुरुस्त करने के लिए यहां दण्डगृह बने हुए हैं। वहां उनके बेंत लगाने के लिए म्युनिसिपालिटी की ओर से आदमी नियत हैं। एक आदमी को बेंत लगाने के चार पैसे लिये जाते हैं। चालीस-पचास बेंतों के लिए तो कोई पैसा नहीं खर्च करता, अपने हाथ से ही काम चला लेता है। पर जब किसी को सौ दो सौ बेंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगवाने होते हैं, तब इन दास-दासियों को दण्डगृह में भेजने से ही ठीक रहता है।

अफिलिया—तुमने कहा न कि सेण्टक्लेयर स्वयं कभी किसी को नहीं मारते। तो क्या वे दास-दासियों को दण्डगृह में भेजते हैं ?

मेरी – पुरुषों के शासन का दूसरा ढंग है । उनकी ज़रा-सी तिरछी नजर से दास-दासी कांप जाते हैं। ये एक बार आंख उठाकर देखते हैं तो सारे गुलाम सहम जाते हैं और असल में सेण्टक्लेयर चाहें तो सहज में इन्हें सीधा रख सकते हैं । पर वह बड़े ही आलसी हैं, कुछ नहीं करते, नहीं तो उनके कहने का जितना असर होता है, उतना मेरे पीटने का भी नहीं होता।

इतने ही में सेण्टक्लेयर ने घर में आते हुए कहा, "बस, वही आलस्य का राग अलापा जा रहा है ! बड़े खेद की बात है कि इन आलसी दास-दासियों को अपने आलस्य के लिए महानरक में पड़ना पड़ेगा। तुम देखो तो बहन, मेरे और मेरी सरीखे काम-काजी का उदाहरण पाकर भी ये बेईमान आलस्य नहीं छोड़ते। कैसे ताज्जुब की बात है ?

मेरी—सेण्टक्लेयर, तुम अपनी बातें रहने दो। तुम बड़े निकम्मे आदमी हो।

सेण्टक्लेयर—मैं भी निकम्मा आदमी हूं ! क्यों, मैं तो अपनी समझ में ठीक-ठीक ही कह रहा था। तुम जो आलस्य को महापाप समझती हो, सो मैं तो तुम्हारे उसी मत का समर्थन कर रहा था।

मेरी—मैं तुम्हारे ये सब ताने समझती हूं ।

सेण्टक्लेयर—तुम क्या मेरी बातों को ताना समझती हो ?

मेरी—तुम्हें सदा मेरा जी दुखाने में आनन्द आता है। मुझे कष्ट दिये बिना तुम्हारा मन नहीं भरता ।

सेण्टक्लेयर—मेरी, जाने दो इन सब झगड़ों को ! आओ' यहां बैठो ! थोड़ी देर के लिए मेल कर लिया जाय। आज एडाल्फ से झगड़ कर मैं बहुत तंग हो गया हूं।

मेरी—एडाल्फ ने क्या किया। यह गुलाम बहुत सिर चढ़ गया है। मैं चाहती हूं उसे एकदम मेरे सुपुर्द कर दो। मैं उसकी सारी शेखी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुला दूंगी।

सेण्टक्लेयर—एडाल्फ अब ऐसा अमीर बन गया है कि कोट और रूमाल के बिना हजरत का काम नहीं चलता। उसे मेरे कपड़े पहनने का शौक हो गया है। जो मन आता है, सन्दूक से निकालकर डाट लेता है और पूछने पर एक-न-एक बहाना बना देता है। इसीसे आज मैंने उसे खूब समझा दिया है ?

मेरी—क्या समझाया है ?

सेण्टक्लेयर—यही कि मैं मालिक हूं और वह नौकर है। उसे ऐसी मनमानी नहीं करनी चाहिए। और मैंने उससे यह भी कह दिया है कि अगर उसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने का शौक ही है तो मैं उसे अलग एक दर्जन रूमाल खरीद दूंगा और कोट तो अभी दे आया हूं। आगे को उसे मैंने खबरदार कर दिया है कि मेरे किसी कपड़े पर मन न चलावे।

मेरी—आह, सेण्टक्लेयर, न जाने तुम कब नौकरों पर शासन करना सीखोगे ! क्या तुम उन्हें एकदम बिगाड़ देने पर तुले बैठे हो ?

सेण्टक्लेयर—मुझे तो अपने किये में कोई दोष नहीं दिखाई देता। मैंने कभी उसे कोई अच्छी शिक्षा नहीं दी, इसीसे वह चोरी करता है। अब उसकी जो आदत पड़ गई है, वह डांटने-डपटने पर भी नहीं छूटेगी। ऐसी दशा में यही अच्छा जान पड़ा कि उसे कुछ कपड़े अलग से दे दिये जांय, तो उसे चोरी करने की आवश्यकता ही न रहेगी।

इसी बीच में मिस अफिलिया ने कहा, "तो फिर तुमने अपने नौकर-चाकरों को अच्छी सीख क्यों नहीं दी ?"

सेण्टक्लेयर—दीदी, सच पूछो तो मेरे आलस्य के कारण ही ऐसा हुआ है।

मिस अफिलिया ने कहा, "मैं समझती हूं कि तुम लोग जो गुलाम रखनेवाले हो, उनके सिर पर एकब ड़ी जिम्मेदारी का काम आ जाता है। मैं तो सारे संसार के अधिकार के बदले में भी ऐसे दायित्व को स्वीकार नहीं कर सकती। तुम लोगों को इन्हें शिक्षा देनी चाहिए, पवित्र ईसाई धर्म में दीक्षित करना चाहिए तथा इनकी आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति का उपाय करना चाहिए। यदि तुम लोग ऐसा नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हो तो निश्चय ही ईश्वर के यहां तुम्हें जवाब देना पड़ेगा ।"

ये बातें मिस अफिलिया ने ऐसे जोश से कही थीं, कि उससे लगा, मानो सुबह सें वह चुपचाप बैठी हुई मेरी की बातें सुनते-सुनते ऊब गई थी और अब एकाएक बाढ़-सी आ गई ।

सेण्टलेक्यर ने कहा, "दीदी, जाने भी दो ! इन बखेड़ों में क्या रक्खा है । लो, मैं पिआनो बजाता हूं, तुम एक अच्छा-सा गीत गाओ ।"

इसके बाद सेण्टक्लेयर पिआनो के पास बैठकर उसे बजाने लगा । दो-एक गीत हो जाने पर उसने कहा, "दीदी, बात तुमने बहुत अच्छी कही । यह उपदेश देकर तुमने तो अपना कुछ कर्त्तव्य पूरा कर लिया, पर मुझे उपदेश देना न देना दोनों बराबर हैं; क्योंकि कोई उपदेश मेरे हृदय तक नहीं पहुंचता ।"

ये बातें सुनकर मेरी ने कहा, "मैं इन उपदेशों की कोई जरूरत नहीं देखती । मेरा विश्वास है कि गुलामों के लिए, अधिक-से-अधिक जितना कोई कर सकता है, हम करते हैं; कोई अधिक करता हो तो मुझे बतलाओ । मैंने भी इन दास-दासियों को बहुत समझाया, उपदेश दिये, धर्म-कथाएं सुनाईं, पर इनके आचरण में ज़रा भी फर्क नहीं आया । सच तो यह है कि कोयले को हजार बार धोने से भी वह काले-का काला ही रहता है । अगर ये चाहें तो हर इतवार को गिर्जा जा सकते हैं, और हमारे कोई-कोई दास-दासी जाते भी तो हैं, पर जरा भी फायदा नहीं होता । मैं तो पहले ही कह चुकी हूं कि यह अत्यन्त नीच जाति है और सदा योंही रहेंगे । इनमें किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं होने की । अफिलिया बहन ! मैं इन बातों को परख चुकी हूं और आपने कभी देखा नहीं । मैं उन्हीं के बीच में जन्मी और बड़ी हुई हूं । इससे मैं सब जानती हूं ।"

मिस अफिलिया अपनी पहली बातों को ही पर्याप्त समझकर अब कुछ भी न बोली । सेण्टक्लेकर मुंह से सीटी बजाने लगा ।

सेण्टक्लेयर को सीटी बजाते देख मेरी ने बिगड़कर कहा, "सेण्टक्लेयर, मैं तुम्हारी यह सीटी नहीं सुनना चाहती । इससे मेरे सिर में दर्द होने लगता ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर—अच्छा, मैं सीटी नहीं बजाऊंगा। बतलाओ, और मुझे क्या-क्या करने को मना करती हो ?

मेरी—मैं चाहती हूं कि मेरे दुःख में तुम थोड़ी-बहुत सहानुभूति दिखाया करो। तुम कभी मेरे दुःख का अनुभव नहीं करते।

सेण्टक्लेयर—मेरी प्यारी दोषदात्री सुन्दरी, तुम क्या कहती हो ?

मेरी—तुम्हारे इस तरह बातें करने का ढंग ठीक नहीं है।

सेण्टक्लेयर—तब जैसे तुम कहो वैसे करूं। बतलाओ, कैसे बातें की जांय ? मैं तुम्हारी आज्ञानुसार तुम्हारे बतलाये हुए ढंग पर ही बात-चीत करूंगा। मैं तुम्हें सन्तुष्ट करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हूं।

इसी समय बाहर के बरामदे से हँसने का शब्द सुनकर सेण्टक्लेयर बाहर चला गया। अफिलिया भी उसके पीछे-पीछे हो ली। बरामदे में पहुंचकर देखा कि इवा टाम की गोद में बैठी हुई है। टाम के गले में फूलों की माला डालकर वह बड़ी प्रसन्नता से हंस रही है। और पूछती है, "टाम काका, कहो, अब तुम कैसे लगते हो ?" टाम को बच्चे बहुत प्यारे लगते थे। वह बड़े स्नेह से इवा के मुख की ओर देख कर धीरे-धीरे हँस रहा था। अफिलिया ने इवा को टाम के गले में इस प्रकार माला डालते देख-कर कहा, "सेण्टक्लेयर, इवा को नौकरों के साथ इतना हिलने देना अच्छा नहीं है।"

सेण्टक्लेयर—क्यों, इसमें हर्ज क्या है ? तुम लोग कुत्तों को प्यार करती हो, उनका मुंह चूमती हो। क्या इन दास-दासियों को उनसे भी गया-बीता समझती हो ?

अफिलिया—तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन देश में जो चाल चल रही है, उसके संस्कार हृदय पर जमे हुए हैं। ईसाई धर्म के जोर लगाने पर भी ये संस्कार दूर नहीं हो सकते।

सेण्टक्लेयर—यद्यपि तुम्हारे उत्तरी प्रांत में दास-प्रथा नहीं है, फिर भी तुम्हारे यहां के लोग दास-दासियों को नीच जाति का समझकर उनसे घृणा करते हैं। तुम्हारे यहां उन्हें कीट-पतंग से अधिक नहीं समझा जाता। तुम्हारे यहां उनके सुधार के लिए पादरी रखे जाते हैं, पर गुलामों को छूने से घृणा की जाती है। जैसे बिल्ली-कुत्तों को मेज पर कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन नहीं करने दिया जाता, वल्कि उनका खाना दूर ही डाल दिया जाता है, वैसे ही तुम्हारे यहां भी गुलामों को दूर से ही आध्यात्मिक आहार दिया जाता है और उनकी उन्नति का प्रयत्न किया जाता है। अफ्रीका में इनके उद्धार के लिए पादरी भेजे जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि तुम लोगों द्वारा शीघ्र ही संसार का उद्धार हो जायगा।

अफिलिया—हां भैया, इसमें कुछ-न-कुछ सचाई जरूर है, इससे मैं इन्कार नहीं कर सकती। यह हृदय पर जमे हुए कुसंस्कारों की माया है।

सेण्टक्लेयर—मुझे तुम्हारे उन कुसंस्कारों के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है, पर हमारे देश में इन सब दास-दासियों को अपने वच्चों से अलग रहना पड़ता है, इससे इनमें से वहुतेरे छोटे-छोटे वच्चों को गोद में लेकर बड़े खुश रहते हैं। इसीसे मैं इवा को इनकी गोद में जाने से नहीं रोकता।

अफिलिया—इवा इन पर वड़ी दया करती है। टाम को इवा बहुत प्यार करती है। वह बड़े प्रेम से उसका गाना सुनती है। वह टाम के साथ वड़ी प्रसन्न रहती है। टाम भी उसे बहुत प्यार करता है। इवा सचमुच देववाला है। उसे देखनेवाले का हृदय आनन्द से भर जाता है। तुम्हारी यह दास-प्रथा कलुषित मरुभूमि के समान है और इवा उसमें विकसित गुलाव की भांति सौरभ विस्तार कर रही है। सेण्टक्लेयर, दास-दासियों के सम्बन्ध में तुम्हारा मत सुनकर मुझे तुम एक सच्चे धर्म-प्रचारक जान पड़ते हो।

सेण्टक्लेयर—मैं और धर्म-प्रचारक! भला मुझ से और धर्म से क्या नाता?

अफिलिया—नाता नहीं तो मुंह से ऐसी बातें क्यों कहते हो?

सेण्टक्लेयर—कहने और करने में वड़ा फर्क है। जबानी जमा-खर्च में क्या लगता है? दीदी, अपना-अपना काम बांट लेना बड़ा अच्छा होता है। मुंह से कहने का काम मेरा रहा और करने का तुम्हारा।

सेण्टक्लेयर के घर टाम के दिन बड़े सुख से बीतने लगे। टाम सदैव इवा के साथ रहता था, क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करती थी। सेण्ट-क्लेयर अपने दास-दासियों को सजे-धजे देखना पसन्द करता था। इससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने टाम को भलेमानसों के-से कपड़े पहनने को दिये थे। टाम जब उन वस्त्रों को पहने हुए इवा को साथ लेकर घूमने जाता, तो अनजान आदमी उसे कार्थेज का लॉर्ड-विशप समझते थे। टाम के जिम्मे कभी-कभार घुड़साल देखने के सिवा और कोई काम नहीं था। इस प्रकार टाम सेण्टक्लेयर के घर सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।

१८ : : गुलामी का समर्थन !

आज रविवार है। मेरी इन दिनों मन गढ़न्त रोगों से सदा खाट पर पड़ी रहने पर भी हर रविवार को गिर्जा अवश्य जाया करती थी। इससे गिर्जे के पादरीसाहब मेरी की बड़ी तारीफ किया करते थे। वह मेरी की तारीफ में सदा कहा करते, "स्त्रियों में मैडम सेण्टक्लेयर आदर्श-धर्मपालिका है। रोग, शोक, आंधी, पानी चाहे जो हो, वह गिर्जा जाने से नहीं चूकती। उसकी प्रबल धर्म-तृष्णा रविवार के दिन उसके दुर्बल शरीर में बिजली की तरह बल भर देती है।"

रविवार को मणि-मुक्ता-खचित बड़े सुन्दर कपड़े पहन कर मेरी गिर्जा जाने की तैयारी करने लगी। उसका यह स्वभाव था कि गिर्जा जाने वाले दिन यदि कोई दास या दासी उसके कपड़े लाने में विलम्ब कर देती, तो वह कोड़ों की मार से उसकी पीठ लाल करके मानती। उस समय उसके हाथ मशीन की तरह चलते थे। बाहर गाड़ी खड़ी हुई है। अफिलिया और इवा को साथ लिये हुए मेरी कमरे से उतर रही थी। बीच ही में मामी मिल गई, इवा उससे बातें करने लगी। मेरी और अफिलिया गाड़ी में जा बैठीं। इवा को देर करते देखकर मेरी उसे बार-बार पुकारने लगी। मामी के साथ इवा की बातें सुन लीजिये :

इवा—मामी, मैं जानती हूं, तुम्हारे सिर में बड़ी भयानक पीड़ा है।

मामी—मिस इवा, ईश्वर तुम्हें सुखी करें। मेरे सिर में बड़ा दर्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है, पर तुम इसके लिए रंज मत करो।

इवा—मामी, आज तुम्हें गिर्जा जाने की छुट्टी मिल गई, यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई। यह कहकर उसने मामी के गले में हाथ डाल दिया। फिर बोली—मामी, तुम मेरी यह नासदानी ले लो, इसके सूंघने से तुम्हारे सिर का दर्द मिट जायगा।

मामी—नहीं बच्ची, मैं तुम्हारी यह सोने की सुन्दर नासदानी लेकर क्या करूंगी? मेरे पास क्या यह अच्छी लगेगी? मैं इसे हर्गिज नही लूंगी।

इवा—मामी, तुमको इससे बहुत फायदा होगा, और मेरे पास यह बेमतलब पड़ी हुई है। मां सिर दर्द के लिए इसे सदा काम में लाया करती थीं। और तुम्हें भी यह लाभ पहुंचावेगी। मेरी प्रसन्नता के लिए तुम्हें अवश्य लेनी पड़ेगी।

इतना कहकर मामी की चोली में नासदानी डालकर और उसे चूमते हुए इवा अपनी मां के पास भाग गई।

उसकी मां ने बड़े क्रोध से पूछा, "इतनी देर कहां खड़ी रही?"

इवा—मैं मामी को अपनी नासदानी देने को ठहर गई थी। मैंने वह नासदानी उसे दे दी।

मेरी बहुत बिगड़कर बड़ी अधीरता से बोली, "इवा, वह अपनी सोने की नासदानी मामी को दे दी। कब तुझे अक्ल आवेगी। जा और उसे अभी लौटा ला।"

इवा की आंखें नीची हो गई। उसे बड़ा दुख हुआ। वह धीरे-धीरे लौटी। सेण्टक्लेयर वहीं मौजूद था। उसने कहा, "मेरी, मैं कहता हूं, इवा को अपनी इच्छानुसार कार्य करने दो। वह जो करे, उसे कर लेने दो।

मेरी—सेण्टक्लेयर, संसार में उसका कैसे बेड़ा पार होगा?

सेण्टक्लेयर—सो तो ईश्वर जानता है। पर स्वर्ग में वह मुझसे और तुमसे अच्छी रहेगी।

इस पर इवा ने धीरे से सेण्टक्लेयर के कान में कहा, "आह बाबा, ऐसा मत कहो। इससे मां को बड़ी वेदना होती है।"

मिस अफिलिया ने सेण्टक्लेयर की ओर घूमकर कहा, "क्यों, भैया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम भी गिर्जा चलते हो ?"

सेण्टक्लेयर—इस प्रश्न के लिए तुम्हें धन्यवाद ! मैं नहीं जाऊंगा ।

मेरी—मैं बहुत चाहती हूं कि सेण्टक्लेयर मेरे साथ गिर्जे जाया करें। पर उनका हृदय बिलकुल धर्म-हीन है। वास्तव में यह बड़े खेद की बात है।

सेण्टक्लेयर—मैं तुम लोगों के गिर्जा जाने का मतलब खूब जानता हूं। लोगों में वाहवाही लूटने और धार्मिक कहलाने की इच्छा से तुम गिर्जा जाती हो। यदि मैं कभी गिर्जा गया भी तो उसी गिर्जे में जाऊंगा, जहां मामी जाती है। कम-से-कम उस गिर्जे में जाकर सोने की गुंजाइश तो नहीं रहती।

मेरी—ओफ, मेथोडिस्टों का गिर्जा ? बड़ा भयंकर है। वहां के गुलगपाड़े की भी कोई हद है। वहां के पादरी कितना शोर मचाते हैं।

सेण्टक्लेयर—पर तुम्हारे उस सूने मरुभूमि सरीखे गिर्जे से तो वह कहीं अच्छा है।

फिर इवा से पूछा, "बेटी, तू भी क्या गिर्जा जाती है ? आओ, यहीं घर रहो, हम दोनों खेलेंगे।"

इवा—बाबा, मैं भी गिर्जा जाऊंगी।

सेण्टक्लेयर—क्या वहां बैठे-बैठे तेरा जी नहीं घबराता ?

इवा—हां, कुछ-कुछ घबराता है और कभी-कभी नींद भी आने लगती है, पर मैं जागते रहने की चेष्टा किया करती हूं।

सेण्टक्लेयर—तब वहां क्यों जाती है ?

इवा बाबा, बुआ कहती है कि हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। वह हम लोगों को बहुत प्यार करते हैं। वही हम लोगों को सब-कुछ देते हैं। गिर्जे में ईश्वर की प्रार्थना के समय जी नहीं घबराता, केवल पादरी साहब के प्रवचन के समय ऊंघ आने लगती है।

कन्या की बात सुनकर और उसका सरल विश्वास देखकर सेण्टक्लेयर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कन्या का मुंह चूमकर कहा, "जाओ बेटी, जाओ ! मेरे लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करना।"

इवा—वह तो मैं सदा से करती हूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कहकर वह गाड़ी पर अपनी मां के पास बैठ गई। सेण्टक्लेयर ने पायदान पर खड़े होकर उसका हाथ चूमा। फिर गाड़ी गिर्जे की ओर चली गई। सेण्टक्लेयर की आंखों से हर्ष के आंसू बहने लगे। वह मन-ही-मन बोला—'इवान्जेलिन, तुमने अपने इवान्जेलिन नाम को सार्थक किया। तुम मेरे लिए वास्तव में एक इवान्जेलिन (स्वर्गीय बाला) हो।'

गाड़ी में मेरी इवा को समझाने लगी, "इवा, देख, नौकरों पर दया दिखाना मुनासिब जरूर है, पर यह ठीक नहीं कि उनसे अपने बराबर अथवा सम्बन्धियों का-सा व्यवहार किया जाय। मान ले, आज अगर मामी बीमार पड़ जाय तो तू क्या उसे अपने विछौने पर लेटने देगी ?"

इवा—हां, यह तो बड़ा अच्छा होगा, क्योंकि मेरे विछौने पर रहने से मैं बड़े आराम से उसकी दवा तथा पथ्य-पानी की खबर रख सकूंगी। मेरा बिस्तर मामी के विस्तर से अच्छा औरनरम है, उसपर उसे अच्छी नींद आवेगी।

इवा का यह उत्तर सुनकर मेरी अपने भाग्य को कोसने लगी। बोली, "मैं इसे कैसे समझाऊं ? मैंने क्या कहा और यह क्या समझी।"

अफिलिया—तुम्हारी बात को इसने कुछ नहीं समझा।

इवा कुछ देर तो उदास-सी दिखलाई दी, पर सौभाग्य से बच्चों के मन पर किसी बात का प्रभाव देर तक नहीं रहता। इससे जरा-सी देर में गाड़ी की खिड़की से इधर-उधर की चीजें देखकर उसका मन बदल गया और वह फिर पूर्ववत प्रफुल्लित हो गई।

ये लोग जब गिर्जे से लौटे और सब लोग भोजन करने बैठे, तब सेण्टक्लेयर ने मेरी से पूछा, "कहो, आज गिर्जे में किस विषय पर प्रवचन हुआ ?"

मेरी—आज पादरीसाहब का धर्मोपदेश बड़ा ही हृदयग्राही था। यह उपदेश तुम्हारे सुनने लायक था। वह बिलकुल मेरे मत से मिलता हुआ था।

सेण्टक्लेयर—तो मैं समझता हूं, आज का उपदेश किसी गम्भीर विषय पर हुआ होगा ?

मेरी—हूं, सामाजिक बातें और ऐसे विषयों पर जो मेरा मत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, वस उसी से मेरा मतलव है। पादरीसाहव ने वतलाया कि ईश्वर हर चीज़ को उपयुक्त समय पर प्रस्फुटित करते हैं। वाइविल के वचन की उन्होंने व्याख्या की। अपनी व्याख्या में उन्होंने वड़ी स्पष्टता से वतलाया कि ईश्वर ने ही दुनिया में दरिद्र और धनी दोनों बनाये हैं। इसलिए इस बात को मानना चाहिए कि संसार में ऊंच-नीच का भेद-भाव ईश्वर का वनाया हुआ है। उसकी इच्छा से कुछ आदमी प्रभुत्व करने को और कुछ उनकी गुलामी करने को पैदा हुए हैं। पादरीसाहव ने अकाट्य युक्तियों द्वारा इस विषय का वड़ी खूवी के साथ प्रतिपादन करते हुए कहा, "जो लोग गुलामी की चाल की वुराइयां दिखला कर उसके विरुद्ध शोर मचाते हैं, वे भूलते हैं। वे ईश्वर की शासन-प्रणाली को विल्कुल नहीं समझते। उन्हें वाइविल का विल्कुल ज्ञान नहीं है। उन्होंने बड़ी अच्छी तरह से यह ईश्वरीय नियम भी दिखाया कि मनुष्यों में विभिन्नता सदा रहेगी। कालों को गोरों की सेवा करनी चाहिए। न करेंगे तो उन्हें पाप का भागी वनना पड़ेगा। ईश्वर जो करते हैं, सबके भले के लिए करते हैं। अतः यह गुलामी की चाल गुलाम और मालिक दोनों के ही भले के लिए है। सेण्टक्लेयर, तुमने आज का उपदेश सुना होता तो वहुत-कुछ सीखते।

सेण्टक्लेयर—मुझे उपदेशों की आवश्यकता नहीं है। मुझे यहीं बैठे-बैठे चुरुट पीते हुए विचार करने में बड़ी शांति मिलती है। तुम्हारे गिर्जे में तो चुरुट पीने की मुमानियत है, यह बड़ी आफ़त है।

मिस अफिलिया—क्यों ? क्या तुम इन विचारों से सहमत नहीं हो ?

सेण्टक्लेयर— कौन, मैं ? मैं ऐसे विषयों में धार्मिक विचारों की जरा भी परवा नहीं करता। मैं ऐसे धर्म से कोई वास्ता नहीं रखता। यदि मुझे इस गुलामी-प्रथा पर कुछ कहना पड़े तो मैं साफ कहूंगा कि हम लोग अपने लाभ की दृष्टि से ही इसका समर्थन करते हैं। हमें आराम है, इससे इसका रहना वहुत आवश्यक और उचित है। दासों के बिना काम नहीं चलता, बिना मेहनत-मशक्कत के धन की गठरी हाथ नहीं आती, इससे दासता की प्रथा को हम नहीं हटाना चाहते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी—अगस्टिन, मैं समझती हूं कि धर्म पर तुम्हारी तनिक भी श्रद्धा नहीं है। तुम्हारी बातें सुन कर हृदय कांपता है।

सेन्टक्लेयर—हृदय कांपता है ! सच है, पर मैं तो सच्ची-सच्ची कहना जानता हूं। ये सब अपने मतलब की बातें हैं। अच्छा, पादरी लोग कहते हैं कि दास-प्रथा ईश्वर की इच्छा से है और इसकी जरूरत है, इसी से इसकी उत्पत्ति हुई है। ठीक है, मुझे भी पादरीसाहब से एक चीज़ की व्यवस्था लेनी है। जब मैं किसी दिन ताश खेलने में अधिक रात तक जागता रहता हूं तो मुझे ब्राण्डी पीने की जरूरत पड़ती है। पादरीसाहब बतलावें कि जब ब्राण्डी पीने की जरूरत पड़ती है तब वह जरूरत भी ईश्वर ही की बनाई हुई है, इसीलिए ब्राण्डी क्यों नहीं पीनी चाहिए ? फिर पादरीसाहब कहते हैं कि सब चीज़ोंका उपयुक्त समय होता है, उपयुक्त समय पर सभी चीजें अच्छी होती हैं। मेरी समझ में ब्राण्डी पीने के लिए संध्या का समय ही बड़ा उपयुक्त होता है। संध्या और ब्राण्डी दोनों ही ईश्वर की बनाई हुई चीज़ें हैं। दोनों में जब इतना मेल है तब मैं समझता हूं कि पादरी साहब जरूर ब्राण्डी पीने की आज्ञा देंगे।

अफिलिया—खैर, इन बातों को जाने दो। यह कहो कि तुम दास-प्रथा को उचित समझते हो या अनुचित ?

सेण्टक्लेयर—मैं तो दास-प्रथा की भलाई-बुराई पर कुछ भी नहीं कहना चाहता। यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर दूं तो मैं समझता हूं कि तुम मुझे बहुत कोसोगी। मैं उन आदमियों में से हूं, जो आग शीशे के घर में बैठ कर दूसरों पर ढेला फेंकते हैं, पर मैं स्वयं कभी ऐसा घर नहीं बनाता कि दूसरे उस पर ढला फैंकें। कहने का मतलब यह है कि मैं स्वयं दोषी होते हुए भी दूसरों के दोषों को देखता हूं, किंतु मैं कभी किसी के सामने अपना मत नहीं प्रकट करता कि जिसमें कोई मुझ पर दोषारोपण कर सके।

मेरी— बस, इनकी सदा ऐसी ही बातें करने की आदत है। तुम्हें इनसे किसी बात का ठीक उत्तर नहीं मिलेगा। सच तो यह है कि धर्म से इनका कुछ वास्ता नहीं है। जिसका धर्म पर प्रेम होगा, वह क्या कभी ऐसी बातें मुंह से निकाल सकता है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर—धर्म ! देख लिया तुम्हारा धर्म ! क्या तुम लोग सचमुच गिर्जे में धर्म की बातें सुनने जाती हो ? समाज-प्रचलित स्वार्थ-परता का तथा मनुष्य के अभ्यस्त पापों का बाइबिल से जोड़-तोड़ बिठाना ही हमारे देश का ईसाई धर्म है ! देश में फैले हुए किसी भी अत्याचार या अन्याय को बाइबिल में लिखा बतला दिया कि वह धर्म का भाग बन गया। तुम लोग मनुष्य के पापों को धर्म का रूप देने की फिक्र करते हो, पर मैं जब धर्म की ओर दृष्टि डालता हूं तो धर्म अपने से ऊपर ही, न कि नीचे, देखता हूं। मैं अपने पापों को कभी धर्म का जामा पहनाने की चेष्टा नहीं करता। जो पाप है, वह पाप ही रहेगा, चाहे तुम करती हो चाहे मैं, उसे बाइबिल से लाख बार सिद्ध करने की चेष्टा करो, तो भी वह कभी पुण्य नहीं हो सकता।

अफिलिया—तो तुम विश्वास नहीं करते कि गुलामी की प्रथा बाइबिल की रूह से ठीक है ?

सेण्टक्लेयर—जिस स्नेहमयी जननी की प्रतिमूर्ति सदा मेरे हृदय में बसी रहती है, बाइबिल उसकी बड़ी प्यारी पुस्तक थी। बाइबिल पर उनकी अटल श्रद्धा और भक्ति थी। बाइबिल द्वारा उनका जीवन गठित हुआ था, परन्तु दास-प्रथा से उन्हें बड़ी घृणा थी। इससे दास-प्रथा बाइबिल से सिद्ध है, इसे मैं कभी नहीं मानता। विचार किया जाय तो क्या यूरोप, क्या अमरीका और क्या अफ्रीका, ऐसा कोई देश न ठहरेगा, जहां के मनुष्य-समाज में किसी-न-किसी प्रकार की बुराइयां घुसी हुई न हों। समाज में फैले हुए नीति-विरुद्ध व्यवहारों को बाइबिल से सिद्ध करने में जो लोग अपनी सारी शक्ति खर्च करते हैं और इन्हें धर्म-संगत ठहराते हैं, वे लोग सचमुच अपनी गाढ़ी स्वार्थ-परता के कारण मोह के दलदल में फंसे हुए हैं। दास-प्रथा के बिना सहज में हम लोग धनी नहीं हो सकते, मौज नहीं कर सकते, इसीसे अपने सुख के लिए, अपने स्वार्थ की दृष्टि से, हम लोग दास-प्रथा को आवश्यक बतलाते हैं। पर जो लोग सच्ची बात पर पर्दा डाल कर गुलामी के बाइबिल-सम्मत होने की पुकार मचाते हैं, मेरी समझ में वे सरासर सत्य की हत्या करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी--तुम बड़े नास्तिक हो गये हो !

सेण्टक्लेयर—यदि आज रुई का चालान रुक जाय और हमारे देश की रुई का भाव एकदम गिर जाय, तो फिर दास-प्रथा की जरूरत न रहेगी। उस समय बाइबिल का अर्थ भी बदल जायगा। आज बाइबिल के मत से दास-प्रथा उचित है, पर रुई का बाजार मन्दा हो जाय तो गुलामों को सीधा अफ्रीका लौटा देना ही ईश्वर-वाक्य माना जाने लगेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि रुई के भाव के साथ-साथ बाइबिल का मत भी बदल जायगा।

मेरी—मैं दास-प्रथा को धर्म-विरुद्ध नहीं मानती। ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे हृदय में तुम्हारी भांति नास्तिकता के भाव नहीं भरे हैं।

इसी समय हाथ में एक सुन्दर फूल लिये हुए इवा वहां आई। सेण्टक्लेयर ने उससे पूछा, "अच्छा, इवा, तू बतला कि तुझे वारमण्ट का दास-दासी-शून्य अपनी बूआ का घर अच्छा लगता है या अपना घर, जहां गुलाम भरे पड़े हैं।

इवा—निश्चय अपना ही घर अच्छा है।

सेण्टक्लेयर—वह कैसे ?

इवा—हमारे घर में बहुत आदमी हैं। वे सब मुझे प्यार करते हैं, और मैं उन्हें प्यार करती हूं, इसी से हमारा घर अच्छा है।

मेरी—बस, इसे प्यार-ही-प्यार की सूझी रहती है। हर घड़ी प्यार! ऐसी बेअक्ल लड़की तो मैंने कहीं नहीं देखी। कहती है, दास-दासियों को प्यार करती हूं। दास-दासियों से, और प्यार !

इवा—क्यों बाबा, मेरी यह प्यार की बात बेजा है ?

सेण्टक्लेयर—संसार इसे बुरी समझता है। यहां निस्वार्थ प्रेम का कोई पारखी नहीं है। अच्छा, तू बतला, भोजन के समय से अब तक कहां थी ?

इवा—मैं टाम के कमरे में थी, उसका गाना सुन रही थी। वहीं दीना चाची ने मुझे भोजन दे दिया था।

सेण्टक्लेयर—टाम का गाना सुनती थी ?

इवा—हां, वह बहुत अच्छे गीत गाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर—सचमुच ?

इवा—हां-हां । और वह मुझे भी अपने गीत सिखावेगा ।

सेण्टक्लेयर—टाम तुम्हें गाना सिखलावेगा ? गाने के लिए उस्ताद तो बड़ा अच्छा मिला है ।

इवा—हां-हां, वह मुझे अपना गाना सुनाता है । मैं उसे अपनी बाइबिल पढ़कर सुनाती हूं और वह मुझे उसका अर्थ समझाता है ।

मेरी ने हँसते हुए कहा, "टाम बाइबिल सिखलावेगा ! क्या मजे की बात है ।"

सेण्टक्लेयर—ऐसा मत कहो । धर्म की शिक्षा देने के लिए टाम मेरी समझ में अवश्य उपयुक्त आदमी है । धर्म के लिए वह बहुत व्याकुल रहता है और उसका हृदय भी बड़ा धार्मिक है । कल मुझे घोड़े की जरूरत थी । इससे मैं धीरे-धीरे उसके कमरे की ओर गया । वहां जाकर देखा कि टाम आंखें बन्द किये हुए ईश्वर के ध्यान में मग्न है । मुझे यह जानने की बड़ी उत्कण्ठा हुई कि टाम कैसे ईश्वर की आराधना करता है, पर मैंने अबतक कभी ऐसी सरल प्रार्थना नहीं सुनी थी । बड़ी व्याकुलता से उसने ईश्वर से मेरे कल्याण की प्रार्थना की । उस समय उसका चेहरा देखने से वह सचमुच पूरा महात्मा जान पड़ता था । मैंने बहुतेरे पादरियों के मुंह से प्रार्थना सुनी है, किन्तु ऐसी विश्वासपूर्ण प्रार्थना कभी नहीं सुनी ।

मेरी—शायद उसने जान लिया होगा कि तुम सुन रहे हो, इससे तुम्हें खुश करने के लिए उसने ढोंग रचा होगा । मैंने पहले भी कई बार उसकी ठग-विद्या की बात सुनी है ।

सेण्टक्लेयर—उसने मेरे मन को संतुष्ट करने की कोई बात मुंह से नहीं निकाली । उसने निष्कपट मन से ईश्वर के सम्मुख अपने मनो-भाव प्रकट किये । उसने ईश्वर से इसी बात की प्रार्थना की कि मुझमें जो दोष हैं, वे दूर हो जांय । इससे यह बात मन में नहीं लाई जा सकती कि वह ढोंग करता था ।

अफिलिया—मैं आशा करती हूं कि तुम्हारे हृदय पर इसका अच्छा असर होगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर—मैं समझता हूं, तुम्हारी और टाम की राय मेरे विषय में मिलती-जुलती है। अच्छा, मैं अपना चरित्र सुधारने की चेष्टा करूंगा।

१९ : : दासता के बंधन तोड़ने का प्रयास

अब हम थोड़ी देर के लिए टाम से विदा होकर जार्ज, इलाइजा, जिम और उसकी वृद्धा माता का वृत्तान्त सुनाते हैं।

संध्या का समय निकट है। जार्ज अपने लड़के को गोद में लिये हुए और अपनी स्त्री इलाइजा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए बैठा है। दोनों चिंता-मग्न और गम्भीर जान पड़ते हैं। उनके गालों पर आंसुओं के चिह्न दीख पड़ते हैं।

जार्ज ने कहा, "हां, इलाइजा, मैं जानता हूं कि तुम जो कहती हो, सब सच है। तुम्हारा हृदय स्वर्गीय भावों से पूर्ण है। इसके विपरीत, मेरा हृदय बिल्कुल शुष्क है, लेकिन मैं तुम्हारे वचन-पालन की चेष्टा करूंगा। मैं तुमसे निश्चय कहता हूं कि स्वतंत्र हो जाने पर मैं एक ईसाई का-सा श्रद्धालु हो जाऊंगा। सर्वशक्तिमान ईश्वर जानता है कि मैंने कभी अपने मन में बुरे विचारों को स्थान नहीं दिया। जब-जब मुझ पर घोर अत्याचार हुए, तब-तब मैंने उसी का नाम लेकर अपने मन को धीरज दिया। अब मैं सारी पिछली सख्तियों और अत्याचारों को मन से भुला दूंगा। अपनी बाइबिल पढ़ूंगा और सज्जन बनने की चेष्टा करूंगा।"

इलाइजा—और जब हम कनाडा पहुंच जायंगे, तब मैं तुम्हारी सहायता करूंगी। मैं बहुत अच्छे कपड़े सीना जानती हूं। मैं बढ़िया धुलाई और इस्तरी का काम भी कर सकती हूं। हम दोनों वहां कुछ-न-कुछ करके अपना जीवन-निर्वाह कर लेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज—हां, इलाइजा, मुझे पेट की इतनी चिंता नहीं है। इस बच्चे को और तुम्हें साथ लेकर जहां-कहीं रहूंगा, वहीं मेरे लिए स्वर्ग है। मैं अधिक नहीं चाहता। ईश्वर से इतनी ही प्रार्थना है कि तुमसे वियोग न हो। इस बालक को कोई हमसे छीन न सके। सोचने की बात है कि ये नर-पिशाच गोरे माता की गोद से बच्चों को छीनकर और पति से स्त्री को अलग करके बेच डालते हैं। इससे अभागे गुलामों के हृदयों को कितना कष्ट पहुंचता है। मैं ऐसी दशा में यही चाहता हूं कि तुम पर और इस बच्चे पर मेरा अपना कहने का अधिकार हो जाय। इसके सिवा मैं ईश्वर से और कुछ नहीं मांगता। मैंने गत पच्चीस वर्ष की अवस्था तक प्रतिदिन कठिन परिश्रम किया है और उसके लिए कौड़ी भी नहीं पाई। न मेरे रहने के लिए झोंपड़ी थी और न अपनी कहने के योग्य एक बालिश्त जमीन ही। इतने पर भी वे यदि मेरा पिंड छोड़ दें तो मुझे संतोष है। मैं उनका कृतज्ञ रहूंगा। मैं कमा कर तुम्हारे मालिक को तुम्हारा और अपने इस लड़के का मूल्य भेज दूंगा। अपने पुराने मालिक का तो मैं एक कौड़ी का भी कर्जदार नहीं। उसने मुझे जितने में खरीदा था, उससे पांचगुना उसने मेरे द्वारा वसूल कर लिया। इलाइजा, स्वाधीनता बड़ा अमूल्य रत्न है, पर चिरपराधीन व्यक्ति स्वाधीनता के सुख को नहीं जान सकता। मिश्री खाये बिना उसका स्वाद नहीं जाना जा सकता। इसी भांति जो सदा से पराधीन है, वह स्वाधीनता की महिमा नहीं समझ सकता। इस विपत्ति की दशा में रहते हुए भी मैं तुमसे स्वाधीनतापूर्वक बातें कर रहा हूं, इतने ही से मेरा हृदय आनन्द से नाच रहा है। आज स्वाधीनता ने मुझमें फिर जान डाल दी है। परमात्मा करे, संसार में कोई भी पराधीन न रहे, कोई स्वाधीनता के स्वाद से वंचित न हो। संसार में किसी जाति को पराधीनता की जंजीर से न जकड़े रहना पड़े। इलाइजा, पराधीनता की बेड़ी से सर्वथा मुक्त हो जाने के लिए मैं बहुत छटपटा रहा हूं।

इलाइजा—पर हम अभी संकट के पार नहीं हुए हैं। अभी कनाडा दूर है।

जार्ज—यह सत्य है, पर स्वाधीनता की वायु मन्द-मन्द लहराती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जान पड़ती है और उसके स्पर्श मात्र से मैं सजीव-सा जान पड़ता हूं।

इसी समय बाहर किसी के बात-चीत करने की आवाज सुनाई दी। तुरन्त ही किसी ने दरवाजा खड़खड़ाया। इलाइजा ने जाकर दरवाजा खोल दिया।

बाहर से साइमन हालीडे एक क्वेकर—सम्प्रदायी भाई—को साथ लिये हुए अन्दर आये। इस दूसरे आदमी का नाम साइमन हालीडे ने फीनियस बतलाया। फीनियस लम्बा-चौड़ा आदमी था। चेहरा देखने से कार्यदक्ष, चालाक और लड़ाका जान पड़ता था। साइमन हालीडे की भांति इसके मुख पर शान्त भाव न था। यह उस ढंग के आदमियों में था, जो जितना होते हैं उससे अपने को अधिक समझते और प्रकट करने की कोशिशे करते हैं। पर दिल का साफ था।

साइमन हालीडे ने अन्दर आकर कहा, "जार्ज, बड़ी आफत है। तुम्हें पकड़ने के लिए आदमी तैनात हुए हैं। फीनियस ने उनकी कुछ-कुछ बातें सुनी हैं। अच्छा होगा कि इसी के मुंह से सारी बातें सुनो।"

फीनियस ने कहना आरम्भ किया, "मेरा सदा से यह मत है कि आदमी को सर्वदा एक कान खुला रखकर सोना चाहिए। उससे बड़ा लाभ होता है। पिछली रात मैं एक होटल में ठहरा था। वहां एक कमरे में बिस्तरे पर पड़ा हुआ था, पर अपने सिद्धान्त के अनुसार मैं नींद में ऐसा बेहोश नहीं हो गया था, जैसेकि अक्सर लोग हो जाया करते हैं कि कोई उनके सिरहाने का तकिया भी खींच ले जाय तो उन्हें पता न लगे। हां, तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे कमरे के बगलवाले कमरे में बैठे कुछ लोग शराब पी रहे हैं और बातें कर रहे हैं। उनकी बातें सुनने की मुझे उतनी परवा नहीं थी, पर जब मैंने उन्हें क्वेकर-मंडली का नाम लेते सुना तो मेरे जी में खटका हुआ और मैं ध्यान से उनकी बातें सुनने लगा। उनमें से एक ने कहा, 'जरूर वे भगोड़े दास-दासी क्वेकर-वालों के गांव में ही छिपे हैं। जल्दी चलकर उस नौजवान को गिरफ्तार करना चाहिए। उसे केण्टाकी ले चल कर उसके मालिक को सौंपना होगा। उसका मालिक जरूर ही उसे मार डालेगा। उसको ऐसी सजा हो जाने पर फिर गुलाम लोग भागने का दुस्साहस नहीं करेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर, उस युवक के लड़के को जिस दास-व्यवसायी ने खरीदा था, उसी को दिया जायगा, खूब माल मिलेगा और उस युवक की स्त्री को दक्षिण में बेचकर सहज में सोलह-सत्रह सो मार लिये जांयगे। वह स्त्री बड़ी सुन्दरी है। जिम और उसकी माता को यदि उनके पहले मालिकों के यहां ले जांय तो वे जरूर हमें खूब इनाम देंगे। उस आदमी की बातों से मुझे यह भी जान पड़ा कि उनके साथ पुलिस के दो सिपाही भी हैं और तुम लोगों की गिरफ्तारी के लिए उनके पास वारंट है। इनमें से एक जो नाटा है, वह जरूर वकील है, क्योंकि बड़ी कानूनी बातें बनाता है। उसने निश्चय किया है कि वह अदालत में जाकर झूठमूठ कह देगा कि इलाइजा उसी की खरीदी हुई दासी है। फिर उसकी बात पर जब इलाइजा उसकी हो जायगी तब वह उसे दक्षिण में ले जाकर बेच डालेगा। पुलिस के सिपाहियों के सिवा उनके साथ और भी कई आदमी हैं। मैं बड़ी तेजी से यहां आया हूं। मैं समझता हूं कि वह सवेरे सात या ज्यादा-से-ज्यादा आठ बजते-बजते यहां पहुंच जांयगे। इसलिए अब जो करना हो, जल्दी किया जाय।"

इस वार्तालाप के उपरान्त यह मंडली जिस विचित्र ढंग से खड़ी थी, वह दृश्य चित्र लेने योग्य था। हालीडे के चेहरे पर काफी चिन्ता छा गई थी। फीनियस भी बड़ी गहरी चिन्ता में मग्न जान पड़ता था। इलाइजा अपने स्वामी के गले में हाथ डाले खड़ी हुई उसकी ओर देख रही थी। जार्ज की आंखों में सुर्खी छा गई थी। उसकी ऐसी दशा हो गई थी, मानो उसकी आंखों के सामने उसकी स्त्री का नीलाम हो रहा हो और उसका लड़का किसी दास-व्यवसायी को बेचा जा रहा हो।

इलाइजा बड़ी दीनता से बोली, "जार्ज, अब क्या उपाय होगा?"

"मैं उपाय जानता हूं।"—यह कहकर जार्ज कोठरी के अन्दर गया और अपनी पिस्तौल लाकर बोला, "जबतक मेरे हाथ में पिस्तौल है, किसी का कुछ डर नहीं। जबतक मुझमें जान है, कोई गोरा तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता।"

साइमन हालीडे ने एक ठण्डी सांस लेते हुए उससे कहा, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि ऐसा मत करना।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पर जार्ज ने साइमन से कहा, "महाशय, आपने पिता की भांति हम लोगों को शरण दी है, इसके लिए हम सब आपके कृतज्ञ हैं, परन्तु यदि पकड़ने वालों से यहां हम लोगों का किसी प्रकार का झगड़ा हो गया तो देश-प्रचलित घृणित कानून के अनुसार आपको भी दण्ड-भागी होना पड़ेगा। इसलिए मैं चाहता हूं कि आगे जाकर पकड़ने-वालों से मुकाबला हो, जिससे आप पर किसी तरह की आपत्ति आने का अंदेशा न रहे। पकड़नेवालों से भेंट होने पर हम उनके छक्के छुड़ा देंगे। उन स्वार्थी, नर-पिशाच, विवेकहीन गोरों के खून की नदी बहा देंगे। जिसमें दैत्य का-सा बल है, वह बड़ा साहसी तथा मरने-मारने को सदा तैयार है। मुझे भी किसी का भय नहीं है।"

फीनियस अबतक खड़ा बातें सुन रहा था। उसने कहा, "हां, भाई, तुम बहुत ठीक कहते हो। पर तुम्हें एक गाड़ी हांकनेवाले की तो जरूरत पड़ेगी ही, क्योंकि तुम्हें तो रास्ता मालूम नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

जार्ज—पर मैं नहीं चाहता कि तुम इस आफ़त में पड़ो।

फीनियस—(आश्चर्य से) आफ़त! जब आफ़त आवे तो ज़रा कृपा करके मुझसे भी उसकी जान-पहचान करा देना।

साइमन ने कहा, "फीनियस बड़ा साहसी और बुद्धिमान् आदमी है। वह जी-जान से तुम लोगों की रक्षा करेगा। जार्ज, इतनी जल्द-बाज़ी की ज़रूरत नहीं है। ज़रा धीरज से काम लो, युवकों का खून बहुत जल्दी उबल उठता है।"

जार्ज—मैं पहले किसी पर आक्रमण नहीं करूंगा। मैं उनसे केवल इतना ही कहूंगा कि वह मुझे इस देश से जाने दें और मैं शान्तिपूर्वक चला जाऊंगा। हां, यदि उन्होंने मेरे कार्य में किसी प्रकार की बाधा डाली तो वे हैं और यह पिस्तौल, मैं बिना उनकी जान लिये नहीं छोड़ूंगा। उनकी जान लेने पर उस दुःख की शान्ति हो जायगी, जो माता और बहन का वियोग होने से मुझे हरदम सताया करता है।

माता और बहन का स्मरण होते ही उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। उमड़े हुए शोक से उसका गला भर आया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अस्फुट-स्वर से कहने लगा, "बीती बात याद करके मेरा कलेजा फटा जाता है। मेरी एक बड़ी बहन थी। उसे मेरे नीच मालिक ने दक्षिण में बेच डाला। अब स्त्री और पुत्र से अलग करके मेरी दुर्दशा करना चाहता है। जब ईश्वर ने मुझे स्त्री-पुत्र की रक्षा के लिए ये दो दृढ़ भुजाएं दी हैं तब यदि मैं उनके लिए इनका उपयोग न करूं, तो ये व्यर्थ हैं। मैं निश्चय के साथ कहता हूं कि मेरी देह में प्राण रहते मेरी स्त्री और पुत्र को कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता। क्या आप इस आचरण के लिए मुझे दोषी कहेंगे?"

साइमन—कभी नहीं! इन स्वार्थी नर-पिशाच गोरों के सिवा और कोई तुम्हारे इस आचरण को बुरा नहीं कह सकता। दुर्बल-से-दुर्बल आदमी भी इतना अत्याचार सहन नहीं कर सकता। धिक्कार है इस पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार को! पर उससे अधिक धिक्कार है उन पाखंडियों को, जिनकी स्वार्थपरता और अर्थ-तृष्णा के कारण इस संसार में पाप और अत्याचार फैला हुआ है।

फीनियस अबतक खामोश बैठा था। साइमन की बात समाप्त होने पर वह बोला, "भाई जार्ज, ईश्वर ने मेरी इन दो भुजाओं में भी कुछ बल दिया है। मित्र, मुझे विश्वास है कि काम पड़ने पर ये भुजाएं तुम्हारे लिए इस शरीर से अलग हो जाने को भी तैयार रहेंगी।"

साइमन ने कहा, "फ़ीनियस, जार्ज पर जैसे-जैसे अत्याचार हुए हैं, उससे उसके मन में बदला चुकाने की प्रवृत्ति का आना स्वाभाविक है, लेकिन तुम तो शांत रहो। हां, सताये हुए अपने भाई-बंधुओं की सहायता के लिए सदा प्राण देने को प्रस्तुत अवश्य रहना चाहिए और और अत्याचार के विरुद्ध इसी प्रकार कटिबद्ध रहना ठीक है। पर अब तो नेताओं ने इस विषय में इससे बहुत अच्छे मार्ग का अनुसरण करने की सलाह दी है। उनका कहना है कि मनुष्य को कोई कार्य क्रोधान्ध अवस्था में नहीं करना चाहिए। क्रोध और द्वेष दोनों मन के विकार हैं। अत्याचार को दूर करने के लिए इन दोनों शत्रुओं के वश में होकर कोई काम करना उचित नहीं है। क्रोध के समय मनुष्य को भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता है। अतः कुछ सोचना हो, करना हो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब शान्ति में होना चाहिए। ईश्वर से हम लोगों को प्रार्थना करनी चाहिए कि हम भटकने न पावें।"

फीनियस पर इस उपदेश का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, किन्तु फिर भी वह अपनी प्रचण्ड प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करने लगा। हम पहले कह आये हैं कि फीनियस एक भीम-प्रकृति का मनुष्य है, बड़ा संग्राम-प्रिय है, अवसर आने पर वह साक्षात यमराज की भांति लड़ता है। विपद किसे कहते हैं, यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता। असल में युद्ध के लिए शारीरिक बल की ही आवश्यकता नहीं है, बल्कि मानसिक बल भी इसके लिए बहुत ज़रूरी है। जो मौत के मुंह में जाने से डरता है, वह कायर संग्राम के उपयुक्त नहीं। उसे कभी देव-दुर्लभ वीर की पदवी नहीं मिल सकती। वीर की जान हथेली पर रहती है, मौत उसके लिए खेल की वस्तु है। फीनियस मृत्यु से कभी नहीं डरता था। पहले तो वह और भी आग-बबूला था, किन्तु अब कुछ शांत प्रकृति का हो गया है। प्रेम की छूत वज्र-हृदय को भी कोमल बना देती है। क्वेकर-संप्रदाय की किसी सुशिक्षिता, सहृदया युवती के प्रेम में फंसने के बाद फीनियस की प्रकृति कुछ ठंडी हो गई है। इसकी परोपकार-वृत्ति बड़ी प्रबल है। दूसरे का भला होता हो तो यह अपनी जान दे सकता है। पर अब पहले का-सा भाव नहीं है। पहले वह बिना सोचे-विचारे, बिना बात की, लड़ाई मोल ले लेता था; किंतु अब अपनी प्यारी के शान्त मुख-कमल का स्मरण आते ही फीनियस अपनी दुर्दम्य प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करता है। अब वह सदुपदेश के सम्मुख सिर झुकाता है। ज्ञानी और महात्माओं के वाक्यों पर बड़ी श्रद्धा रखता है।

फीनियस को गरम होते देखकर साइमन की सहधर्मिणी वृद्धा राचेल ने मुस्कराकर कहा, "फीनियस किसी काम के लिए कमर कस ले तो किसी की मजाल है कि उसे उसके इरादे से हटा दे लेकिन अब उसका हृदय प्रेम की पवित्र डोर से बंधा हुआ है। इस समय उसका दुर्दम्य मन कैदी बना हुआ है।"

राचेल की बात समाप्त हो जाने पर जार्ज ने साइमन से कहा, "खैर, आप जो कहते हैं, वह सब भी ठीक है, पर यहां से भागने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिवा बचने की और क्या सूरत है ? जहां तक हो, यहां से जल्दी ही हट जाना अच्छा है।"

इस पर फीनियस ने कहा, ' हां, यह ठीक है। अभी यहां से निकल चलने से फिर पकड़नेवालों की दाल न गलेगी। मैं तो दो घण्टा रात रहे ही वहां से चल दिया था। वे सब आज सवेरे तुम लोगों की तलाश में निकलेंगे। यहां से अभी निकल चलें तो वे हम लोगों से चार कोस पीछे रहेंगे। मैं अभी जाकर माइकल क्रास को बुला लाता हूं। वह पीछे रह कर पकड़ने वालों का भेद लेता रहेगा। हम लोग कुछ आदमी गाड़ी पर चढ़ कर आगे वढ़ चलेंगे।"

फीनियस जब माइकल क्रास को बुलाने चला गया, तब साइमन ने कहा, "जार्ज, फीनियस बड़ा चतुर और कामकाजी आदमी है। तुम इसी की सलाह पर चलना। वह अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी भलाई करने से नहीं चूकेगा।"

जार्ज—और तो कुछ नहीं, मुझे इस बात का वड़ा खेद हो रहा है कि कहीं हम लोगों के लिए आपको किसी आफ़त में न फंसना पड़े।

साइमन—हम लोगों के लिए तुम कोई चिन्ता मत करो। हमने जो कुछ किया है, अपने कर्तव्य के अनुरोध से किया है। कर्तव्य-पालन में हमारे प्राण भी जांय तो कोई चिन्ता नहीं।

फिर साइमन ने अपनी स्त्री की ओर घूम कर कहा, "राचेल, अब शीघ्र ही इन लोगों के खाने-पीने का प्रबंध हो जाना चाहिए। हम अपने घर से इन लोगों को भूखा नहीं जाने देंगे।"

राचेल जब अपने वाल-बच्चों को लेकर जल्दी-जल्दी भोजन बनाने में लगी हुई थी, उसी समय जार्ज और उसकी स्त्री अपने छोटे कमरे में एक-दूसरे के गले में बांहें डाले हुए बैठे कुछ ही देर में होनेवाले अपने वियोग के सम्बंध में बातें कर रहे थे। उनकी आंखों में आंसू भरे थे।

जार्ज ने कहा, "इलाइजा, जो लोग मित्रों से घिरे हुए हैं, और धन-धान्य, गृह तथा अनेकानेक सम्पत्तियों से पूर्ण हैं, उन्हें स्त्री-पुत्र का वियोग ऐसा दुःखदायी नहीं होता होगा। उनके सुख के अनेक साधन हैं, पर तुम्हारे और इस सन्तान के सिवा संसार में मेरे तो और कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है। तुमसे ब्याह होने के पूर्व इस जगत में मेरी उस दुखियारी माता और बहन के अलावा और कोई प्राणी मुझे प्यार की निगाह से देखनेवाला न था। जिस दिन प्रातः काल मेरी बड़ी बहन एमिली को सौदागर खरीदकर ले गया, उस दिन की याद करके मुझे अपार दुःख होता है। मैं दालान में पड़ा सो रहा था। उस समय उसने रोते हुए आकर मेरा हाथ पकड़ कर उठाया और कहा, 'जार्ज, आज तेरी अंतिम हिताकांक्षिणी जा रही है। अभागे बालक, तेरी क्या गति होगी ?' मैं उठ खड़ा हुआ और उसके गले से लिपट कर रोने-चिल्लाने लगा। वह भी बहुत रोई। वे अंतिम स्नेह के शब्द सुने आज मुझे दस वर्ष हो गये। मेरा हृदय जल-जल कर खाक हो गया। तुम्हारे प्रेम से मेरे मुर्दा शरीर में कुछ जान आ गई थी। बीती बातों को भुलाकर मैं नया मनुष्य बन गया। इलाइजा, अब मुझे मरना कबूल है, पर मैं उन लोगों को तुझे अपने पास से कदापि न ले जाने दूंगा। मुझे इस जीवन की कोई परवा नहीं है। जीना है तो सुख से, अपने स्त्री-पुत्र-सहित, नहीं तो इनसे बिछुड़ कर जीने में क्या आनन्द रखा है ? यों कुत्ते की मौत मरने की अपेक्षा वीरों की भांति, अत्याचारियों को, जो हमें सताते हैं, उन नर-पिशाच गोरों को मार कर मरना हजार दर्जे अच्छा है।"

इलाइजा ने सिसकते हुए कहा, "हे परमात्मन्, दीनबन्धो, हम पर दया करो। हम इतना ही मांगते हैं कि हम सबको इस देश से निर्विघ्न पार कर दो।"

जार्ज—ईश्वर की इन अत्याचारियों से सहानुभूति है ? क्या वह इनके अत्याचारों को देखता है ? वह क्यों हम लोगों पर इतना अन्याय होने देता है ? और वे अत्यचारी गोरे हमसे कहते हैं कि बाइबिल में गुलामी लिखी है। वास्तव में शक्ति ही सबकुछ है। उनके पास धन है, जन है, वे स्वस्थ हैं और सब तरह से सुखी हैं। इससे जो चाहते हैं, करते हैं। संसार की बुरी-से-बुरी बात को ये धर्म का फतवा दिला लेते हैं। इनका धर्म केवल ढोंग के सिवा और कुछ नहीं है। क्रिश्चियन कहलाने पर भी इनमें क्रिश्चयन का एक भी गुण नहीं है। जो बिचारे गरीब सच्चे क्रिश्चियन हैं, जिनमें ईसा की-सी सहनशीलता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उन्हें ये धूल में लुटाते हैं और ठोकरें लगाते हैं। जहां तक बनता है, उन्हें सताते हैं। ये उन्हें खरीदते हैं और फिर बेचते हैं। उनके जिगर के खून का, उनकी आहों का, और उनके आंसुओं का सौदा करते हैं और ईश्वर उन्हें इसकी आज्ञा देता है।

जार्ज की ये बातें सुनकर रसोई-घर से साइमन ने पुकार कर कहा, "भाई जार्ज, धीरज रखो। मेरी बात सुनो। ईश्वर बड़ा न्यायी है। सांसारिक माया-मोह में फंसे रहने के कारण हम उसकी लीलाओं को नहीं समझ सकते। तुम यह मत समझो कि जो बड़ा धनी है, ऐश्वर्य-वान है, और जो बहुत लोगों पर हुकूमत करता है, वह बड़ा सुखी है। धन के नशे में बावले बने हुए, विषय-मदान्धअत्याचारी और दूसरों पर प्रभुता करनेवालों को इस संसार में तनिक भी सुख नहीं मिलता। आठों पहर चौंसठ घड़ी उनके हृदय में अशान्ति की आग जला करती है। यदि तुम्हें उनके हृदय की वास्तविक स्थिति का पता होता तो तुम यों धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्य के लिए ईश्वर से शिकायत न करते। तुम नहीं जानते कि अनेक अवसरों पर विपत्ति, दुःख और दरिद्रता ही मनुष्य को पवित्र सुख और शान्ति प्रदान करती है। ऐश्वर्य के मद में मतवाला होकर मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है और अन्त में दुर्लभ मानव-जीवन के महत्व को खो बैठता है। विपत्ति और संकट मनुष्य को बहुधा ईश्वर की ओर ले जाते हैं। वह दरिद्रता और वह विपत्ति, जो मनुष्य को ईश्वर की याद करादे, उस ऐश्वर्य और प्रभुत्व से हजार गुनी अच्छी है, जो मनुष्य को ईश्वर का स्मरण नहीं होने देते। विश्वास और भक्ति की भी क्या अनोखी शक्ति है!"

साइमन ने अपने हृदय के गम्भीर विश्वास के साथ जार्ज को यह उपदेश दिया था। अतः जार्ज के मन पर इसका असर हुआ और उसे इससे शांति मिली। इससे पहले जार्ज ने कितने ही क्रिश्चियन पादरियों के कितने ही उपदेश सुने थे, पर उसके मन पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। इस कान सुना और उस कान निकाल दिया। सत्य तो यह है कि यदि स्वयं उपदेश देनेवाले के मन में विश्वास और भक्ति न हो, तो वह चाहे जितना गला फाड़-फाड़ कर उपदेश दिया करे, किसी पर उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ असर नहीं होता। और जो अपने सिद्धांत पर स्वयं चलता है, जिसे अपने सिद्धांत से पूरी लगन है, उसकी बात में, उसके उपदेश में जादू का असर होता है। सच्चा उपदेशक अपने विश्वास की तस्वीर खींच कर रख देता है, क्या मजाल कि किसी के हृदय पर उसकी बात का असर न हो। साइमन ऐसे ही आदमियों में थे। उनका जीवन ही परोपकार के निमित्त था। ईश्वर पर उनकी अगाध भक्ति और श्रद्धा थी। वह सम्पूर्ण कार्यों को ईश्वर के निमित्त ही करते थे, फिर भला उनके उपदेश का असर जार्ज के हृदय पर क्यों न होता! ऐसे परोपकारी के उपदेश तो पत्थर को भी मोम बना देते हैं।

फिर राचेल प्रेम से इलाइजा का हाथ पकड़कर उसे भोजन कराने ले गई। वे सब लोग भोजन करने बैठे ही थे कि रूथ वहां आ पहुंची। रूथ और इलाइजा के परिचय का उल्लेख पहले हो चुका है। रूथ अपने साथ ऊनी मोजे और कुछ भोजन की सामग्री लाई थी। उसे इलाइजा को देकर बोली, "बहन, तुम्हारे बच्चे के पैर खाली देखकर, कई दिन हुए मैंने ये मोजे बना रखे थे। अभी सुना कि तुम लोग यहां से चले जाओगे। इसीसे जल्दी-जल्दी में हेरी के लिए मोजे और कुछ खाने को भी बनाकर लाई हूं। बच्चों को हर वक्त कुछ-न-कुछ खाने को चाहिए ही।"

इतना कहकर रूथ ने हेरी को गोद में लेकर उसका मुंह चूमा और खाने की चीजें उसकी जेब में डाल दीं।

इलाइजा बोली, "बहन, मुझ पर तुम बड़ी कृपा करती हो। मैं इसके लिए तुम्हारी बड़ी कृतज्ञ हूं और हृदय से तुम्हें धन्यवाद देती हूं।"

राचेल ने कहा, "रूथ, आओ, तुम भी कुछ खा लो।"

रूथ—नहीं, मैं इस समय ठहर नहीं सकती। मैं लड़के को जान को दे आई हूं और चूल्हे पर भात चढ़ा आई हूं। मेरे जरा भी देर करने से जान की बेपरवाही से भात ख़राब हो जायगा। और जो बच्चा रोया तो पास पड़ी हुई सारी चीनी वह उस लड़के को ही दे देगा। जब-तब वह ऐसा ही करता है।" जान रूथ का स्वामी था। इतना कह कर वह इलाइजा और जार्ज से विदा लेकर चली गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर में सब के खा-पी चुकने पर एक बड़ी गाड़ी आई। सब लोग उसी में बैठ गये। फीनियस ने सबको ठीक से बैठा दिया। इलाइजा और जिम की वृद्धा माता गाड़ी के अन्दर बैठीं। जिम और जार्ज सामने बैठ गये। फीनियस पीछे बैठा। जार्ज ने ज़रा मन्द पर दृढ़ स्वर में पूछा, "जिम, तुम्हारी पिस्तौल तो ठीक है न!"

जिम—जीहां, सब ठीक है।

जार्ज—उन लोगों से भेंट होने पर अवश्य तुम उसका उपयोग करोगे?

जिम—(छाती फुलाकर और एक गहरी सांस लेकर) इसमें भी क्या शक है? तुम क्या सोचते हो कि प्राण रहते मैं उन्हें अपनी मां को फिर ले जाने दूंगा?

गाड़ी चलने की तैयारी होने पर साइमन ने कहा, "मेरे बन्धुओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे! तुम लोगों के सकुशल पहुंच जाने की खबर पाकर मुझे बड़ा आनंद होगा।"

इस पर गाड़ी में से सब बोले, "ईश्वर आपका भला करे।"

गाड़ी में बात-चीत करने का सुभीता न था। एक तो रास्ता खराब था, दूसरे पहियों की घड़घड़ाहट भी कम न थी। हेरी अपनी माता की गोद में शीघ्र ही सो गया, पर भय के मारे बुढ़िया और इलाइजा की आंखों में नींद कहां! बड़ी द्विविधा और उत्कण्ठा में उनका समय बीत रहा था। थोड़ी रात रहे मालूम हुआ कि गाड़ी पांच-सात कोस निकल आई है। तब धीरे-धीरे उन लोगों की चिन्ता घटी। इस समय इलाइजा को कुछ तंद्रा-सी आ रही थी। फीनियस सारी रात गाड़ी के पीछे खड़ा रहा। रास्ते की थकावट दूर करने के लिए वह रात-भर तरह-तरह के गीत गाता रहा।

रात को तीन बजे के करीब पीछे से जार्ज को घोड़ों की टापें सुनाई दीं। जार्ज ने फीनियस को यह बात बताई। उसने भी ध्यान से सुना। सुन कर कहा, "मैं समझता हूं, माइकेल होगा, मैं उसके घोड़े की टापों को पहचानता हूं।" फिर वह सिर उठा कर पीछे घूम कर देखने लगा। एक सवार सरपट घोड़ा दौड़ाये दूर से आता दिखाई दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फीनियस बोला, "हां-हां, वही तो है।"

जार्ज और जिम दोनों उछल कर गाड़ी से बाहर आ गये। सब चुपचाप खड़े आगन्तुक की बाट देख रहे थे। अब वह एक दर्रे में उतर गया, जहां से वह उसे देख न सके, पर शीघ्र ही फिर वह उन्हें पहाड़ की चोटी पर दिखाई दिया।

फीनियस बोला, "है-है, माइकेल ही है। लो, यह आ गया।"

माइकेल ने पास आकर कहा, "फीनियस, तुम लोग यहां तक आ गये ?"

फीनियस—कहो, क्या खबर है ? वे आ रहे हैं ?

माइकेल—हां, वे पीछे चले आ रहे हैं। दस-बारह हैं। शराब के नशे में चूर हैं, लाल-लाल आंखें हैं। मुझे तो जंगली भेड़िये-जैसे लगते हैं। ये बातें समाप्त हुई थीं कि पीछे से घोड़ों की टापों की खटखट सुनाई देने लगी।

फीनियस गाड़ी से कूद पड़ा। घोड़ों की लगाम जोर से खींचते हुए वह गाड़ी को रास्ते से हटा कर एक पहाड़ की तलहटी में ले गया। अब वे सब पीछा करनेवाले साफ-साफ दिखाई देने लगे। इलाइजा चिल्लाने लगी और बड़ी दृढ़ता से लड़के को अपनी गोद में चिपका लिया। जिम की वृद्धा माता कहने लगी, "हे भगवान बचाओ, हे भगवान, बचाओ! बचाओ!" जार्ज और जिम पिस्तौल तान करके नीचे खड़े हो गये। फीनियस ने सब से कहा, "तुम लोग सब गाड़ी से उतर आओ और इस चट्टान पर चढ़ जाओ।" माइकेल से कहा कि तुम शीघ्र गाड़ी ले कर आमारिया के घर की ओर चले जाओ और उसे तथा उसके पुत्रों को साथ ले आओ।

फिर फीनियस ने हेरी को इलाइजा की गोद से ले कर अपने कन्धे पर चढ़ा लिया और जल्दी-जल्दी चट्टान पर आगे-आगे चढ़ने लगा। बहुत शीघ्र ये लोग चट्टान पर चढ़ गये। वहां पहुंच कर फीनियस बोला, "अब तो तुम लोग रास्ते से मेरे गाड़ी हटा लेने और इस चोटी पर चढ़ आने का मतलब समझ गये होगे। यहां के सब घाट मेरे जाने हुए हैं। यह चोटी ऐसी है कि यहां एक आदमी पिस्तौल ले कर खड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाय तो सौ आदमियों को हरा सकता है। इस चोटी पर एक साथ दो आदमियों के चढ़ने का रास्ता ही नहीं है। जो कोई हिम्मत करके आने की कोशिश करेगा, उसी को गोली मारकर गिरा दिया जायगा।"

जार्ज ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारी चतुराई की प्रशंसा करता हूं। पर अब तुम बैठ जाओ। हमारा मामला है, जो कुछ बुरा-भला होगा, हम समझें-बूझेंगे, हम लड़-भिड़ लेंगे।"

फीनियस ने हँस कर कहा, "अच्छा, तुम अकेले ही लड़ना। यहां से लड़ने में कई आदमियों की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। एक आदमी ही काफी होगा। मैं खड़ा-खड़ा तमाशा देखूंगा। देखो, ज़रा नीचे की ओर देखो, वे सब खड़े-खड़े क्या सलाह कर रहे हैं। सब बिल्ली की-सी आंखें निकाल रहे हैं। उनके घूरने से ऐसा जान पड़ता है मानो एक ही छलांग में ऊपर आकर हम लोगों को खा लेंगे। अच्छा, पहले ज़रा इनसे पूछा तो जाय कि ये हज़रत क्यों तशरीफ लाये हैं और क्या चाहते हैं ? अगर कहें कि तुम लोगों को गिरफ्तार करने आये हैं, तो कह दिया जाय कि सीधी तरह अपना रास्ता नापो, नहीं तो सब अपनी जान से हाथ धो बैठोगे। इस बात पर अगर लौट जांय तो फिर झगड़ा बढ़ाने की जरूरत नहीं रहेगी।"

पकड़ने को आने वालों में दो तो पाठकों के पूर्व-परिचित टाम लोकर और मार्क ही थे। ये दोनों सबसे आगे खड़े थे। उनके पीछे दो सिपाही थे। साथ में और भी कई मतवाले थे। इनमें से एक मतवाले ने कहा, "दादा, लोग अच्छी जगह पहुंच गये हैं।"

टाम लोकर—यह रहा रास्ता। सब इसी रास्ते पर चढ़े हैं। मैं भी इसी रास्ते चढ़ता हूं। आज वे नहीं भागने पावेंगे। जल्दी में कहीं कूदे तो हड्डियां चूर-चूर हो जांयगी।

मार्क—अरे लोकर, ज़रा संभल कर आगे बढ़ो। चट्टान की आड़ से किसी ने गोली दागी तो सीधे जहन्नुम पहुंचोगे।

टाम लोकर—अंह, तुम्हें जब देखो तब जान ही की पड़ी रहती है, मारे डर के मरे जाते हो। क्या खतरा है? ये हब्शी गुलाम बेचारे क्या खाकर गोली चलावेंगे! एक धमकी में ही रोते-रोते नीचे उतर आवेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्क—क्यों, जान की क्यों नहीं पड़ी रहेगी। रुपयों के लिए जान दूंगा ? जान है तो जहान है। गुलाम समझ कर मत भूलो। कभी-कभी ये काले गुलाम ही दैत्य की तरह युद्ध करते हैं। एक काला तीन गोरों को जहन्नुम की राह दिखा सकता है।

इसी समय जार्ज ने उनके सामने की एक चोटी पर आकर बड़े धीरे और शांत भाव से स्पष्ट शब्दों में कहा :

"सज्जनो, आप लोग कौन हैं ? क्या चाहते हैं ?"

लोकर—हम लोग भगोड़े गुलामों के एक दल को पकड़ने आये हैं। भगोड़ों के नाम हैं जार्ज हेरिस, इलाइजा और उनका लड़का, तथा जिम सेलडन और उसकी बूढ़ी मां। हमारे साथ गिरफ्तारी के परवानों सहित पुलिस के कर्मचारी आये हैं। तुम केण्टाकी प्रदेश के शेल्वी परगने के हेरिससाहब के गुलाम जार्ज हेरिस हो न ?

जार्ज—जीहां, मैं ही जार्ज हेरिस हूं। केण्टाकी के एक हेरिससाहब मुझे अपनी सम्पत्ति समझते हैं, किंतु इस समय स्वतंत्र हूं, परमेश्वर के राज्य में स्वाधीनतापूर्वक विचरता हूं और मेरे स्त्री-पुत्र पर भी मेरे सिवा और किसी का अधिकार नहीं है। जिम और उसकी माता भी यहीं हैं। अपनी रक्षा के लिए हम लोगों के पास शस्त्र हैं और ज़रूरत हुई तो हम लोग उनका उपयोग भी करेंगे। तुम्हारी खुशी हो तो ऊपर आओ। पर याद रक्खो, जो कोई पहले ऊपर चढ़ा, वह हमारी गोली का निशाना बनकर यमपुर की राह नापेगा। उसके बाद फिर जो कोई आयगा, उसकी भी यही गति होगी। और अंत में एक-एक करके सबको जान से हाथ धोना पड़ेगा।

मार्क बोला, "आओ-आओ, जल्दी नीचे उतर आओ, खड़े-खड़े बकवाद मत करो। तुम्हारे बोलने की जगह नहीं है। तुम देखते नहीं कि पुलिस-कानून हमारे साथ है। हम लोग कानून से चले हैं, तुम लोगों को पकड़ने का हमें अधिकार है। बहुत चीं-चपड़ न करो, जल्दी नीचे उतर आओ।

जार्ज—अजी, मैं खूब जानता हूं कि तुम लोग कानून से चले हो और तुम्हारे हाथ में शक्ति है। तुम चाहते हो कि मेरी स्त्री को ले जाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवअर्लिन्स में वेच डालो, मेरे बच्चे को बकरी के बच्चे की भाँति किसी व्यवसायी के कसाईखाने में वेच डालो और जिम तथा उसकी माता को उसके उसी नरपिशाच मालिक को सौंप दो। वहां पर वह इस बुढ़िया पर वेंत फटकारेगा और इसी के सामने इसके लड़के की जान लेगा। वस, यही तुम्हारा मतलव है। जहन्नुम में गया तुम्हारा क़ानून। मैं ऐसे कानून पर लात मारता हूं, जो केवल गरीवों को सताने और धनिकों को फायदा पहुंचाने के लिए वना हो। लानत है तुम्हारे उस कानून पर और उस कानून के अनुसार चलनेवालों और विचार करनेवालों पर। हम इस कानून की जरा भी परवा नहीं करते। और न हम इसे अपना कानून मानते हैं, न तुम्हारे मुल्क ही को अपना देश समझते हैं। हम लोग यहां विस्तीर्ण आकाश के नीचे खड़े हुए उतने ही स्वाधीन हैं, जितने तुम लोग। हम भी उसी ईश्वर के वनाये हुए हैं जिसने तुमको वनाया है। हम मरते दम तक अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ेंगे। हमारा मूल मन्त्र है—स्वाधीनता या मृत्यु!

उपर्युक्त वातों को करते समय जार्ज को वड़ा जोश आ गया। उसका चेहरा वहुत भयंकर हो गया। उसकी आंखों में क्रोध की लाली छा गई, मानो उनसे आग की चिनगारियां वरस रही हों। उसके ओठ फड़कने लगे और उसके दाहिना हाथ उठाकर वोलने के समय ऐसा जान पड़ने लगा, मानो वह देश में फैले हुए अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध परमपिता जगदीश्वर के सिंहासन के सम्मुख अपील करता हुआ न्याय का पक्ष समर्थन करता हो। यदि किसी अंगरेज युवक ने इंग्लैंड से अमरीका को भागते हुए ऐसी वीरता प्रकट की होती तो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उसका नाम लिखा जाता, पर क्रीत दासी के गर्भ से उत्पन्न गुलाम जार्ज की वीरता को गोरे इतिहास-लेखक कब स्वीकार करने लगे?

जार्ज की वातें सुनकर और उसके मुख का विकट भाव देख कर पकड़नेवाले सहम गये। वास्तव में कभी-कभी साहस और दृढ़ प्रतिज्ञा बड़े-बड़े वलवानों की छाती भी दहला देती है। मार्क को छोड़ कर और सवकी हिम्मत जाती रही। अब मार्क ने निशाना ताक कर जार्ज पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोली चलाई। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि इसकी लाश इसके मालिक को देकर उससे विज्ञापन में लिखा हुआ इनाम वसूल कर लूंगा।

इधर जार्ज उछल कर पीछे हट गया। इलाइजा चीख उठी। गोली उसके पास से सनसनाती हुई निकल गई। जार्ज ने कहा, "इलाइजा, डरो मत। कोई खतरे की बात नहीं।"

फीनियस ने आगे बढ़ कर जार्ज से कहा, "इलाइजा को समझाने-बुझाने का यह समय नहीं है। इन दुष्टों का मार्ग बंद करना चाहिए। ये बड़े ही कमीने हैं।"

जार्ज—जिम, देखो तुम्हारा पिस्तौल ठीक है? जो कोई पहला आदमी चढ़ने की चेष्टा करेगा, उस पर मैं गोली दाग दूंगा। दूसरे को तुम लेना, यही क्रम रहेगा। एक मैं और एक तुम। एक आदमी के लिए दो गोलियां बेकार खर्च नहीं की जांयगी।

जिम—अगर तुम्हारा निशाना चूक गया तो फिर क्या करना होगा?

जार्ज ने जोश से कहा, "ऐसा नहीं होगा। मेरा निशाना बिलकुल ठीक बैठेगा।"

फीनियस ने मन-ही-मन जार्ज के साहस को सराहा।

मार्क का निशाना चूका देखकर उसका दल सोचने लगा कि अब क्या किया जाय!

लोकर बोला, "मैं इन काले हब्शियों से कभी नहीं डरा और न इस समय डरता हूं।"

इतना कहकर वह पहाड़ पर चढ़ने लगा। और लोग उसके पीछे-पीछे चलने लगे। कुछ दूर जाते ही जार्ज ने लोकर को ताक कर गोली मारी, जो उसकी भुजाओं में लगी। किंतु चोट खाकर भी वह लौटा नहीं। पागल सांड की तरह आगे ही बढ़ता गया। तब फीनियस ने ने कहा, "मित्र, यहां तुम्हारी जरूरत नहीं, नीचे ही चलो।" यह कह कर उसने उसको धकेल दिया। लोकर एकदम वहां से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिरा। इतनी ऊंचाई से गिरने पर वह अवश्य मर जाता, परन्तु बीच में एक पेड़ से अटक जाने के कारण उसके ऊपर से गिरने का वेग कुछ घट गया। इससे वह मरा तो नहीं, पर जख्मी होकर बेहोश हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्क—ईश्वर कुशल करे, सब-के-सब साक्षात दैत्य हैं। भागो, भागो, लौट चलो।

अबतक सिपाही देवता चुप थे, पर लौटते समय भागने में वे भी बड़ी तेजी दिखाने लगे। यह उस श्रेणी के व्यक्ति थे, जो मारतों के तो पीछे और भागने वालों के आगे रहते हैं। फिर मार्क ने सिपाहियों को बुलाकर कहा, "भाई, तुम लोग जरा देखना, मैं अभी और सिपाहियों को लेकर आता हूं।"

इतना कह कर वह घोड़े पर चढ़कर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

उनमें से एक ने कहा, "क्या तुमने कभी ऐसा अधम कीट देखा था? बेईमान अपने ही काम के लिए हम लोगों को लाया और हम लोगों को इस आफत में फंसा कर आप साफ चलता बना। खैर, चलो, उस बेचारे वीर लोकर की तो खबर ली जाय कि मरता है या जीता।"

लोकर के पास आकर उनमें से एक बोला, "कहो, हम लोगों के साथ चल सकोगे? क्या तुम्हें चोट ज्यादा लगी है?"

लोकर—क्या पता, एक बार मुझे उठाकर तो देखो। यह क्वेकर न होता तो मैं और सभी को आनन-फानन में पकड़ लेता।

फिर दोनों ने किसी तरह सहारा देकर लोकर को घोड़े पर लादा। इधर घोड़े का हिलना था कि वह धड़ाम से जमीन पर आ रहा। यह दशा देखकर दोनों सिपाहियों ने सोचा कि यह तो बड़ी आफत है। इसे लेकर सारी रात मुसीबत में भी कौन फंसे!

यह सोचकर उन दोनों सिपाहियों ने लोकर को उसी दुर्दशा में छोड़कर अपनी-अपनी राह पकड़ी। लोकर मुर्दे की भांति वहीं पड़ा रहा।

लोकर को छोड़ और सबके चले जाने पर वह दल नीचे उतरा। इधर स्टीपन, आमारिया और दूसरे दो क्वेकरों को साथ लेकर माइकेल गाड़ी समेत वहां पहुंच गया। इलाइजा ने पहाड़ के नीचे आते ही लोकर को देखकर कहा, "देखना चाहिए कि इसमें सांस बाकी है या नहीं? मैं तो भगवान् से यही मनाती हूं कि यह मरा न हो।"

फ़ीनियस—(मुस्करा कर) बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है। लेकिन इसके उन नालायक साथियों को क्या कहा जाय, जो इस बेचारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को इस दशा में छोड़ कर चल दिये !

इलाइजा—यह बेचारा घावों की पीड़ा से छटपटा रहा है। हम लोगों को इसकी सेवा का प्रयत्न करना चाहिए।

जार्ज—इसकी जीवन-रक्षा का उपाय अवश्य किया जायगा। दुश्मन पर दया करना ईसाई धर्म का एक अंग है।

फीनियस—मैं इसे लेकर किसी क्वेकर के यहां रखूंगा। फिर सेवा-शुश्रूषा और दवा-पानी से आराम हो जाने पर इसे इसके घर पहुंचा दूंगा। इसे यों छोड़ चलना बड़ी नीचता का काम होगा। देखो तो, इसकी क्या दशा है ?

लोकर के निकट जाकर फीनियस ने उसके शरीर की जांच की। पहले फीनियस एक नामी शिकारी था। इससे वह घाव की मरहम-पट्टी तथा बहते हुए रक्त-प्रवाह को रोक देने की विधि खूब जानता था। वह अपनी जेब से रूमाल निकालकर पट्टी फाड़-फाड़ कर लोकर के घावों पर बांधने लगा। लोकर ने कहा, "मार्क !"

फीनियस हँस कर बोला, "मार्क कहां है ? वह तो तुम्हें छोड़ कर भाग गया। सिपाही भी चलते बने। हम लोग अबतक तुम्हारे शत्रु थे, पर अब हम लोगों को अपना शुभचिन्तक समझो। जहां तक हो सकेगा, तुम्हारी पीड़ा दूर करने का यत्न करेंगे।"

लोकर—मैं बचता नहीं जान पड़ता। नीच कुत्ते मुझे छोड़कर चले गये। मेरी मां मुझसे सदा कहा करती थी कि ये साथी विपदा में तेरा साथ न देंगे। उसकी बात आज सच निकली।

जिम की माता ने कहा, "इसके मां है। ओफ़, उसे कितना कष्ट होगा ? हे ईश्वर, इसे जीवन-दान दो।"

लोकर ने फीनियस से अपना हाथ झटक कर छुड़ा लिया और तेज होने लगा। तब फीनियस ने कहा, "मित्र, जरा धीरज रक्खो। बहुत लाल-पीले मत पड़ो।"

लोकर बोला, "तुम्हीं ने तो मुझे धकेल दिया था।"

फीनियस—जी हां, अगर मैं तुम्हें धकेल न देता तो तुम हम सबों को धकेल देते। अब उन बातों को जाने दो। मैं चाहता हूं कि तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घावों पर फौरन पट्टी बांध दी जाय। अब धक्का-मुक्की का काम नहीं है। अब मैं तुम्हारी भलाई ही करूंगा। चलो, तुम्हें किसी क्वेकर के परिवार में पहुंचा दूं। वहीं तुम्हारी बहुत अच्छी सेवा होगी—इतनी अच्छी किशायद तुम्हारी माता भी उससे बढ़कर न करती।

शारीरिक यंत्रणा के कारण लोकर अचेत हो गया। सबने उसे पकड़ कर गाड़ी में लिटाया। फिर सब लोग गाड़ी पर बैठे। गाड़ी चल पड़ी। जिम की मां ने अपनी गोद में लोकर का सिर रख लिया। इलाइजा, जार्ज और जिम सब उसके लिए काफ़ी जगह छोड़ कर बैठे।

जार्ज ने फीनियस से पूछा, "आप क्या सोचते हैं कि लोकर अवश्य बच जायगा ?"

फीनियस—हां, जरूर बच जायगा। बेहोश तो वह ज्यादा खून निकल जाने की वजह से हो गया है। इसमें शक नहीं कि यह बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा।

जार्ज—आपकी बात सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। यद्यपि मैंने अपनी जान बचाने के लिए इस पर गोली चलाई थी, फिर भी यदि मेरे हाथ से इसकी मौत हो जाती तो सदा के लिए मेरे माथे पर इसका कलंक लग जाता। अब कहो, इसका करोगे क्या ?

बीनियस बोला, "हमारे क्वेकर सम्प्रदाय में ग्राण्डमय स्टीफन नाम की एक वृद्धा स्त्री है। वह बड़ी दयालु है। इसे उसके यहां पहुंचा देने से इसकी खूब सेवा होगी।"

घंटे-भर में सब लोग एक साफ-स्वच्छ घर के सामने पहुंचे। लोकर को सब लोगों ने पकड़ कर उतारा और वहां उस घर में उसे बहुत अच्छे और मुलायम बिस्तरे पर लिटा दिया। बड़ी मुस्तैदी से उसकी सेवा होने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० : : सच्ची प्रभु-भक्ति

सदाचार और सुशीलता का सभी जगह आदर होता है। जिसके हृदय में धर्मभाव और साधुभाव का राज्य है, उसके लिए इस संसार में, किसी दशा में, विपत्ति और कष्ट का भय नहीं है। ऐसे आदमी को सभी प्यार करते हैं। सचमुच सद्भाव के प्रभाव से पाषाण-हृदय भी नरम पड़ जाता है। दया, उदारता, स्नेह, सच्चे त्याग और निःस्वार्थ प्रेम के सम्मुख लोगों का सिर सदा झुका रहता है। इसीसे टाम अपने निष्कपट सरल व्यवहार के कारण दिन-दिन अपने मालिक की आंखों में चढ़ता गया।

रुपये-पैसे के मामले में सेण्टक्लेयर बड़ा लापरवाह था। वह अपने आय-व्यय का कोई लेखा-जोखा नहीं रखता था। उसका एडाल्फ नामक गुलाम ही हाट-बाजार तथा खर्च आदि का काम किया करता था। वह भी अपने मालिक के समान लापरवाह आदमी था, बेहिसाब खर्च करता था। पर टाम के आने पर सेण्टक्लेयर मौके-मौके से उससे काम लेने लगा। उसकी चतुराई और ईमानदारी देखकर सेण्टक्लेयर ने शीघ्र ही अपने रुपये-पैसे एवं खर्च का कुल काम उसको सौंप दिया।

अपने हाथ से खर्च का अधिकार निकल जाने के कारण एडाल्फ कुछ उदास हुआ और मुंह बनाने लगा। इसपर सेण्टक्लेयर ने कहा, "नहीं-नहीं, एडाल्फ, यह काम तुम टाम ही को करने दो। तुम केवल खर्च करना जानते हो और टाम खर्च और आमद, दोनों को समझता है। इस काम के लिए यदि हम किसी ऐसे आदमी को नियत न करें तो योंही करते-करते एक दिन रुपयों का तोड़ा हो जा सकता है।"

टाम सेण्टक्लेयर का काम बड़ी ही ईमानदारी से करता था। उससे कभी किसी खर्च का हिसाब नहीं पूछा जाता था। वह यदि चाहता तो बेईमानी से बहुत रुपये बना लेता; पर वह अधर्म की कौड़ी लेना महा-पाप समझता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर को मालिक जानकर टाम उसका बड़ा सम्मान करता था, पर इस सम्मान के भाव ने दूसरा ही रंग पकड़ा। टाम बूढ़ा और सेण्टक्लेयर नौजवान था। टाम गम्भीर और सेण्टकलेयर चंचल-चित्त था। इससे सेण्टक्लेयर के सम्बन्ध में टाम के हृदय में पितृ-वात्सल्य का संचार होने लगा। टाम ने देखा कि सेण्टक्लेयर का हृदय तो बड़ा दयालु है, किन्तु वह न कभी बाइबिल पढ़ता है, न कभी उठते-बैठते ईश्वर का भजन ही करता है, न गिर्जे में जाकर कभी ईश्वर की वन्दना करता है। वह तो सदा हँसी-खुशी में मग्न रहता है। थियेटर जाने का उसे शौक है। कभी-कभी अपने जैसे चंचल-चित्तवाले युवकों में बैठकर खूब शराब पीकर पागल बन जाता है। ये बातें देखकर टाम के मन में बड़ा दुःख होता था। ऐसा दयालु, सरल-प्रकृति, सहृदय व्यक्ति ईश्वर से अलग पड़ा है, उपासना-हीन जीवन व्यतीत कर रहा है, टाम के लिए यह बड़े ही कष्ट का विषय था। वह नित्य अपनी प्रार्थना में ईश्वर से विनती करता, "भगवान्, इस युवक की मति सुधार दो, इसका हृदय पलट दो! इसके हृदय में धर्म तथा अपनी भक्ति की तृष्णा उत्पन्न कर दो!"

एक दिन की बात है। सेण्टक्लेयर ने कहीं बहुत अधिक शराब पी ली और बड़ी रात गये गिरता-पड़ता घर आया। उस समय टाम और एडाल्फ ने उसे गाड़ी से उतार कर खाट पर सुलाया। सेण्टक्लेयर की यह दशा देखकर एडाल्फ हँसने लगा। पर टाम कुछ न बोल सका। उसकी आंखों से आंसू झरने लगे। टाम का यह भाव देखकर एडाल्फ और भी हँसने लगा। किंतु टाम की उस रात बिल्कुल नींद नहीं आई। वह रात भर बैठा-बैठा ईश्वर से मालिक के सुधार के लिए प्रार्थना करता रहा। सबेरे सेण्टक्लेयर ने टाम को कहीं भेजने के लिए बुलाया। टाम जब आकर खड़ा हुआ तो उसकी आंखें डबडबाई हुई थीं। उसको कुछ रुपये देकर सेण्टक्लेयर ने किसी काम के लिए जाने को कहा, किंतु टाम वहीं खड़ा रहा। तब सेण्टक्लेयर ने पूछा, "टाम, मैं कुछ भूल गया हूं?"

टाम—नहीं, मुझे कहते डर लगता है।

सेण्टक्लेयर ने हाथ का अखबार मेज पर पटक दिया तथा चाय का प्याला भी छोड़ दिया और टाम की ओर देखने लगा। उसने पूछा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्यों टाम, मामला क्या है? तुम्हारा चेहरा देखकर तो जान पड़ता है, मानों कोई बड़ी भारी विपदा आ पड़ी है।"

टाम—प्रभु, मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। मैं समझता था कि मालिक सदा सबके साथ समान व्यवहार करते हैं।

सेण्टक्लेयर—तो क्या तुम्हारा यह खयाल ठीक नहीं उतरा? अब बोलो, तुम क्या चाहते हो? मैं समझता हूं कि तुम कोई चीज चाहते होगे और वह तुम्हें नहीं मिली होगी, यह उसी की भूमिका है।

टाम—प्रभु, इस दास पर तो आपकी सदा ही कृपा बनी रहती है। अपने विषय में मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं करनी है, किन्तु एक आदमी से आपका बर्ताव अच्छा नहीं होता।

सेण्टक्लेयर—क्यों, मैंने किससे बुरा बर्ताव किया? अपना मतलब खोल कर कहो।

टाम—कल रात की घटना का स्मरण करने से मुझे बड़ा खेद होता है। आप सबपर तो दया करते हैं, केवल अपने ऊपर आप बड़े निर्दयी हैं।

सेण्टक्लेयर ने मुस्कराकर कहा, "ओह, यह बात है!"

टाम ने सिर झुकाकर बड़ी नम्रता से आंखों में आंसू भरकर, पैरों पड़कर कहा, "प्रभु, यही बात थी, जो मैं आपसे कहना चाहता था। मेरे प्यारे नवयुवा प्रभु! मुझे भय है कि यह सबकुछ, सबकुछ, शरीर-आत्मा का सत्यानाश कर देगा। बाइबिल में लिखा है कि यह बला सर्प से भी भयंकर और बुरी है, मेरे प्यारे प्रभु!"

टाम का गला भर आया और उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली।

सेण्टक्लेयर की भी आंखें भर आईं। उसने कहा, "टाम, उठो। तुम भी कितने नासमझ हो। तुम्हें जरा भी अक्ल नहीं है। मैं इस योग्य नहीं कि मेरे लिए कोई रोवे।"

पर टाम नहीं उठा। वह सेण्टक्लेयर की ओर इस तरह ताकने लगा, मानो उसके नेत्र विनती कर रहे हों।

टाम की यह दशा देखकर कोमल-हृदय सेण्टक्लेयर बोला, "टाम, लो, मैं आज से प्रतिज्ञा करता हूं कि फिर कभी इतनी शराब नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीऊंगा। फिर कभी बुरों का साथ नहीं करूंगा। मैं अपने चरित्र से आप घृणा करता हूं। मैं अपने जीवन को पापमय समझता हूं। तुम वेफिक्र रहो, मैं अब फिर बुरा काम नहीं करूंगा।"

इतना कह कर सेण्टक्लेयर ने टाम का हाथ पकड़ कर उसे उठाया।

सेण्टक्लेयर की प्रतिज्ञा सुनकर टाम को बड़ा संतोष हुआ और आंखों का पानी पोंछता हुआ चला गया।

टाम के चले जाने पर सेण्टक्लेयर कहने लगा कि मैंने आज जो प्रतिज्ञा की है, उसे कभी नहीं तोड़ूंगा।

सचमुच उस दिन से सेण्टक्लेयर ने मद्यपान छोड़ दिया। वह स्वभावतः इन्द्रियासक्त अथवा कुप्रवृत्ति के अधीन न था। लड़कपन से ही लोग उसे सच्चरित्र समझते थे। पर इधर संसार से उसे विराग-सा हो गया था। संसार की टेढ़ी गति देखकर किसी काम में उसका मन न लगता था। उसके जीवन का कोई लक्ष्य न था। उसका यह लक्ष्य-शून्य जीवन घटना-चक्र के अनुसार चलता था। इसीसे समय काटने के लिए उसे जब जैसा संग मिलता, वह उसी में रम जाता और हँसी-खुशी मनाता था। महीनों की कौन कहे, लगातार वर्ष-के-वर्ष योंही बिना कष्ट के बीत जाते थे।

२१ : : घर की देख-भाल

सेण्टक्लेयर के यहां दास-दासियों की एक बड़ी संख्या थी। पर बहुत दास-दासियों के होने से ही क्या होता है? जिस घर के काम-काज किसी नियम से नहीं होते, वहां बहुत दास-दासियों के रहते हुए भी काम ठीक-ठीक नहीं होता। किसी तरह का आराम नहीं मिलता। किंतु दास-दासियों को कामों के नियम बतलाना और उन नियमों का पालन करने के लिए उन्हें उपदेश देना, यह सब काम घरवालियों का होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। हरएक घर विद्यालय के समान है, इस घर की मास्टर गृहिणियां ही हैं। पर जैसे बहुत से स्कूल-कालेजों के मूर्ख और अदूरदर्शी मास्टर शिक्षा देने का ढंग नहीं जानते, न उन्हें बालकों का मन गठित करना आता है और न किसी नये विषय को मन पर बिठा देने का ही उन्हें शऊर होता है, वे तो केवल बेंतों की मार के सहारे शिक्षा देते हैं, वैसे ही बहुत से घरों की श्रीमतियां भी होती हैं। वे नौकरों के साथ बर्ताव करना बिल्कुल नहीं जानतीं। हरदम नौकरों से रूठकर उन पर मुंह फुलाये रहती हैं, और उन पर चिड़चिड़ाया करती हैं। उनके इस ढंग से, प्रायः उनके पतियों के लिए घर में रहना और बैठना दुश्वार हो जाता है और कितने ही तो घर छोड़कर यार-दोस्तों में बैठ हँसी-खुशी में अपना अधिकांश समय बिताने लगते हैं। इसी कारण कितने ही नव-युवक बुरे संसर्ग में पड़कर अपना अमूल्य जीवन बिगाड़ लेते हैं।

अमरीका के अन्तर्गत जिन प्रदेशों में दासता की प्रथा प्रचलित थी, उनमें सुगृहिणियों का सर्वथा अभाव नहीं था। शेल्बीसाहब की मेम को ही लीजिये, वह एक अच्छी गृहिणी थी। उनके चरित्र के प्रभाव से कितने ही दास-दासी सुधर गये थे। इलाइजा और टाम का चरित्र ही इस बात का उत्तम प्रमाण है। पर सेण्टक्लेयर की गृहिणी मेरी की तरह नहीं है। वह बहुत सख्त है। उसके शिक्षा देने का एकमात्र साधन बेंतों की मार है। इस बात से सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि उसके घर के दास-दासी निस्संदेह सुख देने की जगह दुःखदायी होंगे। मिस अफिलिया की कार्य-दक्षता का वर्णन पहले किया जा चुका है। वह सेण्टक्लेयर के घर के प्रबन्ध का भार अपने हाथों में लेकर दास-दासियों के काम को ढंग से चलाने की चेष्टा करने लगी। इसके लिए उसने कई तरह के नियम बनाये, पर सेण्टक्लेयर के दास-दासियों की तो आदत बिगड़ी हुई थी, वे कभी नियम से चले नहीं थे। इसलिए मिस अफिलिया का सब कामों को नियम से कराने का ढंग उन्हें बहुत अखरा। वे उन नियमों के विरुद्ध चलने लगे। उन्होंने सोचा कि आज यह नियमों की नई कला कहां से सिर आ पड़ी। इन नियमों के मारे तो उनका मनमानी करने का पुश्तैनी अधिकार छिन जायगा। पहले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर के यहां इन दास-दासियों के कार्यों का कोई निरीक्षण नहीं करता था, इससे ये खूब मनमाने ढंग से मालिक की चीजें बिगाड़ते थे। प्रायः ऐसा होता था कि बरतन साफ करने के लिए तौलिये की जरूरत है, पर तलाश करने का कष्ट कौन उठावे ? झट मालिक का कोई अच्छा कपड़ा ले लिया और बरतन साफ कर डाले। अफिलिया जब इस अन्धेर-खाते को बन्द करने का यत्न करने लगी, तो इसका अखरना ठीक ही था।

करने को अफिलिया ने बहुत-कुछ प्रबन्ध किया भी, पर वह जैसा चाहती थी, वैसा होना उस घर में कठिन था। उसने घर के सब विभागों में सुधार करने की चेष्टा की थी, पर वैसा नहीं हो सका। तब हारकर एक दिन सेण्टक्लेयर से बोली, "अगस्टिन भाई, तुम्हारे इस घर में किसी नियम का निर्वाह कराना जितना कठिन है, उतना कठिन और कोई भी काम नहीं है।

सेण्टक्लेयर—अच्छा।

मिस अफिलिया—ऐसा अन्धेर खाता और लूट तो मैंने कहीं नहीं देखी।

सेण्टक्लेयर—मैं भी यही कहता हूं।

मिस अफिलिया—यदि तुम्हें भोगना पड़े तो तुम जानो।

अगस्टिन—प्यारी जीजी, मैं तुम्हारी बात मानता हूं। तुम बहुत ठीक कहती हो, पर इसका कोई उपाय नहीं है। हम जब अपने आराम के लिए कुछ मनुष्यों को पशुओं की हालत में अपने घर रखते हैं, तब इसका भला-बुरा जो नतीजा होगा, सब हमीं को सहना पड़ेगा। ये ऐसे ही हैं कि बेंत मारने वाले से सीधे रहते हैं और जो इनसे नहीं बोलता, उसे ये उल्टा सताते हैं। इन दास-दासियों को खूब मालूम है कि मैं बेंत नहीं लगाऊंगा, इससे ये मनमानी करते हैं। मैंने भी सोच रक्खा है कि जो चाहें, करने दो। कहां तक करेंगे, मैं नहीं बोलूंगा।

अफिलिया—इस बेतरतीबी से समय और सामान सब नष्ट हुआ जाता है।

अगस्टिन—हां बहिन, तुम उत्तरी-प्रदेश के लोग समय का मोल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सदुपयोग जानते हो। पर ऐसे आदमियों का क्या, जो जन्म के ही आलसी हैं—खाना और पड़कर सो रहना, समय मिले तो थोड़ा-सा पढ़ लेना, यही इनका काम है। मैं तो तुमसे भी कहता हूं कि नाहक इन लोगों के साथ मगज-पच्ची करती हो। इनमें नियम-वियम कुछ चलता नहीं है। छोड़ दो, इन्हें अपनी मनमानी करने दो।

अफिलिया—पर अपनी हानि और बेहिसाब खर्च का भी तो खयाल करना चाहिए।

अगस्टिन—हां, यह ठीक है। जहां तक तुमसे हो सके, बन्दोबस्त करो। सब चीजों को ताले-कुंजी के भीतर रखो। पर छोटे-मोटे अपव्यय की परवा मत करो, उससे कोई बड़ा लाभ नहीं।

अफिलिया—मुझे यह देखकर बड़ा कष्ट होता है कि ये दास-दासी बहुत ईमानदार नहीं हैं। तुम्हारी समझ में क्या ये पूरे विश्वसनीय हैं ?

मिस अलिफिया ने बड़ा गम्भीर मुंह बनाकर यह प्रश्न किया था, पर सेण्टक्लेयर इस पर बहुत जोर से हंस पड़ा।

सेण्टक्लेयर—बहन, तुम कहती हो विश्वसनीय होने की क्या उम्मीद की जा सकती है? फिर वे ईमानदार होने ही क्यों लगे ? संसार में उनके ईमानदार होने के लिए साधन ही क्या है ?

अफिलिया—तुम इन्हें शिक्षा क्यों नहीं देते ?

सेण्टक्लेयर—शिक्षा, तुम समझती हो कि मैं कैसी शिक्षा दूंगा ? इनकी शिक्षा के लिए मैंने योग्य आदमी चुन रखा है। मेरी इन्हें शिक्षा देने की यथेष्ट शक्ति रखती है। यदि उसे इनकी शिक्षा का पूरा-पूरा भार सौंप दिया जाय तो वह मारे बेंतों के इनकी चमड़ी उधेड़ देगी; लेकिन फिर भी उससे इनकी कपटता दूर होना असम्भव है।

अफिलिया—तो क्या इनमें कोई एक भी ईमानदार नहीं है ?

सेण्टक्लेयर—एकाध-ईमानदार होते हैं, पर वे ऐसे होते हैं और विधाता ने उन्हें ऐसा सरल, सच्चा और विश्वासी बनाया है कि सैकड़ों प्रतिकूल शक्तियां भी उनको भ्रष्ट नहीं कर सकतीं। परन्तु साधारणतः जरा समझ आते ही दासों के बच्चे छलकपट सीख जाते हैं, क्योंकि वे देखते हैं कि इसके बिना उनकी गुजर होनी मुश्किल है, और आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलकर वही छल-कपट उनके लिए आवश्यक और स्वाभाविक हो जाता है। उनसे किसी अच्छे गुण की आशा करना न्यायसंगत नहीं है। इस के लिए उन्हें दण्ड नहीं मिलना चाहिए। गुलामों को जिस स्थिति में रखा जाता है, उसमें रहकर कोई भी आदमी ईमानदार हो नहीं सकता। बस, हमारे यहां गुलामों में टाम ही एक ऐसा है, जिसका ईमानदारी के लिए उदाहरण दिया जा सकता है। वह तो एक नैतिक आश्चर्य है!

अफिलिया—अच्छा, परलोक में आत्मा की क्या गति होगी?

सेण्टक्लेयर—मैं परलोक की बात नहीं जानता। मैं तो केवल वर्त्तमान जीवन की बात कह रहा हूं। सच तो यह है कि अपने फायदे के लिए हम लोग इन कालों को यहीं नरक का मजा चखा रहे हैं परलोक की कौन सोचता है?

अफिलिया—यह बड़ी ही भयानक दशा है। तुम लोगों को इसके लिए स्वयं लज्जित होना चाहिए।

सेण्टक्लेयर—इसमें लज्जा की बात तो नहीं है। क्या है—"पंच सरीखे कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज।" संसार-भर जिस काम को करता है, उसके करने में शर्म नहीं आती, चाहे वह भला हो या बुरा। फिर यह दास की प्रथा है कहाँ नहीं, सारे संसार में छाई हुई है। "ऊंचे चढ़ कर देखा और घर-घर यही लेखा।" जहां देखो, वहां यही कथा है—नीच जातियों की देह, आत्मा और शक्ति उच्च जातियों के फायदे के लिए पिसती है, काम में लायी जाती है। यही बात इंगलैंड में भी है। मेहनत-मजदूरी कर-करके मरते हैं गरीब लोग और उनकी बदौलत चैन करते हैं अमीर। बस, मतलब यह है कि जो बात सर्वत्र होती है वह हमारे यहां भी होती है, पर उसका रूप दूसरा है।

अफिलिया—वारमण्ट में तो ऐसा नहीं होता।

सेण्टक्लेयर—हां, न्यू इंग्लैंड और स्वतंत्र रियासतों में यह बात नहीं है, पर अधिकांश स्थान इससे बचे हुए नहीं हैं। अच्छा, चलो, भोजन का घण्टा बज गया। थोड़ी देर के लिए अपने इस विषय को एक ओर रखकर हम लोग भोजन कर आवें।

ज्योंही मिस अफिलिया रसोईघर में घुसी, उसने सुना कि कुछ दासों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के छोटे-छोटे बच्चे चिल्ला रहे हैं—यह देखो, घिघियाती हुई प्रू आ रही है।

मिस अफिलिया ने एक लम्बी-सी दुबली-पतली काली औरत को एक टोकरी में बिस्कुट और रोटियां भरे हुए रसोईघर में आते देखा। उसे देखकर सेण्टक्लेयर की रसोईदारिन डायना ने कहा—अच्छा, प्रू, तुम आई हो ?

प्रू ने अजीब ढंग से नाक-भौं को सिकोड़ रखा था। उसकी आवाज भी झल्लाई हुई थी। वह अपनी टोकरी को सिर से उतारकर दोनों घुटनों का सहारा लेकर जमीन पर बैठ गयी और कहने लगी, "हे भगवान, मुझे मौत दो।"

मिस अफिलिया—मौत क्यों चाहती हो ?

उस स्त्री ने आंखें नीचे किये हुए ही रुखाई से कहा, "इस दुःख से छुटकारा पाने के लिए मैं मरना चाहती हूं।"

उसकी बातें सुनकर एक बनी-ठनी वर्ण-संकर दासी ने सिर हिलाते हुए कहा, "प्रू, तुम शराब पिये बिना क्या दुबली हुई जाती हो कि पहले तो शराब पीती हो और फिर बेंत खाती हो ?"

प्रू ने तीव्र दृष्टि से उस दासी की ओर देखकर कहा, "भगवान ने चाहा तो तेरी भी कभी मेरी-जैसी हालत होगी। उस दिन मुझे बड़ी खुशी होगी और तब मैं देखूंगी कि अपनी मानसिक यन्त्रणा को भुलाने के लिए तू मेरी ही भांति शराब पीती है या नहीं।"

डायना ने कहा, "प्रू, इधर आ। अपनी बिस्कुट रोटी हमें दिखला। मिस अफिलिया लेंगी।

मिस अफिलिया ने दो दर्जन बिस्कुट और रोटियां ले लीं। डायना ने जेन से कहा, "देखो उस ताक पर पुरानी सुराही में टिकट रखे हुए हैं, ले आना।"

मिस अफिलिया—टिकट ! वे किस मतलब के हैं ?

डायना—तुम्हारे मालिक से हम खरीद लेती हैं और रोटियां लेकर हिसाब से टिकट लौटा देती हैं।

प्रू—और घर पहुंचने पर वे मेरे टिकट और दाम गिनते हैं। अगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी पूरे न हुए तो मार-मारकर वे मुझे अधमरी कर देते हैं।

पूर्वोक्त दासी जेन ने कहा, "अच्छा करते हैं; तू उनकी रोटियां वेचकर शराव पी डालती है। तो क्या करेंगे, पीटेंगे नहीं, मिस साहव !

प्रू—हां, यह तो मैं करती हूं और करूंगी। इसके विना मैं जिन्दा नहीं रह सकती। शराव पीकर दुःख को भुलाने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

मिस अफिलिया तू बड़ी खराव और मूर्ख है। मालिक के रुपये चुराकर अपने को पशु वनाना कितना बुरा काम है ?

प्रू—मिस साहव, आप जो कहती हैं, ठीक है। पर मैं शराव पीऊंगी।....हां, मैं पीऊंगी। हे भगवान्, मुझे मौत दे दो, मौत दे दो। मौत देकर मेरे दुःखों का अन्त कर दो।"

यह कहते हुए वह बुढ़िया रोटी की टोकरी को सिर पर उठाकर धीरे-धीरे घर के वाहर चली गई। परन्तु जाने के पूर्व उसने एक वार उस वर्णसंकर दासी जेन को घूरा। जेन उस समय खड़ी-खड़ी अपने कान के झुमके हिला रही थी। वुढ़िया ने उससे कहा, "तू बहुत इतराती है, अपने को तू बड़ी खूवसूरत समझती है, वहुत टीम-टाम करती है और दूसरों को तुच्छ समझती है। देख, घवरा मत, भगवान् चाहेंगे तो तेरी यह सारी टीमटाम निकल जायेगी। तू भी मेरी तरह दुःख में पड़ेगी और वेंतों से पिटकर दर-दर भीख मांगती फिरेगी। तब देखूंगी, तू शराब पीती है कि नहीं ! शराव पी-पीकर पिटती है कि नहीं। पिटेगी और खूब पिटेगी। तब तेरे तानों और नखरों का तुझे उचित फल मिलेगा।"

यह कहते हुए ईर्ष्या-भरी आवाज से खूब गरज-गरज कर बुढ़िया चली गयी।

एडाल्फ कुछ काम से वहीं आकर खड़ा था। उसने कहा, "इस बूढ़े पशु को देखकर घिन आती है। मैं अगर इसका मालिक होता तो इसे और भी काटता।"

डायना—तू और अधिक क्या काटता ? उसकी पीठ में ऐसी तो कोई जगह ही नहीं है, जहां घाव न हो। उस बेचारी को इन घावों पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पट्टी बांधने के लिए एक फटा-सा कपड़ा तक तो नसीब नहीं होता।

जेन बोली, "मेरी राय है कि ऐसे ओछे आदमियों को भले मानसों के घर नहीं आने देना चाहिए।" फिर उस बड़े चोचले के साथ एडाल्फ से अपना सिर भिड़ा कर कहा, "मिस्टर सेण्टक्लेयर, तुम्हारी क्या राय है?

एडाल्फ केवल मालिक के कपड़ों पर ही हाथ साफ न करता था, वरन् उसने मालिक का नाम भी अपना लिया था। वह सब दास-दासियों से कहता था कि मुझे मिस्टर सेण्टक्लेयर कहा करो, मैं तुम लोगों का सरदार हूं।

एडाल्फ ने कहा, "मिस वेनायर, मैं तुम्हारी राय से सहमत हूं।"

सेण्टक्लेयर की स्त्री मेरी का दूसरा नाम वेनायर था और जेन उसकी खास दासियों में थी।

जब रसोईघर में प्रू से बातें हो रही थीं, उस समय टाम भी वहां खड़ा था। बुढ़िया के टोकरी लेकर चलने पर वह भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। उसने देखा कि क्षण-क्षण में बुढ़िया चीखती है। थोड़ी दूर जाकर एक दरवाजे पर टोकरी उतार कर वह अपने सिर पर का फटा-पुराना कपड़े ठीक करने लगी। उस कपड़े से उसके कंधे भी पूरे नहीं ढके जाते थे। टाम ने बुढ़िया के दुःख पर तरस खाकर कहा, "लाओ, अपनी टोकरी मुझे दे दो, मैं ले चलूंगा।"

प्रू—तुम्हें क्यों दूं ? मैं किसी की सहायता नहीं चाहती।

टाम—तुम बीमार जान पड़ती हो, या किसी कष्ट में हो या और कोई बात है।

प्रू ने संक्षेप में कहा, "मैं बीमार नहीं हूं।"

टाम—मैं तुम्हारी शराब पीना छुड़वाना चाहता हूं। क्या तुम नहीं जानतीं कि यह शरीर और आत्मा दोनों का सत्यानाश कर देती है ?

प्रू—मैं जानती हूं कि मुझे नरक-भोगी होना पड़ेगा। तुम्हारे यह सब बतलाने की आवश्यकता नहीं है। मैं कुत्सित हूं, मैं दुष्ट हूं, मैं सीधी नरक को जाऊंगी। हे भगवान्, मैं चाहती हूं कि मुझे शीघ्र वहां पहुंचा दो।

उसकी पागल की-सी बातें सुनकर तथा बार-बार उसका मौत का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाहन करना सुनकर टाम बहुत चौंका। हो न हो, यह बहुत ज्यादा सताई गई है इसी से जीना इसे भार हो रहा है। टाम का हृदय पिघला, आंसू आ गये। बोला, "परमात्मन्, इस बेचारी पर दया करो!"

उससे पूछा, "तुमने कभी ईसा का नाम सुना है?"

प्रू—ईसा, वह कौन है?

टाम—हम लोगों का मुक्ति-दाता स्वामी!

प्रू—मैंने ईश्वर का नाम सुना है, उसके न्याय और नरक की बात भी सुनी है।

टाम—पर क्या तुम्हें कभी किसी ने भगवान् ईसा के विषय में नहीं बतलाया कि वह हम अभागे पापियों को प्यार करते थे, और हम लोगों के लिए उन्होंने अपनी जान तक दे दी।

प्रू—मैं उसकी बाबत कुछ नहीं जानती। मेरी बूढ़ी मां के मरने के बाद कभी किसी ने मुझे प्यार नहीं किया।

टाम—पहले तुम कहां रहती थीं?

प्रू—केण्टाकी में। एक आदमी ने मुझे लड़का पैदा करके उसे बाजार में बेचने के लिए रखा। लड़का पैदा होकर जहां जरा बड़ा होता कि वह उसे तुरन्त बेच डालता। मेरी संतानों के बिकने पर मुझे कितना जबरदस्त दुःख होता था, मैं कितना रोती-चिल्लाती थी, पर वह पापी जरा भी न पिघलता था। उसने मुझे जो-जो कष्ट दिये, उनका मैं क्या वर्णन करूं! जान पड़ता है, विधाता ने संसार में सबसे अधिक दुःख भोगने के लिए मुझी को पैदा किया है। फिर उस आदमी ने मुझे एक दास-व्यवसायी के हाथ बेच डाला और उससे मेरे वर्तमान मालिक ने मुझे खरीदा।

टाम—तुम्हें शराब पीने की आदत कब पड़ी?

प्रू—इस बदकिस्मती की कथा भी कहती हूं। जब मैं यहां आई, तब मेरी गोद में चार-पांच महीने का एक बच्चा था। मैंने समझा कि इस एक को तो पाल-पोस कर मैं बड़ा कर सकूंगी, क्योंकि मालिक दास-व्यवसायी नहीं था। मेरा वह बच्चा बड़ा हृष्ट-पुष्ट था। कभी रोता नहीं था, जहां बिठा देती, बैठा खेला करता। पर यहां आने के कुछ ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिनों बाद मालकिन को संक्रामक ज्वर हुआ और मैंने उनकी सेवा की। इससे मुझे भी वही ज्वर हो गया और उससे मेरा सारा दूध सूख गया। दूध के बिना बच्चे की हड्डी-हड्डी निकल आई। मैंने मालकिन से उसके लिए थोड़ा-सा दूध खरीद देने को कहा, पर उसने एक पैसा भी देना स्वीकार न किया। उल्टा गुस्सा होकर बोली, 'दासी के लड़के के लिए दूध खरीदा जायेगा!' मैं चुप हो रही। उसकी सेवा के लिए मुझे रात को कमरे के अंदर रहना पड़ता था, पर रात को लड़का रोकर उसकी नींद खराब करेगा, इससे लड़के को मुझे अपने साथ न रखने देती। उसे नीचे छोड़कर मैं कमरे में जाती। एक दिन रात को अकेला रोते-रोते वह लड़का मर गया। तब से बराबर, मैं जहां रहती हूं, उस लड़के के रोने की आवाज मेरे कानों में आती है। उस चिल्लाहट को अपने कानों से बाहर रखने के लिए ही मैं शराब पीने लगी। मैं अवश्य शराब पीऊंगी। शराब के लिए नरक में जाना पड़े तो भी मैं शराब पीना नहीं छोड़ूंगी। मालिक कहते हैं कि मैं नरक में पड़ूंगी, और मैं उनसे कहती हूँ कि मैं इसी समय नरक में हूं।

इस स्त्री की बात सुनकर टाम को बड़ा दुःख हुआ। वह ठण्डी सांस लेने लगा। कुछ देर बाद टाम ने कहा, "अरी दुखियारी, क्या तू ने कभी सुना नहीं है कि ईसा की तुझपर कितनी कृपा है, और वह तेरे ही लिए मरे हैं? क्या तूने नहीं सुना कि वह तेरी सहायता करेंगे और तू अन्त में स्वर्ग पहुंच कर शान्ति की अधिकारिणी बन सकेगी?"

प्रू—मैं स्वर्ग में जाऊंगी? स्वर्ग तो वही न, जहां सफेद चमड़े वाले जाते हैं? मान लो, यदि वहां उन सबने मुझे पकड़ पाया तो? नहीं-नहीं, मैं नरक में जाऊंगी। हां मालिक और मालकिन से दूर रहूंगी। मेरे लिए नरक ही अच्छा है।

इतना कहकर वह पागल की भांति बड़बड़ाती हुई अपनी टोकरी उठाकर चल खड़ी हुई।

टाम दुःखी हृदय से धीरे-धीरे घर आया। आंगन में इवा से उसकी भेंट हुई। उसके सिर पर फूलों का ताज शोभा दे रहा था और वह बड़ी प्रसन्न जान पड़ती थी। उसने टाम को देखते ही कहा, "ओह टाम,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम कहां गये थे ? मैं तुम्हें बड़ी देर से ढूंढ़ रही थी ।" उसने टाम का हाथ पकड़कर कहा, "बावा ने कहा है कि वह मेरा टट्टू मेरी छोटी गाड़ी में जोतकर मुझे घुमाने ले चलो। पर, टाम, क्या बात है ? तुम उदास दीख पड़ते हो।"

टाम ने खिन्न भाव से कहा, "मेरा जी बहुत दुःख रहा है, पर खड़ी रहो, मैं तुम्हारे लिए गाड़ी लेकर आता हूं ।

इवा--लेकिन मुझसे कहो, टाम, क्या मामला है ? मैंने देखा, तुम बूढ़ी प्रू से बातें कर रहे थे।

टाम ने सीधे-सादे शब्दों में उस स्त्री की रामकहानी इवा को सुना दी। उसकी दुःख-गाथा सुनकर और बालकों की भांति इवा ने न तो विस्मय ही प्रकट किया और न आंसू ही बहाये। उसके गालों पर पीलापन छा गया और उसकी आंखें प्रभाहीन हो गईं। उसने अपने कलेजे पर दोनों हाथ रखकर जोर से ठण्डी सांस ली।

इवा—टाम, मेरे लिए घोड़ा मत लाना। मैं घूमने नहीं जाऊंगी,

"क्यों, घूमने क्यों नहीं जाओगी ?"

इवा ने कहा, "टाम, ये सब बातें मेरे हृदय में चुभ जाती हैं ।" उसने फिर दुहराकर कहा, "इन बातों से मेरे हृदय में चोट लगती है । मैं घूमने नहीं जाना चाहती ।"

यह कह कर वह लौट पड़ी और घर चली गई।

२२ :: आपसी चर्चाएं

कुछ दिनों बाद बुढ़िया प्रू की जगह एक दूसरी स्त्री बिस्कुट और रोटियां लेकर आई। उस समय मिस अफिलिया रसोईघर में थी। दीना ने उस स्त्री से पूछा, "क्यों री, आज तू रोटी कैसे लाई है ? प्रू को क्या हुआ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"प्रू अब नहीं आवेगी" उस स्त्री ने यह बात ऐसे ढंग से कही, जैसे इसमें कुछ रहस्य हो। दीना ने पूछा, "क्यों नहीं आवेगी ? क्या वह मर गई ?"

उस स्त्री ने मिस अफिलिया की ओर देखते हुए कहा, "हम लोगों को ठीक-ठीक मालूम नहीं है। वह नीचे के तहखाने में है।"

मिस अफिलिया के रोटियां ले लेने के बाद दीना उस स्त्री के पीछे-पीछे दरवाजे तक गई। उससे पूछा, "प्रू है कहां ? कुछ तो कह !"

वह स्त्री कहना चाहती थी, पर डर से नहीं कहती थी। अन्त में दबी जबान से चुपके-चुपके बोली, "अच्छा देख, तू किसी से कहना मत। प्रू ने एक दिन फिर शराब पी ली, इस पर उन लोगों ने उसे नीचे के तहखाने में बन्द कर के दिन-भर रख छोड़ा। फिर मैंने लोगों को कहते सुना कि उसके शरीर पर मक्खियां भिन-भिना रही हैं और वह मरी पड़ी है।"

यह सुनकर दीना ने विस्मय से हाथ उठाया और पीछे हट गई। तभी देखती क्या है कि इवांजेलिन उसके पास खड़ी है। इवा की आंखें स्थिर हैं, मुंह सूख गया है, गालों और होंठो की सुर्खी गायब होकर सफेदी छा रही है। दीना चिल्ला उठी, "बाप-रे-बाप ! भगवान बचावें ! इवा बेहोश हो रही है। अरे, हम लोगों को क्या पड़ी थी, जो उसे ये सब बातें सुनने दीं ? मालिक को पता लगने से वह बहुत नाराज होंगे।"

बालिका ने दृढ़ता से कहा, "मुझे बेहोशी नहीं होगी। और मुझे ये बातें सुननी क्यों नहीं चाहिए ? कष्ट की बातें सुनने में मुझे उतनी पीड़ा नहीं होगी, जितनी प्रू को कष्ट सहने में।"

दीना ने कहा, "नहीं, तुम-सरीखी कोमल नन्हीं बालिकाओं को ये कष्ट-कथाएं नहीं सुननी चाहिए। इन बातों से तुम्हें बड़ी पीड़ा होती है।"

इवा ने फिर ठण्डी सांस ली, और बड़े विषण्ण चित्त से पैर धरती हुई दुमंजिले कमरे में चली गई।

मिस अफिलिया ने प्रू के बारे में बड़ी सरगर्मी से पूछताछ की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीना से जो कुछ सुना था, उसे खूब नमक-मिर्च लगाकर कह सुनाया। टाम ने अपने पहले दिन की तहक़ीक़ात सुनाई।

सेण्टक्लेयर जिस कमरे में बैठा अखबार पढ़ रहा था, उसमें जाकर पैर रखते ही मिस अफिलिया ने कहा, "ओफ, कैसा बीभत्स काण्ड है! कैसा जघन्य व्यापार है!

सेण्टक्लेयर ने पूछा, "जीजी, आज कौन-सा अधर्म का पहाड़ टूट पड़ा?"

मिस अफिलिया बोली, "तुम्हारे लिए कोई बात ही नहीं है। मैंने तो ऐसी बात कभी नहीं सुनी। उन लोगों ने मारे कोड़ों के प्रू को मार डाला।" मिस अफिलिया ने बहुत विस्तार से वह बात कह सुनाई।

सेण्टक्लेयर ने अखबार पढ़ते-पढ़ते कहा, "मैंने तो पहले से समझ रक्खा था कि किसी दिन यही होना है।"

अफिलिया बोली, "तुमने समझ रखा था और इसके प्रतिकार का कोई उपाय नहीं किया! क्या तुम्हारे यहां ऐसे पांच भलेमानस नहीं हैं, जो मिलकर इन निष्ठुरताओं का निवारण करने का यत्न करें।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "जो अपने दास-दासियों की जान लेता है, वह स्वयं अपना माल नष्ट करता है। इसमें दूसरे को बोलने का कोई अधिकार नहीं। अपना नफा-नुकसान हरेक आदमी दूसरे की अपेक्षा अच्छी तरह समझता है। भरसक अपने दास-दासियों की मार कर अपना नुकसान कोई नहीं करता, पर प्रू पैसे चुरा-चुरा कर शराब पीती थी, इससे उसके मालिक का बहुत नुकसान होता था, इसीसे उसे मार डाला होगा।"

मिस अफिलिया ने कहा, "अगस्टिन, वास्तव में यह बड़ा ही भयंकर धंधा है। निश्चय ही इसके लिए तुम्हें ईश्वर का कोप-भाजन बनना पड़ेगा।"

सेण्टक्लेयर बोला, "प्यारी जीजी, मैंने कभी ऐसा नहीं किया, पर मैं दूसरों को नहीं रोक सकता। यदि नीच पशु के जैसा मनुष्य अपनी इच्छानुसार यह अत्याचार करते हैं तो बताओ, मैं उसमें क्या करूं? क़ानूनन हर आदमी अपने-अपने दास-दासियों पर पूर्ण अधिकार रखता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। दास-दासियों को जान से मार कर भी कोई दण्ड नहीं पा सकता। जब कानून ने उन्हें इतना अधिकार दे रखा है तो कोई क्या कर सकता है? इसलिए सबसे भली चुप। उधर से अपने आंख-कान बन्द किये बैठे हैं। जो होता है सो होता है।"

मिस अफिलिया ने कहा, "तुम कैसे अपनी आंखों और कानों को इधर से बन्द कर लेते हो? तुम कैसे चुपचाप ये अत्याचार होने देते हो? इस भयंकर आचरण की कैसे उपेक्षा की जा सकती है?"

सेण्टक्लेयर बोला, "बहन, तुम क्या आशा करती हो? देखो, यह एक मूर्ख, आलसी, भले-बुरे का ज्ञान न रखने वाली, चिर-पराधीन मनुष्य-जाति दूसरी बहुत ही स्वार्थ-परायण, अर्थ-पिशाच मनुष्य-जाति के पंजों में फंसी हुई है। इन स्वार्थियों को जब इतनी बेहिसाब ताकत दे दी गई है, तब ऐसे भयंकर और कठोर आचरणों का होना अवश्यंभावी है। ऐसे समाज में एकाध सज्जन होकर ही क्या कर सकते हैं? मेरी अकेले की ऐसी बिसात नहीं कि इस देश-भर के गुलामों को खरीद कर उन्हें दुःख से मुक्त कर दूं।"

यह कहते-कहते सेण्टक्लेयर का सदा प्रफुल्ल मुख कुछ देर के लिए कुम्हला गया। उसकी आंखें डबडबाई-सी जान पड़ीं, पर तुरन्त उसने अपने मनोभाव को छिपा कर मुस्कराते हुए कहा—"बहन, तुम वहां यमराज की नानी का-सा मुँह बनाये क्या खड़ी हो? इधर आओ! तुमने अभी देखा क्या है? इस संसार भर के पाप, अत्याचार और सख्तियों का हिसाब लगा कर सोचा जाय तो जीना मुश्किल हो जाय। इस संसार में कुछ भी अच्छा न लगे।"

यह कह कर सेण्टक्लेयर लेट गया और अखबार पढ़ने लगा।

मिस अफिलिया जमीन पर बैठी-बैठी उदासी के साथ मोजा बुनने लगी। उसके हाथ चलते थे, पर जब वह उन बातों को सोचने लगी तो अकस्मात् उसके हृदय में आग भभक उठी और अन्त में वह फूट पड़ी। उसने कहा, "अगस्टिन, मैं तुम्हारी भांति इस विषय की उपेक्षा नहीं कर सकती। मेरा मत है कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर बोला, "क्यों बहन, तुमने फिर वही पचड़ा छेड़ा !"

अफिलिया ने और तेजी के साथ कहा, "मैं कहूंगी कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।"

सेण्टक्लेयर बोला, "प्यारी बहन, मैं इसका समर्थन करता हूं? किसने कहा कि मैं इसका समर्थन करता हूं।"

अफिलिया ने कहा, "निस्संदेह तुम इसका समर्थन करते हो—तुम सब जितने दक्षिणी हो वे सब। नहीं, तो बतलाओ कि तुमने दासों के लिए क्या किया ?"

सेण्टक्लेयर बोला, "क्या तुम मुझे संसार में कोई ऐसा निर्दोष मनुष्य बतलाओगी, जो किसी काम को बुरा समझ लेने पर फिर उसे नहीं करता ? क्या तुमने कभी ऐसा काम नहीं किया या नहीं करती हो, जिसे तुम बिल्कुल ठीक नहीं समझतीं ?"

अफिलिया ने कहा, "यदि कभी करती हूं तो मैं उसके लिए अनुताप करती हूं।"

सेण्टक्लेयर ने नारंगी छीलते-छीलते कहा, "मैं भी ऐसा ही करता हूं। सारा समय इस पश्चात्ताप ही में बीतता है।"

अफिलिया बोली, "पश्चात्ताप करने के बाद आखिर उस काम को क्यों करते जाते हो ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "बहन, तुम क्या अनुमान करने के बाद फिर उस बुरे काम को नहीं करतीं ?"

अफिलिया ने उत्तर दिया, "केवल ऐसी दशा में जब मैं बहुत लोभ में पड़ जाती हूं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "हां, तो मैं बड़े लोभ ही में फंसा हुआ हूं। जो मुश्किल तुम्हें पड़ती है, वही मुझे भी पड़ती है।"

अफिलिया ने कहा, "पर मैं सदा अपने दोष को दूर करने की चेष्टा किया करती हूं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "बहुत ठीक। मैं भी तो दस वर्षों से चेष्टा कर रहा हूं, पर अभी तक मैं अपने कितने ही दोष दूर नहीं कर पाया। कहो बहन, तुम क्या सब पापों से छुटकारा पा चुकी हो ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बार मिस अफिलिया ने बड़ी गम्भीरता से बुनने के काम को किनारे रखकर कहा, "भाई अगस्टिन, मुझमें अनेक दोष हैं, उनके लिए तुम मेरी भर्त्सना कर सकते हो। तुम्हारा कथन यथार्थ है। अपनी कमजोरी के विषय में मुझसे अधिक कोई दूसरा अनुभव नहीं कर सकता। पर मैं तुमसे कहूंगी कि अपना यह दाहिना हाथ काटकर फेंक दे सकती हूं, पर अपने दोष की उपेक्षा कभी नहीं कर सकती। जिस काम को मैं बुरा समझती हूं, उसे सदा कभी नहीं करती रह सकती।"

अगस्टिन ने कहा, "बहन, क्या तुम्हें मेरी बात पर गुस्सा आ गया? तुम तो जानती हो कि मैं बराबर दुष्ट लड़का था। मुझे तुम्हें खिझाने में हमेशा आनन्द आया करता था। तुम्हारा स्वभाव कितना पवित्र है, सो क्या मैं जानता नहीं! तुम्हारी सहृदयता क्या मैं भूल गया हूं? पर तुम जरूरत से ज्यादा भली हो—इतनी भली कि तुम्हारे मरने का खयाल करके मुझे बड़ा दुःख होता है।"

अफिलिया ने माथे पर हाथ रखकर कहा, "अगस्ट, यह बड़ी गम्भीर बात है। हंसी-मजाक की नहीं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "हां, हिसाब से गम्भीर है सही, पर मैं इतनी गर्मी में तो गम्भीर होने से रहा। गर्मी तो गर्मी, उस पर मच्छरों का उपद्रव अलग परेशान किये हुए है। इस समय कोई भी इतनी ऊंचाई की नैतिक आलोचना नहीं कर सकता।"

सेण्टक्लेयर ने एकाएक अपने आप उठकर कहा, "मैंने अब समझा कि तुम्हारे यहां के—उत्तर वाले लोग हम दक्षिण वालों से यों अधिक धार्मिक होते हैं। इसका कारण यह जान पड़ता है कि तुम्हारे वहां यहां के जैसी गर्मी नहीं पड़ती। लो, मुझे इस नये आविष्कार के लिए बधाई दो।"

अफिलिया बोली, "अगस्टिन, तुम बड़े ही खफ्ती दिमाग के हो।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैं खफ्ती दिमाग का हूं! ठीक है, होऊंगा, कोई ताज्जुब की बात थोड़े ही है। पर अब मैं एक बार गम्भीर बनता हूं। तुम जरा यह नारंगी की टोकरी मुझे उठा देना। देखो, तुम मेरे लिए थोड़ा कष्ट करो, मैं भी तो गंभीर बनने में कितना कष्ट उठाऊंगा।"

इतना कहने के बाद सचमुच ही उसका चेहरा गंभीर हो आया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह बड़ी संजीदगी से, अपने भाव प्रकट करने लगा, "बहन जहां तक मेरा खयाल है, इस दासत्व-प्रथा के खयाल पर कोई मतभेद नहीं हो सकता। पर हमारे यहां के अर्थलोभी गोरे जमींदार, स्वार्थवश, दासत्व प्रथा को न्यायसंगत वतलाते हैं और उनके टुकड़ों पर असर करनेवाले खुशामदी पादरी इन्हें खुश रखने के लिए इसे बाइबिल से साबित करने को तैयार रहते हैं। वकील और नीति के पण्डित अपना मतलब गांठने के लिए आडम्बर फैलाकर इस भयंकर रीति का समर्थन करते हैं। ये लोग अपने मतलब के लिए भाषा, नीति और धर्मशास्त्र का मनमाना अर्थ लगाते हैं। इस काम में इनकी अक्ल की दौड़ देखकर हैरान होना पड़ता है। पर सच तो यह है कि चाहे इसे बाइबिल से सिद्ध किया जाय, अथवा कानून की दुहाई दी जाय, या कितनी युक्तियां क्यों न दिखाई जायं, किन्तु दुनिया कभी उन पर विश्वास नहीं कर सकती। यह घृणित दास-प्रथा नारकीय प्रथा है, नरक से निकली हुई है।"

अगस्टिन बड़ी उत्तेजना से ये बातें कह रहा था। मिस अफिलिया को इस पर बड़ा विस्मय हुआ। वह अपना बुनना छोड़कर सेण्टक्लेयर का मुंह देखने लगी। उसे विस्मित देखकर सेंण्टक्लेयर फिर कहने लगा, "तुम मेरी बात पर विस्मित-सी जान पड़ती हो, पर मैं आज जब कहने ही बैठा हूं तब सारी बातें खोल कर कहता हूं। गुलामी की इस घृणित प्रथा का मूल कारण देखना चाहिए, इसके ऊपर के सारे आवरणों को अलग करके देखना चाहिए कि यह क्या है? वास्तव में, हम भी इंसान हैं और कुएशी[1] भी इंसान हैं। पर वे बिचारे मूर्ख और निर्बल हैं और हम बुद्धिमान और सबल हैं। हम छल-बल में पक्के हैं, इससे हम उनका सब कुछ हर लेते हैं और उसमें से जितना हमारा जी चाहता है, उन्हें लौटा देते हैं। जो काम गन्दा, कठिन और अप्रिय जान पड़ता है, उसे हम कुएशियों से कराते हैं, क्योंकि हमें मेहनत करना पसंद नहीं, इसलिए कुएशी हमारे लिए पिसेंगे। हमें धूप अखरती है, कुएशी धूप में जलेगा। कुएशी रुपये कमावेगा और हम उसे खर्च करेंगे। हमारे जूतों में कीचड़ न लगे, इसके लिए कुएशी अपने हाथ से कीचड़

१. जो लोग दास बनाये जाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठाकर रास्ता साफ रखेगा । यहां तो कुएशी को हमारी इच्छा के अनुसार चलना ही है, किन्तु उसके परलोक के स्थान के निर्णय का ठेका भी हमीं लोगों के हाथ में है। हमारी कोई स्वार्थ-सिद्धि होती हो तो उसे अवश्य नरक में जाना पड़ेगा। हमारे देश के कानून का मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं है। गुलामी की प्रथा के दुर्व्यवहार करने का हल्ला मचाना पागलपन है। इतनी बड़ी कुप्रथा का और क्या दुरुपयोग हो सकता है ? इस घृणित रिवाज का जारी होना ही मनुष्य-शक्ति का घोरतर दुरुपयोग है। इस पाप से यह पृथ्वी रसातल को क्यों नहीं चली जाती ? इसका कारण यह है कि हम में से सब जंगली जानवर ही नहीं हैं, कोई-कोई आदमी बनकर पैदा हुए हैं। हम में से कुछ के हृदय में थोड़ी बहुत दया भी है। कानून ने गुलामों पर अत्याचार करने की जो शक्ति प्रदान की है, उसका भी हम पूरा-पूरा प्रयोग नहीं करते। इस देश का नीच-से-नीच दास-स्वामी गुलामों के साथ चाहे जितना बुरा बर्ताव करता हो, चाहे जितने अत्याचार करता हो, सब कानून की सीमा के अन्दर ही है।"

इतना कहते-कहते सेण्टक्लेयर बेहद उत्तेजित हो गया। वह उठकर फर्श पर जल्दी-जल्दी टहलने लगा। उसका सुंदर चेहरा सुर्ख हो गया, और उसके विशाल नेत्रों से आग-सी निकलने लगी। इसके पहले मिस अफिलिया ने कभी उसकी ऐसी भावभंगिमा नहीं देखी थी। इससे विस्मित होकर वह चुप-चाप उसकी ओर देखती रही। सेण्टक्लेयर ने एकाएक मिस अफिलिया के सामने रुककर कहा, "इस विषय पर कुछ कहने या सोचने का कोई नतीजा नहीं है। पर मैं तुमसे कहता हूं, एक समय था जब मैं सोचता था कि सारी पृथ्वी रसातल में चली जाय और यह भीषण अन्याय और अविचार निविड़ अन्धकार में लुप्त हो जाय, तो मैं सानन्द इसके साथ रसातल को चला जाऊंगा। जब-जब मैं जहाज की यात्रा में या अपने खेतों के दौरे के समय सैकड़ों नीच, निठुर पशुप्रकृति गोरों को अन्याय से प्राप्त किये गए धन द्वारा उन अनगिनत स्त्री-पुरुषों और बालक-बालिकाओं को खरीद कर उन पर मन-माना अत्याचार करता हूं तब मेरी छाती फट जाती है। मैं मन-ही-मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने देश को कोसता हूं और सारी मनुष्य-जाति को शाप देता हूं।"

मिस अफ़िलिया बोली, "अगस्टिन, अगस्टिन, मैं समझती हूं कि तुमने वहुत-कुछ कह डाला। मैंने अपने जीवन में गुलामी की प्रथा के विरुद्ध ऐसे ओजस्वी घृणापूर्ण वाक्य कभी उत्तर प्रदेश में भी नहीं सुने।"

यह सुनकर सेण्टक्लेयर के मुंह का भाव वदल गया। उसने स्वाभाविक व्यंग्य के साथ कहा, "उत्तर प्रदेश में! तुम्हारे उत्तर प्रदेशीय लोगों का खून बहुत ही सर्द है। तुम लोग हर बात में ठण्डे हो। हृदय के आवेग द्वारा उत्तेजित होकर उत्तर प्रदेशवाले हम लोगों की भांति अन्याय के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन करके आकाश-पाताल नहीं गुंजा सकते। तुम्हारे उत्तर प्रदेश में निम्नश्रेणी के लोगों से क्या सच्ची सहानुभूति रखी जाती है?"

पाठक जरा ध्यान से देखेंगे तो उन्हें मालूम हो जायगा कि गुलामी की यह प्रथा संसार भर में फैली हुई है। संसार में कोई स्थान ऐसा नहीं है, कोई जाति ऐसी नहीं है, जहां और जिसमें यह घृणित प्रथा किसी-न-किसी रूप में प्रचलित न हो। मनुष्य-समाज के मानसिक भावों की जांच कीजिये और देखिये कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर क्या भाव काम कर रहे हैं। दूसरों पर प्रभुत्व रखना, दूसरों को नीचे रखकर स्वयं ऊपर जाना, यही मनुष्यों के मन का एक सार्वभौमिक भाव है। इसीलिए समाज में, जहां देखिये, वहीं सवल निर्बल को सताता है, पण्डित मूर्ख पर प्रभुत्व जमाता है। वड़े आदमी अपने से छोटी श्रेणी के मनुष्यों का खून चूस-चूस कर मोटे बन रहे हैं। अपने से ऊपरवाली श्रेणी के कारण निम्न श्रेणी के लोग बड़े दुःख से दिन बिता रहे हैं।"

मिस अफ़िलिया ने उत्तर प्रदेश की बात सुनकर कहा, "ठीक है, पर यहां एक प्रश्न उठता है।"

सेण्टक्लेयर बोला, "मैं तुम्हारे प्रश्न को समझ गया। तुम यही कहना चाहती हो न कि यदि मैं गुलामी की प्रथा का अनुमोदन नहीं करता, तो फिर क्यों इन दास-दासियों को रखकर अपने सिर पाप की गठरी लादता हूं? ठीक है, मैं तुम्हारे ही शब्दों में इसका उत्तर दूंगा। तुम बचपन में मुझे बाइबिल पढ़ाने के समय कहा करती थीं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे पाप पुरुष-परम्परा से हमारे पीछे लगे हुए हैं। वही बात इन दासों के संबंध में भी है। ये पुरुष-परम्परा से मुझे मिले हैं। मेरे दास मेरे पिता के थे। और तो क्या, मेरी माता के भी थे। अब वे मेरे हैं। तुम जानती हो कि मेरे पिता पहले न्यूइंग्लैंड से यहां आये थे और उनकी प्रकृति बिल्कुल तुम्हारे पिता के समान ही थी। वह सब तरह से प्राचीन रोमनों की भांति न्यायी, तेजस्वी, महानुभाव और दृढ़-प्रतिज्ञ मनुष्य थे। तुम्हारे पिता न्यूइंग्लैंड में ही रहकर पत्थरों और चट्टानों पर शासन करते हुए कमाने-खाने लगे और मेरे पिता लुसियाना आकर अगणित नर-नारियों पर प्रभुत्व फैलाकर उन्हीं के परिश्रम से अपनी जीविका का निर्वाह करने लगे। मेरी माता...."

कहते-कहते सेण्टक्लेयर उठ खड़ा हुआ और कमरे में दूसरे सिरे पर लटकती हुई माता की तस्वीर के पास जाकर खड़ा हो गया और बड़े भक्ति-भाव से उस चित्र की ओर देख कर कहने लगा, "वह देवी थीं... मेरी ओर इस तरह क्या देखती हो ? तुम जानती हो कि मेरे कहने का तात्पर्य क्या है। यद्यपि माता ने मानव का तन धारण किया था तथा जहां तक मेरा अनुभव है, मैंने देखा और समझा है, उनमें मानसिक दुर्बलता और भ्रम का लेश तक न था। क्या अपने, क्या पराये, और क्या दास-दासी, सभी की यही राय है। बहन, माता ने ही मुझे कट्टर नास्तिकता के भाव से उबारा। मेरी माता एक जीती-जागती धर्मशास्त्र थीं और मैं उस धर्मशास्त्र की सत्यता में सन्देह नहीं कर सकता।"

यह कहते हुए सेण्टक्लेयर का हृदय एकदम उछल उठा। वह अपने को भूलकर हाथ जोड़ कर माता के चित्र की ओर देखते हुए, 'मां, मां' कह कर पुकारने लगा और फिर सहसा अपने को संभाल कर वह लौट आया। अफिलिया के पास एक कुर्सी पर बैठ कर उसने फिर कहना आरम्भ किया, "मेरा भाई और मैं, दोनों जुड़वां पैदा हुए थे। लोग कहा करते हैं कि जुड़े हुए पैदा होनेवाले दो भाइयों में विशेष समानता होती है; पर हम दोनों में सब विषयों में भिन्नता थी। उसकी गठन रोमनों की भांति दृढ़ थी; आंखें दोनों काली और ज्योतिपूर्ण थीं, सिर के बाल घने और छल्लेदार थे, शरीर का रंग भी गोरा था। मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंखें नीलीं, वाल सुनहरे, देह की गठन ग्रीकों की-सी और रंग सफेद है। वह कामकाजी और चतुर था; मैं भावुक था, पर कामकाज में बिल्कुल निकम्मा। वह वरावरवालों तथा मित्रोंके साथ वड़ी सज्जनता का व्यवहार करता था; पर अपने से छोटे लोगों पर वड़ा रौव रखता था। अपनी इच्छा के विरुद्ध काम करनेवाले पर वह कभी दया नहीं करता था। हम दोनों ही सत्यवादी थे। उसकी सत्य-प्रियता साहस और अहंकार से उत्पन्न हुई थी, और मेरी सत्यनिष्ठा भावुकता से। हम दोनों एक-दूसरे को चाहते थे। वह पिता का प्यारा था और मैं माता का दुलारा। मैं वड़ा भावुक था। मैं हर वात की वारीकी से छान-वीन करता था, ज़रा-सी वात से मेरा हृदय टूट जाता था। मेरे इस भाव से उसकी और पिता की ज़रा भी सहानुभूति न थी, पर माता मेरे हृदय को समझती थी और मेरे भाव से पूरी हमदर्दी रखती थी। इसी कारण अलफ्रेड से झगड़नेपर जव पिता मुझे तीखी निगाह से देखते थे, तब मैं माता के कमरे में आकर उसके पास वैठ जाता था। मां की उस समय की वह स्नेह-भरी दृष्टि मुझे आज भी याद आती है। वे हमेशा सफेद कपड़े पहना करती थीं। मैं जव कभी वाइबिल के 'रेवेलेशन' अंश में निर्मल, शुभ्रवस्त्रधारी देवताओं का वर्णन पढ़ता हूं तव मुझे अपनी माता की याद हो आती है। अनेक विषयों में माता बड़ी पारदर्शिनी थी। संगीत में उनकी वड़ी पहुंच थी। मां जव आर्गन बाजे पर अपने देवोपम कण्ठ से गातीं, तब मैं उनकी गोदमें सिर रखकर कितना विह्वल हो जाता, कितने स्वप्न देखता, कितना सुख पाता—इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।....

"उन दिनों दास-प्रथा का विषय इतने वाद-विवाद का विषय नहीं था। कोई व्यक्ति स्वप्न में भी इसे हानिप्रद नहीं समझता था।

"मेरे पिता जन्म से ही जात्यभिमानी थे। जान पड़ता है कि इस लोक में जन्म होने के पूर्व वे आध्यात्मिक जगत् की किसी उच्च श्रेणी में थे और वहीं से अपनी कुल-मर्यादा और अहंकार को साथ लेकर उतरे थे, नहीं तो दरिद्र और उच्च-कुल से रहित व्यक्ति के घर में जन्म लेकर भी कुल का ऐसा अभिमान होना पूर्वसंस्कार के सिवा और क्या कहा जा सकता है? मेरे भाई ने पिता की प्रकृति पाई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तुम जानती हो, जाति-कुलाभिमानियों के हृदय में सार्वभौम प्रेम का स्थान नहीं हो सकता। उनकी सहानुभूति समाज की एक निर्दिष्ट-सीमा के पार नहीं जा सकती। इंग्लैंड में सीमा की यह रेखा एक जगह टिकी हुई है, तो ब्रह्मदेश में दूसरी जगह, अमरीका में तीसरी जगह; पर इन सब देशों के जाति-कुलाभिमानियों की दृष्टि इससे आगे कभी नहीं बढ़ती। इस श्रेणी के लोग केवल अपने बराबरवालों से ही सहानुभूति रखते हैं। वे अपनी श्रेणीवालों के लिए जिन बातों को अत्याचार और अन्याय में गिनते हैं, उन्हीं बातों को दूसरी श्रेणीवालों के लिए कुछ भी नहीं समझते। पिता की दृष्टि में 'रंग' सीमा-निदर्शक था। गोरों को वह अपनी श्रेणी का समझते थे और उनके साथ उनका व्यवहार भी न्याय-संगत और आदर्श था। पर इन बेचारे गुलामों को वह मनुष्य नहीं समझते थे—इन्हें तो वे मनुष्यों और पशुओं के बीच की श्रेणी का जीव मानते थे। मैं समझता हूं कि अगर कोई उनसे पूछता कि इन गुलामों में आत्मा है या नहीं, तो वह बड़े संदेह में पड़ कर, 'हां' में इसका उत्तर देते। मेरे पिता आध्यात्मिक आलोचना की कुछ भी परवा नहीं करते थे। धर्म पर भी उनकी वैसी श्रद्धा न थी। वह समझते थे कि कोई ईश्वर है तो जरूर, पर वह भी उच्चजाति के लोगों का ही रक्षक है।

"मेरे पिता के कपास के खेतों में कम-से-कम पांच सौ गुलाम काम करते थे। इनके काम की देखरेख के लिए स्टब नाम का एक नर-पिशाच रखवाला था। वह गुलामों को दिन-रात सताया करता था। वह व्यक्ति माता को और मुझे फूटी-आंख न सुहाता था, पर पिता उसे चाहते और उसका विश्वास करते थे, इससे गुलामों को वह खूब सताता और मारता-पीटता था....

"मैं उस समय बच्चा ही था, पर उसी समय से मामूली आदमियों पर मेरा बड़ा प्रेम हो गया था। मैं सदा खेत और घर के गुलामों की झोंपड़ियों में जाया करता, उनकी सब तरह की शिकायतें सुनकर आता और माता से कहता। फिर हम दोनों मिल कर उनका दुःख दूर करने के उपाय सोचते थे। हम लोगों की कोशिश से जुल्म कुछ कम होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे। हम जब कभी गुलामों का दुःख थोड़ा भी दूर करने में सफल हो जाते, तो हमारे हर्ष की सीमा न रहती। इन सब बातों को देखकर एक दिन स्टव ने जाकर मेरे पिता से शिकायत की कि उससे प्रबन्ध नहीं हो सकेगा, उसका इस्तीफा मंजूर कर लिया जाय। मेरी माता पर पिता का बड़ा अनुराग था, पर वह जिस काम को आवश्यक समझते थे, उसमें कभी पीछे नहीं हटते थे। सो उन्होंने सम्मानसूचक पर स्पष्ट शब्दों में मेरी माता से कहा कि घरेलू दास-दासियों पर उनका पूरा अधिकार है, किन्तु खेत के गुलामों के सम्बन्ध में उनकी कोई बात न मानी जायगी। वह कहा करते कि मेरी माता ही क्या, स्वयं ईसा की माता मेरी भी आकर उनके काम में व्याघात डालें तो वह ऐसी ही खरी-खरी सुनायेंगे।

"इसके बाद भी माता कभी-कभी पिता से स्टव के अत्याचारों की बातें कहा करती थी। पिता अविचलित मन से उन बातों को सुन लेते और अन्त में कह देते कि क्या करें, स्टव को नहीं छुड़ा सकते। उसके-जैसा काम में होशियार और बुद्धिमान् आदमी दूसरा नहीं मिलेगा। स्टव इतना ज्यादा सख्त भी नहीं है। यों कभी-कभी थोड़ी-बहुत सख्ती कर लेता है, उसके लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता। बिना शासन के काम बिगड़ जाता है। कहीं की शासन-प्रणाली देख लो, कोई भी निर्दोष नहीं मिलेगी। आदर्श शासन-प्रणाली इस संसार में है ही नहीं। जिनका हृदय मेरी माता की भांति कोमल और ममतामय है, जिनकी प्रकृति महान है, वे जब चारों ओर अत्याचार-अविचार और दुःख-यंत्रणाएँ देखते हैं तथा उन्हें दूर नहीं कर सकते, तब उन्हें जैसी मानसिक वेदना होती है, इसका हाल अन्तर्यामी के सिवा दूसरा नहीं जान सकता। वे जिसे अन्याय समझते हैं उसे दूसरा कोई अन्याय नहीं कहता; वे जिसे भीषण निष्ठुर समझते हैं, उसे दूसरे दस निष्ठुरता नहीं मानते। इसी से लाचार होकर वे चुपचाप अपने मन के दुःख को मन ही में दबाये बैठे रहते हैं। इस पाप-सन्ताप-कलुषित पृथिवी पर उनका जीवन सदा दुःखों का आधार बना रहता है। मेरी माता ने जब देखा कि वह दुःखी दासों का दुःख दूर नहीं कर सकतीं तब वह निराश हो गईं। लेकिन हम दोनों भाइयों को भविष्य में निष्ठुर न होने देने के विचार से अपने विचारों और भावों की शिक्षा देने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगीं। शिक्षा के सम्बन्ध में तुम चाहे जो कुछ क्यों न कहो, पर मैं समझता हूं कि जन्म से मनुष्य की जैसी प्रकृति होती है, वह सहज में नहीं बदलती। अलफ्रेड जन्म से ही हुकूमत-पसन्द और जात्यभिमानी था। उस पर माता के उपदेशों और अनुरोधों का कोई असर न होता था, मानो संस्कारवश अलफ्रेड की युक्तियां और तर्क दूसरा पक्ष समर्थन करते थे, परन्तु मेरे हृदय में माता की कथनी अच्छी तरह जमने लगी। उनका जीता-जागता विश्वास और उनके हृदय की गाढ़ी भक्ति, उनके प्रत्येक उपदेश के साथ साथ मेरे हृदय में प्रवेश करती थी। वह मुझे समझाया करती थीं कि "मनुष्य धनी हो या दरिद्र, उसके धनी या दरिद्र होने से उसकी आत्मा का महत्व नष्ट नहीं हो जाता।' एक दिन आकाश में तारे दिखाकर मुझे कहने लगीं, 'बेटा अगस्टिन! आकाश में जो लाखों तारे दिखाई दे रहे हैं, किसी समय इनका नाम-निशान मिट जा सकता है; सारा संसार भी नष्ट हो जा सकता है, और सूर्य पूर्व से पश्चिम में उदय हो सकता है; पर एक आत्मा का चाहे वह कितना ही दीन और दरिद्र क्यों न हो, नाश नहीं हो सकता। धनी, निर्धन, पण्डित, मूर्ख, सब अमर रहेंगे और मंगलमय ईश्वर की गोद में सदा सुख-शान्ति पावेंगे। प्रत्येक दीन-दरिद्री के लिए उसकी भुजाएँ सदा फैली रहती हैं।'...

"माता के कमरे में बहुत-सी तसवीरें थीं। उनमें एक वह तसवीर थी, जिसमें ईसामसीह का अन्धे को आंखें देने का दृश्य दिखाया गया था। उस तसवीर को दिखाकर माता कहा करतीं, 'देखो अगस्टिन, परम धार्मिक यीशु की दीन पर कितनी दया है। वह अपने हाथों से बेचारे दुःखी अंधे की सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं। अंधे को आराम पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।' यदि मुझे अधिक दिन तक ऐसी स्नेहमयी दयालु जननी की छत्रछाया का सौभाग्य रहता तो मैं अवश्य उच्च कोटि का मनुष्य होता। यदि जवानी तक भी मुझे माता का साथ मिला होता तो मेरा जीवन ऐसा सुगठित हो जाता कि फिर मैं इन दास-दासियों के उद्धार के लिए अपने प्राणों की मोह-माया तज सकता था। देश-सुधार का व्रत ले सकता था। पर मेरा दुर्भाग्य कि मुझे तेरह वर्ष की अवस्था में ही उत्तर की ओर जाना पड़ा और जननी का साथ छोड़ना पड़ा। यही कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि मैं जैसा चाहता था, वैसा जीवन प्राप्त नहीं कर सका।"

सेण्टक्लेयर सिर पर हाथ रखकर जरा देर तक चुप रहा। वह फिर कहने लगा, "इस संसार के कामों में क्या कहीं सत्य धर्म-भाव, न्यायसंगत आचरण और निःस्वार्थ प्रेम दिखाई पड़ता है ? मैंने लड़कपन में भूगोल में पढ़ा था कि सब जगह का जलवायु भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, इसी से भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़-पौधे होते हैं। यही हाल मनुष्य-समाज के आचरण और मतामत का है। जिस देश का जैसा आचार-व्यवहार होता है वहां के लोगों का, सामाजिक दशा के अनुसार, वैसा ही चरित्र बन जाता है। हमारे देश में दास-प्रथा प्रचलित है, इसी से यहां के लोग इस दास-प्रथा में कोई बुराई नहीं समझते। पर इंगलैंड-वालों के कानों में जब इस प्रथा की कठोरता की भनक पहुंचती है तब उनकी छाती दहल जाती है। इस संसार में क्या शिक्षित और क्या गंवार, अधिकतर लोग ऐसे ही होते हैं कि जिनका निज का कोई स्वतंत्र मत नहीं होता। वे प्रवाह के साथ बहते हैं। वे अवस्था के दास होते हैं। देश में प्रचलित अवस्था उन्हें जिस ओर ले जाती है उसी ओर आंख-कान बन्द करके बहे चले जाते हैं....।

"किसी विषय की भलाई-बुराई की स्वाधीनतापूर्वक परख करने की शक्ति उनमें नहीं होती। तुम्हारे पिता उत्तर की दास-प्रथा के विरोधी सम्प्रदाय के साथ रहते थे, इससे दासत्व-प्रथा के विरोधी हो गए थे; और मेरे पिता इस दास-प्रथा के चलनेवाले देश में रहते थे, इससे इस प्रथा के पक्षपाती थे। पर इस देश और संग-भेद से उत्पन्न हुई भिन्नता के सिवा उनमें और किसी प्रकार की भिन्नता नहीं थी। और बातों में उनकी प्रकृति में पूरी समता थी। दोनों में ही अपनी जाति का अभि-मान था और शासन को पसंद करते थे।"

मिस अफिलिया सेण्टक्लेयर की इस बात का प्रतिवाद करने जा रही थी, पर सेन्टक्लेयर ने उसे रोक कर कहा, "तुम जो कहना चाहती हो, उसे मैं जानता हूं। मैं यह नहीं कहता कि वे बिल्कुल एक ही-से थे। मैं मुक्त कंठ से स्वीकार करता हूं कि तुम्हारे और मेरे पिता के कामों में भिन्नता थी, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वभाव दोनों का एक ही-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। इस संसार में दो तरह के आदमी होते हैं। एक तो जो वृथाभिमान में फूलकर लोगों के साथ बात तक नहीं करते, मनुष्यों को मनुष्य नहीं गिनते; अपने को सबसे बड़ा और दूसरों को अपने से छोटा समझते हैं। और दूसरे वे जो इन सब दुर्गुणों के रहते हुए भी लोगों के सामने यह साबित करने की फिक्र में लगे रहते हैं कि उनमें अहंकार की छूत भी नहीं है। इसीलिए वे छोटे-बड़े सबका ऊपर से आदर-सत्कार करते हैं, खुले दिल से आत्माभिमानियों की निन्दा करते हैं, वे भी वैसे ही कुलाभिमानी हैं जैसे पहली श्रेणीवाले। एक खुल्लमखुल्ला दूसरों से घृणा करके अपने हार्दिक अभिमान को तृप्त कर लेते हैं और दूसरी श्रेणी वाले वैसा अवसर न पाने के कारण अपने अभिमान को तृप्त करने के लिए दूसरे उपाय की शरण लेते हैं। इन दो श्रेणियों के मनुष्यों में जितना भेद है, उतना ही भेद तुम्हारे और मेरे पिता के आचरणों में भी था। तुम्हारे पिता जाति के अभिमान से घृणा दिखा कर हृदय के महत्व का परिचय देते थे और मेरे पिता हजारों मनुष्यों के मस्तक पर पैर रखकर अपनी श्रेष्ठता साबित करते थे। दोनों अगर लुसियाना के जमींदार होते तो बिल्कुल ही एक प्रकृति के होते, इसमें कोई संदेह नहीं।"

अफिलिया ने कहा, "अगस्टिन, तुम कैसे आदमी हो!"

अगस्टिन बोला, "मैं पिता या चाचा की निन्दा की नीयत से ये बातें नहीं कहता, लेकिन किसी पर मेरी झूठी भक्ति भी नहीं है, विशेषकर मुझे अपने जीवन की घटनाओं के प्रसंग में इन बातों का उल्लेख करना पड़ा है। पर अब फिर मैं अपनी रामकहानी चलाता हूं। पिता मरते समय सारी सम्पत्ति हम दोनों भाइयों के लिए छोड़ गये और उसको आपस में बांट लेने का भार हमीं लोगों पर रहा। हम दोनों भाइयों ने बड़ी सफ़ाई से आपस में बंटवारा कर लिया। मैं कहूंगा कि आपस-वालों के साथ उत्तम व्यवहार करने में अल्फ्रेड-सरीखा आदमी इस संसार में शायद ही दूसरा होगा। हम दोनों ने खेत का काम उठा लिया। थोड़े ही दिनों में अल्फ्रेड खेत के काम में बड़ा पक्का अनुभवी और पारदर्शी मनुष्य बन गया। पर मैंने दो वर्षों के परिश्रम से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझ लिया कि मुझसे यह काम पार नहीं पड़ेगा, क्योंकि कम-से-कम सात सौ कुली हमारे खेतों में काम करते थे। उन्हें पीट-पीट कर काम लेना, उनकी देख-रेख के लिए शैतान से बढ़कर देखभाल करनेवाला रखना, इत्यादि सैकड़ों तरह के ऐसे काम थे, जिनसे मुझे बड़ी घृणा थी। यह पैशाचिक व्यवहार मुझे असह्य हो उठा। मुझे अपनी जननी के वचनों का ध्यान आने लगा कि इन काले दीन-दु:खी गुलामों में भी हमारी-जैसी आत्मा है, ये भी उसी मिट्टी के बने हैं, जिसके हम। इन्हें सताने से उतना ही दु:ख मिलता है, जितना हमें। ये सब बातें सोच कर तथा दास-दासियों की यन्त्रणा देख कर मेरा हृदय पिघल जाता था। मैं ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि इस पाप-भरे संसार से मुझे शीघ्र उठा कर माता के पास पहुंचा दो। भला ऐसी मानसिक दशा में क्या कभी किसी का काम में जी लग सकता है? धीरे-धीरे मेरे दिल में यह खयाल पक्का होने लगा कि इन गुलामों का सत्यानाश हम लोगों के हाथों से हो रहा है। ईश्वर ने इन्हें मनुष्य बनाया है, पर हमने इन्हें पशुओं से बदतर बना डाला है। वास्तव में ऐसी पराधीन अवस्था में रह कर मनुष्य क्या मनुष्यत्व को पहुंच सकता है? मनुष्य की स्वाधीन इच्छा में बाधा पड़ते ही वह मनुष्यत्व-विहीन हो जाता है। यह सब सोचते-सोचते मैंने खेत का काम छोड़ने का संकल्प कर लिया।"

अफिलिया ने कहा, "अगस्टिन, मेरा सदा से यह विश्वास था कि तुम सब लोग दास-प्रथा को बाइबिल से सिद्ध सचाई मानते हो। और तुम लोगों की दृष्टि में दास-प्रथा ईश्वरीय विधान है।"

अगस्टिन बोला, "हम लोगों का अभी यहां तक पतन नहीं हुआ है। अल्फ्रेड इतना सख्त आदमी है कि बाध्य होने पर दासों की जान लेने में संकोच नहीं करता। दासों को किसी प्रकार के मानुषिक अधिकार हैं—इस बात तक को वह स्वीकार नहीं करता, किंतु इस दास-प्रथा को तो वह भी बाइबिल-अनुमोदित या ईश्वर-सम्मत विधान नहीं समझता। इस विषय में उसका यह मत है कि जबतक एक श्रेणी के मनुष्य आत्म-विहीन होकर पशुओं की भांति काम न करें, तबतक मनुष्य-समाज की उन्नति नहीं होती, संसार की सभ्यता आगे नहीं बढ़ती। उसका कथन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि मनुष्य-समाज के अधिकार उन्नत बनाने के लिए बलवान और बुद्धिमानों का निर्बल मूर्खों पर प्रभुत्व रहना आवश्यक है। अपने इस मत के समर्थन में वह कह सकता है कि दास-प्रथा कहां नहीं, सारे विश्व में तो छायी हुई है। अमरीका के जमींदार अपने गुलामों से जैसा सख्त वर्ताव करते हैं, इंग्लैंड के बड़े आदमी और महाजन लोग दूसरी तरह से अपने देश के मजदूरों से ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं कि मानव-समाज की व्यवस्था को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि जब-तक एक श्रेणी के लोगों का दासत्व न करें तबतक किसी प्रकार सामाजिक उन्नति और सभ्यता का विकास सम्भव नहीं है। उसके मतानुसार संसार की समता-वृद्धि के लिए निर्बल और मूर्खों को सदा बलवान और बुद्धिमानों के अधीन रहना पड़ेगा; आजन्म उन्हें पशुवत् कार्य करना पड़ेगा और बलवान तथा बुद्धिमानों के आराम के लिए अपने शरीर को कष्ट देना पड़ेगा। पर मैं अल्फ्रेड की इन युक्तियों में सार नहीं देखता। स्वार्थी मनुष्य ही अपने मन को समझाने के लिए ऐसी युक्तियों का सहारा लेते हैं।"

अफिलिया बोली, "भला इंग्लैंड के मजदूरों के साथ तुम्हारे यहां के गुलामों की तुलना कैसे हो सकती है? तुम्हारे यहां की तरह न वे बेचे ही जाते हैं, न उनका सौदा ही किया जाता है, और न वे अपने कुटुम्ब से अलग ही किये जाते हैं। उन्हें कोई दोष भी नहीं लगाये जाते।"

अगस्टिन ने कहा, "बहन, हम कोड़ों की मार से गुलामों को मारते हैं, पर इंग्लैंड वाले क्या करते हैं कि मजदूरों का सारा धन चूसकर उन्हें भूखों मारते हैं। हम लोग गुलामों के बाल-बच्चों को उनके माता-पिता से अलग कर बेचते हैं; पर इंग्लैंड के मजदूरों के बाल-बच्चे बिना भोजन के भूखों मरते हैं। इसमें कौन बुरा और कौन अच्छा है, यह नहीं कहा जा सकता।"

अफिलिया ने कहा, "पर तुम्हारी इस युक्ति से दास-प्रथा का पाप दूर नहीं होता। दूसरी जगह कोई बुराई होती हो, तो क्या उसका उल्लेख करके तुम अपने यहां के अत्याचार का समर्थन कर सकते हो?"

अगस्टिन बोला, "मैंने दास-प्रथा के समर्थन के अभिप्राय से इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वव्यापी अत्याचार का उल्लेख नहीं किया। मैंने तो उन्हीं युक्तियों को दोहराया है, जिनके बल पर अल्फ्रेड दास-प्रथा का समर्थन करता है। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि हमारे यहां की गुलामी की चाल हद से ज्यादा घृणित है। यह भी सही है कि अन्य देशों में निम्न श्रेणी के मनुष्यों पर जो अत्याचार होते हैं, उनसे हजार गुना भारी अत्याचार और उत्पीड़न हमारे यहां के गुलामों को सहना पड़ता है। हमारे देश के गोरे इन कालों को निरा पशु समझते हैं। क्रीत-दासियों के गर्भ से सन्तान पैदा करके उन्हें भेड़-बकरियों की भांति बेचते हैं। ऐसा हृदय कंपानेवाला व्यापार और कहीं नहीं दिखाई पड़ता। और देशों में निर्बल को सताने के लिए छल-बल की दरकार होती है, पर यहां कोई जरूरत नहीं। जैसे जी चाहे, निर्बल को सताया जा सकता है, उनके प्राण तक लेने में कोई कानून किसी तरह की बाधा नहीं डालता।"

अफिलिया ने कहा, "आज मैंने दास-प्रथा के सम्बन्ध में तुमसे बहुत-सी नई बातें सुनीं। मैंने इस विषय में कभी इतना नहीं सोचा था।"

अगस्टिन बोला, "मैंने इंग्लैंड के अनेक स्थानों की सैर करके वहां की निचली श्रेणी के लोगों की अवस्था का खूब अनुभव किया है। उनकी दुर्दशा देख कर हृदय पिघल जाता है। अल्फ्रेड सदैव बड़े अहंकार से कहा करता है कि उसके गुलाम इंग्लैंड के मजदूरों से अधिक सुखी हैं। वह सचमुच अपने दास-दासियों को खाने-पहनने का कष्ट नहीं देता। यों उसकी प्रकृति बहुत कठोर भी नहीं है। कोई उसका कहा नहीं मानता, तभी वह आग-बबूला होकर उसकी जान तक लेने में नहीं हिचकता। उसके कहे पर चलने से वह किसी को कभी नहीं पीटता। जब हम दोनों भाई साथ-साथ खेत का काम करते थे तब मैंने अल्फ्रेड से बड़ा अनुरोध किया कि इन दास-दासियों की शिक्षा के लिए एक पादरी रख दो। अल्फ्रेड का खयाल था कि कुत्ते-बिल्लियों के लिए पादरी रखने से जो नतीजा होता है, वही इन गुलामों के लिए पादरी रखने से होगा। फिर भी उसने मेरी प्रसन्नता की खातिर गुलामों की शिक्षा के वास्ते एक पादरी रख दिया। हर रविवार को पादरी साहब आकर उन्हें धर्म-शिक्षा दिया करते थे, लेकिन गुलामी में पड़े-पड़े इन गुलामों की आत्माएं जड़ हो गई हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छे-अच्छे उपदेश और शिक्षा का इनके जड़ हृदय पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता। बहन, तुम मुझे इन गुलामों को शिक्षा देने के सम्बन्ध में अक्सर कहा करती हो। लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि जबतक इन्हें गुलामी की जंजीर से मुक्त करके स्वाधीनता नहीं दी जायगी, तबतक इन्हें शिक्षा देने का कोई नतीजा न होगा। इनमें कुछ धर्म जीवित जरूर दीखता है, पर उस धर्म-भाव में किसी प्रकार की वीरता व निर्भीकता का भाव नहीं है। यह भयभीत प्रकृति से उत्पन्न धर्म है।"

अफिलिया बोला, "हां, तुमने खेतों के काम से कब संबंध छोड़ा, सो तो बताया ही नहीं।"

अगस्टिन ने कहा, "हां, दो बरस तक मैंने अल्फ्रेड के साथ खेत का काम किया। पर इतने दिनों के अनुभव से ही मुझे मालूम हो गया कि मेरे लिए यह काम बड़ा मुश्किल है और अल्फ्रेड ने भी जान लिया कि मुझसे कोई काम नहीं होता। मेरे सन्तोष के लिए वह कुलियों को नाना प्रकार की सुविधाएं भी देने लगा, पर मेरा मन किसी तरह राजी न हुआ। मुख्य बात यह थी कि मैं कुलियों के साथ जैसा बर्ताव करने को कहता था, वैसा करने से काम में पूरी हानि होने की सम्भावना थी। मैं कुलियों से पशुओं की भांति काम लेना बिल्कुल नहीं चाहता था। मनुष्य को पशु बना कर धन बटोरने की फिक्र करना मुझे अत्यंत घृणित मालूम होने लगा। मैं स्वयं बड़ा आलसी हूं, इससे स्वभावतः मुझे आलसी कुलियों पर भी तरस आ जाता था। आलस्य करने पर भी मैं उन्हें कभी मारने नहीं देना चाहता था। ऐसी दशा में मैंने सोचा तो यही उचित जान पड़ा कि मुझसे कुछ होना-जाना तो है नहीं, मेरे द्वारा अल्फ्रेड के कामों में उल्टे और अड़चन पड़ती है, इससे उस काम को मैंने बिल्कुल छोड़ दिया। अलफ्रेड ने सब खेत ले लिये और मैंने मकान और नकद सम्पत्ति ले ली।"

अफिलिया बोली, "इसके बाद फिर अपने दासों को तुमने क्यों नहीं छोड़ दिया?"

अगस्टिनने कहा, "मेरा दिल इतना ऊंचा नहीं था। मैंने सोचा कि इन्हें रुपये कमाने की कल न बनाना ही काफी है, घर रख कर इनका भरण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोषण करने से कोई दोष न होगा, खासकर इनमें से बहुतेरे हमारे पुराने नौकर हैं। मैं उन्हें बहुत चाहता था, और वे भी मुझे चाहते थे। जिन नये लोगों को तुम देखती हो, ये सब उन्हीं पुराने गुलामों के वंशज हैं। ये हमारे घर से किसी तरह हटना नहीं चाहते। ये यहीं पैदा हुए, यहीं बड़े हुए, इससे मुझसे इनकी बड़ी ममता हो गई है। बहन, मेरे जीवन में भी कोई समय था जब मैं बड़े-बड़े ख़याली पुलाव बनाता था। मैं सोचा करता था कि इस संसार में मैं कुछ-न-कुछ करूंगा जरूर। यों ही निकम्मा जीवन नहीं बिताऊंगा। देश-सुधारक बनकर जन्म-भूमि से दास-प्रथा का कलंक दूर करने की मेरी बड़ी इच्छा थी, पर कोई भी इच्छा पूरी न हुई। जान पड़ता है, युवावस्था में सबके मन में ऐसी ही तरंगें उठा करती हैं। पर जब संसार की बेड़ी में पांव पड़ जाती हैं तो जवानी के सब मन्सूबे जहां-के-तहां रह जाते हैं।"

अफिलिया ने पूछा, "तुमने अपने जीवन के इस महान् उद्देश्य को छोड़ क्यों दिया ? अभी क्या बिगड़ा है। अब से तुम अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए यत्न कर सकते हो।"

अगस्टिन बोला, "युवा-अवस्था के आरम्भ में ही मेरी आशा-लता पर पाला पड़ गया। मैं जैसे जीवन की आशा करता था, उसे प्राप्त नहीं कर सका। इसी से किसी काम में मेरा उत्साह नहीं रह गया। अब तो घटना-स्रोत के साथ बह रहा हूं। पूर्णरूप से अवस्था का दास बन गया हूं। संसार की वर्तमान अवस्थाओं और घटनाओं के पीछे खिंचा चला जा रहा हूं। सच तो यह है कि अल्फ्रेड मुझसे सौगुना मजे में है। वह अर्थ-संग्रह को ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य समझता है और अपने उसी विश्वास के अनुसार काम भी कर रहा है। पर मेरा जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। वही मसल हुई कि 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।'

अफिलिया ने कहा, "भैया, यों लक्ष्यहीन जीवन बिताकर क्या तुम शांति प्राप्त कर सकते हो ?"

"शांति ! कहां है शान्ति ? अपने इस पाप-भरे जीवन से मुझे स्वयं घृणा है। अपने आचरण और व्यवहार से मैं स्वयं संतुष्ट नहीं हूं। ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि शीघ्र ही यहां से उठाकर जननी से मिला दे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं इस दास-प्रथा के संबंध में कभी अपना मत प्रकट नहीं करता, पर आज तुमने बड़े आग्रह से बार-बार पूछा, तब मुझे अपने मन की इतनी बातें तुमसे कहनी पड़ीं। इस देश में ऐसे बहुत से आदमी हैं, जो मेरी ही तरह गुलामी की प्रथा को हृदय से घृणा करते हैं। इस प्रथा के कारण सारे देश का सत्यानाश हुआ जा रहा है। तरह-तरह के पाप और व्यभिचार हमारे समाज में घुसते जाते हैं। नैतिक वायु दूषित होकर नाना प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न कर रही है। इस घृणित दास-प्रथा के कारण गुलामों का ही बुरा नहीं हो रहा है, बल्कि जो लोग इन्हें अपने घर में रखते हैं, इन पर प्रभुत्व करते हैं, उनकी इनसे भी अधिक क्षति हो रही है। मानसिक रोग भी, कई शारीरिक रोगों की भांति, संक्रामक होते हैं। इन गुलामों की गिरी हुई मानसिक अवस्था संक्रामक रोग की भांति हमारे सभ्य समाज का नाश कर रही है। यह निश्चित बात है कि जहां कहीं अथवा जिस किसी जाति में किसी एक श्रेणी के लोग बिल्कुल गिरी हुई दशा में जीवन बिताते हैं, वहाँ अथवा उस जाति के सब लोगों की अन्तरात्माएं उन गिरी हुई दशावाले लोगों की छूत से धीरे-धीरे कलुषित हो जाती हैं। समाज में एक श्रेणी के लोगों की अवनति दूसरी श्रेणी के लोगों को भी अवनति की ओर आकर्षित करती है। पर हमारे यहां इन गुलामों की गिरी हुई अवस्था सभ्य लोगों के जीवन को जितना कलुषित करती है, वैसी दशा और कहीं नहीं है। कारण यह है कि हमें दिन-रात इनके साथ रहना पड़ता है, क्योंकि इन्हें आठ पहर चौंसठ घड़ी घर में ही रखना पड़ता है, पर इंग्लैंड में यह बात नहीं। वहां गरीब मजदूरों के साथ रईस, जमींदार और महाजनों को रहना नहीं पड़ता। वहां काम लिया, दाम दिया और छुट्टी। यहां तो ये दिन-रात घर में बने रहते हैं। इसलिए इनके जीवन के बुरे उदाहरण, इनसे मालिकों का कठोर व्यवहार, हमारे बाल-बच्चे दिन-रात देखते रहते हैं। इन बुरे उदाहरणों का प्रभाव उनके जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इससे उनके चरित्र बिगड़ जाते हैं और मन विकृत हो जाते हैं। इवा यदि जन्म से ही देव-बाला सरीखी निर्मल प्रकृति की न होती तो अवश्य इनके साथ बरबाद हो जाती। हैजे के रोगी के पास रहने से जैसे हैजा होने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डर रहता है, वैसे ही इन्हें घर में रखकर सदैव अपना बुरा होने का डर है। हमारे यहां के राज-कर्मचारी इन्हें शिक्षित नहीं बनाना चाहते। वे कहते हैं कि शिक्षा पाते ही इनकी आंखें खुल जांयगी और फिर ये तत्काल अपनी स्वाधीनता के लिए विद्रोही बन खड़े होंगे। पर इन अक्ल के अंधों को यह बात नहीं सूझती कि शिक्षा पाने से तो ये स्वाधीनता के लिए विद्रोही होंगे और दासता की बेड़ी काटने की चेष्टा करेंगे, पर बिना शिक्षा के कौन-सी भलाई हो रही है? भीतर-ही-भीतर उससे भी अधिक नाश हुआ जा रहा है, इसका उन्हें ख्याल ही नहीं। सचमुच इन कानून बनाने वालों और वकीलों से मनुष्य-समाज का जितना नुकसान हो रहा है, उतना और किसी श्रेणी के लोगों से नहीं।"

अफिलिया बोली, "गुलामी की इस प्रथा का अन्तिम परिणाम क्या होगा?"

अगस्टिन ने कहा, "पता नहीं। पर एक बात निश्चित है; इनकी आंखें खुल रही हैं और इनकी दृष्टि स्वाधीनता की ओर बढ़ रही है। स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि थोड़े ही दिनों में बड़ा भारी सामाजिक विप्लव होनेवाला है। संसार के सभी देशों में निम्नश्रेणी के लोगों में नवजीवन का संचार दिखाई दे रहा है। मेरी माता कभी-कभी कहा करती थी कि जगत में शीघ्र ही स्वर्ग का राज्य होगा। उस समय ईसा मुकुट धारण करके इस संसार में राज्य करेंगे। तब संसार में दुःख, कष्ट और यंत्रणा का नाम भी न रहेगा। सारे संसार में शांति छा जायगी। मेरी माता ने जो प्रार्थना मुझे सिखलायी थी, उसमें यह वाक्य भी था—'हे पिता! संसार में आपका राज्य हो।' कभी-कभी मैं इन बेचारे गुलामों की आहें और उत्तेजित भाव देखकर, सोचता हूं कि अब शीघ्र ही संसार में वह राज्य होनेवाला है। पिछले फ्रांसीसी विप्लव की आलोचना करने से सहज ही मालूम हो जाता है कि संसार में बहुत थोड़े ही दिनों में समानाधिकार की दुन्दुभि बजनेवाली है।"

अफिलिया ने अपना बुनने का काम छोड़ कर कहा, "मैं तो कभी-कभी सोचती हूं कि तुम इसी स्वर्ग-राज्य में विचरते हो।"

अगस्टिन बोला, "हां, मेरी बातों से यही जान पड़ेगा, पर कार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखकर मालूम होगा कि मैं घोर नरक में पड़ा हुआ हूं।"

ये बातें हो ही रही थीं कि भोजन की घंटी हुई।

भोजन के समय मेरी ने प्रू की घटना का उल्लेख करके कहा, "दीदी, मैं समझती हूं कि तुम हम सब लोगों को जंगली जानवर समझती हो।"

अफिलिया बोली, "प्रू के साथ जैसा व्यवहार हुआ है, उसे मैं अवश्य पशु-तुल्य व्यवहार समझती हूं। लेकिन मैं तुम सब लोगों को जंगली जानवर नहीं समझती।"

मेरी ने कहा, "तुम्हें नहीं मालूम कि इस गुलाम-जाति में कोई-कोई ऐसे पाजी होते हैं कि वे किसी तरह वश में नहीं आते। ऐसे पाजियों का मरना ही भला है। मुझे ऐसे लोगों से जरा भी हमदर्दी नहीं होती। मालिक के कहने पर चलें और भले बनने का यत्न करें तो इन लोगों को मार खाकर कभी न मरना पड़े।"

इवा ने कहा, "मां, वह बेचारी बड़ी दु:खी थी। अपना दु:ख भूले रहने के लिए शराब पीती थी।"

मेरी बोली, "तू रहने दे दु:ख की बातें। दास-दासियों को दुख क्या? मैं तो दिन-रात शारीरिक दु:ख में पड़ी रहती हूं, पर शराब नहीं पीती। मुझसे अधिक दुख उसे क्या होगा? पर सच बात तो यह है कि गुलामों की जाति बड़ी पाजी होती है। कितने तो ऐसे भी होते हैं कि हजारों बेंत मारो, तब भी वे सीधे नहीं होते। मुझे याद है कि मेरे पिता के यहां एक गुलाम बड़ा ही आलसी था। वह काम से बहाना करके दलदल में रहता था। चोरी करता था, और भी कितने ही बुरे-बुरे काम करता था। उसपर बहुत मार पड़ती, पर उसका चाल-चलन तनिक भी न सुधरा। अन्त में एक दिन कोड़ों की मार से उसकी चमड़ी उधड़ गई, फिर भी वह भटकते-भटकते दलदल में चला गया और वहीं मर गया। अब कोई क्या करे, पिता तो दासों के साथ बड़ी दया का बर्ताव करते थे।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैंने एक बार बदमाश गुलाम को सीधा किया था। कितने ही मालिक और खेतों की देखभाल करनेवाले उससे हार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुके थे।"

मेरी बोली, "अच्छा, बताओ, तुमने भी इस जन्म में कभी कोई ऐसा काम किया था ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैंने जिसे वश में किया था वह आदमी बड़ा बलवान था, सूरत-शक्ल में दैत्य-सा था। बड़ा स्वतंत्रता-प्रिय और तेजस्वी था। किसी से नहीं दवता था। ठीक अफ्रीकी सिंह-सा था। लोग उसे सीपिओ कहते थे। वहुतों के हाथ के नीचे वह रहा, पर किसी से सीधा न हुआ। अन्त में अल्फ्रेड ने उसे खरीदा, क्योंकि उसने सोचा कि वह इसे दुरुस्त कर लेगा। एक दिन सीपिओ खेत के ओवरसियर को लात मार कर जंगल में भाग गया। मैं उसी समय अल्फ्रेड से मिलने गया था। यह बात मेरे खेत का साझा छोड़ देने के वाद की है। इस घटना से अल्फ्रेड वड़ा क्रुद्ध हो रहा था। मैंने उससे कहा कि उसके निज के दोष से ऐसा हुआ है। मैं उसे सहज ही वश में कर सकता हूं। और यह तय हुआ कि उसे पकड़कर दुरुस्त होने के लिए मुझे सौंप दिया जायगा। उसे पकड़नेके लिए पांच-छः आदमी, शिकारी कुत्ते और बन्दूकें लेकर, चले। हिरन का शिकार करने में मनुष्य जैसे उत्साही रहता है, वैसा ही मनुष्य का शिकार चालू रहने पर उसके शिकार में भी मनुष्य का उत्साह हो जाता है। मैं भी थोड़ा उत्साही हो गया था, पर मेरा भाव उसे शिकारियों से बचाकर ही वश में करने का था। खैर, हम लोगों के इस दल ने उसका पीछा किया। कुछ देर तक तो वह भागा और उछला, पर थोड़ी ही देर में एक बेंत के झाड़-झंकार में उलझ गया और पकड़ा गया। तब उसने घूंसों से लड़ना आरम्भ किया, और मैं तुमसे कहता हूं कि वह वड़ी ही भयंकरता से लड़ा। उसने केवल घूंसों की मार से तीन कुत्तों को मार गिराया, पर अन्त में हम लोगों की गोली की चोट खाकर वह धरती पर, मेरे पैरों के पास, गिर पड़ा। उसका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया। उसने आंख उठा कर मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में वीरता की ज्योति और निराशा का अन्धकार, दोनों दिखाई पड़ते थे। मैंने अल्फ्रेड के आदमियों को उसे मारने से मना किया और मैं अल्फ्रेड से उसे खरीद कर ले आया। यहां वह पन्द्रह दिन में ही इतना सीधा हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया कि मेरे लिए जान तक दे सकता था।"

मेरी ने कहा, "तुमने उसपर ऐसा कौन-सा जादू कर दिया था ?"

सेण्टक्लेयर ने बोला, "मुझे उसके लिए कुछ अधिक नहीं करना पड़ा। मैं उसे साथ लेकर अपने निजी कमरे में गया और उसके लिए अच्छा बिछौना लगा दिया, उसकी मरहम-पट्टी कर दी और अपने हाथों से उसकी सेवा करता रहा। जब वह ठीक हो गया, तब मैंने उसे मुक्ति-पत्र देकर कहा कि जहां जी चाहे, वहां चला जा।"

अफिलिया ने पूछा, "क्या वह चला गया ?"

सेण्टक्लेयर ने जवाब दिया, "नहीं। उस मूरखराज ने उस कागज के दो टुकड़े करके फेंक दिये और मुझे छोड़कर जाने से इन्कार कर दिया। ऐसा साहसी और विश्वासी नौकर मुझे फिर कभी नहीं मिला। थोड़े दिनों बाद वह इसाई हो गया, और बच्चों की तरह सीधा हो गया। एक बार हैजे का बड़ा प्रकोप हुआ। मैं भी उसके चक्कर में आ गया। उस समय उसने मेरे लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी, क्योंकि मेरे बचने की आशा न देखकर घर के जितने लोग थे सब भाग गये, पर वह निर्भीक होकर जी-जान से मेरी सेवा करता रहा। उसी के यत्न और परिश्रम से मैं जीवित बच गया। पर अफसोस, कुछ ही दिनों बाद उसे भी हैजा हो गया और बहुत कोशिश करने पर भी वह मृत्यु के पंजे से न बच सका। उसकी मृत्यु से मुझे जितना दुःख हुआ, उतना कभी नहीं हुआ।"

सेण्टक्लेयर जब ये बातें कह रहा था, उस समय इवा धीरे-धीरे उसके पास आकर खड़ी हो गई थी। वह बड़ी उत्सुकता से आंखें फाड़ कर एकाग्रता से पिता की ओर देख रही थी। सेण्टक्लेयर की बात समाप्त होते ही वह उससे लिपट कर रोने लगी। उसका सारा शरीर कांपने लगा।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "इवा, प्यारी बच्ची, क्या हुआ ?" और फिर कहा, "तुमको ये बातें नहीं सुननी चाहिए। तुम बहुत ही कमजोर हो।"

तब इवा ने आत्मसंयम करके कहा, "नहीं बाबा, मैं कमजोर नहीं हूं; पर ये बातें मेरे हृदय में बहुत चुभती हैं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "इवा बेटी, तुम्हारे कहने का क्या मतलब है ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा ने कहा, "बाबा, मैं तुम्हें समझा नहीं सकती। मेरे मन में बहुतेरे विचार चक्कर लगाया करते हैं। शायद किसी दिन मैं तुमसे कहूंगी।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "बेटी, चाहे जितना सोचती-विचारती रहो, केवल रोकर अपने बाबा का जी मत दुखाना। लो, यह देखो, तुम्हारे लिए मैं कैसा सेव लाया हूं।"

पिता के हाथ से सेव लेकर इवा मुस्कराई, किंतु उस समय भी उसके होंठ कांप रहे थे। सेण्टक्लेयर उसका हाथ पकड़ कर उसे बरामदे में ले गया और तरह-तरह की चीजें दिखाकर उसे बहलाने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद दोनों की हँसी सुनाई दी, मानो दोनों खेल रहे हों।

बड़ों की बातें कहते-कहते हम अपने मित्र टाम की बात भूले जा रहे हैं, पर यदि आप हमारे साथ अस्तबल की कोठरी में चलें तो टाम की कुछ खबर पा सकते हैं। टाम की यह कोठरी बहुत ही साफ-सुथरी है। उसमें एक चारपाई, एक कुर्सी और एक मेज रखी है। उसपर एक बाइबिल और एक भजनों की पुस्तक है। टाम इसी कोठरी में बैठा हुआ किसी गहरी चिन्ता में डूबा है। सामने एक स्लेट है। स्त्री, पुत्र और कन्या आदि के लिए उसका मन व्याकुल हो रहा है। उनका समाचार जानने के लिए उसने इवा से चिट्ठी लिखने का एक कागज मांग लिया है और पत्र लिखने के कठिन काम में जुट गया है। पहले के मालिक के लड़के जार्ज से टाम ने थोड़ा-थोड़ा लिखना सीखा था; लेकिन सब अक्षर अब उसे याद नहीं हैं। जो याद हैं, उनमें भी कौन कहां लिखना चाहिए, यही समझ में नहीं आता। टाम बड़ी कठिनाई से स्लेट पर पत्र-रचना कर रहा था, इसी समय चिड़ियों की तरह फुदकती हुई इवा चुपके से आकर उसके पीछे खड़ी हो गई और कंधे पर से झांककर बोली, "अहा टाम काका! यह तुम क्या तमाशा कर रहे हो?"

टाम ने कहा, "मिस इवा! मैं अपनी बेचारी बुढ़िया पत्नी तथा अपने छोटे बच्चों को पत्र लिखने की कोशिश कर रहा हूं, पर मैं देखता हूं कि यह काम मुझसे होगा नहीं।"

इवा ने कहा, "टाम, मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूं। मैंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ लिखना सीखा था। पिछले साल मैं सब अक्षर लिखना जानती थी, पर जान पड़ता है, अब मैं सब भूल गई हूं।"

इसके बाद दोनों पास बैठकर एक मन से पत्र लिखने में लग गये। दोनों की विद्या की दौड़ बराबर ही है। बड़े परिश्रम और एक-दूसरे से सलाह करने के बाद एक-एक शब्द लिखा जाने लगा। अन्त में इवा ने उत्साह से कहा, "टाम काका, खूब अच्छी चिट्ठी बन गई। तुम्हारी पत्नी और बच्चे इसे पाकर बड़े खुश होंगे। ओह, बड़े दुःख की बात है कि इन लोगों को छोड़ कर तुम्हें आना पड़ा। मैं किसी दिन बाबा से कहूंगी कि वह तुम्हें उन लोगों के पास लौट जाने दें।"

टाम ने कहा, "मेरी मालकिन ने कहा है कि रुपया जुटते ही वह मुझे फिर खरीद लेंगी। मालिक के बेटे जार्ज ने कहा है कि वह खुद आकर मुझे ले जायंगे। यह देखो, उन्होंने अपनी याद की निशानी के रूप में मुझे यह मुद्रा दी है।"

उसने कपड़ों के भीतर से मुद्रा निकाल कर दिखलाई।

इवा बोली, "हां-हां, तब वह जरूर आकर तुम्हें ले जायंगे। मुझे बड़ी खुशी होती है।"

टाम ने कहा, "इसी से मैं पत्र लिखकर उन्हें अपना पता बता देना चाहता हूं और अपनी कुशल लिख देना चाहता हूं। इससे मेरी पत्नी लोई को बड़ा संतोष होगा। चलते समय वह मेरे लिए बहुत रोई थी।"

इतने में सेण्टक्लेयर ने दरवाजे से आते हुए आवाज दी, "टाम!"

टाम और इवा दोनों चौंक पड़े।

सेण्टक्लेयर ने अन्दर आकर और स्लेट देखकर कहा, "क्या हो रहा है यह?"

इवा बोली, "यह टाम की चिट्ठी है। मैं लिखने में इसकी मदद कर रही हूं। क्या यह अच्छी बात नहीं हुई?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैं तुम्हारा साहस भंग नहीं करना चाहता। पर मेरी समझ में, अच्छा होता कि टाम मुझसे चिट्ठी लिखवा लेता। मैं घूमकर आऊंगा तो लिख दूंगा।"

इवा बोली, "यह बड़ी जरूरी चिट्ठी वह लिखवायेगा क्योंकि उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालकिन ने उसे रुपया भेजकर फिर खरीद लेने का वादा किया है। वह अभी मुझे बता रहा था।"

सेण्टक्लेयर ने मन-ही-मन सोचा कि यह केवल फुसलाने की बात है। जो लोग कुछ दयालु होते हैं, वे दासों को वेचने के समय ऐसी ही बातें कहकर झूठमूठ उसे समझा देते हैं। लेकिन उसने मुंह से कुछ कहा नहीं, केवल टाम को घोड़ा कस लाने की आज्ञा दी।

शाम को लौटकर सेण्टक्लेयर ने टाम की चिट्ठी लिखकर डाक में डलवा दी।

इधर मिस अफिलिया घर के कामों में लगी रहती थी। दीना से लेकर दास बच्चे तक सब कहते थे कि मिस अफिलिया अजीब किस्म की स्त्री है, क्यों कि उसके नियमों के कारण सब तंग आ रहे थे।

उच्च श्रेणी के दास-दासियों अर्थात् एडाल्फ, रोजा और जेन की तो राय थी कि वह भली औरत नहीं है, क्योंकि उसके हावभाव बड़े आदमियों के-से नहीं हैं। इसपर उन्हें बड़ा अचरज होता था कि वह सेण्टक्लेयर की चचेरी बहन है। मेरी का कहना था कि अफिलिया दीदी जिस तरह दिन-रात काम में जुटी रहती हैं, उसे देखने से ही आदमी को थकावट हो जाती है।

२३ : : अफिलिया की परीक्षा

एक दिन सवेरे जब मिस अफिलिया घर के काम-काज में लगी हुई थी, उसी समय सेण्टक्लेयर ने सीढ़ी के पास खड़े होकर उसे पुकारा, "बहन, नीचे आओ, मैं तुम्हें दिखाने के लिए एक चीज लाया हूं।"

मिस अफिलिया ने नीचे आकर पूछा, "कहो, क्या दिखाते हो ?"

सेण्टक्लेयर ने आठ-नौ वर्ष की एक हब्शी लड़की को खींचकर उसके सामने कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़की बहुत ही काली थी। अपने चंचल नेत्रों से वह कमरे की चीजों को बड़े कौतूहल से देख रही थी। जिस प्रकार अत्याचार से पीड़ित होकर हृदय की नीचता और दुष्टता बाहरी गंभीर भाव के आवरण से ढकी रहती है, उसी प्रकार बाहरी गंभीर भाव और विनय उसके मुंह पर झलक रही थी। उसके कपड़े बड़े मले-कुचैले और फटे-पुराने थे; शरीर उसका दुबला-पतला और बड़ा ही गंदा था। उसे देख कर मिस अफिलिया ने पूछा, "अगस्टिन, क्या सोचकर तुमने इसे खरीदा है?"

सेण्टक्लेयर बोला, "यही कि तुम इसे सिखाओ-पढ़ाओ और कर्तव्य का ज्ञान कराओ। इसका नान टप्सी है। यह खूब नाचती-गाती है।"

इसके बाद सेण्टक्लेयर ने टप्सी से कहा, "टप्सी, यह तेरी नई मालकिन हैं। मैं इनके हाथ में तुझे सौंपता हूं। देखना, इन्हें खुश रखना।"

टप्सी गंभीरता का भाव धारण करके बोली, "जो आज्ञा!"

सेण्टक्लेयर ने फिर कहा, "टप्सी, तुझे भला बनना पड़ेगा।"

उसने फिर कहा, "जो आज्ञा!"

मिस अफिलिया ने सेण्टक्लेयर से कहा, "अगस्टिन, तुम्हारा घर योंही इन गुलामों और इनके बच्चों से भरा पड़ा है। इनके मारे घर में पैर रखने की तो जगह नहीं है। सवेरे उठकर देखती हूं, कोई दरवाज़े के पास पड़ा है तो दो-एक मेज के नीचे से सिर निकाल रहे हैं, कोई सीढ़ी पर पड़ा हुआ है तो कोई कहीं। फिर इतनों के होते हुए भी यह एक और नई आफत क्यों मोल ले आये?"

अगस्टिन बोला, "मैंने तुमसे कहा न कि सिखाने-पढ़ाने के लिए तुम शिक्षा पर बहुत भाषण दिया करती हो। इससे मैंने सोचा कि इसे तुमको दूंगा, जिससे तुम इसे खूब पढ़ा-लिखाकर अपने सांचे में ढालो और इसे कर्त्तव्य का ज्ञान कराओ।"

अफिलिया ने कहा, "मैं इसे नहीं चाहती। पहले से ही जितने हैं, कम नहीं हैं। उन्हीं के लिए कुछ कर सकूं तो बहुत है।"

अगस्टिन बोला, "बस, यही तुम ईसाइयों का धर्म है! एक सभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बना ली और दो-चार गरीब लड़कों को, (जो दरिद्रता के मारे पढ़ नहीं सकते) पादरी बनाकर धर्म-प्रचार करने को विदेश में भेज दिया ! इन बेचारों को जन्म भर विदेश में गला फाड़-फाड़कर मरना पड़ता है। तुम लोग दो-एक को सिखा-पढ़ा कर ईसाई बनाओ तो जानूं कि अलबत्ता तुम लोग धर्म पर श्रद्धा रखते हो। पर तुमसे परिश्रम नहीं होगा, मुंह से चाहे जो कह लो, काम पड़ने पर कहोगी कि ये मैले हैं, बड़े गंदे हैं, इन्हें देखकर घिन आती है।"

अफिलिया बोली, "मेरे कहने का मतलब यह नहीं था। इसे पढ़ाना धर्म का काम जरूरी है, पर तुम्हारे घर में तो यों ही बेहिसाब दास-दासी भरे पड़े हैं। मेरा समय और दिमाग चाटने के लिए वही काफी हैं। एक नये को और लाये बिना आखिर क्या बिगड़ रहा था ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा—"खैर बाबा, तुम रास्ते पर आईं, यही बहुत है। सुनो, मैं इसे केवल शिक्षा दिलाने के लिए नहीं लाया हूं। पड़ोस में हमारे एक साहब हैं। वह मर्द-औरत दोनों-के-दोनों बड़े शराबी हैं। यह लड़की उन्हीं के यहां रहती थी। वे दिन-रात इसे पीटते और यह चिल्लाया करती। इसकी चीखों के मारे घर के सामने से गुजरना मुश्किल था, इसी से मैंने इसे खरीद लिया। इसमें कुछ अक्ल जान पड़ती है। कोशिश करके देखो कि तुम इसे सिखा-पढ़ाकर आदमी बना सकती हो कि नहीं। मैं इसे तुम्हीं को सौंप दूंगा। तुम इसे अपना इसाई धर्म सिखलाओ। मुझमें तो शिक्षा देने की योग्यता नहीं है। तुम कुछ कर सको तो यत्न करके देखो !"

जैसे कोई दुर्गन्धित और सड़ी हुई चीज को उठाने के लिए बेमन से आगे बढ़ता है, वैसे ही मिस अफिलिया उस बालिका के पास जाकर बोली, "ओह, कितनी गन्दी है ! आधे बदन पर कपड़ा ही नहीं है।"

वह उसे नीचे रसोईघर के पास ले गई। उसे देखकर दीना बोली, "मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती कि मालिक ने इसे किसलिए खरीदा है। मैं इसे अपने पास नहीं रहने दूंगी।"

जेन और रोज़ा ने मुंह बनाकर कहा, "हम इसे कभी अपने पास न आने देंगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस अफिलिया ने देखा कि उस बालिका का बदन धोना और कपड़े पहनाना तो दूर की बात है, कोई उस को छूना भी नहीं चाहता। तब इसाई धर्म के अनुरोध से लाचार होकर वह स्वयं ही उसका शरीर साफ़ करने लगी। बड़ी अनिच्छा से जेन ने उसकी कुछ मदद की।

लड़की की पीठ और कंधों पर कोड़ों के मार के दाग और घाव देखकर मिस अफिलिया को उस बच्ची पर बड़ी दया आई।

साफ़ कपड़े पहनाकर अफिलिया ने कहा, "अब यह ज़रा इसाई-सी जान पड़ती है।" फिर मन-ही-मन उसका शिक्षाक्रम निश्चय करके पूछने लगी, "टप्सी, तू कितने बरस की है?"

टप्सी ने दांत निपोर कर कहा, "मालूम नहीं।"

अफिलिया बोली, "अरी, तू अपनी उम्र नहीं जानती? तुझे कभी किसी ने नहीं बतलाई? तेरी मां कहां है?"

टप्सी ने फिर खीस निकालकर कहा, "मेरे मां कभी नहीं थी।"

"तेरे मां कभी नहीं थी! इसके क्या माने? तू कहां पैदा हुई थी?"

"मैं कभी पैदा नहीं हुई थी।"

"मेरी बातों का जवाब इस तरह नहीं देना चाहिए। मैं तेरे साथ खेल नहीं कर रही हूं। तू बतला कहां जन्मी थी और तेरे मां-बाप कौन थे?"

"मैं कभी नहीं जन्मी थी। एक व्यापारी के यहां बूढ़ी मौसी ने मुझे कुछ और लड़कों के साथ पाला था।"

जेन दांत निकाल कर बोली, "मिस साहब, आप जानतीं नहीं कि गुलामों का व्यापार करनेवाले लोग बकरी के बच्चों की तरह छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों को खरीद लाते हैं और कुछ दिन उन्हें पाल कर बड़े होने पर बाजार में बेचते हैं। शायद इसे भी किसी व्यापारी ने दो-तीन बरस की उम्र में खरीदा होगा, इसी से यह अपने मां-बाप की बाबत कुछ नहीं जानती।"

अफिलिया ने पूछा, "इस मालिक के घर तू कितने दिनों से थी?"

"मालूम नहीं।"

जेन बोली, "हब्शी बच्चे ये सब बातें नहीं बतला सकते। इन्हें न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिनती आती है और न यही जानते हैं कि वरस किसे कहते हैं।"

अफिलिया ने पूछा, "टप्सी, तूने कभी ईश्वर का नाम सुना है?"

टप्सी को इस सवाल पर अचरज हुआ, पर वह अपने स्वभाव के अनुसार खीस निकाल कर हँसने लगी।

"तू जानती है, तुझे किसने बनाया है?" अफिलिया ने अगला सवाल किया।

"किसी ने नहीं बनाया। मुझे लगता है, मैं अपने-आप बड़ी हो गई।"

"तू सीना जानती है?"

"नहीं।"

"तू क्या कर सकती है? अपने मालिक के यहां तू क्या करती थी?"

"पानी भरती थी, वरतन मांजती थी, छुरी-कांटा साफ़ करती थी।"

"क्या वे तुझसे भलमनसी का वर्ताव करते थे?"

अफिलिया की ओर एकटक देखकर वह बोली, "जान पड़ता है, वे अच्छे थे।"

इसी समय सेण्टक्लेयर ने आकर मिस अफिलिया की कुर्सी के पीछे से कहा, "जीजी, इसे पढ़ाने में वड़ी सुविधा रहेगी। इसके मन में कोई पूर्व संस्कार नहीं है। इसका मन एकदम कोरे काग़ज की तरह है। तुम्हें इसके किसी तरह संस्कार दूर करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।"

मिस अफिलिया के शिक्षा-सम्वन्धी विचार भी उसके और विचारों की भांति एकदम नपे-तुले हुए थे। उसके ये विचार वैसे ही थे, जैसी शिक्षा सौ वरस पहले इंग्लैंड में प्रचलित थी। छात्रों के लिए जो जरूरी हो, उसे मन लगाना सिखलाना; सवाल-जवाब के ढंग से वालकों को यह वतलाना कि ईश्वर ने ही इस जगत् को रचा है और वही पालन कर रहा है; पुस्तक-पाठ, सीना-पिरोना और झूठ बोलने पर सड़ासड़ वेतों की मार! अफिलिया ने इन्हीं नियमों के अनुसार टप्सी को शिक्षा देने का निश्चय किया।

सेण्टक्लेयर के परिवार में सब टप्सी को मिस अफिलिया की लड़की कहते और समझते थे। सताये हुए लोग इतने गिर जाते हैं कि एक-दूसरे के लिए उनकी कुछ भी सहानुभूति नहीं होती, इसी से सेण्टक्लेयर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के घर का कोई दास-दासी टप्सी को स्नेह की दृष्टि से नहीं देखता था। सब उसे एक बला समझते थे। इसी कारण मिस अफिलिया उसे अपने ही सोने के कमरे में रखती थी और उसे विस्तर विछाने का काम दे रक्खा था। पर टप्सी से मिस अफिलिया को कितना कष्ट मिल रहा था, इसे उसका जी ही जानता था। लेकिन उसमें हद दर्जे की सहिष्णुता भी थी, इससे वह घबराई नहीं।

पहले दिन मिस अफिलिया ने टप्सी को बिछौना करने का ढंग और उसकी बारीकियां बतलाना आरम्भ किया।

"टप्सी, मैं तुझे वतलाती हूं कि मेरा बिछौना इस तरह बिछाना। देख ले, अच्छी तरह सीख ले।"

टप्सी ने बड़े उत्साह से कहा, "जो आज्ञा!"

अफिलिया बोली, "टप्सी, इधर देख, यह चादर की सीधी परत है, यह उल्टी। तुझे याद रहेगा न? उल्टी ओर से मत बिछाना।"

बड़े ध्यान से देखते हुए टप्सी ने कहा, "जो आज्ञा!"

जिस समय मिस अफिलिया उसे बिछौना बिछाने का ढंग सिखा रही थी, उसी समय टप्सी ने धीरे-धीरे उसके फीते और दस्ताने चुराकर अपनी आस्तीन में छिपा लिये। अफिलिया ने कहा, "अच्छा, अब बिछा कर दिखला।"

टप्सी बड़ी चतुराई से विस्तर बिछाने लगी। अफिलिया बड़ी प्रसन्न हुई। लेकिन तभी दुर्भाग्यवश टप्सी की आस्तीन से अकस्मात् फीता बाहर निकल आया। यह देखकर अफिलिया बोली, "अरी, यह क्या? तू बड़ी खोटी है। तूने चोरी करना भी सीखा है?"

यह कह कर उसकी आस्तीन से फीता निकाल लिया। लेकिन टप्सी इससे जरा भी नहीं झेंपी। बड़ी गम्भीर बन कर खड़ी रही और ज़रा देर बाद मानो कोई बात ही न हो, बोली, "मेम साहब का फीता मेरी आस्तीन में कैसे आ गया?"

अफिलिया ने कहा, "तू बड़ी दुष्ट है। मुझसे झूठ मत बोल। तूने फीता चुराया था।"

टप्सी बोली, "मेम साहब, मैं सच कहती हूं कि मैंने इससे पहले कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा फीता नहीं देखा था ।"

"टप्सी, तू नहीं जानती कि झूठ बोलना कितना बड़ा पाप है।"

"मेम साहब, मैं कभी झूठ नहीं बोलती। मैं सच-ही-सच कहती हूं ।"

"टप्सी, इस तरह झूठ बोलेगी तो मैं तुझे कोड़े लगाऊंगी ।"

"दिन भर बेंत लगाने से भी कोई दूसरी बात नहीं हो सकेगी । मैंने कभी यह फीता नहीं देखा था । आपने बिछौने पर रक्खा था, सो मेरी आस्तीन में चला गया ।"

टप्सी के यों लगातार झूठ बोलने से मिस अफिलिया को ऐसा गुस्सा आया कि उसने कुर्सी से उठकर उसे पकड़ कर झकझोरा और कहा, "फिर कभी मुझसे झूठ मत बोलना ।"

अफिलिया का झकझोरना था कि टप्सी की दूसरी आस्तीन से दस्ताने निकल पड़े ।

अफिलिया ने कहा, "अब बोल, अब भी कहेगी कि तूने दस्ताने नहीं चुराये ? फीता तो अपने-आप आस्तीन में चला गया ! ये दस्ताने किसने तेरी आस्तीन में ठूंस दिये ?"

टप्सी ने दस्तानों की चोरी स्वीकार करली, पर फीते की चोरी से इन्कार करती गई ।

अफिलिया ने कहा, 'टप्सी, अगर तू अपनी गलती मान ले तो तुझे चाबुक नहीं लगाऊंगी ।"

टप्सी ने सब चीजों की चोरी स्वीकार कर ली और अपनी भूल के लिए बहुत पछतावा करने लगी ।

अफिलिया ने कहा, "मैं जानती हूं कि तूने घर की और भी चीजें चुराई होंगी । कल मैंने तुझे घर में बहुत बार इधर-से-उधर फिरते देखा था । अगर और कोई चीज चुराई हो तो सही-सही बतला दे, मैं तुझे नहीं मारूंगी ।"

"मेम साहब, मैंने इवा के गले का हार चुराया है ।"

"अरी दुष्टा, और बोल !"

"रोजा के कान की बाली चुराई है ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अफिलिया ने संयत स्वर में कहा, "जा, अभी दोनों चीजें ला।"

"मेरे पास नहीं हैं। मैंने फूंक डालीं।"

"फूंक डाली! झूठ बोलती है। जा, झटपट ला, नहीं तो कोड़े खायेगी।"

टप्सी ने रोते और सिसकते हुए कहा कि वह नहीं ला सकती। सब चीजें जल गईं।

"तूने उन चीजों को जलाया क्यों?"

"मैं बड़ी पापिन हूं, दुष्टा हूं, इसी से ऐसा किया।"

ठीक इसी समय इवा अपना हार गले में पहने हुए वहां आई। अफिलिया ने कहा, "क्यों इवा, तुमने अपना हार कहां पाया?"

इवा विस्मय से बोली, "पाया! खोया कहां था! यह तो मेरे गले ही में पड़ा है।"

"कल तूने इसे पहन रखा था?"

"हां बुआ, यह सारी रात मेरे गले ही में रहा है। सोते समय मैं इसे उतारकर रखना भूल गई थी।"

अफिलिया अब बड़े चक्कर में पड़ी। इतने में रोजा भी अपनी बाली झुलाती हुई आ पहुंची। उसे देख कर अफिलिया को और भी अचरज हुआ। उसने बड़ी निराशा से कहा, "हे राम, मैं इस लड़की को लेकर क्या करूंगी?" फिर बोली, "टप्सी, तूने जो चीजें नहीं चुराईं, उनके लिए कैसे कह दिया कि तूने चुराई हैं?"

टप्सी ने आंखें मलते हुए कहा, "मेम साहब, आपने मुझे सब स्वीकार करने को कहा था, इसी से मैंने सब स्वीकार कर लिया।"

"लेकिन मैंने तुझसे यह तो नहीं कहा था कि जो नहीं लिया है उसे भी स्वीकार कर ले। यह भी वैसा ही बड़ा झूठ है, जैसा दूसरा।"

टप्सी ने बड़े सरल और आश्चर्य भाव से कहा, "अच्छा यह बात है?"

इस पर रोजा ने टप्सी की ओर तीव्र दृष्टि से देखकर कहा, "भला यह सच कहेगी? मैं इसकी मालिक होती तो मारे कोड़ों के इसकी चमड़ी उधेड़ देती।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा ने आज्ञा के ढंग से कहा, "चुप रहो रोज़ा, मैं तुम्हारी ऐसी बातें सुनना पसन्द नहीं करती।"

रोज़ा ने कहा, "मिस इवा, तुम बड़ी दयालु हो। इन शैतानों से व्यवहार करना नहीं जानती हो। ये जितने ही काटे जांय, उतने ही सीधे रहते हैं।"

इवा ने क्रुद्ध होकर कहा, "रोज़ा, खबरदार जो ऐसी बात मुंह से फिर कभी निकाली!"

रोज़ा सकपका गई।

इवा खड़ी टप्सी को देखती रही। आमने-सामने खड़ी ये बालिकाएं पराधीनता और स्वाधीनता के दो जीते-जागते उदाहरण हैं। स्वाधीनता के उत्तम और पराधीनता के बुरे फल का कैसा अच्छा चित्र है! स्वाधीनता की गोद में पली हुई इवान्जेलिन उमंग से उमड़े हुए सरल और स्नेह भाव से टप्सी को उपदेश दे रही है और टप्सी शुष्क हृदय से बनावटी विनय दिखलाकर संदिग्ध चित्त से उसकी बातें सुन रही है। कितना भेद है! इवा ने कहा, "टप्सी, तू चोरी क्यों करती है? तुझे जो चीज चाहिए, मैं दूंगी। तू फिर चोरी मत करना।"

यह पहला ही अवसर था जब टप्सी ने ऐसे मधुर और स्नेह-पूर्ण वचन सुने। इस स्नेह-सम्भाषण से उसका हृदय पिघलने लगा। उसकी आंखों से दो बूंद आंसू गिर पड़े, पर तुरन्त ही उसके कठोर भाव ने आकर फिर उसके हृदय पर अधिकार कर लिया। उसने दांत दिखला कर इवा की बात हँसी में उड़ा दी। उसे इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ कि इवा उसे अपनी चीजें दे सकती है।

टप्सी के मन में ऐसे भावों का उदय होना स्वाभाविक था। उसे इस जन्म में न किसी ने प्यार किया, न उसके प्रति दया दिखलाई। उसे कोड़ों की मार और ऊपर से तिरस्कार के सिवा कभी और कुछ नसीब नहीं हुआ। भला ऐसी दशा में पली हुई लड़की इवा की उन सरलतापूर्ण बातों पर सहसा कैसे विश्वास कर सकती थी? उसे इवा की बातें मजाक-सी जान पड़ीं। अफिलिया ने टप्सी को पढ़ाने-लिखाने के अनेक ढंग सोचे, अनेक उपाय किये, पर कोई विधि कारगर न हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टप्सी की दुष्टता किसी तरह कम न हुई। हारकर एक दिन अफिलिया ने सेण्टक्लेयर से कहा, "मेरी तो समझ में ही नहीं आता कि बिना कोड़े लगाये मैं कैसे उसे राह पर लाऊं ?"

सेण्टक्लेयर बोला, "तब तुम अपने दिल के सन्तोष के लिए उसे कोड़े ही लगाओ। मैं तुम्हें उस पर पूरा अधिकार देता हूं। जो चाहो, सो करो।"

"लड़के बिना मार के सीधे नहीं होते, पिटने से ही उनकी अक्ल दुरुस्त होती है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "हां-हां, जरूर। जो तुम ठीक समझो, करो। पर, मैं तुमसे एक बात कहता हूं। मैंने देखा है कि इस लड़की पर खूब कोड़े पड़ते थे, लोहे की छड़ को गर्म करके इसे दागा जाता था, इसकी लात-घूंसों से ठुकाई होती थी, फिर भी इसका स्वभाव दुरुस्त नहीं हुआ। इसीलिए जबतक इसकी और ज्यादा मरम्मत न होगी, तबतक कुछ न होगा।"

"तब बोलो, क्या उपाय हो ?" अफिलिया ने पूछा।

"तुम्हारा सवाल टेढ़ा है।" सेण्टक्लेयर बोला, "मैं चाहता हूं कि तुम आप ही इसका उत्तर सोच लो। मुझे ऐसे लोगों की दवा नहीं मालूम, जिन्हें कोड़े खाने पड़ते हैं और जो कोड़े खाकर भी नहीं सुधरते।"

अफिलिया बोली—"मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती। मैंने कभी ऐसी लड़की नहीं देखी।"

"क्यों ? बस मुझको ही दोष देने के लिए हो ? मेरी तो तुम बहुत लानत-मलामत किया करती हो—दास-दासियों को शिक्षा नहीं देते, इनका सत्यानाश कर रहे हो ! अब क्या हो गया ? तुमसे एक छोटी-सी आत्मा का भी उद्धार करते नहीं बनता ? मैं तुमसे यह भी कहे देता हूं कि कोड़ों की मार से इनका सुधार कभी नहीं हो सकता। कोड़ों की मार अफीम की खुराक की तरह होती है। रोज-रोज खुराक बढ़ानी पड़ती है, अन्त में बढ़ते-बढ़ते उसका ठिकाना नहीं रहता। प्रू की मौत क्यों हुई ? रोज उसके मालिक को कोड़ों की संख्या बढ़ानी पड़ती थी। यों ही बढ़ाते-बढ़ाते आखिर कोड़ों ने ही उसकी जान ले ली। इसी से मैं अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दास-दासियों को कोड़े नहीं लगाता। मेरे यहां के दास-दासी भी बिगड़े हुए हैं। पर कोड़ों की मार से ये नहीं सुधारे जा सकते। इन्हें मार कर और तो कुछ होना नहीं है, अपनी भी प्रकृति पशुओं जैसी बना लेनी है।"

"तुम्हारे यहां की दास-प्रथा की बलिहारी!"

"बेशक मैं तो खुद कहता हूं। पर अब तो ये बुरे बन गये। अब इनके लिए क्या होना चाहिए।"

अफिलिया बोली, "यह तो मैं नहीं कह सकती, लेकिन मैंने अब इनके सुधार को अपना कर्तव्य मान लिया है। अब मैं भी जी-जान से टप्सी के सुधार का यत्न करूंगी।"

इसके बाद अफिलिया टप्सी के सुधार के लिए बड़ा परिश्रम करने लगी। वह अपने कई घंटे इस काम में लगा देती थी। कैसी भी हैरानी हो, वह परवा नहीं करती थी। इस मेहनत का नतीजा यह हुआ कि टप्सी ने जल्दी ही किताब पढ़ना सीख लिया। पर और कामों में उसका नटखटपन ज्यों-का-त्यों रहा। सिलाई सीखने के समय कभी वह सुई तोड़ डालती, कभी तागे का गोला नोच डालती और कभी कूदकर पेड़ पर चढ़ जाती। ये सब उत्पात देखकर अफिलिया ने सोचा कि कहीं इसके संग का बुरा प्रभाव इवा पर न पड़े। उसने सेण्टक्लेयर से इसकी चर्चा की तो सेण्टक्लेयर ने इसे हँसी में उड़ा दिया और कहा कि इवा पर किसी की संगत का बुरा प्रभाव नहीं पड़ सकता। कमल पर जैसे जल असर नहीं कर सकता, वैसे ही इवा के हृदय को कोई भी बुराई नहीं छू सकती।

शुरू में घर के दास-दासी टप्सी से घृणा करते थे। वह उनके पास नहीं फटकने पाती थी, पर अब उससे सब चौंकते थे। वह बड़ी धूर्त थी। जो कोई उसे नाखुश करता, उसका वह नाक में दम कर देती। चुपके से उसके कपड़े कैंची से या दांतों से काट देती, नहीं तो स्याही ही पोत देती, या उसकी कोई चीज ही चुरा लेती। किसी से छिपा नहीं था कि यह टप्सी की ही करतूत है। कोई उससे कुछ कह नहीं भी सकता था, क्योंकि उसके विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता था, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के, सन्देह का लाभ अपराधी को उठाने देने की पक्ष-पातिनी अफिलिया दण्ड न देती थी। टप्सी दास-दासियों को ही तंग नहीं करती थी, वह अफिलिया को भी बहुत परेशान करती थी। एक दिन अफिलिया अपने कपड़ों के संदूक की कुंजी बाहर भूल गई। वह टप्सी के हाथ लग गई। उसने किया क्या कि सन्दूक से अफिलिया का बहुत बढ़िया दुशाला निकालकर उसे सिर पर लपेट लिया और कुर्सी पर बैठकर आईने में मुंह देखने लगी। अफिलिया ने कमरे में आकर जब यह हाल देखा तो गुस्से में भरकर बोली, "यह तू क्या कर रही ?"

टप्सी ने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानती। मैं बड़ी दुष्ट हूं।"

अफिलिया ने झुंझलाकर कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि तेरे साथ किस तरह पेश आऊं ?"

टप्सी बिना झिझक के बोली "मेमसाहब, मुझे बेंत मारिये, मेरे पहले मालिक भी मुझे बेंत लगाते थे।"

"टप्सी", अफिलिया ने दया से प्रेरित होकर कहा, "मैं तुझे बेंत नहीं लगाना चाहती, तू अपनी इच्छा से ही सुधर सकती है। तू इस तरह की दुष्टता छोड़ क्यों नहीं देती ?"

"मेम साहब, मैंने बेंत खाये हैं। मैं समझती हूं कि मेरे लिए वही ठीक दवा होगी।" टप्सी ने कहा।

अफिलिया अब कभी-कभी टप्सी के बेंत जमाने लगी। बेतों की मार खाते समय वह बहुत चीखती और तरह-तरह के स्वांग रचती पर छूटते ही दूसरे लड़कों से जाकर कहती, "मिस अफिलिया का बेंत मारने का ढंग अच्छा नहीं है। उनकी मार तो मुझे मालूम ही नहीं होती। मेरे पहले मालिक की मार से तो चमड़ी निकल आती थी, वह बेंत मारना खूब जानते थे।"

मिस अफिलिया हर रविवार को टप्सी को धर्म-शिक्षा दिया करती थी। टप्सी की स्मरण-शक्ति बड़ी अच्छी थी। वह अनायास सब याद कर लेती थी।

अफिलिया के सामने खड़ी होकर अब टप्सी अपना धर्म-पाठ सुनाने लगी :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हम लोगों के आदि-पुरुष, आदम और हौआ, पूर्ण स्वाधीनता के साथ उच्च-प्रदेश में विचरने लगे। फिर ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण वे वहां से गिरा दिये गये।"

इतना कहकर टप्सी कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखने लगी।

अफिलिया ने कहा, "टप्सी, चुप क्यों हो गई ?"

"मेम साहब, क्या हमारे आदि-पुरुष केण्टाकी में रहते थे ?"

"क्या मतलब ?"

"क्या वे केण्टाकी से गिराये गये थे ? मेरे पहले मालिक कहा करते थे कि वे हम लोगों को केण्टाकी से खरीद कर लाये थे।"

सेण्टक्लेयर जोर से हँस पड़ा। बोला, "बहन, इन्हें जाकर समझाओ। इसका अर्थ जबतक न समझा दोगी, तबतक ये योंही अपना अर्थ लगाते रहेंगे।"

अफिलिया ने झुंझला कर कहा, "तुम रहने दो ! तुम्हारे हँसने से पढ़ाने में गड़बड़ होती है।"

"अच्छा अब माफ करो, अब मैं हँसकर कोई गड़बड़ नहीं करूंगा।"

यह कह कर सेण्टक्लेयर अख़बार पढ़ने लगा। पर मिस अफिलिया की शिक्षा-प्रणाली ऐसी अनोखी थी कि सेण्टक्लेयर को बीच-बीच में हँसी आये बिना नहीं रहती थी और अफिलिया उसके हंसने पर बहुत चिढ़ती थी।

टप्सी अफिलिया से धर्मशास्त्र और लिखना-पढ़ना सीखती रही, पर उसकी दुष्टता ज़रा भी कम न हुई। दूसरे सब दास-दासी उसपर बहुत चिढ़ते थे, पर कोई कभी उसे मारने आता तो वह दौड़ कर सेण्टक्लेयर की कुर्सी के नीचे छिप जाती थी। दयालु सेण्टक्लेयर किसी को उसे मारने नहीं देता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४ : : शेल्वी की प्रतिज्ञा

गर्मी के दिन थे। दोपहर की सख्त गर्मी के कारण शेल्वीसाहव अपने कमरे की खिड़कियां खोले हुए बैठे चुरुट पी रहे थे। उनकी मेम पास बैठी हुई सिलाई का बारीक काम कर रही थीं। बीच-बीच में मेम के बड़ी उत्सुकतापूर्वक शेल्वीसाहव की ओर देखने से प्रकट हो रहा था, जैसे वह अपनी मन की कोई बात कहने के लिए मौका ढूंढ़ रही हों। थोड़ी देर बाद मेम ने कहा, "तुम्हें मालूम है, क्लोई के पास टाम की चिट्ठी आई है?"

शेल्वी बोला, "हां, चिट्ठी आई है? जान पड़ता है, टाम को वहां दो-एक भाई मिल गये हैं।"

मेम ने कहा, "मेरा अनुमान है कि किसी वहुत अच्छे परिवारवालों ने उसे खरीदा है। वे टाम के साथ बड़ी मेहरवानी का वर्ताव करते हैं और उसे कुछ ज्यादा करना-धरना नहीं पड़ता।"

"यह बड़े आनन्द की बात है। मैं समझता हूं, अब टाम दक्षिण छोड़ कर मुश्किल से यहां आना चाहेगा।"

"वहां रहने की कहते हो! वह तो यहां आने के लिए बेचैन हो रहा है। उसने दरियाफ्त किया है कि उसके खरीदने के लिए रुपये जुट गये या नहीं?"

"मुझे तो रुपये जुटने की आशा नहीं जान पड़ती। कर्ज बड़ी बुरी बला है। एक बार हो जाने के बाद फिर उसका चुकाना पहाड़ हो जाता है। एक का लिया दूसरे को दिया, दूसरे से तीसरे को, इसी उलट-फेर में पड़ा हुआ हूं।"

"मैं समझती हूं, कर्ज चुकाने का एक उपाय हो सकता है—मान लो, हम अपने सब घोड़े वेच डालें और खेत का कुछ हिस्सा भी वेच दें।"

शेल्वी ने कहा, ऐमिली, यह बड़े शर्म की बात होगी। केण्टाकी भर में तुम अच्छी समझी जाती हो, लेकिन तुम दुनियादारी की बातें नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझ सकतीं। स्त्रियां कभी दुनियादारी की बातें नहीं समझती हैं।"

मेम बोली, "खैर, मैं समझूं या न समझूं, इससे कोई मतलब नहीं। तुम मुझे अपने कर्ज की एक सूची दो तो मैं देखूं कि कोई रास्ता निकल सकता है या नहीं।"

"एमिली, मुझे नाहक तंग मत करो। मैं कहता हूं कि तुम दुनियादारी की बाबत कुछ नहीं जानतीं।"

स्वामी की बात सुनकर मेम फिर कुछ न बोली। ठण्डी सांस लेकर चुप हो गई। पर शेल्वीसाहब अपनी स्त्री की सलाह पर चलते, तो सहज में कर्ज से उनका छुटकारा हो जाता। उनकी स्त्री बड़ी होशियार और किफायतशार थी। उन्होंने काम-काज का भार स्त्री को सौंप दिया होता तो कभी उनकी यह दुर्दशा न होती। पर वह तो सदा यही मानकर चलते थे कि स्त्रियों में काम-काज की बातें समझने की अक्ल ही नहीं होती।

मेम मन-ही-मन सोचने लगी कि मैंने टाम को फिर खरीदकर अपने यहां रखने का वचन दिया है, अब भला मैं कैसे उस प्रतिज्ञा से भ्रष्ट होऊं। कहा है कि सज्जन अपने वचन से पीछे नहीं हटते। इन्हीं विचारों में गोते खाती हुई फिर बोली, "बेचारी क्लोई स्वामी के शोक में बहुत दुख पा रही है। उसका दिल बैठा जाता है। उसे देखकर मेरा जी भर आता है। क्या इन रुपयों को इकट्ठा करने की कोई सूरत नहीं हो सकती?"

"तुम्हारी शोचनीय दशा देखकर मुझे दुःख होता है, पर हम लोगों का इस तरह वचन देना ही अन्याय है। टाम वहां एक-दो बरस में कोई दूसरी स्त्री रख लेगा। तुम क्लोई से कह दो कि अच्छा होगा, वह भी यहां किसी से अपना सम्बन्ध जोड़ ले।"

"मिस्टर शेल्वी" मेम बोली, "मैंने अपने यहां के नौकरों को सीख दी है कि उनका भी विवाह-बंधन उतना ही पवित्र है, जितना हमारा। मैं क्लोई को ऐसी सलाह देने का विचार भी मन में नहीं ला सकती।"

"प्यारी, तुमने इन्हें ठीक शिक्षा नहीं दी। इनकी दशा को ध्यान में न रखकर इन पर नैतिक शिक्षा का बोझ लाद दिया है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मैंने इन्हें बाइबिल की नीति सिखलाई है। उसमें मैंने कौन-सी बुराई की ?"

"एमिली, मैं तुम्हारी धर्म-सम्बन्धी बातों में दखल नहीं देना चाहता। मेरा केवल इतना ही कहना है कि ये लोग उस शिक्षा के बिल-कुल ही अनुपयुक्त हैं। इनकी दशा उस शिक्षा का भार उठाने योग्य नहीं है।"

मेम ने गम्भीर होकर कहा, "वास्तव में इन लोगों की दशा बहुत खराब है और यही कारण है कि मैं दिल से गुलामी की प्रथा को घृणा करती हूं, पर यह बात पक्की समझो कि मैं इन निराश्रितों को वचन देकर कभी उसे भंग न करूंगी। मैं गाना सिखाने का काम करके रुपये इकट्ठा करूंगी और उससे टाम को फिर से बुलाने की अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करूंगी।"

"एमिली, तुम अपने को इतना मत गिराओ। मैं तुम्हारे इस कार्य का कभी समर्थन नहीं कर सकता।"

मेम ने दुःख के साथ कहा, "गिराने की कहते हो—और प्रतिज्ञा-भंग करने से मेरा पतन नहीं होगा ? उससे सौगुना पतन होगा।"

"रहने दो अपने स्वर्गीय नैतिक भाव !"

शेल्बी और उनकी स्त्री में ये बातें हो रही थीं कि इसी बीच क्लोई ने आकर पुकारा, "मेम साहब, ज़रा इधर तो आइए।"

मेम ने बाहर जाकर पूछा, "क्लोई, क्या बात है ?"

उसने कहा, "कहिये तो आज एक मुर्गी का शोरबा बना दूं।"

मेम ने कहा, "जो तुम्हारी इच्छा हो, बना लो। किसी भी चीज से काम चल जायगा।"

क्लोई को जब मेमसाहब से कोई बात कहनी होती थी, तब वह अच्छे भोजन की बात उठा कर भूमिका बांधती थी। आज भी उसने अपनी कोई बात कहने के लिए यह भूमिका बांधी थी। हँसते हुए बोली, "मेमसाहब, आप रुपया इकट्ठा करने के लिए गाने का काम सिखाने की तकलीफ क्यों उठावेंगी ? इससे साहब की बदनामी होगी। कितने ही लोग अपने दास-दासियों को किराये पर देकर रुपये वसूल करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतने दास-दासियों को वैठे-विठाये मुफ्त में भोजन देने से क्या फायदा ?"

"अच्छा, क्लोई किसे किराये पर देना चाहिए ?"

"मैं और किसी को किराये पर देने को नहीं कहती। साम कहता था कि लूविल नगर में एक हलवाई है, वह मिठाई बनाने के लिए किसी अच्छे आदमी की खोज में है। मैं वहां जाऊं तो वह हर हफ्ते मुझे चार डालर देगा। यहां का काम सैली चला लेगी। वह सब तरह का भोजन बनाना सीख गई है।"

"अपने बच्चों को छोड़कर वहां जाओगी ?"

"दोनों लड़के तो बड़े हो गये हैं। अब वे काम-काज कर लेते हैं। रही छोटी बच्ची, सो उसे सैली पाल लेगी।"

"लूविल दूर बहुत है।"

"उसी के पास शायद कहीं मेरा बूढ़ा है।"

"नहीं क्लोई, टाम लूविल से बहुत दूर है, दो-तीन सौ कोस परे है। पर तुम लूविल जाना चाहो तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है। मिठाईवाले के यहां तुम्हें जो कुछ तनखाह मिले वह सब अपने स्वामी को फिर खरीदने के लिए जमा कर रखना। उसमें से मैं तुम्हें कौड़ी भी खर्च नहीं करने दूंगी।"

क्लोई ने कहा, "मेमसाहब, मैं आपके गुणों का बखान नहीं कर सकती। मैंने यही सोचा है कि बूढ़े को छुड़ाने के लिए सब रुपया जमा करती जाऊंगी। हफ्ते पीछे चार डालर मिलेंगे। मेमसाहब, साल भर में कितने हफ्ते होते हैं ?"

"बावन।"

"तो साल भर में चार डालर हफ्ते के हिसाब से कितने डालर होंगे ?"

"दो सौ साठ डालर।"

"तो कितने बरस काम करने से बूढ़े के दामों जितने रुपये होंगे ?"

"चार-पाँच बरस। पर चार-पाँच बरस तुझे काम नहीं करना पड़ेगा। कुछ डालर मैं भी दे दूंगी।"

क्लोई ने कातर भाव से कहा, "पर मेरे हाथ-पांव रहते आप डालरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए गाना सिखाने का काम क्यों करेंगी ?"

"अच्छा, तुम कब जाना चाहती हो ?"

"कल साम उधर जाने को है। मैं उसी के साथ जाना चाहती हूं। आप 'पास' लिख दें तो चली जाऊं।"

मेम ने बड़ी दयालुता से कहा, "मैं अभी लिखे देती हूं।"

यह कहकर मेम अपने स्वामी के पास गई और उनकी अनुमति से 'पास' लिखकर क्लोई को दे दिया। क्लोई बड़ी खुशी से अपना सामान बांधने लगी। वहां शेल्वीसाहब का लड़का खड़ा था। उसे देखकर बोली, "जार्ज, मैं लूविल जा रही हूं। वहां चार डालर हफ्ते के मिलेंगे। वे सब मैं तुम्हारी माता के पास बूढ़े को छुड़ा लाने के लिए अमानत की तरह जमा करती जाऊंगी।"

"कब जाओगी ?"

"कल साम के साथ जाऊंगी। मास्टर जार्ज, तुम अभी बूढ़े को जो जवाब दो, उसमें ये सब बातें साफ-साफ लिख देना।"

"मैं अभी लिख दूंगा। अपने नये घोड़े की खरीद की बात भी लिख दूंगा।"

"जरूर-जरूर लिख देना। अच्छा चलो, मैं तुम्हारे खाने के लिए कुछ लाती हूं। अब न मालूम फिर कितने दिनों बाद तुम्हें अपने हाथ का बनाया खाना खिलाना नसीब होगा!"

२५ : : पुष्प की कुम्हलाहट

दिनों के बाद महीने और महीनों के बाद वर्ष, देखते-देखते सेण्टक्लेयर के यहां टाम के दो वर्ष यों ही बीत गये। टाम ने अपने घर जो पत्र भेजा था, कुछ ही दिनों बाद उसके उत्तर में मास्टर जार्ज का पत्र आ पहुंचा। इस पत्र को पाकर टाम को बड़ा आनन्द हुआ। टाम के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छुटकारे के निमित्त क्लोई के लूविल में नौकरी करने जाने, टाम के दोनों पुत्र मोज़ और पिटे बड़े आनन्द में हैं और कुछ काम-काज करने लायक हो गये हैं, उसकी छोटी कन्या का भार सैली को सौंपा गया है, ये सब बातें इस चिट्ठी में लिखी हुई थीं। जार्ज अपने नये घोड़े की खरीद की बात भी लिखना नहीं भूला था। पत्र पाने के बाद से टाम को जब फुर्सत मिलती, तभी वह उसे सामने रखकर बड़ी चाह से पढ़ने की चेष्टा करता था। इवा और टाम में बड़ी देर तक इस बात पर आलोचना होती रही कि इस पत्र को शीशे के साथ एक सुंदर चौखटे में जड़वाकर दरवाजे पर लटकाना ठीक होगा या नहीं। अन्त में बहुत सोच-विचार के बाद तय हुआ कि ऐसा करने से पत्र के दोनों हिस्से दिखाई नहीं पड़ेंगे, इससे चौखटे में जड़वाना ठीक नहीं।

टाम और इवा का स्नेह दिन-दिन बढ़ता गया। टाम इवा को बहुत प्यार करता था। जब बाजार जाता, उसके मन-बहलाव के लिए कोई अच्छी-सी चीज खरीद लाता। इवा को वह कभी फूलों का सुन्दर गुच्छा, कभी सुन्दर-सुन्दर फूल चुनकर उसकी माला बना कर देता। इवा जब टाम के पास बैठकर बाइबिल पढ़ती और धर्म-चर्चा करती, उस समय वह उसे मनुष्य-लोक की न मानकर, देव-लोक की कन्या समझकर, मन-ही-मन उसकी आराधना करता था।

गर्मी की ऋतु आजाने के कारण सेण्टक्लेयर शहर छोड़कर, वहां से कुछ दूर झील के किनारे अपने उद्यान में सपरिवार जाकर रहने लगा। वहां रोज शाम के समय इवा और टाम बैठकर बाइबिल की चर्चा किया करते थे।

एक दिन रविवार को संध्या-समय वहीं टाम के पास बैठी हुई इवा बाइबिल पढ़ रही थी। उसमें उसने पढ़ा, "स्वर्ग का राज्य बहुत पास है।" यह पढ़कर उसने कहा, "टाम काका, मैं जाऊंगी।"

"कहां ?"

"स्वर्ग के राज्य में।"

"स्वर्ग कहां है ?"

इवा ने आकाश की ओर अंगुली उठाकर कहा, "वह स्वर्ग है। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्दी ही जाऊंगी।"

यह सुनकर टाम के मन को बड़ा धक्का लगा। इवा का शरीर सूखते देखकर टाम के हृदय में बड़ी चिन्ता रहा करती थी, खासकर इस बात से कि मिस अफिलिया कहा करती थी, इवा को जिस ढंग की खांसी की बीमारी हो रही है, वह बीमारी किसी दवा से आराम नहीं होती। इस समय वह बात भी टाम के मन में जाग उठी। टाम इवा को देवकन्या समझता था। उसका खयाल था कि उसके मुंह से कभी कोई असत्य वचन नहीं निकलते। इससे आज की बात सुनकर टाम के हृदय में किस भाव का उदय हुआ होगा, इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है।

क्या कभी किसी के घर इवा-सरीखे बच्चे हुए हैं? हां, हुए हैं; पर उनका नाम समाधि के पत्थरों पर ही खुदा हुआ मिलता है। उनकी मधुर मुसकान, उनके स्वर्गीय सुधावर्षी नयन, उनके साधारण वाक्य और आचरण गुप्त धन की भांति केवल उनके स्नेही आत्मीयों ही के मन-मन्दिर में छिपे पड़े रहते थे। कितने ही घरों की बात सुनी जाती है कि उस घर से एक बच्चा जाता रहा। उसका रंग-ढंग ऐसा सुंदर था कि उसके सामने और बालकों के रूप-गुण बिल्कुल फीके थे। जान पड़ता है, मानो विधाता ने मनुष्यों के पापी मन को स्वर्ग की ओर खींचने के लिए वहां एक विशेष श्रेणी के देवदूतों का दल रख छोड़ा है। वे थोड़े दिनों के लिए शिशु के रूप में जन्म लेकर मृत्यु-लोक में आते हैं, और चारों ओर के विपथगामी हृदयों को अपने स्नेह-बन्धन में इस तरह जकड़ लेते हैं कि जब वे अपने स्वदेश—स्वर्ग—को जाने लगें तो वे विपथगामी हृदय भी उन्हीं के साथ स्वर्ग को जा सकें। जिस शिशु के नेत्रों में यह आध्यात्मिक ज्योति दीख पड़े; या उसकी बातों में साधारण शिशुओं से कुछ विशेषता, मधुरता और विज्ञता का आभास मिले, तब जान लो कि वह इस जगत् में घर बनाने नहीं आया है, उसके बहुत दिनों तक इस पृथ्वी पर रहने की आशा में मत रहो; क्योंकि उसके ललाट में विधना के अक्षर हैं, उसके नेत्रों में अमृत की किरणें हैं। इसी से तो स्नेह-धन इवा, घर की एकमात्र उज्ज्वल तारा, तू भी चली जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रही है; पर जो तुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं, वे इस बात को नहीं जानते ।

मिस अफिलिया के अकस्मात् झील के किनारे आकर इवा को पुकारने पर टाम और इवा की बातें बन्द हो गईं। मिस अफिलिया ने कहा, "इवा बेटी, बड़ी ओस गिर रही है। यह बाहर बैठने का समय नहीं है।"

इवा और टाम दोनों अंदर चले गये।

बच्चों के पालन-पोषण के काम में मिस अफिलिया की निगाह बड़ी तेज थी। बच्चों के रोग बड़े सहज में जान लेती थी। इवा की सूखी खांसी देख कर उसके मन में बड़ा खटका लग गया था। ऐसे रोग से उसने कितने ही बच्चों का जीवन नष्ट होते देखा था। वह अपनी आशंका कभी-कभी सेण्टक्लेयर पर भी प्रकट करती थी, लेकिन वह उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था, उल्टा कभी-कभी असन्तुष्ट होकर कहता, "बहन, तुम्हारी ये आशंकाएं मुझे नहीं भातीं। यों ही जरा-सी बात देखकर तुम लोग जमीन-आसमान एक करने लगती हो। इवा बढ़ रही है, इसी से वह दुबली जान पड़ती है। बच्चे जब बढ़ते हैं, तब हमेशा कमजोर हो ही जाते हैं।"

पर अफिलिया ने फिर कहा, "अगस्टिन, उसकी खांसी बहुत बुरी है। इस रोग से जेन, ऐलेन और सेंडर तीन को तो मैंने मरते देखा है।"

सेण्टक्लेयर ने खीझकर कहा, "तुम अपनी ये फालतू बातें रहने दो। उसे रात को बाहर न निकलने दिया करो, बहुत ज्यादा खेलने भी मत दिया करो। इसी से वह अच्छी हो जायगी।"

कहने को उसने अफिलिया को इस प्रकार कहकर टाल दिया, पर उसके मन में खटका लग गया और बेचैनी छा गई। उसने मन-ही-मन कहा, "रोग न सही, पर इसका यह धर्म-संबंधी गम्भीर विषयों की बातें करना बड़े आश्चर्य में डालता है और मन में शंका उत्पन्न कर देता है।" वह सोचता—यह कैसे आश्चर्य की बात है कि इतनी बड़ी बालिका को जहां अपने खेल-कूद में ही मस्त रहना चाहिए, वहां अभी से दूसरे का दुःख देखकर उसका हृदय विदीर्ण होने लगता है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार में व्याप्त अत्याचार और उत्पीड़न की बात सोचकर जब इवा बड़ी दु:खी होती और रोने लगती, उस समय सेण्टक्लेयर उसे जोर से अपनी छाती से चिपटा लेता।

इवा ने एक दिन एकाएक अपनी मां से कहा, "हम लोग अपने गुलामों को पढ़ना क्यों नहीं सिखाते ?"

मेरी बोली, "यह क्या सवाल है ! कोई भी उन्हें पढ़ना नहीं सिखाता।"

"क्यों नहीं सिखाते ?"

"इसलिए कि उससे उनका कोई मतलब सिद्ध नहीं होगा। वे संसार में केवल काम करने के लिए बनाये गये हैं। पढ़ाई से उन्हें किसी तरह की मदद न मिलेगी।"

इवा ने कहा, "मां, मेरी समझ में हरएक इंसान को बाइबिल पढ़ना आना चाहिए। वे पढ़ लेंगे तो बाइबिल तथा और ग्रंथ आप ही पढ़ते रहेंगे।"

"इवा, तू बड़ी अनोखी लड़की है।"

"बूआ ने टप्सी को बाइबिल पढ़ना सिखलाया है।"

मेरी ने कहा, "हां, पर तू देखती है कि टप्सी क्या बाइबिल पढ़कर सुधर गई ? उस-जैसी तो पाजी लड़की ही मैंने नहीं देखी।"

इवा बोली, "मामी का बाइबिल से बड़ा प्रेम है, वह चाहती है कि वह उसे पढ़ लेती। और जब मैं उसे पढ़कर नहीं सुना सकूंगी तब वह क्या करेगी ?"

इवा जब ये बातें कर रही थी, उसी समय उसकी मां एक सन्दूक की चीजें ठीक कर रही थी। इवा की बातें समाप्त होने पर उसकी मां ने कहा, "इवा, ये बातें जाने दे। तू जन्मभर इन नौकरों के सामने बाइबिल ही नहीं पढ़ती रहेगी। बड़ी होने पर सज-धज कर समाज में आना-जाना पड़ेगा। तब फिर तुझे बाइबिल पढ़ने का समय न रहेगा। यह देख, यह हीरे का हार मैं तुझे बाहर आने-जाने लगने पर दूंगी। मैं पहले-पहल जिस दिन यह हार पहनकर दावत में गई थी, उस दिन, मैं तुझसे कहती हूं इवा, कितनों की आंखें मैंने चकाचौंध कर दी थीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा ने उस हार को हाथ में लेकर अपनी मां से पूछा, "मां, क्या यह हार बहुत कीमती है ?"

मेरी बोली, "निश्चय ही बड़ा कीमती है। पिता ने यह फ्रांस से मंगवाया था। एक साधारण गृहस्थ की सारी सम्पत्ति भी इसके सामने कुछ नहीं।"

इवा ने कहा, "मैं इसे इस शर्त पर लेना चाहती हूं कि जो मेरे जी में आवेगा, इसका करूंगी।"

"तू इसका क्या करना चाहती है ?"

"मैं इसे बेचूंगी और स्वतन्त्र देश में जमीन खरीदूंगी। फिर वहां अपने सब गुलामों को ले जाकर मास्टर रख कर उनको पढ़ना-लिखना सिखाऊंगी।"

इवा की बात से उसकी मां को इतनी हँसी आई कि आगे की बातें बीच में ही रह गईं।

"बोर्डिंग स्थापित करेगी। उन्हें तू पिआनो बजाना और मखमल पर बेल-बूटे काढ़ना नहीं सिखलावेगी ?"

इवा ने बड़ी दृढ़ता से कहा—"मैं उन्हें बाइबिल पढ़ना, पत्र लिखना और पत्र पढ़ना सिखलाऊंगी। मां, मैं जानती हूं कि वे अपने पत्र अपने हाथ से नहीं लिख सकते, और अपने पत्र अपने आप पढ़ भी नहीं सकते, इससे उनके मन में बड़ा कष्ट होता है। टाम को, मामी को, बहुतों को इससे बड़ा दुःख होता है।"

मेरी ने कहा, "चुप रह ! तू अजीब ही लड़की है। इन बातों के विषय में कुछ जानती-बूझती नहीं है। तेरी बातों से तो मेरा सिर दुखने लगता है।"

इवा चुप हो गई। मेरी की आदत थी कि जब कोई उसकी मर्जी के खिलाफ बातें करने लगता, तब उसका सिर दुखने लगता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६ : : हेनरिक का संकल्प

जब अगस्टिन अपने झीलवाले मकान में था, उस समय सेण्टक्लेयर का भाई अल्फ्रेड अपने बारह वर्ष की उम्र के बड़े बेटे हेनरिक को साथ लेकर वहां आया और दो- तीन दिन रहा। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि इन दोनों भाइयों में परस्पर किसी तरह की समानता—न रंग-रूप में, न विचार ही में—न होने पर भी आपस में बड़ा स्नेह था। प्रकट में ये दोनों सदा एक-दूसरे का मज़ाक उड़ाया करते थे, पर इनमें आन्तरिक प्रेम कम न होता था। दोनों हाथ मिलाकर बाग में टहलते और खूब बातें किया करते थे।

अल्फ्रेड का बड़ा पुत्र हेनरिक बड़ा सभ्य और तेजस्वी बालक जान पड़ता था। कोमल-हृदया इवान्जेलिन को देखते ही उस पर उसका बड़ा स्नेह और प्रेम हो गया।

इवा के पास एक सफ़ेद रंग का बड़ा अच्छा टट्टू था। संध्या के समय इवा को घुमाने के लिए टाम ने वह टट्टू लाकर बरामदे के पास खड़ा किया, इधर डडो नामक तेरह वर्ष का बालक हेनरिक के लिए काला अरबी टट्टू लेकर आया।

हेनरिक ने घोड़ा देख कर डडो पर लाल-लाल आंखें निकाल कर डांटते हुए कहा, "क्यों बे यह क्या? आज सवेरे तूने मेरे घोड़े को मला नहीं?"

डडो ने बड़े विनीत भाव से उत्तर दिया, "सरकार, वह आप ही लोट कर धूल से भर गया।"

हेनरिक ने चाबुक उठाकर बड़े क्रोध से कहा, "चुप रह! ज़बान चलाता है। चाबुक से चमड़ी उधेड़ दूंगा।" इतना कहकर उसने तुरन्त डडो के मुंह पर पांच-सात चाबुक जड़ दिये।

वह "सरकार-सरकार" कह कर चीखने लगा। पर हेनरिक ने एक न सुनी और बराबर कोड़े लगाता गया। फिर एक हाथ पकड़ कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी ठोकर मारी कि वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। तब उसे छोड़ कर बोला, "मेरे सामने मुंह खोलने का मजा पा गया। घोड़ा ले जा, उसे ठीक से साफ़ करके ला। मैं तेरी अच्छी तरह ख़बर लूंगा।"

टाम ने कहा, "हुजूर, वह आपसे कहना चाहता था कि सवेरे मैंने घोड़े को मला था, इस वक्त रास्ते में आते समय वह जोश में था, इससे ज़मीन पर लोट गया। मैंने सवेरे उसे घोड़ा साफ़ करते देखा था।"

हेनरिक ने ऊंची आवाज में कहा, "तुम चुप रहो। तुमसे कौन पूछता है। फ़िज़ूल अपनी बक-बक लगाये हो।"

इतना कहकर हेनरिक इवा के पास जाकर बोला, "प्यारी बहन, मुझे बड़ा खेद है कि उस पाजी के कारण तुम्हें भी इंतज़ार करना पड़ा। आओ, जबतक वह आवे तबतक यहां बैठ जांय। पर यह क्या बहन! तुम इतनी उदास क्यों हो?"

इवा ने कहा, "तुमने बेचारे डडो के साथ बड़ा जुल्म किया। तुम बड़े ही बेरहम और पापी हो।"

हेनरिक ने बड़े आश्चर्य से कहा, "बेरहम! पापी! यह तुम क्या कह रही हो, प्यारी इवा?"

इवा बोली, "जब तुम ऐसी बेरहमी का काम करते हो, तो मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे 'प्यारी इवा' कह कर पुकारो।"

हेनरिक ने कहा, "प्यारी बहन, तुम डडो को नहीं जानतीं। बिना मार खाये वह सीधा नहीं रह सकता। वह बड़ा झूठा और बहानेबाज़ है। इन लोगों को दुरुस्त करने का यही ढंग है। इनको मुंह नहीं खोलने देना चाहिए। बाबा इसी ढंग से इन पर शासन करते हैं।"

"पर टाम काका ने तो कहा कि उसका क़सूर नहीं था। आकस्मिक बात थी। टाम काका कभी झूठ नहीं बोलता।"

हेनरिक बोला, "वह बुड्ढा तो हब्शियों में एक असाधारण आदमी है। डडो तो बेहिसाब झूठ बोलता है।"

"मार के डर से वह झूठ बोलना सीखता है।"

"इवा, तुम डडो पर बड़ी कृपा दिखाती हो, इससे मेरा मन बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःखी होता है।"

"पर तुम उसे बिना क़सूर मारते हो !"

"अच्छा, तुम्हें दुःख होता है तो मैं आगे से उसे तुम्हारे सामने नहीं मारूंगा। मुझे नहीं मालूम था कि काले गुलाम को मार खाते देख कर तुम्हें कष्ट होता है।"

इवा को सन्तोष नहीं हुआ, पर उसने देखा कि अपने विचार को हेनरिक को समझाने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। कोई फल नहीं होगा।

डडो घोड़ा लेकर शीघ्र ही आ पहुंचा।

हेनरिक ने बड़ी कृपा की दृष्टि से कहा, "डडो, इस बार तू बड़ी जल्दी घोड़ा ले आया। इधर आ, मिस इवा का घोड़ा पकड़ ले। मैं उसे सवार करा दूं।"

इवा ने घोड़े पर चढ़ते समय देखा कि बालक शारीरिक पीड़ा से रो रहा है। उसने डडो को घोड़ा पकड़ने के लिए धन्यवाद दिया और कहा, "तुम बड़े अच्छे लड़के हो।"

मार का यह दृश्य बाग में घूमते हुए सेण्टक्लेयर और अल्फ्रेड ने भी देखा। यह देखकर अगस्टिन का चेहरा लाल हो गया। उसने अल्फ्रेड से बड़े व्यंग्य से कहा, "अल्फ्रेड, मैं समझता हूं कि यही वह शिक्षा है, जिसे हम लोग साधारण तन्त्र-प्रणाली की शिक्षा कहा करते हैं।"

अल्फ्रेड ने कहा, "जब हेनरिक को जोश आ जाता है, तब वह शैतान हो जाता है।"

अगस्टिन बोला, "मेरे ख़याल में तुम समझ रहे हो कि वह यह बहुत अच्छा काम सीख रहा है।"

अल्फ्रेड ने कहा, "मेरे किये यह सब दूर नहीं हो सकता। मैं या मेरी स्त्री, दोनों इस विषय में चुप रहते हैं। पर यह डडो छोकरा भी बड़ा बदमाश है। इसे चाहे जितना मारो, सीधा नहीं होता।"

अगस्टिन बोला, "और मैं समझता हूं कि हेनरिक को साधारण तन्त्र-प्रणाली की शिक्षा देने का यही ढंग है, क्योंकि उस प्रणाली का पहला सूत्र है—सब मनुष्य जंन्म से स्वतंत्र और समान हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्फ्रेड ने कहा, "ये फ़िज़ूल की बातें हैं। फ़्रांस में भी एक बार ऐसा ही आन्दोलन उठा था। समान अधिकार की बात केवल शिक्षित और उच्च श्रेणी के लोगों में ही चल सकती है, इन नीचों में नहीं।"

अगस्टिन बोला, "पर आंखें खुलने पर वे सब बदला चुका लेते हैं। फ्रांसीसी क्रांति का मूल कारण जानते हो ? हां, इन निम्न श्रेणी के लोगों की कभी आंखें न खुलने पावें, तो बात दूसरी है।"

अल्फ्रेड ने बड़े जोर से पृथ्वी पर पैर पटक कर, मानो वह निम्न-श्रेणी के लोगों के सिर पर ही लात मार रहा हो, कहा, "जरूर इन लोगों को गिरा कर रखना होगा।"

अगस्टिन बोला, "जब ये अत्याचार-पीड़ित निम्न श्रेणी के लोग उठ खड़े होंगे, तब देश को मिट्टी में मिला देंगे। रईसों और बड़े आदमियों का प्रभुत्व जड़ से खो देंगे। तुम्हें क्या सेण्ट डोमिंगो की हक़ीकत मालूम नहीं है ?"

अल्फ्रेड ने कहा, "ओफ, कहां की बात करते हो ! हम लोग यहां सब ठीक कर लेंगे। इन 'जन-साधारण की शिक्षा', 'मज़दूरों की शिक्षा' के नारों पर ध्यान न देने से यहां विप्लव की कोई सम्भावना न रहेगी। इन सबको शिक्षा न देने से फिर कोई अड़चन नहीं होने की।"

अगस्टिन बोला, "अब वे दिन गये। अब शिक्षा का प्रवाह किसी के रोके भी नहीं रुक सकता। तुम लोगों को उचित है कि उन्हें शिक्षा दे-कर उनका नैतिक जीवन ऊंचा कर दो।"

अल्फ्रेडने कहा, "रहने दो अपना यह ऊंचा नैतिक जीवन ! ये लोग सदा इसी हालत में रहेंगे।"

अगस्टिन बोला, "यह ठीक है, पर इन्हें अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी तो ये कभी-न-कभी उत्तेजित होकर खून की नदी बहा देंगे। क्या तुम नहीं जानते कि सोलहवें लुई की हत्या के बाद फ्रांस की क्या हालत हुई ? अल्फ्रेड, मैं कहे देता हूं कि वह समय अब दूर नहीं, जब ये निम्न श्रेणी के लोग खड़े होकर संसार को अराजकता से भर देंगे। रईसों और बड़े लोगों को अपने रक्त द्वारा जगत् में हो रहे अत्याचारों और उत्पीड़न का प्रायश्चित करना पड़ेगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्फ्रेड ने हंसते हुए कहा," अगस्टिन, तुम तो अच्छे-खासे वक्ता हो गये। मैं कहता हूं, तुम जगह-जगह घूम कर इस विषय पर व्याख्यान देना शुरू कर दो। इससे पैगम्बर की तरह लोग तुम्हें पूजेंगे। लेकिन लगता है कि तुम्हारे इस कल्पित स्वर्ग-राज्य के आने के पहले ही मैं मर जाऊंगा। मुझे यह सब देखना नसीब में न होगा।"

अगस्टिन बोला, "फ्रांस के रईस लोग निम्न-श्रेणीवालों से बड़ी घृणा करते थे। पर अंत में उन्हीं निम्न श्रेणीवालों ने उन लोगों पर आधिपत्य जमाया था। ज़रा खयाल करो। अभी उस दिन हाइटी में क्या हो गया है!"

अल्फ्रेड ने कहा, "हाइटीवालों का क्या जिक्र कर रहे हो! वे भी क्या अंग्रेज़ हैं? वे अंग्रेज होते तो भला उनकी ऐसी दुर्दशा हो सकती थी? संसार में सब तरफ अंग्रेजी का दवदबा रहेगा। अंग्रेज़ लोगों पर हुकूमत करेंगे। भला हम लोगों (अंग्रेजों) के साथ किसी जाति की तुलना हो सकती है?"

अगस्टिन ने तेज होकर कहा, "बहुत 'अंग्रेज-अंग्रेज' करके मत कूदो। एक बार इन काले हब्शियों की आंख खुलने दो। देखना, तुम लोगों को अपने अत्याचारों का प्रायश्चित करना पड़ता है या नहीं। तब फिर लाचार होकर तुम लोगों को यहां से दुम दबाकर भागना पड़ेगा। यहां छिपने तक को तुम्हें जगह न मिलेगी।

अल्फ्रेड बोला, "तुम्हारी ये सब पागलपन की बातें हैं।"

अगस्टिन ने कहा, "पागलपन की बातें! क्या बाइबिल की बात का तुम्हें स्मरण नहीं है? लिखा है, "मनुष्य स्वप्न में भी विपद् का खयाल न करता था, पर अकस्मात् एक दिन बाढ़ आई और इन लोगों को बहा कर मृत्यु के मुंह में डाल दिया। मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि बाइ-बिल की इस बात को सदा याद रखना!"

अल्फ्रेड ने हंसते हुए कहा, "अगस्टिन, तुम पैगम्बरी का जामा पहन कर जगह-जगह व्याख्यान देते फिरो तो अच्छा होगा। हम लोगों की फिक्र मत करो। हममें बहुत सामर्थ्य है। हम अपनी रक्षा आप कर लेंगे। इन निम्न श्रेणी के लोगों को सदा इस गिरी हुई हालत में ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहना पड़ेगा। ये लोग सदा हमारे पैरों-तले ही रहेंगे। हममें इनका शासन करने के लिए पूरी शक्ति है।"

अगस्टिन बोला, "क्यों नहीं, तुम्हारा लड़का इसी शक्ति की शिक्षा पा रहा है। पर तुम लोगों की शक्ति तो क्रोध के साथ काफूर होकर उड़ जाती है। तुम नहीं जाते कि ठण्डा लोहा गरम लोहे को काटता है। जो अपने को नहीं सम्हाल सकता, वह दूसरों पर शासन क्या करेगा?"

अल्फ्रेड ने कहा, "मैं मानता हूं, हमारे यहां की शिक्षा-प्रणाली कुछ बुरी है। लड़कपन से ही हमारी सन्तानें इन काले दासों पर शासन करना सीख जाती है। दूसरों को भी कोई अधिकार है, यह समझने का मौका ही नहीं मिलता। पर किसी-किसी विषय में हमारे यहां की शिक्षा बहुत अच्छी भी होती है। बच्चे बचपन से ही खूब साहसी और तेजस्वी होते हैं। क्रीत-दासों के बहुत से ऐब उनको छू नहीं पाते। हृदय में भरा हुआ प्रभुत्व का भाव उन्हें अनेक दोषों से दूर रखता है।"

अगस्टिन ने व्यंगोक्ति के भाव से पूछा, "इस प्रकार प्रभुत्व करने की इच्छा क्या इसाई धर्म के अनुकूल है?"

अल्फ्रेड बोला, "अनुकूल है या प्रतिकूल, इस बारे में मैं बहस नहीं करना चाहता। पर इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे देश की सामाजिक अवस्था लोगों को साहसी और तेजस्वी बना देती है।"

अगस्टिन ने कहा, "यह हो सकता है।"

अल्फ्रेड बोला, "अगस्टिन, ये सब फ़िजूल की बातें हैं, इनसे नतीजा कुछ नहीं निकलता। कम-से-कम हम लोग पांच सौ बार तो इस पुराने विषय पर तर्क-वितर्क कर चुके होंगे। चलो, बैठकर शतरंज खेलें।"

दोनों भाई बरामदे में आकर बैठ गये और शतरंज खेलना आरम्भ कर दिया। खेलते समय अल्फ्रेड ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूं अगस्टिन, यदि तुम्हारे जैसे विचार मेरे होते तो मैं अपने विचारों के प्रचार के लिए कुछ प्रयत्न अवश्य करता।"

अगस्टिन ने कहा, "हां, मैं कह सकता हूं कि तुम करते। तुम काम-काजी आदमी हो, लेकिन मैं?"

अल्फ्रेड चुटकी लेकर बोला, "अपने दास-दासियों ही की दशा क्यों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं सुधारते ?"

अगस्टिन ने कहा, "क्या यह भी सम्भव है ? एक बड़ा भारी पहाड़ उनके सिर पर रख दो तो भी उनका सीधे खड़े रहना संभव है, पर हम लोगों के समाज में फैली हुई बुरी शिक्षा, असदाचरण और अत्याचारों के नीचे रह कर उनका सुधरना कभी सम्भव नहीं। समाज में फैले हुए पापों और बुराइयों से नैतिक वायु दूषित हो जाती है। इसलिए जबतक नैतिक वायु शुद्ध न हो, तबतक किसी एक आदमी के किये-धरे लोगों का सुधार नहीं हो सकता। कितनी ही विजित जातियों को उच्च शिक्षा मिलती है, पर उस शिक्षा से क्या पराजित जाति कभी उन्नत हो सकती है ?"

अल्फ्रेड बोला, "तुम देश-सुधार का व्रत ले लो।"

इसके बाद दोनों खेल में तल्लीन हो गये। कुछ देर बाद हेनरिक और इवा घोड़ों पर लौटे। घोड़ों के तेज आने के कारण इवा कुछ थक-सी गई थी, पर उसके क्लांत मुख-कमल पर अनुपम सौन्दर्य विकसित हो रहा था। ऋतु बदलने पर जिस प्रकार प्रकृति नये रूप में सज-धज कर मनुष्यों के हृदय में नये-नये भाव उत्पन्न करती है, उसी राग-द्वेष और हिंसा से रहित तथा धार्मिक पवित्रता से पूर्ण निर्मल चरित्रवाली रमणियों के मुख-कमल से एक-एक अवस्था में एक-एक प्रकार के अलौकिक सौन्दर्य का भाव विकसित होता है। इवा के इस थके मुखमण्डल से शान्ति और प्रेम का भाव टपक रहा था।

अल्फ्रेड ने उसे इस भाव में देखते ही विमोहित होकर कहा, "क्या अपूर्व रूप-माधुरी है ! अगस्टिन, तुम्हारी इवा के सौंदर्य पर संसार रीझ उठेगा।"

लेकिन अगस्टिन ने निराश हृदय से कहा, "हां, वह सर्वगुण-सम्पन्न है, पर कौन जाने, ईश्वर के मन में क्या है ?" यह कहते हुए उसने दो-चार कदम आगे बढ़कर इवा को घोड़े से गोदी में उतार कर पूछा, "बेटी इवा, तुम बहुत थक तो नहीं गईं ?"

बालिका ने कहा, "नहीं बाबा !" पर उसके जोर से सांस लेने से उसके पिता को खटका हुआ। उसने कहा, "बेटी, तुम घोड़ा इतना तेज क्यों चलाती हो ? तुम जानती हो कि यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हानिकर है।"

यह कहकर उसने उसे एक कोच पर लिटा दिया।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "हेनरिक, तुम इवा को देखना। देखो, जब इवा तुम्हारे साथ हुआ करे, तब घोड़ा इतना तेज मत दौड़ाया करो।"

हेनरिक ने इवा के पास बैठकर अपने हाथ में उसका हाथ लेते हुए कहा, "मैं फिर कभी ऐसी भूल नहीं करूंगा।"

इवा शीघ्र ही स्वस्थ हो गई। उसके पिता और चाचा उन दोनों बच्चों को छोड़कर खेल में लग गये। हेनरिक ने कहा, "इवा, मुझे बड़ा खेद है कि बाबा बस अब यहां दो ही दिन ठहरेंगे, फिर हम लोग चले जांयगे। तुमसे न मालूम फिर कब भेंट होगी। यदि मैं तुम्हारे पास रहता तो भला बनने का प्रयास करता और डडो को कभी न मारता। मैं डडो से बुरा बर्ताव नहीं करता। उसे कभी-कभी पैसे भी दे देता हूं। तुम देखती हो कि वह अच्छे कपड़े पहनता है। मैं समझता हूं, कुल मिलाकर डडो बड़े मजे में है।"

इवा ने कहा, "तुम्हें केवल खाना-कपड़ा और पैसे दिये जांय, पर संसार में कोई तुम्हें स्नेह करनेवाला न हो, तो क्या तुम अपने को सुखी समझोगे?"

"नहीं।"

"तो तुम देखते हो कि तुम डडो को उसके सारे आत्मीयों से अलग करके ले आए हो और अब उसे कोई भी प्यार करनेवाला नहीं है। ऐसी दशा में पड़कर तो कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता।"

हेनरिक ने कहा, "इसमें हम क्या कर सकते हैं? मैं उसकी मां को तो ला नहीं सकता, और न मैं स्वयं ही उसे प्यार कर सकता हूं।"

इवा बोली, "तुम प्यार क्यों नहीं कर सकते?"

खिलखिलाकर हंसते हुए हेनरिक ने कहा, "डडो को प्यार! उस पर मैं थोड़ी दया करूं, यही काफी है। तुम क्या अपने नौकरों को प्यार करती हो?"

इवा बोली, "जी हां, मैं प्यार करती हूं।"

"कैसी अनोखी बात है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्या बाइबिल हम लोगों को यह नहीं बतलाती कि हमें हरएक आदमी को प्यार करना चाहिए ?"

हेनरिक ने खिन्नभाव से कहा, "बाइबिल की बात क्या कहती हो ! बाइबिल में तो ऐसी-ऐसी कितनी ही बातें लिखी पड़ी हैं; लेकिन कोई उन्हें करने का विचार भी करता है ? तुम जानती हो इवा, कोई आदमी बाइबिल का कहा नहीं करता।"

इवा कुछ देर तक बोली नहीं। उसकी आंखें स्थिर और चिन्तायुक्त हो गईं। फिर वह बोली, "प्यारे भाई, मेरी एक बात मानो। जैसे भी हो, तुम गरीब डडो को प्यार करना, उसपर दया करना।"

हेनरिक ने कहा, "प्यारी बहन, तुम्हारे अनुरोध से मैं किसी भी चीज को प्यार कर सकता हूं। तुम सरीखी प्रेममय, शान्त और मधुर बालिका मैंने नहीं देखी। मैं अब कभी डडो को नहीं मारूंगा।"

इवा को उसकी इस बात से शान्ति मिली। उसने कहा, "मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम ऐसा अनुभव करते हो। प्यारे हेनरिक, मैं आशा करती हूं कि तुम्हें अपनी बात याद रहेगी।"

तभी भोजन की घण्टी हुई और सब लोग भोजन के लिए उठ गये।

२७ :: मृत्यु के पूर्व-लक्षण

दो दिन के बाद अल्फ्रेड पुत्र-सहित सेण्टक्लेयर से बिदा होकर अपने घर गया। जबतक अल्फ्रेड वहां था, तबतक सब लोग हँसी-खुशी में भूले हुए थे। इस बीच में इवांजेलिन के स्वास्थ्य की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। एक तो वह पहले ही से अस्वस्थ थी, इधर हेनरिक के साथ खेल-कूद में उस पर बहुत अधिक श्रम पड़ने के कारण वह और भी थक गई। उसका शरीर इतना निर्बल हो गया कि उसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलने-फिरने की शक्ति न रही। अवतक तो सेण्टक्लेयर ने मिस अफि-लिया की बातों पर ध्यान न दिया था, पर अब उसने डाक्टर को बुला कर इवा को दिखलाया और उसके हृदय में भी भांति-भांति की आशंकाएं उठने लगीं।

सेण्टक्लेयर की स्त्री, मेरी, कभी भूल से भी अपनी लड़की के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ न पूछती थी। इधर उसने मुहल्ले की स्त्रियों से दो-तीन नये रोगों की चर्चा सुनी थी। बस, अब वह उन्हीं नये रोगों के सब लक्षण अपने शरीर में देखने लगी। वह इन अपने ही कल्पित रोगों में इतनी वेतरह उलझी रहती थी कि उसे किसी और के अच्छे या बीमार होने की खोज करने की फुर्सत ही नहीं थी। उसे कन्या की खबर लेने का भी तनिक अवकाश न था। वह तो अपने ही रोगों की चिंता में लगी रहती थी कि कैसे उनसे पिण्ड छूटेगा। साथ ही एक और बात थी, वह समझती थी कि संसार में किसी भी व्यक्ति को उसके जितनी पीड़ा नहीं हो सकती और रोग जितने होते हैं, उसी के होते हैं दूसरे किसी के रोगों को तो वह एक काम न करने का बहाना और आलस्य-भर समझती थी। उसका ख़याल था कि असल रोग उसी को होते हैं।

मिस अफिलिया ने इवा के रोगों के सम्बन्ध में कई बार मेरी की आंखें खोलने की चेष्टा की, पर सब व्यर्थ गई। वह कहती थी, "मेरी समझ में तो उसे कुछ नहीं हुआ है। वह मज़े में खेलती-कूदती है।"

"तुम उसकी खांसी नहीं देखती हो ?"

"खांसी के संबंध में आपके कहने की आवश्यकता नहीं है। मैं खुद उस विषय में बहुत जानती हूं। मैं जब इवा के बराबर थी, तब मेरे घरवाले समझते थे कि मुझे तपेदिक हो गया है। रात-रात भर मामी मेरे पास बैठी रहती थी। इवा की खांसी मेरी खांसी के मुकाबले कुछ भी नहीं है।"

अफिलिया कहती,—"लेकिन वह दिन-प्रति-दिन कमजोर होती जा रही है।"

"मैं वर्षों ऐसी कमज़ोर थी। वह कोई खास बात नहीं है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"रात को रोज उसका शरीर गरम हो जाता है उसे रात को बराबर बुखार चढ़ता है।"

"वैसा तो मुझे दस साल तक था। बुखार के मारे रात को इतना पसीना आता था कि सारे कपड़े तरबतर हो जाते थे। सवेरे घण्टों बैठ कर मामी उन्हें सुखाती थी। इवा को कोई वैसा बुखार नहीं है।"

अफिलिया ने इसके बाद मेरी से इवा के सम्बन्ध में कुछ भी कहना बंद कर दिया, पर जब इवा इतनी कमजोर हो गई कि चारपाई से भी नहीं उठ सकती और उसके लिए डाक्टर बुलाया गया, तबएकाएक मेरी का अपनी बच्ची के लिए प्रेम उमड़ पड़ा।

मेरी कहने लगी, "मैं तो पहले ही जानती थी कि सेण्टक्लेयर की उदासीनता का यह फल मुझे भोगना पड़ेगा। मुझे सन्तान-शोक देखना पड़ेगा। एक तो मैं अपने ही रोगों के मारे मर रही हूं, उस पर यह सन्तान-शोक! आदमी के इससे ज्यादा और क्या फूटे भाग्य होंगे! न सात न पांच, मेरे यह एक बच्ची है और उसका यह हाल हुआ।"

ये बातें कहकर वह दास-दासियों पर अपने दिल का गुबार निकालने लगी। मामी ने इवा की देखभाल में लापरवाही की है, यह कहकर उसे खूब कोसा। फिर अभिमान से मुंह फुलाकर मेरी सेण्टक्लेयर के सामने रोने लगी।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "प्यारी मेरी, ऐसी बातें मुंह से न निकालो। इवा को अवश्य आराम हो जायगा। उसे ऐसा क्या हुआ है?"

मेरी बोली, "सेण्टक्लेयर, तुम्हें मां की ममता का क्या पता? तुम मेरा हृदय कभी नहीं समझ सके। अब भी तुम नहीं जान सकते कि अपनी संतान के लिए मेरा जी कितना छटपटा रहा है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "पर ऐसी बातें मत करो, इस तरह छटपटानेवाली कोई बात नहीं है।"

मेरी बोली, "यह दशा देख-सुन कर मेरा जी तो तुम्हारी तरह नहीं मान सकता। सब बातों में तुम जैसे पत्थर के दिल के हो, मैं तो वैसी नहीं हूं। सन्तान के नाम से यही एक लड़की है, इसकी बीमारी देखकर क्या मैं बरदाश्त कर सकती हूं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"घबराओ मत! इवा का शरीर बड़ा कोमल है, इसीसे अधिक गर्मी और हेनरिक के साथ खेल-कूद में अधिक श्रम पड़ने के कारण उसकी तबीयत खराब हो गई है। डाक्टर साहब कहते हैं कि वह शीघ्र ही अच्छी हो जायगी।"

मेरी ने कहा, "मेरा यह हृदय इस बात को जानकर भी नहीं समझना चाहता। मैं भी चाहती हूं कि तुम्हारी तरह बिना घबराये सुख से रह सकती तो अच्छा था, पर क्या करूं, यह जी तो नहीं मानता।"

दो-तीन हफ्ते तक इवा को कुछ आराम लगा। वह उठ कर फिर चलने-फिरने भी लगी। कभी-कभी पहले की भांति बाग में जाकर टाम के साथ बैठती थी। उसके पिता को यह देख कर बड़ा आनन्द हुआ। पर मिस अफिलिया और चिकित्सक की दृष्टि में बीमारी कुछ भी न घटी थी। इवा स्वयं भी मन-ही-मन समझती कि इस पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार को उसे शीघ्र ही छोड़ना पड़ेगा।

मनुष्य के हृदय में मृत्यु का संवाद कौन पहुंचाता है? मरणासन्न के कान में कौन कह जाता है कि अब इस संसार में तुम्हारी घड़ियां पूरी हो चुकी हैं? इवा को किसने कहा कि अब शीघ्र ही उसे यह संसार छोड़ना पड़ेगा? यदि कहिये कि मनुष्य के अन्दर बैठा हुआ अनन्त सुख का अभिलाषी, ईश्वर-सामीप्य का प्रयासी, अमृत का अधिकारी, अविनाशी आत्मा पहले ही से मृत्यु का आगमन जान जाता है, तो फिर सब लोग क्यों नहीं जान लेते? कोई जानता है, बहुत-से नहीं जानते, इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि विषयासक्त सांसारिक जीवों के कान विषय-कोलाहल से बहरे हुए रहते हैं। उनकी आंखें मोहान्धकार से ढकी रहती हैं। इस पाप से भरे संसार में रहने की उत्कट इच्छा मृत्यु-चिन्ता को उनके हृदय में प्रवेश नहीं होने देती; इसी से विषयासक्त जीव पहले से मृत्यु का आगमन नहीं जान सकते। मृत्यु के आगमन की ध्वनि उन्हें कभी नहीं सुनाई देती। किन्तु पर-दुःख-कातर, पवित्र-हृदया इवांजेलिन के कान सांसारिक कोलाहल से बहरे नहीं हुए थे, अपने सुख की इच्छा कभी उसके हृदय में स्थान नहीं पाती थी। यह संसार उसे दुःखमय जान पड़ता था, इसी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे परम पिता जगदीश्वर का, उसके दुःख-निवारण करने के लिए अपने धाम को बुलाने का सन्देशा साफ सुनाई पड़ा। उसे इसका तनिक भी खेद न हुआ कि यह संसार छोड़ना पड़ेगा। उसके हृदय को कुछ आघात पहुंचाने वाली बात थी तो इतनी ही कि उसे अपने स्नेहमय पिता को छोड़ना होगा, और उसकी मृत्यु से उसके पिता शोक में पागल हो जांयगे।

एक दिन टाम को बाइबिल सुनाते हुए इवा ने कहा, "टाम काका, मैं जान गई कि ईसा ने क्यों हम लोगों के लिए प्राण दिये हैं।"

टाम ने पूछा, "कैसे?"

"ऐसे कि मेरे हृदय में भी उस भाव का अनुभव होता है।"

"वह अनुभव क्या और कैसा है, मिस इवा? यह बात ठीक से मेरी समझ में नहीं आई।"

"मैं तुम्हें समझा कर नहीं बतला सकती, लेकिन मैंने जब उस जहाज में तुम्हें तथा जंजीर से जकड़े हुए दूसरे दास-दासियों को, जिनमें कोई अपने बच्चों से, कोई अपने पतियों से, और कोई अपनी माताओं से, बिछुड़ने के कारण विलाप कर रहे थे, देखा, और जब मैंने बेचारी प्रू की बाबत सुना....ओफ, वह कैसा भयंकर काण्ड था—तब और अन्य बहुत-से अवसरों पर मैंने इस बात का अनुभव किया कि यदि मेरे मरने से यह सब दुःख-दर्द से छूट सकें तो मैं आनन्द से मर जाऊं।"

इवा ने अपना दुबला-पतला हाथ टाम पर रखते हुए भावावेश में कहा, "टाम काका, यदि मेरे मरने से इनका दुःख दूर हो जाय, तो मैं खुशी से मर जाऊंगी।"

टाम विस्मित होकर उसका मुख निहारने लगा। पर अपने पिता के पांवों की आहट पाकर इवा उठकर बराभदे में चली गई।

थोड़ी देर के बाद टाम जब मामी से मिला तो उसने कहा, "मामी, अब इवा को इस संसार में रखने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। उसके भाल पर विधना का लेख है।"

मामी ने अपने हाथ को ऊपर उठाते हुए कहा, "हां-हां, यह तो मैं हमेशा से कहती आई हूं। वह लड़की बचनेवाली नहीं है। ऐसे होन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हार बच्चे बहुत दिन नहीं जीते। वह हम सब लोगों को अनाथ कर जायगी।"

इवा अपने पिता के पास आई। उसके पिता ने उसे स्नेहपूर्वक हृदय से लगाकर कहा, "इवा बेटी, आजकल तो तुम अच्छी हो न!"

इवा ने आकस्मिक दृढ़ता से कहा. "बाबा, बहुत दिनों से मैं तुमसे कुछ कहना चाहती थी। अब अधिक निर्बल होने से पहले ही मैं उन बातों को कह डालना ठीक समझती हूं।"

सेण्टक्लेयर का हृदय कांप उठा। इवा ने पिता की गोद में बैठकर कहा, "बाबा, अब मेरे यहां रहने के सब उपाय व्यर्थ हैं। तुम्हें छोड़ जाने का समय अब बहुत निकट आ रहा है। मैं वहां जा रही हूं, जहां से फिर कभी नहीं लौटा जाता।" कह कर उसने ठण्डी सांस ली।

इवा की ये बातें सेण्टक्लेयर के हृदय में बरछी की तरह पार हो गईं, पर ऊपर से प्रसन्नता का भाव रखकर कहा, "इवा बेटी, तुम्हें झूठा सन्देह हो गया है। इन चिन्ताओं को छोड़ो! यह देखो, मैं तुम्हारे लिए कैसा अच्छा खिलौना लाया हूं।"

इवा ने खिलौने को हाथ से रखकर कहा, "बाबा, तुम अपने को धोखे में मत रक्खो। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मैं ठीक नहीं होऊंगी। बाबा, मुझे यह संसार छोड़ने में जरा भी कष्ट नहीं जान पड़ता। बस, तुम्हारी और घर के दूसरे लोगों की बात सोचकर बुरा लगता है, नहीं तो मैं यहां से जाने में बड़ी खुश हूं। बहुत दिनों से मैं इस दुनिया को छोड़ने की इच्छा कर रही हूं।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "प्यारी बच्ची, तेरे इस छोटे से मन में इतनी उदासीनता क्यों भरी हुई है? अपनी प्रसन्नता के लिए तुझे जो चाहिए, वह सब हमारे घर में है और वह तुझे मिल सकता है।"

"बाबा, मैं स्वर्ग में ही जाकर रहना चाहती हूं। बाबा, यहां ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जो मेरे जी को दुखाती हैं, जो मुझे बड़ी भयंकर जान पड़ती हैं।"

सेण्टक्लेयर ने पूछा, "वे कौन-सी बातें हैं, जो तुझे दुःख देती हैं और भयंकर लगती हैं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा ने कहा, "बाबा, नित्य ही तो वे बातें होती हैं। मुझे अपने इन दास-दासियों के लिए बड़ा कष्ट होता है। ये मुझे बड़ा प्यार करते हैं, मुझे बहुत चाहते हैं। मैं चाहती हूं कि ये सब आजाद हो जांय।"

सेंटक्लेयर बोला, "क्या तुम समझती हो कि वे हमारे यहां आराम से नहीं हैं ?"

"हां, बाबा, पर तुम्हें कुछ हो जाय तो उनका क्या होगा ? बाबा, तुम्हारे, सरीखे आदमी दुनिया में कम होते हैं। अल्फ्रेड चाचा तुम्हारे जैसे नहीं हैं। मां तुम्हारे जैसी नहीं हैं। बेचारी प्रू के मालिक की बात सोचो। ओफ, लोग अपने दास-दासियों पर कितना अत्याचार करते हैं, और कर सकते हैं।" इतना कहते-कहते इवा थरथराने लगी।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "बेटी, तुम्हारा हृदय बहुत कोमल है। दूसरों के दुःख देखकर तुम्हारे दिल को बड़ी चोट लगती है। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें ऐसी बातें सुनने दीं।"

इवा बोली, "ओफ़ बाबा, तुम्हारी इस बात से मेरा कलेजा फटा जाता है। संसार में दूसरे लोग जब केवल कष्ट और दुःख सह-सह कर ही जी रहे हैं तब तुम मुझे सुखी बनाकर जीवित रखना चाहते हो ? ऐसे कष्ट से बचना चाहते हो कि किसी के कष्ट की कहानी भी नहीं सुनने देना चाहते ! यह तो बड़ी भारी खुदगरजी है कि न तो मुझे ऐसी बातें जाननी चाहिए और न ही अनुभव करनी चाहिए कि जो मेरे हृदय में चुभ जाती हैं। इन बातों के बारे में मैंने बहुत सोचा है। बाबा, क्या इन सब दासों को आजाद कर देने का कोई उपाय नहीं है ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "बेटी, यह बड़ा कठिन प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह प्रथा बहुत बुरी है। बहुत-से लोग इसे बुरी-से-बुरी प्रथा समझते हैं। मैं स्वयं इसे बहुत बुरा मानता हूं। हृदय से चाहता हूं कि इस पृथ्वी पर एक भी मनुष्य गुलाम न रहे—सब स्वतन्त्रता का सुख भोगें पर इसका कोई सरल उपाय मेरी समझ में नहीं आता।"

"बाबा, क्या लोगों के घर घूम-घूम कर सबको नहीं समझा सकते कि यह प्रथा बड़ी घृणित हैं, इसे तुरंत उठा देना चाहिए ? बाबा, मैं जब मर जाऊंगी, तब तुम मेरा खयाल करके मेरे लिए इसे करोगे ? मुझसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह होता तो मैं ही करती।"

इवा की बात सुनकर सेण्टक्लेयर ने कहा, "इवा, तुम मरोगी ! बेटी, तुम मुझसे ऐसी बातें मत कहो। तुम्हारे सिवा इस संसार में मेरा और है ही क्या ?"

इवा बोली, "बाबा, उस बेचारी प्रू के उस लड़के के सिवा और क्या था ? सन्तान के शोक में वह पागल हो गई थी। उसके मरने के बाद भी वह उसका रोना सुनती थी। बाबा, तुम मुझे जितना प्यार करते हो, उतना ही ये गुलाम भी अपने बच्चों को करते हैं। ओफ, उनके लिए कुछ करो। हमारे यहां मामी है, वह अपने बच्चों को प्यार करती है। जब वह उनकी चर्चा करती है तब मैंने उसकी आंखों से आंसू झरते देखे हैं। और टाम भी अपने बच्चों को प्यार करता है। बाबा, ये बड़ी भयंकर बातें हैं, और मुझसे सहन नहीं होतीं।"

सेण्टक्लेयर ने अत्यन्त दुःखित होकर कहा, "इवा बेटी, तुम रो-रो कर अपने जी को परेशान मत करो। मरने की बात मुंह से न निकालो। तुमं जो चाहती हो, सो मैं करूंगा।"

इवा ने तत्काल कहा, "बाबा, तुम मुझसे प्रतिज्ञा करो कि टाम को मेरी मृत्यु होते ही मुक्त कर दोगे।"

सेंटक्लेयर ने कहा, "बेटी, जो कुछ तुम कहोगी वह मैं अवश्य कर दूंगा।"

सेण्टक्लेयर इवा को छाती से चिपटाये चुपचाप बैठा रहा। देखते-देखते संध्या का आगमन हुआ। चारों ओर से इवा की प्रशान्त मूर्त्ति और विशाल नेत्रों पर घोर अंधकार छा गया। उसका चेहरा अब सेण्ट-क्लेयर को नहीं दिखाई दे रहा था। पर उसकी सुरीली मधुर वाणी देव-वाणी की भांति उसके कर्ण-कुहरों में गूंज रही थी। उसे अपने विगत जीवन की सम्पूर्ण बातें स्मरण हो आईं, अपनी माता की प्रार्थना याद आई। अपने बाल्य जीवन की बातें, संसार में प्रवेश करने के बाद जगत के हित-साधन की इच्छा के जड़ से उखड़ जाने की बातें, एक-एक करके याद आने लगीं। यों ही देर तक बैठे-बैठे सेण्टक्लेयर बहुत-सी बातें याद करता और सोचता रहा, पर मुंह से कुछ न बोला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंत में जब बहुत अंधेरा हो गया तब इवा को गोद में उठाकर अपने सोने के कमरे में ले गया। उसे अपने ही साथ लिटाकर उस समय तक गीत गाकर सुनाता रहा, जबतक कि नींद ने उसे आ नहीं घेरा।

२८ : : प्रेम का चमत्कार

रविवार का दिन था। दोपहर बीत चुका था। सेण्टक्लेयर अपने घर के बरामदे में बैठा सिगरेट पी रहा था। बरामदे के सामनेवाले कमरे में उसकी स्त्री मेरी एक गद्दीदार कुर्सी पर बैठी हुई थी। मेरी के हाथ में एक बड़ी सुन्दर भजनों की जिल्ददार पुस्तक थी। मेरी का खयाल है कि रविवार के दिन धर्म-पुस्तक पढ़ी न जा सके तो कम-से-कम हाथ ही में रहे। खुली हुई पुस्तक सामने थी। उस समय मेरी उसे पढ़ती न थी। केवल कभी-कभी आंख उठाकर देख लेती थी।

इवा को साथ लेकर मिस अफिलिया मेथीडिस्टों के किसी गिरजे में गई थी, अतः अगस्टिन और मेरी के सिवा वहां और कोई न था। कुछ देर बाद मेरी ने कहा, "अगस्टिन, मुझे हृदयरोग-सा हो गया जान पड़ता है। मैं समझती हूं अपने उस पुराने डाक्टर पोसी साहब को बुलवाने से ही काम चलेगा।"

अगस्टिन ने कहा, "उसके बुलाने की क्या जरूरत है? जो डाक्टर इवा की दवा करता है, वह भी तो बड़ा अच्छा जान पड़ता है।"

मेरी बोली, "मैं ऐसी नाजुक बीमारी में नये डाक्टर पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं देखती हूं, रोग दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। दिन-भर बदन दर्द किया करता है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।"

"यह तुम्हारा खाली सन्देह ही है, मेरी समझ में तुम्हें ऐसा कोई रोग नहीं है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी झुंझलाकर बोली, "यह तो मुझे पहले से ही पता था कि तुम्हारी समझ में कुछ नहीं होगा। इवा को जरा-सी खांसी या और मामूली-सा रोग हो जाता है तो तुम घबरा जाते हो, पर मेरा तुम्हें कभी खयाल तक नहीं होता।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "यदि तुम चाहकर हृदय-रोग को बुलाना चाहती हो तो मैं उसमें बाधा नहीं डालूंगा। तुम्हारी निगाह में अगर यह रोग बड़े आदर की चीज है तो ठीक है; मेरा इसमें क्या नुकसान है?"

मेरी बोली, "तुम्हें विश्वास हो या न हो, मैं पक्के तौर पर कहती हूं कि इधर कई दिनों तक इवा की बीमारी के झंझट में पड़े रहने के कारण मेरा यह रोग बहुत बढ़ गया है।"

सेण्टक्लेयर कुछ नहीं बोला। वह चुरुट में दम लगाने लगा और मन-ही-मन कहने लगा—तुम इवा की बीमारी के झंझट में पड़े रहने की कहती हो? कभी एक दिन भूल से भी तो उसकी खबर नहीं ली!

इसके कुछ देर बाद मिस अफिलिया इवा को साथ लेकर घर लौटी। वह गाड़ी से उतरते ही सीधी अपने कमरे में चली गई। इवा अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गई और गिरजे के उपदेश की चर्चा करने लगी।

तभी मिस अफिलिया के कमरे से बड़ा शोर सुनाई दिया।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "टप्सी ने न जाने आज कौन-सा नया उत्पात खड़ा कर दिया है। बहन बहुत बिगड़ रही है।"

मिस अफिलिया बड़ी गुस्से में भरी टप्सी का गला पकड़कर घसीटती हुई लाई।

सेण्टक्लेयर ने पूछा, "कहो, आज क्या मामला है?"

अफिलिया ने कहा, "यह है कि अब मैं इस आफत से अधिक परेशान नहीं होना चाहती, इसे बरदाश्त करना मेरे बूते से बाहर है। कहीं खेलने भाग जायगी, यह सोचकर इसे भजनों की पुस्तक देकर दरवाजे में ताला लगा गई थी, लेकिन मेरे जाने के बाद इसने मेरी चाबी निकाल ली और मेरे बक्स से रेशमी कपड़े निकाल कर उन्हें काट-कूट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर गुड़ियों के कपड़े बना डाले। मैंने ज़िंदगी में ऐसी पाजी लड़की नहीं देखी।"

फिर सेण्टक्लेयर की ओर तिरस्कृत दृष्टि से देख कर बोली, "अगर मेरा वश चलता तो मैं इसे बाहर निकलवा कर इतने कोड़े लगवाती कि इसको छठी का दूध याद आ जाता।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मुझे जरा भी सन्देह नहीं है। वास्तव में स्त्रियों का शासन बड़ा ही प्रेम-पूर्ण और मृदुल होता है। मैं अपने इस देश में ऐसी दस स्त्रियां भी नहीं देखता कि उनका वश चले तो वे एक घोड़े या एक गुलाम को अधमरा न कर डालें। पुरुषों की मैं क्या कहूं!"

मेरी बोली, "सेण्टक्लेयर, तुम्हारी इस वेढंगी प्रणाली से नौकरों को शिक्षा देने का कोई फल न होगा। दीदी बुद्धिमान स्त्री हैं और वह समझती हैं कि मैंने जो कहा, सो ठीक है या नहीं।"

दूसरी स्त्रियों की भांति अफिलिया को भी कभी-कभी गुस्सा आ जाता था, विशेषत: टप्सी उसे जितना हैरान करती थी, उससे क्रोध आना स्वाभाविक ही था। पर मेरी जब उनकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करने लगी तब उसे लज्जा मालूम हुई और उसका क्रोध कम हो गया। उसने कहा, "नहीं, इस लड़की के साथ ऐसा कठोर वर्ताव करने की मेरी कभी इच्छा नहीं होगी। पर अगस्टिन, मेरी अक्ल काम नहीं करती। इस लड़की का क्या करूं? मैंने इसे बहुतेरा सिखलाया-पढ़ाया, समझाते-समझाते हार गई। हर तरह से सजा देकर भी देख चुकी, पर यह जैसी-की-तैसी बनी हुई है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "टप्सी, इधर आ!"

टप्सी उसके सामने आकर, काली-काली आंखें निकालकर, टुकर-टुकर ताकने लगी। उसकी आंखों से भय और धूर्त्तता टपकती थी।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "क्योंरी टप्सी, तू इतना पाजीपन क्यों करती है?"

टप्सी बोली, "जान पड़ता है, मेरा मन बड़ा खराब है। मिस फीली तो यही कहती हैं।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "तू नहीं देखती कि मिस अफिलिया ने तेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए कितनी परेशानी उठाई है ? वह कहती है कि उसने जो कर सकती थी, सब-कुछ करके देख लिया ।"

"जी हां, पुरानी मालकिन भी यहीं कहा करती थीं। वह मुझे बहुत कोड़े लगाती थीं, मेरे बाल नोच लेती थीं, दरवाजे से मेरा सिर टकरा देती थीं, पर उससे मैं ज़रा भी नहीं सुधरी । मैं समझती हूं, अगर मेरे सिर का बाल-बाल नोच लिया जाय तो भी मेरा कुछ सुधार न होगा । मैं बड़ी पाजी हूं । मैं हबशी के सिवा और कुछ नहीं हूं । कोई उपाय नहीं है ।"

अफिलिया ने उत्तेजित होकर कहा, "अब मैं इसे सुधारने की आशा छोड़े देती हूं । जितना सह चुकी हूं वही बहुत है । अब और क्लेश नहीं सह सकती ।"

सेण्टक्लेयर ने क़हा, "अच्छा, मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं ।"

"क्या ?"

"यही कि जब तुम्हारे धर्मशास्त्र में इतनी भी ताकत नहीं कि अपने पास रखकर एक अज्ञानी बालिका का उद्धार कर सको, तब ऐसे-ऐसे हजारों अज्ञानियों के उद्धार के लिए बेचारे दो-एक पादरियों के इधर-उधर भेजने से क्या मतलब सिद्ध होता है ?"

मिस अफिलिया ने तत्काल इसका उत्तर नहीं दिया । इवा ने, जो वहां चुपचाप खड़ी हुई सब बातें सुन रही थी, टप्सी को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया । फिर वे दोनों पास ही के उस शीशे के कमरे में चली गईं, जिसमें बैठकर सेण्टक्लेयर पढ़ा करते थे ।

उन दोनों के आँख से ओझल हो जाने पर सेण्टक्लेयर ने कहा, "देखना चाहिए, इवा क्या करती है ।"

यहकह कर वह आगे बढ़ा और शीशे पर जो पर्दा पड़ा हुआ था, उसका एक कोना उठाकर झांकने लगा । एक क्षण के बाद उसने अपने होठों पर अंगुली रखकर इशारे से मिस अफिलिया को भी बुलाया । वे दोनों बालिकाएं फर्श पर आमने-सामने बैठी हुई थीं । टप्सी के चेहरे पर उसकी स्वाभाविक बेपरवाही और अन्यमनस्कता का भाव दिखाई दे रहा है, पर इवा की आंखें आंसुओं से भरी थीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा बोली, "टप्सी, तेरा स्वभाव क्यों इतना खराब हो गया ? तू सुधरने की कोशिश क्यों नहीं करती ? टप्सी, क्या तू किसी आदमी को प्यार नहीं करती ?"

टप्सी ने कहा, "मुझे नहीं मालूम, प्यार किस चीज को कहते हैं। मैं चीनी को प्यार करती हूं और ऐसी ही चीजों को, जो मीठी होती हैं।"

"तू अपने बाप-मां को प्यार करती है ?"

"मेरे कोई नहीं है।"

"क्या तुम्हारे कोई नहीं है—भाई, बहन, चाचा, चाची या..."

"नहीं—नहीं, कोई नहीं। मेरे कभी कोई हुआ ही नहीं।"

"पर टप्सी, यदि तू सुधरने की कोशिश करे तो सुधर सकती है।"

"मैं हब्शी के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। अगर मेरी यह काली चमड़ी उतर कर सफेद आ जाय तो मैं सुधरने की कोशिश करूं।"

"टप्सी, काली होने से क्या हुआ, लोग तुझे अब भी प्यार कर सकते हैं। अगर तू अच्छी बन जाय तो मिस अफिलिया तुझे बहुत चाहेंगी।"

यह बात सुनकर टप्सी ने स्वाभाविक रीति से मुंह फाड़ दिया। इसके माने यह थे कि तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं होता।

इवा ने पूछा, "क्या तू इस बात पर विश्वास नहीं करती ?"

"नहीं मुझे देखकर ही उन्हें घृणा आती है, क्योंकि मैं हब्शी हूं। मुझे छूने से वह ऐसा चौंकती हैं, जैसे उन पर कोई मेंढ़क गिर पड़ा हो। कोई भी ऐसा नहीं है, जो हब्शियों को प्यार कर सके, और हब्शी भी कुछ हो नहीं सकते, ऐसे-के-ऐसे ही रहेंगे वे।" (सीटी बजाना आरम्भ करके) उसने कहा : मैं परवा नहीं करती।"

इवा का हृदय द्रवित हो उठा। उसने अपना दुबला सफेद हाथ टप्सी के कन्धे पर रखकर कहा, "टप्सी—अभागी टप्सी, मैं तुझे प्यार करती हूं। मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूं कि तू अनाथ है, तेरे माता-पिता नहीं हैं, न भाई-बहन हैं। मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूं कि तू बड़ी ही दुःखी और सताई हुई है। मैं तुझे प्यार करती हूं और चाहती हूं कि तू भली बन जा। टप्सी, मेरी तबियत बड़ी खराब है। मैं अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक दिन नहीं रहूंगी। तेरा यह हाल देखकर मेरा जी बहुत ही दुखता है। मैं अब बहुत थोड़े दिनों की मेहमान हूं। मैं चाहती हूं कि और न सही, मेरा खयाल करके ही तू सुधरने की कोशिश कर!"

बालिका की आंखें आंसुओं से भर आईं और इवा के हाथ पर टप-टप बड़ी-बड़ी बूंदें गिरने लगीं। उसी क्षण सत्य विश्वास की एक किरण स्वर्गीय प्रेम की एक किरण, उस अज्ञानी अविश्वासपूर्ण बालिका की आत्मा में प्रविष्ट हुई। टप्सी दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर रो रही थी और वह लावण्यमयी बालिका झुक कर स्नेह-भरे नेत्रों से उसे देख रही थी। मानो कोई ज्योतिर्मय देवदूत झुककर किसी पापात्मा का पाप-पंक से उद्धार कर रहा हो।

इवा ने कहा, "टप्सी, क्या तू नहीं जानती कि ईश्वर हम सबको एक बराबर प्यार करते हैं? वह जितना मुझे प्यार करते हैं, उतना ही तुझे भी। वह ठीक वैसे ही तुझे प्यार करते हैं, जैसे मैं करती हूं, बल्कि मुझसे अधिक, क्योंकि वह मुझसे बढ़कर हैं। वह सुधरने में तेरी मदद करेंगे। अन्त में तू स्वर्ग में पहुंच सकती है और सदा के लिए देवदूत हो सकती है। तेरी काली चमड़ी इसमें बाधा नहीं डालेगी। सफेद चमड़ीवालों के लिए जैसे ये सब बातें हैं, वैसे ही तेरे लिए हैं। टप्सी, इन बातों को सोच! टाम काका जिन ऊंची आत्माओं के भजन गाता है, तू भी उन आत्माओं की भांति एक आत्मा हो सकेगी।"

टप्सी ने भरे कण्ठ से कहा, "मिस इवा, प्यारी इवा, मैं कोशिश करूंगी। मैंने पहले कभी इसकी परवा नहीं की थी।"

सेण्टक्लेयर ने पर्दा छोड़कर मिस अफिलिया से कहा, "यह दृश्य देख कर इस समय मुझे अपनी माता की याद आती है। उन्होंने मुझसे ठीक ही कहा था—अगर हम अन्धे को आंख देना चाहते हैं तो हमें ईसा के रास्ते पर चलना पड़ेगा। उन्हें अपने पास बुला लो और अपने हाथ उन पर रक्खो।"

मिस अफिलिया ने कहा, "हब्शियों से मुझे सदा से एक प्रकार की घृणा-सी है, और यह सच्ची बात है कि मैं कभी इस बालिका से अपना शरीर छुआने के लिए तैयार नहीं हो सकती। पर मैंने नहीं सोचा था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वह मेरे मन के भाव को ताड़ती है।"

सेण्टक्लेयर बोला, "ये बच्चे बड़ी जल्दी मन की बात जान लेते हैं। उनसे मन के भाव छिपाना कठिन है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी बालक को यदि तुम मन से घृणा करती हो तो ऊपर से उसके उपकार की चाहे कितनी कोशिश क्यों न करो, उसकी चाहे कितनी भलाई क्यों न करो, वास्तव में जबतक उस पर तुम्हारा स्नेह-भाव न होगा, तब-तक वह तुम्हारा रत्ती-भर भी कृतज्ञ न होगा।"

अफिलिया ने कहा, "समझ में नहीं आता कि मैं इस भाव को कैसे दूर करूं। ये हब्शी मुझे अच्छे नहीं लगते, और खासकर यह लड़की।"

सेण्टक्लेयर बोला, "मालूम होता है, इवा ने इस भाव को दूर कर दिया है।"

अफिलिया ने गद्गद होकर कहा, "हां, वह कैसी प्रेममयी है, मानो प्रेम का अवतार ही है। उसने ईसा की-सी प्रकृति पाई है। मेरी इच्छा होती है कि मैं भी उसकी जैसी होती। इवा से मैं बहुत-कुछ सीख सकती हूं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "हाँ, बड़े हो जाने से ही आदमी सब बातों का पण्डित नहीं बन जाता। बच्चों से भी उसे बहुतेरी बातें सीखने को रह जाती हैं।"

२९ :: इवा की मृत्यु

इस संसार में सच्चा वीर कौन है? जिसने अपनी दृढ़ भुजाओं के प्रताप से अनेक राजाओं का गर्व चूर किया है, सहस्रों नर-नारियों पर आधिपत्य जमाया है, क्या वह सच्चा वीर है? जिसके बल से निर्बल सदा थरथराते, कांपते रहते हैं, जिसकी निर्दयता को स्मरण कर रोमांच हो आता है, क्या वह सच्चा वीर है? नहीं, कभी नहीं! वीर वह है, जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत से ज़रा भी नहीं डरता, सदा सुख-शान्ति से मरने को तैयार रहता है। वीर वह है, जो संसार की भलाई के निमित्त, जन-साधारण के हितार्थ, अपने जीवन का बलिदान करने में ज़रा भी संकोच नहीं करता। सच्चा वीर तो वही है, जो कभी किसी को सताता नहीं, और जगत् में प्रेम का प्रवाह बहाकर मनुष्यों के अदम्य हृदयों को अपने वश में कर सकता है।

इस छोटी नन्हीं बालिका को देखिये। यह अपने रोग की यन्त्रणा से अत्यन्त पीड़ित है, पर इसे अपना दुःख नहीं है। दूसरों का दुःख देख-कर आंसू बहा रही है; दूसरों के दुःख के ध्यान में अपनी पीड़ा भूल गई है। क्या इसके जीवन में सच्ची वीरता के लक्षण नहीं दिखाई देते ?

तीसरे पहर का समय है। इवा अपनी चारपाई पर पड़ी हुई है। सामने उसकी छोटी बाइबिल रक्खी है। उसे कभी खोलती है, कभी बन्द करती है, कभी थोड़ी देर तक पढ़ती है। इसी समय एकाएक उसे बरामदे से अपनी माता की कर्कश आवाज सुनाई देती है :

"क्यों री लड़की, यहाँ खड़ी क्या उत्पात मचा रही है ? बतला, तूने फूल क्यों तोड़े ?" इसी के बाद इवा को एक जोर के तमाचे की आवाज सुनाई दी। फिर उसने टप्सी को बोलते हुए सुना, "मेमसाहब, ये सब मिस इवा के लिए...."

बीच में ही उसे रोकती हुई वह बोली, "मिस इवा का नाम लेकर कैसा बहाना बनाती है ! तू समझती है, वह तेरे फूल चाहती है। तू किसी काम की नहीं है, हब्शिन भाग, यहाँ से !"

शक्ति न रहने पर भी क्षण-भर में इवा अपनी खाट से उठकर बरा-मदे में आ पहुंची। बोली, "आह, माँ, उसे मत भगाओ ! मुझे फूल बड़े अच्छे लगते हैं। ये सब मुझे दे दो। मैं फूल चाहती हूं।"

मेरी ने कहा, "क्यों इवा, तेरा कमरा तो इस समय फूलों से भरा पड़ा है ?"

"मुझे और भी चाहिए। टप्सी, वे सब फूल यहां ले आ।"

टप्सी अबतक हाथ से सिर पकड़े खड़ी थी। इवा की बात सुन-कर उसने धीरे-धीरे जाकर बड़े संकोच से फूल इवा के हाथ में दिये। उसके चेहरे पर अब पहले का-सा निस्संकोच, बेलाग और बेपरवाही का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाव दिखाई नहीं देता था।

इवा ने उन फूलों को देखकर कहा, "बड़ा सुन्दर गुलदस्ता बनाया है।"

वास्तव में टप्सी ने बड़े जतन से भांति-भांति के फूल और पत्तियां चुनकर वह गुलदस्ता बनाया था। इवा की बात सुनकर उसका मुख प्रफुल्लित हो उठा।

इवा ने कहा, "टप्सी, तू बड़े अच्छी तरह से फूल सजाती है। मेरा एक खाली फूलदान पड़ा है। मैं चाहती हूं कि तू इसके लिए फूलों का एक गुलदस्ता रोज बना दिया करे।

मेरी ने तुनुक कर कहा, "बड़ी अनोखी बात है! वह क्या गुलदस्ता बनावेगी?"

इवा बोली, "मां, तुम्हारा इसमें क्या बिगड़ता है? जैसा टप्सी का जी चाहेगा, बना लेगी। तुम उसे रोको मत।"

टप्सी सिर झुकाकर खड़ी रही। फिर जब वह जाने लगी तो इवा ने देखा, उसकी आंखों से आंसू बह रहे हैं।

इवा ने अपनी मां से कहा, "मां, बेचारी टप्सी मेरे लिए कुछ करना चाहती है।"

"करना-धरना क्या चाहती है, वह खाली उत्पात करना चाहती है। वह जानती है कि फूल तोड़ने की मनाही है, इसी से वह तोड़ती है। पर तुम्हें यदि उसका फूल तोड़ना अच्छा लगता है, तो ठीक है।"

"मां, मेरी समझ में टप्सी में पहले से अब बहुत फर्क है, वह सुधरने की बड़ी कोशिश कर रही है।"

मेरी ने उदासीनता से हँसकर कहा, "अभी उसे सुधरने में बहुत देर लगेगी। कोशिश करने से यदि सुधारा जा सकता है तो अभी उसे बहुत दिनों तक सिर खपाना पड़ेगा।"

इवा बोली, "मां, तुम जानती हो कि हर एक चीज हमेशा उसके खिलाफ रही है।"

"नहीं, यहां आने के बाद तो उसके लिए सब-कुछ अनुकूल है। उसे कितना समझाया गया, कितने सदुपदेश दिये गए। आदमी किसीके लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहां तक कर सकता है, किया गया, फिर भी वह जैसी थी वैसी ही है, और वैसी ही रहेगी; तुम उसे सुधार नहीं सकती हो।"

इवा बोली, "मां, हम लोग बड़े स्नेह और यत्न से पलते हैं। हमारे माता-पिता, भाई-बन्धु सब हमको प्यार करते हैं, इसी से हमें भले बनने का मौका रहता है; पर उस बेचारी को बचपन से ही कोई प्यार करने वाला नहीं था। फिर वह कैसे सुधरती ?"

मेरी ने जमुहाई लेते हुए कहा, "यही होगा। जाने दो। देखो, आज कैसी गर्मी है ?"

इवा ने कहा, "मां, क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता कि टप्सी भी कभी भली बन कर स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकती है ?

मेरी हँसकर बोली, "स्वर्गीय प्रकृति ! तुम्हारे सिवा और कोई इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।"

"पर मां, क्या ईश्वर ने उसे नहीं रचा हैं ? हम लोगों की भांति टप्सी भी क्या ईश्वर की सन्तान नहीं है ?"

"हां, यह हो सकता है। मैं मानती हूं कि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को बनाया है। अच्छा, मेरी सूंघनेवाली शीशी कहां है ?"

मां के मुंह से ऐसी बात सुनकर इवा ने अर्ध-स्फुट स्वर से कहा, "ओफ, कैसे दुःख की बात है !"

मेरी ने सुन लिया। बोली, "दुःख की क्या बात है ?"

"मां, ये हब्शी भी अच्छी शिक्षा मिलने से, प्यार का व्यवहार पाने से स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकते हैं। पर ये लोग बाल-बच्चों सहित नरक की ओर जा रहे हैं। नित्य इनका पतन हो रहा है। कोई इनकी सहायता करनेवाला नहीं है।"

"हम लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते। इनकी चिन्ता करके मरना बेकार है। मैं नहीं जानती कि इनके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ? हमें अपने सुख-वैभव के लिए ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए। नाहक औरों की चिन्ता करना व्यर्थ है।"

इवा ने बड़े दुःखी स्वर में कहा, "मैं तो अपने सुख से सन्तुष्ट नहीं रह सकती। मुझे इन दीन-दुखियों की दशा देखकर बड़ी पीड़ा होती है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी व्यंग्य से बोली, "तुम्हारी यह बड़ी अनोखी पीड़ा है। मेरा विश्वास है कि अपने धर्म के अनुसार यही ठीक है कि हम अपने सुख के लिए ईश्वर का उपकार मानें।"

जान पड़ता है, मेरी ने ऐंग्लो-इंडियन संहिता से क्रिश्चियन धर्म की शिक्षा पाई थी, इसी से उसने बाइबिल की दस आज्ञाओं (टेन कमाण्डमेंट्स) पर एकदम हरताल फेर दी थी।

इवा ने अपनी माता से कहा, "मां, मैं अपने सिर के कुछ बाल कटवाना चाहती हूं।"

मेरी ने पूछा "क्यों ?"

"मैं अपने प्रेमियों को इनमें से कुछ बाल अपने हाथ से दे जाना चाहती हूं। क्या तुम बूआ को बुलाकर मेरे बाल नहीं कटवा दोगी ?"

मेरी ने दूसरे कमरे से मिस अफिलिया को पुकार कर बुलाया।

अफिलिया के आने पर इवा ने अपने घुंघराले बालों को हाथ में लेकर उन्हें हिलाते हुए कहा, "बुआ, आओ, भेड़ को मूंड़ दो।"

सेण्टक्लेयर उसी समय इवा के निमित्त कुछ फल लिये हुए कमरे में आया और बोला, "यह क्या हो रहा है ?"

इवा ने कहा "बाबा, मैं बूआ से अपने सिर के बाल कटवा रही हूं—बहुत बढ़ गए हैं। इससे मेरे सिर में गर्मी बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ बाल बांट भी जाना चाहती हूं।"

मिस अफिलिया अपनी कैंची लेकर आई।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "देखना जीजी, बड़ी होशियारी से बाल काटना, बालों की शोभा मत बिगाड़ देना। नीचे-नीचे के जो दिखाई नहीं पड़ते हैं, सो काट दो। इवा के घुंघराले बालों का मुझे अभिमान है।"

इवा ने उदासी से कहा, "यह क्यों ?"

सेण्टक्लेयर बोला, "हां, तुम्हारे बाल उस समय सुन्दर रहने चाहिए, जब मैं तुम्हें अपने साथ लेकर तुम्हारे चाचा के खेत पर हेनरिक को देखने चलूंगा।"

इवा ने कहा, "वहां मैं कभी नहीं जाऊंगी। बाबा, मैं उससे अच्छे देश को जा रही हूं। तुम मेरी बात का विश्वास करो। बाबा, तुम क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखते नहीं हो कि मैं दिन-दिन थकती जा रही हूं।"

सेण्टक्लेयर ने दुःख-भरे स्वर में कहा, "इवा, मुझे दबाकर ऐसी भयंकर बात पर क्यों विश्वास दिलाना चाहती हो?"

इवा बोली, "केवल इसलिए कि यह बात सत्य है, बाबा! यदि तुम इस पर विश्वास कर लोगे, तो शायद इसके सम्बन्ध में मेरी तरह ही अनुभव करोगे।"

सेण्टक्लेयर चुप होकर व्यथित-हृदय से कटे हुए सुन्दर बालों की ओर देखने लगा। बालों का एक-एक गुच्छा उठाकर इवा भी उत्सुकता से देख रही थी और उन्हें अंगुलियों के चारों ओर लपेट रही थी। बीच-बीच में शंकित होकर पिता के मुख की ओर भी देख लेती थी।

मेरी ने कहा, "मुझे जिसका खटका था, अन्त में वही हुआ। जिस सोच में दिन-दिन मेरा शरीर गिरता जाता है, मेरी उम्र कम होती जाती है, वही हुआ। मेरे दुःख-दर्द का कोई साथी नहीं है। सेण्टक्लेयर, बहुत जल्दी तुम देखोगे कि मैं ठीक कहती थी।"

सेण्टक्लेयर ने बड़े तीखे और रूखेपन से कहा, "निस्सन्देह तुम्हें शान्ति मिलेगी।"

मेरी रूमाल से आंखें ढककर लेट गई।

इवा की नीली चमकीली आंखें एक बार पिता पर और फिर माता पर पड़ने लगीं। यह दृष्टि शान्त दृष्टि थी। जीवन्मुक्त आत्मा की गूढ़-दर्शी दृष्टि थी। आज उसे अपने पिता और माता की प्रकृति का पूर्ण अनुभव हुआ। उसने हाथ के इशारे से पिता को अपने पास बुलाया। वह आकर उसके पास बैठ गया।

इवा ने कहा, "बाबा, मेरी शक्ति दिन-पर-दिन कम होती जा रही है, और मैं जानती हूं कि मुझे शीघ्र ही इस संसार को छोड़ना पड़ेगा। कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें मैं तुमसे कहना चाहती हूं और कुछ काम ऐसे हैं, जिन्हें करना मेरा कर्तव्य है। उन्हें करने के लिए भी मैं तुमसे प्रार्थना करने वाली हूं। तुम इस बात से ऐसे नाराज हो कि मुझे एक शब्द भी मुंह से नहीं निकालने देते। पर मेरे जी को ये बातें बहुत खलती हैं। मैं कहे बिना नहीं रह सकती। तुम अब प्रसन्नता से मुझे कहने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञा दो।"

त्रुण्टक्लेयर ने एक हाथ से अपनी आंखें पोंछते हुए और दूसरे से इवा का हाथ पकड़ते हुए कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, जो कहना हो, कहो ।"

इवा वोली, "अच्छा वावा, यदि तुम मेरी वात मानते हो, तो मैं अपने सब नौकरों को अपने पास इकट्ठा देखना चाहती हूं। मुझे उनसे कुछ वातें कहनी हैं।"

सेण्टलेक्यर ने बड़ी सहिष्णुता से कहा, "अच्छा।"

मिस अफिलिया ने सब दास-दासियों को बुला भेजा। थोड़ी देर में सारे दास-दासी उस कमरे में आकर इकट्ठे हो गये।

इवा तकिये के सहारे लेटी हुई थी। उसके खुले वाल मुंह के चारों ओर बिखरे हुए थे। दोनों आंखों में कुछ ललाई आ जाने से दुर्बल शरीर और भी पीला दिखाई दे रहा था। नेत्रों से मानो आत्मा की उज्ज्वल ज्योति निकल रही थी। वालिका एकाग्रता से प्रत्येक दास-दासी का मुख देख रही थी।

दास-दासियों का जी सहसा उमड़ पड़ा। वह ममतापूर्ण कान्तिमय मुख, पास पड़े कतरे हुए लम्बे वाल, सेण्टक्लेयर का शोक-सन्तप्त मुख, मेरी की आह—ये सब बातें उनके कोमल हृदय में घुस गईं। वे सब घोर विषाद से ठण्डी सांस लेने लगे। थोड़ी देर के लिए वहां स्मशान जैसा सन्नाटा छा गया।

इवा ने अपना सिर उठाया और घुमाकर वड़े आग्रह से एक नजर सब पर डाली। सबके मुंह पर उदासीनता और भय की रेखाएं थीं। दासियां कपड़ों से मुंह ढांक-ढांक कर सिसकने लगीं।

इवा ने कहा, "मेरे प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें प्यार करती हूं, इसी लिए मैंने तुम सबको यहां बुलवाया है। तुम सबको मैं हृदय से चाहती हूं। आज मुझे तुम लोगों से कुछ बातें कहनी हैं... मैं चाहती हूं कि तुम लोग सदा उन्हें याद रक्खो, क्योंकि मैं तुम्हें छोड़ रही हूं। अब मैं बहुत ही थोड़े दिनों की मेहमान हूं।"

इतना कहने के बाद सेवकों-सेविकाओं के सुबकने और सर्द आहें भरने से वह कमरा इस तरह भर गया कि उस बालिका की कमजोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाज सुनने की सम्भावना न रही। वह कुछ देर चुप रही, फिर ऐसे स्थिर कण्ठ से बोली कि वे सब शान्त-मौन हो गए। वह कहने लगी :

"यदि तुम लोगों का मुझपर हार्दिक प्रेम है तो तुम्हें मेरे बोलने में विघ्न नहीं डालना चाहिए। मेरी बातें ध्यान से सुनो। मैं तुमसे तुम्हारी आत्माओं के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहती हूं। मुझे दुःख है कि तुममें से बहुतेरे बड़े लापरवाह हैं। तुम लोग केवल इस जगत् की बातें सोचते रहते हो। मैं चाहती हूं कि तुम लोग इस बात को भी ध्यान में रखो कि इस जगत् के अलावा एक और सुन्दर जगत् है, जहां ईसा रहते हैं। मैं वहां जाती हूं, तुम्हें भी वहां जाने का अधिकार है। पर यदि तुम वहां जाना चाहते हो तो तुम्हें अपना आज के जैसा व्यर्थ निरुद्देश्य और आदर्शहीन जीवन नहीं बिताना चाहिए। तुम्हें अपने जीवन में अब कुछ सुधार करना चाहिए। तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुममें से प्रत्येक व्यक्ति दिव्य जीवन का सुख प्राप्त कर सकता है। तुम भले बनने की कोशिश करोगे तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे। ईश्वर सदा भले कामों का सहायक होता है। तुम्हें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए और तुम्हें पढ़ना चाहिए।"

इतना कहने के बाद बालिका कुछ देर को रुकी। वह उन्हें करुण दृष्टि से देखती रही। फिर दुःखित हृदय से बोली, "हाय प्यारे भाइयो, कितने दुःख की बात है कि तुम पढ़ना नहीं जानते ! और इससे तुम्हें कितना दुःख है !"

उसका गला भर आया, उसने तकिये में मुंह छिपा लिया और सिसकने लगी। जिन्हें सुनाकर इवा ये बातें कह रही थी, वे उसे चारों ओर से घेरे खड़े थे। उसको बिलखते देखकर वे सब-के-सब भी रो पड़े।

उन लोगों को इस प्रकार रोते देख इवा ने अपने को संभाला और अपना अश्रुपूर्ण मुख उठाकर उज्ज्वल, मृदुल मुस्कान से बोली, "कोई चिन्ता नहीं....मैंने सदा तुम लोगों के लिए दयालु प्रभु से प्रार्थना की है, और मैं जानती हूं कि तुम्हारे पढ़ना न जानने पर भी तुम्हारा सुधार करने में ईश्वर तुम लोगों की सहायता करेंगे। तुम उस ईश्वर से सहायता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांगो, और अपने सुधार की चेष्टा करो ! तुमसे जब भी बन सके, धर्म-पुस्तक पढ़ो। मुझे आशा है कि मैं तुम सबों को स्वर्ग में देखूंगी।"

इवा की बात समाप्त होने पर टाम, मामी और कुछ पुराने सेवकों ने धीरे-धीरे कहा, "परम पिता की इच्छापूर्ण हो !"

इनमें जो बहुत छोटी उम्र के और चिन्ताहीन थे, उनका हृदय भी इस समय दुःख से भर गया। वे घुटनों में सिर रखकर सिसकने लगे।

इवा ने कहा, "मैं जानती हूं, तुम सब मुझे प्यार करते हो।"

इसके बाद उन सभी के लिए उसने अपनी शुभकामना भेंट की।

इवा बोली, "हां, मैं जानती हूं, खूब जानती हूं, कि तुम सब मुझे प्यार करते हो। तुममें से एक भी ऐसा नहीं, जिसने मुझे अपना हार्दिक स्नेह न दिया हो। मैं चाहती हूं कि तुम्हें कोई ऐसी चीज दे जाऊं कि उसे जब तुम देखो, तभी मुझे याद करो। मैं तुम सबको अपने बालों की एक-एक लट देती हूं। और जब तुम इसे देखो, तो सोचना कि मैं तुम लोगों से प्यार करती थी, मैं स्वर्ग में चली गई हूं और मैं चाहती हूं कि तुम सब को वहां देखूं।"

रोते और सिसकते हुए सब सेवक-सेविकाओं ने उस नन्हीं बालिका के कोमल हाथों से उसके निर्मल प्यार की वह यादगार बड़ी श्रद्धा के साथ अपने हाथों में संभाल ली। उस हृदय-द्रावक दृश्य को कैसे बताया जाय ! कोई रोता हुआ जमीन पर औंधे मुंह पड़ा था, कोई मन-ही-मन दयालु ईश्वर से बालिका के मंगल की प्रार्थना कर रहा था, और कोई उसके कपड़ों का सिरा चूम रहा था। जिसके मन में जैसे आता था, बालिका के लिए अपना शोक और प्रेम दिखलाता था।

जब वे सब लोग प्यार की भेंट-स्वरूप बालों की लटें पा चुके, तब मिस अफिलिया ने यह समझकर कि भीड़ रहने से रोगी को बेचैनी होगी, उन सबको संकेत से बाहर जाने को कहा। सब चले गये। केवल टाम और मामी दो रह गये।

इवा ने कहा, "टामकाका, यह एक सुन्दर गुच्छा मैंने तुम्हारे लिए रख छोड़ा है। यह सोचकर बड़ा ही हर्ष होता है कि मैं तुम्हें स्वर्ग में देखूंगी। मुझे इसका पूर्ण विश्वास है।" फिर स्नेह के साथ अपनी बूढ़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाय मामी से लिपटकर वह बोली, "मामी, तुम बड़ी सीधी और दयालु हो। मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं। मैं जानती हूं कि तुम भी स्वर्ग में पहुंचोगी।"

मामी ने जोर से रोते हुए कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, तेरे बिना मैं कैसे जीऊंगी? तुझे छाती से लगाकर मैं अपनी सन्तान का दुःख भूले हुए थी।"

मिस अफिलिया ने मामी और टाम को धीरे-धीरे वहां से बाहर कर दिया। सोचा कि सब चले गये; पर जैसे ही वह घूमी, उसने देखा कि टप्सी वहां खड़ी थी। मिस अफिलिया ने एकाएक कहा, "तू किधर से आ टपकी?"

टप्सी ने आंखों से आंसू पोंछते हुए कहा, "मैं यहां ही तो थी। मिस इवा, मैं सदा से बुरी लड़की हूं; पर क्या आप मुझे भी अपने बालों की एक लट नहीं देंगी?"

इवा बोली, "हां, टप्सी, तुझे जरूर दूंगी। यह ले, तू जब भी इन बालों को देखे, तब-तब अपने मन में यही सोचना कि मैं भी तुझे बहुत चाहती थी और मेरी इच्छा थी कि तू भली लड़की बन जाय।"

टप्सी ने रुद्ध कण्ठ से कहा, "मिस इवा, मैं भली बनने की बराबर कोशिश कर रही हूं। पर भला बनना बड़ा कठिन काम है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसमें किसकी मदद लूं।"

इवा ने कहा, "इसे ईश्वर जानते हैं, टप्सी, वे तुझे प्यार करते हैं, वे ही तेरी सहायता करेंगे।"

टप्सी रोते-रोते चुपचाप वहां से चली गई। बालों के गुच्छे को उसने अपनी छाती में आदर से छिपा लिया।

सब के चले जाने पर मिस अफिलिया ने किवाड़ बन्द कर लिये। जब ये सारी बातें हो रही थीं, तब मिस अफिलिया की आंखों से भी लगातार आंसुओं की धारा बह रही थी, पर वह बुद्धिमती रमणी अपने शोक को रोककर रोगी को आराम पहुंचाने की चिन्ता कर रही थी और चारों ओर के इस शोक-प्रदर्शन से कहीं रोगी का कष्ट बढ़ न जाय, इस डर से वह स्वयं चुप बैठी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर भी एक हाथ से आंखें ढांपे चुपचाप लड़की के पास बैठा था। सब के चले जाने पर भी वह उसी तरह बैठा रहा।

इवा ने पिता के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा, "बाबा !"

सेण्टक्लेयर सहसा चौंक उठा। उसका सारा शरीर रोमांचित हो गया, लेकिन वह कुछ बोला नहीं।

इवा ने फिर पुकारा, "बाबा !" ...

सेण्टक्लेयर ने तीव्र यन्त्रणा से छटपटाते हुए कहा, "अब नहीं सहा जाता—विधाता मुझ पर बड़ा निर्दयी है।..."

मिस अफिलिया ने कहा, "वह ईश्वर की चीज है—उसकी इच्छा है कि इसका जो चाहे, करे।"

"शायद ऐसा ही हो, लेकिन इससे कष्ट सहना कुछ सहज तो नहीं होता।" बड़े सूखे और भारी स्वर से सेण्टक्लेयर ने यह बात कहकर मुंह फेर लिया। उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे। इवा ने उठकर पिता की गोद में अपना सिर रखते हुए कहा, बाबा, तुम्हारी बातें सुन कर मेरा हृदय फटा जाता है ! तुम इतना दुःख मत करो।" और वह फफक उठी।

इवा को रोते देखकर पिता को बड़ा भय हुआ। उसकी चिंता-धारा दूसरी ही ओर वह चली।

सेण्टक्लेयर ने कहा, 'मेरी बेटी इवा, अब शान्त हो जा। मुझे भ्रान्ति हो गई थी, मैंने अन्याय किया है। तुम जो सोचने या करने को कहोगी, मैं वही सोचूंगा और वही करूंगा। तुम मेरे लिए दुःख मत करो। मैं ईश्वर को आत्मसमर्पण करूंगा। ईश्वर को दोष देकर मैंने बड़ा अन्याय किया है। अब फिर ऐसी बात मुंह से नहीं निकालूंगा।"

इवा बहुत थकी-सी होकर अपने पिता की गोद में पड़ी रही और वह उसे प्यारे-प्यारे शब्दों से सान्त्वना देने लगा।

मेरी वहां से उठकर अपने सोने के कमरे में चली गई। वहां उसे बार-बार मूर्च्छा आने लगी।

इवा के पिता ने विषाद से मुस्कराकर कहा, "इवा बेटी, मुझे तो तुमने अपने बालों की एक भी लट नहीं दी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा ने हँस कर कहा, "बाबा, तुम्हारे तो सभी हैं। तुम्हारे और मां के ही हैं। हां, बूआ जितनी लटें चाहें, उन्हें तुम दे देना। मैंने तो बस अपने दास-दासियों को अपने हाथ से दिये हैं, क्योंकि बाबा, तुम जानते हो, मेरे चले जाने के बाद उन्हें शायद कोई न देता····और मुझे आशा है कि इन बालों को देख कर वे मेरी याद जरूर करेंगे।····

बाबा, तुम क्रिश्चियन हो या नहीं ?" इवा ने कुछ सन्देह से पूछा।

सेण्टक्लेयर ने जवाब दिया, "तुम ऐसा क्यों पूछती हो ?"

इवा ने कहा, "तुम ऐसे भलेमानस होकर भी क्रिश्चियन नहीं हो, इस पर मुझे आश्चर्य है।"

सेण्टक्लेयर ने पूछा, "क्रिश्चियन के क्या गुण होते हैं, इवा ?"

इवा बोली, "जो क्राइस्ट को सब चीजों से अधिक प्यार करे।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "क्या तुम ऐसा करती हो, बेटी ?"

इवा बोली, "निस्सन्देह !"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "तुमने तो कभी उसे देखा भी नहीं...।"

इवा ने उत्तर दिया, "नहीं, देखने से क्या बनता-बिगड़ता है ! मेरा उस पर विश्वास है, और कुछ दिनों में उसे मैं देख लूंगी।"

यह कहते-कहते इवा का मुख एक दिव्य आनन्द से खिल उठा। सेण्टक्लेयर ने फिर कुछ नहीं कहा। यह भाव उसने पहले अपनी माता में देखा था, पर स्वयं उसके हृदय में कोई ऐसा भाव नहीं था।

इसके बाद इवा का रोग दिन-दिन बढ़ता ही गया। अब उसके जीने की कोई आशा न रही।

मिस अफिलिया दिन-रात सिरहाने बैठी उसकी सेवा-शुश्रूषा करती थी। इस विपत्ति के समय उसकी असाधारण धीरता, बुद्धिमत्ता और शुश्रूषा में तत्परता को देखकर कोई भी उसे मन-ही-मन सराहे बिना नहीं रह सकता था।

टाम अधिकतर इवा के कमरे में रहता था। वह कभी इवा को गोद में उठाकर बरामदे में टहलाता, कभी सवेरे की साफ ताजा हवा में घुमाने के लिए उसे बाग में ले जाता और कभी किसी पेड़ की छाया में बैठ कर पहले की तरह इवा को उत्तम भक्ति के भजन सुनाता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवा का पिता भी प्रायः उसे गोद में लेकर घुमाता था, पर उसका शरीर विशेष सबल न होने के कारण वह जल्दी थक जाता था। तब इवा कहती, "बाबा, मुझे टाम की गोद में दे दो। वह मुझे गोद में लेना चाहता है, मेरे लिए कुछ भी करने में वह बड़ा प्रसन्न होता है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "बेटी, ऐसा ही मैं भी अनुभव करता हूं।"

इवा की सेवा करने की इच्छा केवल टाम ही को नहीं रहती थी, बल्कि घर के सभी सेवक उसके लिए हृदय से कुछ करना चाहते थे और उन बेचारों से जो-कुछ हो सकता था, करते भी थे।

इवा की सेवा करने के लिए मामी बहुत छटपटाती थी, पर उसे कोई अवसर ही नहीं मिलता था, क्योंकि दिन-रात मेरी उसे अपनी ही टहल-चाकरी से फुर्सत नहीं होने देती थी। मेरी कहती कि कन्या की पीड़ा के कारण उसका मन बड़ा बेचैन हो गया है। उसकी यंत्रणा के मारे कोई चैन नहीं लेने पाता था। रात को भी मामी को कम-से-कम बीस बार जगा कर तंग करती थी --कभी पैर दबवाती, कभी सिर पर पानी डलवाती; कभी रूमाल ढुंढवाती। कभी कहती—जा, देखकर आ, इवा के कमरे में कैसा शोर हो रहा है। कभी कहती—रोशनी आ रही है, परदा डाल दे। कभी कहती –अंधेरा है, परदा उठा दे। वह दिन में भी मामी को, इवा के कमरे के अलावा इधर-उधर चारों ओर दौड़ाती ही रहती थी। इससे मामी कभी-कभी छिपकर पल-भर के लिए इवा को देख आती थी।

एक दिन मेरी ने कहा, "इस समय अपने शरीर के विषय में विशेष सावधान रहना मैं अपना कर्तव्य समझती हूं। एक तो योंही कमज़ोर हूं, उस पर इवा की सेवा-शुश्रूषा और सार-संभाल का सारा बोझ मुझपर है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "अच्छा, क्या सचमुच ऐसा है? मैं तो समझता था कि बहन ने तुम्हें इससे छुट्टी दे रखी है।"

मेरी बोली, "ठीक है, तुम मर्द हो, अतः मर्दों की-सी बातें करते हो। तुम्हें पता ही नहीं कि संतान की पीड़ा माता के मन पर कैसा असर डालती है। भला ऐसी दशा में मां का मन कैसे बेफिक्र हो सकता है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाय, मेरे मन की दशा कोई नहीं समझता। सेण्टक्लेयर, मैं तुम्हारी तरह बेपरवाह बनकर नहीं रह सकती।"

सेण्टक्लेयर को मेरी की बात पर हंसी आ गई। इस दुःख के अवसर पर भी हँसी आने से सेण्टक्लेयर को निर्दयी न समझा जाय। ऐसी उज्ज्वल शक्ति की लहरों में उसकी आत्मा की परलोक-यात्रा आरम्भ हुई थी। ऐसी शीतल-मंद-सुगंध वायु के झोंके खाती हुई वह जीवन की क्षुद्र नौका स्वर्ग की ओर जा रही थी कि इस बात का ध्यान तक न आता था कि यह सब उसकी मौत के सामान हैं। बालिका को कोई विशेष शारीरिक यंत्रणा न थी। अदृष्ट रीति से शनैः-शनैः उसकी निर्बलता बढ़ती जाती थी। शान्ति और पवित्रता की एक मधुर लहर बालिका के चारों ओर उछालें ले रही थी। उसके मुख की वह सात्त्विक ज्योति, हृदय की वह गम्भीर स्नेह-राशि, आत्मा का वह जीवित विश्वास और प्राणों की वह स्थिर प्रफुल्लता देखकर किसी के भी हृदय में एक अद्भुत और नवीन शांति का विकास हो सकता था। यह शांति ईश्वर-निर्भरता के भाव से उत्पन्न शान्ति न थी, तो क्या आशा थी? असम्भव! यह भूत-भविष्य से सर्वथा निराली, वर्तमान की एक शान्तिमय अवस्था थी। यह शान्ति सेण्टक्लेयर के मन को ऐसी सांत्वना देती कि अब उसे भयावह भविष्य को सोचने की इच्छा ही न होती।

अपनी आसन्न मृत्यु के सम्बन्ध में इवा के हृदय में जो पूर्वाभास था, उसे उसके विश्वासी परिचारक टाम के सिवा और कोई न जानता था! पिता का हृदय दुखने के डर से इवा उससे अपनी दशा छिपाती थी, पर टाम से वह अपनी कोई बात कहने में संकोच नहीं करती थी। मृत्यु के कुछ ही पूर्व जब शरीर से आत्मा का बंधन ढीला पड़ने लगता है तब हृदय को आप-ही-आप मौत के पैरों की आहट मिल जाती है। इवा ने जब जान लिया कि मृत्यु बहुत निकट आ गई है तब उसने टाम को यह बात बताई। उसी दिन से टाम ने अपनी कोठरी में सोना छोड़ दिया। अब वह इवा के कमरे से लगे बरामदे में लेटा रहता था, जिससे कोई जरूरी काम हो तो वह तुरन्त वहां पहुंच सके।

मिस अफिलिया ने एक दिन उससे कहा, "टाम, तुम कुत्ते की तरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इधर-उधर क्या पड़े रहते हो ? मैं तो समझती थी कि तुम सभ्य आदमी की भांति अपनी कोठरी में सोते होगे ।"

टाम बोला, "हां, मैं हमेशा अपने कमरे में ही सोया करता हूं, पर अब..."

अफिलिया ने कहा, "अब क्या ?"

टाम ने उत्तर दिया, "जी, ज़रा धीरे बोलिये, कहीं सेण्टक्लेयर-साहब न सुन लें। आप जानती हैं कि दुलहे की खबर रखने के लिए किसी को जागना चाहिए ।"

अफिलिया ने कहा, "तुम्हारे कहने का क्या मतलब है ?"

टाम बोला, "आप जानती हैं,बाइबिल में लिखा है, आधी रात के समय वहां बड़ा शोर-गुल हुआ---देखो, दुलहा आ पहुंचा । मिस फीली, मैं हर रात को उसी की बाट देखा करता हूं । मैं यहां से हटकर नहीं सो सकता ।"

अफिलिया ने कहा, "क्यों टाम काका, तुम ऐसा क्यों सोचते हो ?"

टाम ने जवाब दिया, "मिस इवा मुझसे बहुत-सी बातें कहती हैं । आत्मा के पास परमात्मा अपना दूत भेजते हैं । मिस फीली, यह पवित्र बालिका जब स्वर्ग में जाने लगेगी तब स्वर्ग के द्वार खुल जायंगे, हम सब लोग स्वर्ग की उज्ज्वल प्रभा का दर्शन पाकर कृतार्थ होंगे । मैं उस समय उसके पास ही रहना चाहता हूं ।"

अफिलिया बोली, "टाम काका, क्या मिस इवा ने तुमसे कहा है कि और दिनों के बजाय आज उसे अधिक तकलीफ़ है ?"

टाम ने कहा, "नहीं, पर आज सवेरे उन्होंने मुझसे यह कहा कि मैं परलोक के बहुत पास पहुंच गई हूं, देवदूत उन्हें सन्देशा सुना गये हैं ।"

रात के कोई दस बजे होंगे। उस समय मिस अफ़िलिया और टाम के बीच ये बातें हुईं । मिस अफिलिया बाहर का दरवाजा बन्द करने आई थी ।

मिस अफिलिया घबराने वाली स्त्री न थी । सहज में उसका मन अधीर होनेवाला न था। पर टाम की गम्भीर विश्वासपूर्ण बात सुन कर वह बड़ी घबराई । और दिनों के बजाय उस दिन शाम से ही इवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक प्रसन्न और स्वस्थ दीख पड़ती थी। वह बिछौने पर बैठी सोच रही थी कि अपने गहने किसे देगी तथा अपनी पसन्द की और-और चीजें किसे देगी। उस दिन बहुत दिनों के बाद इवा के शरीर में थोड़ी-सी फुर्ती दीख रही थी

उस दिन शाम को कमरे में आने पर सेण्टक्लेयर ने उसे और दिनों से स्वस्थ और सबल देखकर कहा, "इवा, आज बहुत अच्छी जान पड़ती है। बीमारी के बाद ऐसी प्रसन्न वह किसी दिन नहीं दिखाई दी थी।"

फिर रात को सोने के लिए जाते समय सेण्टक्लेयर ने मिस अफिलिया से कहा, "बहन, ईश्वर की कृपा से आज इवा और दिनोंसे काफी अच्छी जान पड़ती है। आशा है, जल्दी ही ठीक हो जायगी।" इतना कहकर सेण्टक्लेयर अपने कमरे में जाकर बेफिक्री की नींद सो गया।

आधी रात हुई। सब सो रहे थे, पर अफिलिया की आंखों में नींद का नाम न था। वह बड़ी एकाग्रता से इवा के मुंह को निहार रही थी। पल-पल बदलता मुख का भाव देख रही थी। एकाएक इवा के चेहरे का भाव ऐसा बदला, मानो उसे लेने को स्वर्ग-दूत आ पहुंचे हों। यह अवस्था देखते ही मिस अफिलिया तत्काल दरवाज़ा खोल कर बाहर आई। टाम बाहर बैठा था। रात को उसने पल-भर के लिए भी आंखें बंद नहीं की थीं। अफिलिया ने उसे देखते ही कहा, "टाम, जल्दी से डाक्टर को लाओ।"

टाम उधर डाक्टर के यहां गया, इधर मिस अफिलिया ने आकर सेण्टक्लेयर के दरवाजे की कुण्डी हिलाई।

उसने कहा, "भैया, जल्दी बाहर आओ।"

इन शब्दों के कान में पड़ते ही सेण्टक्लेयर को अपना दिल बैठता-सा मालूम हुआ। उसने समझ लिया कि सर्वनाश की घड़ी आ पहुंची। वह झटपट इवांजेलिन के कमरे में पहुंचा। वहां जाकर देखा तो इवांजेलिन के मुंह पर दुःख की कोई रेखा नहीं थी। सदा का-सा एकाग्र तथा मधुर भाव बालिका के मुख पर विराज रहा था। तब क्यों ऐसा लगा कि आज इवा की घड़ियां पूरी हो गई हैं? उसके शरीर में एकदम सुस्ती दौड़ गई थी, हाथ-पैर बर्फ के जैसे ठण्डे हो गये थे। बस मुख-कमल,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आध्यात्मिक ज्योति के कारण, ज्यों-का-त्यों खिला हुआ था, तनिक भी नहीं मुरझाया था।

टाम जल्दी ही डाक्टर को लेकर पहुंच गया। डाक्टर ने मिस अफिलिया से पूछा, "यह हालत कब से है ?"

अफिलिया ने जवाब दिया, "आधी रात के बाद से।"

सारे घर में शोर मच गया। सब लोग जाग उठे। दरामदे में भीड़ लग गई। घर में दौड़-धूप की आवाजें सुनाई देने लगीं, परन्तु सेण्टक्लेयर ने किसी न कुछ कहा, न सुना। वह चुपचाप एकटक निद्रित बालिका के मुंह की ओर ही ताकता रहा।

थोड़ी देर के बाद आप-ही-आप बोला, "बेटी, एकबार जाग पड़ती.... मैं एक बार और इस मुख की मधुर वाणी सुन लेता...."

यह कहकर उसने इवा के कान के पास मुंह ले जाकर कहा, "बेटी इवा !"

ये शब्द सुनकर उन दोनों सुधावर्षी सुदीर्घ नेत्रों का पर्दा हट गया। उसने सिर उठाकर बोलने की चेष्टा की, पर शरीर बेदम था।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "इवा, तू मुझे पहचानती है ?"

बालिका ने अस्फुट स्वर से कहा, "बाबा।"

बड़े कष्ट से उसने अपनी छोटी-छोटी भुजाएं उठा कर पिता के गले में डाल दीं। देखते-ही-देखते वे दोनों कोमल हाथ लटक गये। पल भर के लिए उसके चेहरे का भाव बदला। बस, यह अंतिम घड़ी थी। आत्मा देह को छोड़ कर जाने की तैयारी में थी।...इवा के मुख-कमल पर पल भर के लिए यन्त्रणा के चिह्न देखकर सेण्टक्लेयर का धीरज जाता रहा। उसे कष्ट से सांस लेते देखकर बोल उठा, "अरे टाम, यह सब सहा नहीं जाता....मेरे प्राण इवा का कोई भी दुःख नहीं सह सकते !....मेरी जान गई....तुम प्रार्थना करो, जिससे यह घड़ी टल जाय।"

टाम की आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी। अपने मालिक की यह दयनीय दशा देखकर वह आकाश की ओर मुंह करके परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा। विश्वास और भक्ति में भी कैसी अद्भुत शक्ति होती है ! टाम की प्रार्थना सुनी गई, पल-भर में इवा की वह यन्त्रणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर हो गई। टाम बोल उठा, "धन्य भगवन्! धन्य पिता! सारी यन्त्रणाओं का अन्त समय आ गया है!"

बालिका के वे दोनों सुदीर्घ नेत्र स्वर्ग की ओर देख रहे थे, मानो वह विशाल और स्थिर दृष्टि से पुकार कर कह रही थी, "संसार के सारे दुःख दूर हो गये।"

सेण्टक्लेयर ने धीरे से कहा, "इवा!"

किन्तु उसने नहीं सुना।

फिर उसके पिता ने कहा, "बेटी, तुम क्या देख रही हो?"

वह मुख कमल मधुर हास्य से जैसे खिल उठा। बालिका ने अस्फुट स्वर से कहा, "अहा, प्रेम—आनन्द—शान्ति!" और उसके बाद देह जीवन-शून्य हो गई। आत्मा ने मृत्यु को पार करके अमरत्व प्राप्त कर लिया। निर्मल-प्रकृति देव-बाला ने पाप और अत्याचारपूर्ण संसार से कूच कर भगवान की गोद में सहारा ले लिया।

३० : : मृत्यु के उपरान्त

इवांजेलिन की निर्मल आत्मा मंगलमय के मंगल-धाम को चली गई। जीवन से शून्य शरीर घर में पड़ा हुआ है। उसके शयनागार में रखी पत्थर की मूर्तियों और चित्र आदि को सफ़ेद वस्त्रों से ढक दिया गया है। घर में गहरा सन्नाटा है। बीच-बीच में पैरों की मंद-मंद आहट सुनाई पड़ जाती है। बंद खिड़कियों से बाहर की धुंधली रोशनी अन्दर आकर घर के सन्नाटे को और भी बढ़ा रही है।

बिस्तर सफ़ेद चादर से ढका पड़ा है और उसी पर वह नन्हीं सोयी हुई है—ऐसी नींद में, जो कभी खुलने की नहीं।

बालिका की देह लतिका पहले की तरह श्वेत वस्त्रों में लिपटी हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। उषा की किरणें यवनिका को पार करके मृत्यु के पंजे में पड़े, शीत से जड़, शरीर पर प्रभा बिखेर रही हैं। सिर एक ओर को झुका हुआ है, मानो बालिका सचमुच सो रही हो। समग्र आनन्द-व्यापिनी शोभा, आनन्द और शान्ति की अपूर्व सम्मिलन-श्री देखने से ही पता लगता है कि यह नींद क्षणिक नहीं है। यह लम्बी नींद, आत्मा का अनन्त-पवित्र विश्राम है।

इवा, तुम-सरीखी देवियों की मृत्यु नहीं होती, न मृत्यु की छाया है और न अन्धकार। जिस प्रकार प्रातःकाल के प्रकाश में शुक्र तारा छिप जाता है, उसी प्रकार तुम लोगों की आंखों से ओझल हो गई हो। बिना युद्ध किये ही तुमने गढ़ जीत लिया है, बिना विरोध के राजमुकुट प्राप्त कर लिया है।

सेण्टक्लेयर शय्या के पास खड़ा हुआ एकटक उसकी ओर देख रहा है, मानो वह किसी विचार में मग्न होकर कुछ सोच रहा हो, पर कौन जाने, क्या सोच रहा है····उसे चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार दिखाई देता है।

रुडाल्फ और रोज़ा, दोनों मृत बालिका के कमरे और शय्या को भांति-भांति के फूलों से सजा रहे हैं। उनकी आंखों से आंसुओं की धार बह रही है।

कमरे में अब भी पहले दिन के फूलों के ढेर पड़े हैं। इवा की मेजपर यत्नपूर्वक सजाये गुलदस्ते में केवल एक गुलाब की कली है। तभी रोजा एक डलिया-भर फूल लेकर घर में आई, किन्तु सेण्टक्लेयर को सामने देखकर सम्मान से पीछे हट गई। सेण्टक्लेयर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, यह देखकर वह फिर आगे बढ़ी और मृत देह के चारों ओर फूलों को बड़ी सुघड़ता से सजा दिया। बालिका के सुन्दर हाथ में एक सुगंधित पुष्प देकर वह चली गई। सेण्टक्लेयर ऐसे देखता रहा, मानो कोई स्वप्न देख रहा हो।

इतने में टप्सी अपने अंचल में एक फूल छिपाये हुए वहां आई। रोते-रोते उसकी दोनों आंखें सूज गई थीं। उसे देखते ही रोजा ने चुपके से कहा, "भाग-भाग, यहां तेरा क्या काम!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टप्सी ने अंचल से एक अधखिला गुलाब का फूल निकालकर कातरता से कहा, "देखो मैं यह कैसा सुन्दर फूल लाई हूं !....मुझे जाने दो....मैं इसे वहां रखूंगी ।"

रोज़ा ने दृढ़ता से कहा, "भाग जा !"

सहसा सेण्टक्लेयर ने टोककर कहा, "उसे मत रोको, आने दो !"

रोज़ा पीछे हट गई। टप्सी ने धीरे-धीरे विस्तर के पास आकर वह फूल उसके पैरों पर रख दिया और धरती पर लोट कर जोर-जोर से रोने-चीखने लगी । मिस अफिलिया वहां गई और उसे उठाकर समझाने की चेष्टा करने लगी, पर उसको सफलता न मिली । टप्सी रो-रो कर कहती थी, "मिस इवा, मिस इवा, मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूं ।.. मुझे भी ले चलो ।"

बालिका का मर्म-भेदी क्रन्दन सुनकर सेण्टक्लेयर का पथराया हुआ सफ़ेद चेहरा एकदम सुर्ख हो गया । इवा की मृत्यु के बाद अब उसकी आंखों से आंसू गिरे ।

मिस अफिलिया ने बड़े स्नेह से कहा, "टप्सी, रो मत । मिस इवा स्वर्ग में गई है ।"

टप्सी ने सिसकते हुए कहा, "मुझे तो वह नहीं दिखाई पड़ती हैं ।....अब मुझे वह कभी नहीं दिखाई पड़ेगी ।"

पल भर के लिए सब चुप हो गये ।

टप्सी ने फिर कहा, "मिस इवा मुझे प्यार करती थीं । उन्होंने स्वयं कहा था कि वह मुझे प्यार करती हैं । हाय, अब तो मेरा कोई भी नहीं रहा ! अब मुझे कौन प्यार करेगा ?"

सेण्टक्लेयर ने ठण्डी सांस लेकर मिस अफिलिया से कहा, "बहन, इवा टप्सी को सचमुच प्यार करती थी । तुम इस बेचारी बालिका को समझा कर शान्त करो ।"

मिल अफिलिया अश्रु-पूर्ण नेत्रों से टप्सी को घर से बाहर ले गई और उससे कहने लगी, "टप्सी, तू दुःखी मत हो, मैं तुझसे प्यार करूंगी । इवा ने मुझे प्यार करना सिखाया है । मैं उसके-जैसे दिल की तो नहीं हूं, तो भी तुझे प्यार करूंगी, तुझे प्यार की निगाह से देखूंगी, अच्छी सीख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूंगी और अच्छे रास्ते पर लाने की चेष्टा करूंगी।"

मिस अफिलिया को सरलता और स्नेह से यों बोलते देखकर आज टप्सी का हृदय उसकी ओर खिंच गया। वास्तव में स्नेह की पहचान बहुत जल्दी हो जाती है। निश्छल प्रेम और सहज स्नेह के प्रभाव से पत्थर का हृदय भी मोम हो जाता है। टप्सी का परिवर्तन देखकर सेण्टक्लेयर अपने-आप कहने लगा, "हा, मेरी इवा! इस संसार में बहुत थोड़े दिन ही रह कर तूने कितना अच्छा काम कर दिखाया! पत्थर-से दिल को कोमल बना दिया। पर मैंने अपनी इतनी बड़ी जिन्दगी बेकार ही गंवाई, कुछ भी नहीं किया! मैं ईश्वर के सामने ऐसे जीवन के लिए क्या जवाब दूंगा?"

दिन अच्छी तरह चढ़ आया। चारों ओर से आत्मीय जन आये, पड़ोसी आये, सारा घर भर गया। मधुर प्रतिमा इवान्जेलिन की देह ताबूत में रखकर उसका मुंह बन्द किया गया। बगीचे में जहां बैठ कर इवा और टाम बाइबिल पढ़ा करते थे, वहां उस ताबूत को दफन कर दिया गया। सेण्टक्लेयर खड़ा देखने लगा। वह सोचता था, यह स्वप्न है या सच्ची घटना! क्या सचमुच आज मेरी प्राणाधार इवा धरती में समा गई! नहीं, वह देवकन्या धरती में नहीं समाई। यह तो उसकी काया थी, पुराना कपड़ा था। आज इवा ने पुराना चोला त्याग कर नये चोले में स्वर्ग को कूच किया है। कौन है, जो उसका अमरत्व मिटा सके? इवा मर नहीं सकती। अन्तिम क्रिया पूरी हुई।

इवा की जननी मेरी विलाप करने लगी। घर के सारे दास-दासियों को असह्य शोक हुआ था, पर उन्हें अपने शोक में रोने-पीटने की फुरसत ही नहीं मिलती थी। मेरी सबका नाकों दम किये रहती थी। शायद वह समझती थी कि संसार में दुःख, शोक तथा प्यार और किसी के हृदय में प्रवेश नहीं कर सकता। यह सब केवल उसी की बपौती है। जब-तब मेरी कहा करती थी कि उसके स्वामी की आंखों से एक बूंद आंसू तक तो गिरा ही नहीं। वह एक बार भी उसे धीरज बंधाने नहीं आया। उसने एक बार भी उसके इस शोक में सहानुभूति प्रकट नहीं की, उसके स्वामी-जैसा कठोर हृदय आदमी इस संसार में दूसरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है।

कभी-कभी ये आंखें और कान मनुष्य को बड़ा धोखा देते हैं। ये दोनों इन्द्रियां केवल बाहरी चीजों को देखती हैं। अन्तःकरण का गूढ़ भाव नहीं देख पातीं। इसलिए जो लोग केवल बाहरी बातों पर दृष्टि डाल कर भले-बुरे का फ़ैसला कर लेते हैं, वे सहज में धोखा खा जाते हैं। मेरी का यह बाहरी रुदन सुन कर टाम और अफिलिया के सिवा सेण्टक्लेयर के घर के कई दास-दासी समझते थे कि इवा की मृत्यु का मेरी को ही सबसे अधिक दुःख है। सेण्टक्लेयर के हृदय के गहरे शोक को टाम सहज में जान गया। इसी से वह इवा की मृत्यु के उपरान्त कभी अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ता था। कभी-कभी वह बड़े उदास भाव से इवा के कमरे में बैठता, उसकी छोटी बाइबिल को उठा कर खोलता और फिर बन्द करता। यद्यपि उसमें से वह कुछ भी पढ़ता नहीं था, तथापि उस समय उसके हृदय में जैसी विकट यन्त्रणा होती थी, इसे टाम के सिवा और कोई नहीं समझ सकता था। ऐसे निःशब्द आन्तरिक शोक से हृदय जितना जलता था, उसका शतांश भी मेरी की बाहरी चिल्लाहट से नहीं जलता था।

कुछ दिनों बाद सेण्टक्लेयर अपने बाग़ वाले घर को छोड़ कर परिवार-सहित नगर वाले मकान में आ गया। अपने हृदय की असह्य शोक-यन्त्रणा को घटाने के लिए वह हर समय किसी-न-किसी काम में लगा रहता। वह पहले की भांति सब से हँसता-बोलता था। यदि वह शोक-चिह्न धारण न किये होता तो कोई जान भी नहीं सकता था कि उसकी सन्तान की मृत्यु हो गई है।

एक दिन मिस अफिलिया से मेरी ने शिकायत के ढंग से कहा, "बहन, सेण्टक्लेयर भी क्या अजीब आदमी है! मैं समझा करती थी कि संसार में यदि सेण्टक्लेयर किसी को सब से अधिक प्यार करते हैं तो बस इवा को; पर वह उसे भी बड़ी जल्दी भूल गये जान पड़ते हैं। कभी भूल कर भी उसका नाम नहीं लेते। मैंने सोचा था कि उन्हें इसका बहुत दुःख होगा, पर मेरा यह ख़याल ग़लत निकला।"

अफिलिया बोली, "बात यह है कि अथाह जल अन्दर-ही-अन्दर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोरों से बहा करता है।"

मेरी ने प्रतिवाद किया, मैं इन बातों को नहीं मानती। ये सब कोरी बातें-ही-बातें हैं। यदि मनुष्य के मन में दुःख होगा तो वह उसे अवश्य प्रकट करेगा। बिना प्रकट किये रहा ही नहीं जायगा। पर मनुष्य के मन में किसी बात के लिए दुःख होना दुर्भाग्य की निशानी है। भगवान ने यदि मुझे भी सेण्टक्लेयर की भांति निर्दयी बनाया होता तो मैं क्यों दुःख सहती। मुझमें थोड़ी ममता है, यही मेरीं जान लिये लेती है।"

मामी ने कहा, "मेमसाहब, आप यह क्या कहती हैं ! बेचारे साहब दिन-ब-दिन शोक में सूखे जा रहे हैं। इवा की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने किसी दिन पेट-भर भोजन नहीं किया।" फिर उसने आंसू बहाते हुए कहा, "मैं जानती हूं कि साहब मिस इवा को कभी भूल नहीं सकते; साहब ही क्या, उस नन्हीं प्यारी बालिका को कोई भी नहीं भूल सकता।"

मेरी बोली, "यह सब होने पर भी वह मेरा कभी खयाल नहीं करते। उन्होंने मुझसे कभी सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं कहा। वे यह बात नहीं जानते कि पिता की अपेक्षा मां को सन्तान का कितना अधिक दुःख होता है !"

मिस अफिलिया ने गम्भीरता से कहा, "हर एक का हृदय ही अपने-अपने दुःख को जानता है। दूसरे के दुःख को और कोई क्या समझेगा ?"

मेरी बोली, "मैं भी यही समझती हूं। मुझे जितना दुःख है, उसे दूसरा कौन समझेगा ? इवा समझती थी, सो चली गई।" इतना कह कर वह अपने पलंग पर लेट गई और बड़ी बेसब्री से सिसकने लगी।

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर सेण्टक्लेयर की लाइब्रेरी के कमरे में और चर्चा चल रही थी। पहले कहा जा चुका है कि इवा की मृत्यु के बाद टाम सदा अपने मालिक के पीछे-पीछे लगा रहता था। आज सेण्टक्लेयर अपनी लाइब्रेरी वाले कमरे में गया। टाम बाहर बैठा बाट देखता रहा। जब देर होने पर भी वह बाहर न निकला तब टाम धीरे-धीरे कमरे के अन्दर गया। वहां जाकर देखा कि मालिक इवा की नन्हीं बाइबिल को मुख पर रक्खे हुए पड़े हैं। टाम चुपचाप उनकी आराम-कुर्सी के पास जाकर खड़ा हो गया। सेण्टक्लेयर उसे देखते ही उठ बैठा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम के मुख की ओर आंखें फेरते ही दयालु सेण्टक्लेयर का हृदय भर आया। सरलता और साधुता से परिपूर्ण टाम का मुख-मण्डल स्वामी के दुःख से एकदम मलिन पड़ गया। उस मुंह से कोई वाक्य नहीं निकला, पर मुख की कातरता और करुणा का भाव प्रभु के दुःख में स्पष्ट रूप से सहानुभूति प्रकट कर रहा था।

कुछ देर बाद सेण्टक्लेयर ने कहा, "टाम, इस संसार में सब-कुछ असार है।"

टाम बोला, "मैं जानता हूं प्रभु, सब-कुछ असार है, पर स्वर्ग की ओर, जहां इस समय हम लोगों की इवा है, ईश्वर की ओर निगाह रखने से कल्याण होगा।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "टाम, मैं स्वर्ग की ओर निगाह डालता हूं और ईश्वर की ओर देखने की चेष्टा करता हूं, पर मुझे कुछ नहीं दिखाई देता। यदि कुछ दीख पड़ता तो मन को सन्तोष दिला सकता।"

टाम ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा।

सेण्टक्लेयर ने फिर कहा, "टाम, मैं समझता हूं कि निर्मल चरित्र शिशुओं को और तुम-सरीखे सरस और साधु-प्रकृति के लोगों को ही ईश्वर दिव्य दृष्टि देता है, हम-जैसों को नहीं; इसी से तुम लोग स्वर्ग की बातें जान सकते हो।"

टाम बोला, "प्रभु, बाइबिल का मत है कि जो ज्ञान का अभिमान करते हैं और कानून की दुहाई देते हैं, उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं होते। जिनका चित्त बालक की भांति सरल है, उन्हीं को भगवान के दर्शन मिलते हैं।

सेण्टक्लेयर ने कहा, "टाम, बाइबिल पर मेरा विश्वास नहीं है।" अपनी शंकालु प्रकृति के कारण किसी बात पर मेरा विश्वास नहीं जमता। मैं चाहता तो हूं कि बाइबिल पर मेरा विश्वास जम जाय, पर ऐसा होता नहीं।"

टाम ने कहा, "प्रभु, आप ईश्वर से प्रार्थना कीजिये कि हे भगवन! मेरे मन के संदेहों को दूर कर दो।"

टाम की यह बात सुनकर सेण्टक्लेयर स्वप्न में पड़े हुए मनुष्य की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भांति बोला, "कोई बात समझ में नहीं आती। क्या संसार का यह प्रेम, विश्वास और भक्ति सभी निरर्थक हैं ? क्या मृत्यु के साथ-साथ इन सबका नाश हो जाता है ? क्या मेरी इवा नहीं ? क्या स्वर्ग नहीं है ? क्या ईश्वर नहीं ? क्या कुछ नहीं है ?"

टाम ने घुटने टेक कर कहा, "प्रभु, सब-कुछ है । मैं भली-भांति जानता हूं कि सबकुछ है। आप इन सब पर विश्वास करने की चेष्टा कीजिए, चेष्टा कीजिए।"

सेण्टक्लेयर बोला, "तुमने कैसे जाना कि ईश्वर है ? तुमने तो कभी ईश्वर को देखा नहीं।"

टाम ने कहा, "मैंने अपनी आत्मा के अन्दर उसे जाना है। इस समय भी वह मेरे अन्दर है। प्रभु, जब मैं अपने बाल-बच्चों से अलग करके बेच डाला गया, उस समय एकदम निराश हो गया था। मेरे मन में तनिक भी बल न रहा और तब मैंने निराश होकर ईश्वर को पुकारा। इससे अकस्मात् मेरे मन में शक्ति पैदा हो गई और मेरे अन्दर से आवाज आई कि "टाम, डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं।" इससे मेरे सारे दुःख दूर हो गये और हृदय में आशा जाग उठी । प्रभु, क्या अपने-आप मन में ऐसा भाव आ सकता है ? अन्दर बैठे हुए परमात्मा ने ही मेरे मन को बल दिया था ।"

ये बातें कहते समय टाम का हृदय भक्ति और प्रेम से भर गया । उसकी आंखों से पानी की गंगा-यमुना बहने लगीं। सेण्टक्लेयर ने उसके कन्धे पर सिर रख कर और उसके काले हाथ पकड़ कर कहा, "टाम, तुम मुझे प्यार करते हो ?"

टाम बोला, "प्रभु, यदि मेरे प्राण देने से भी ईश्वर में आपकी भक्ति और विश्वास हो जाय, तो यह दास अभी खुशी-खुशी अपने प्राण देने को तैयार है।"

सेण्टक्लेयर ने द्रवित होकर कहा, "मेरे भोले भाई, मेरे लिए प्राण दोगे ? मैं तो तुम्हारे-जैसे साधु और सहृदय मनुष्य के स्नेह के योग्य भी नहीं हूं।"

टाम बोला, "प्रभु, मेरी अपेक्षा ईश्वर आपको हजार गुना ज्यादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यार करते हैं।"

सेण्टक्लेयर ने पूछा, "टाम, यह तुम कैसे जानते हो ?"

टाम ने कहा, "मेरी आत्मा में इसका अनुभव होता है। प्रभु, मिस इवा मुझे बड़ी अच्छी तरह वाइविल पढ़ कर सुनाया करती थीं। उसके बाद किसी ने नहीं सुनाई। आप थोड़ा-सा पढ़कर सुनाइये।"

सेण्टक्लेयर ने तब वाइविल में से लाजरस के उद्धार का वृत्तान्त पढ़ा। टाम भक्ति-भाव से हाथ जोड़ कर उसे सुन रहा था। समाप्त होने पर सेण्टक्लेयर ने पूछा, "टाम, क्या तुम्हें ये सब बातें सच्ची जान पड़ती हैं ?"

टाम बोला, "प्रभु, मुझे ये सब बातें साफ दिखाई पड़ रही हैं।"

सेण्टक्लेयर ने विभोर होकर कहा, "टाम, मुझे तुम्हारी आंखें मिल जातीं तो अच्छा होता।"

टाम ने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया, "ईश्वर आप पर अवश्य दया करेंगे।"

"लेकिन टाम, तुम जानते हो कि तुमसे मेरा ज्ञान कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा है। मैं यदि तुमसे कहूं कि मैं इस वाइविल पर विश्वास नहीं करता तो इससे क्या तुम्हारे हार्दिक विश्वास को कुछ ठेस पहुंचेगी ?"

"रत्ती-भर भी नहीं।" टाम ने कहा।

सेण्टक्लेयर बोला, "क्यों टाम, तुम तो जानते हो कि मैं तुमसे अधिक पढ़ा-लिखा हूं।"

टाम बोला, "प्रभु, अभी आप ही ने तो कहा है कि ईश्वर को वे लोग नहीं देख सकते, जिन्हें अपने ज्ञान का अभिमान है। बालकों-जैसे विश्वासियों को ही भगवान के दर्शन मिलते हैं। जान पड़ता है, आप मेरे हृदय की परीक्षा ले रहे हैं। यह आपके हृदय के सच्चे भाव नहीं हैं।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "हां, मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिए ही ऐसा कहा था। मैं वाइबिल पर अविश्वास नहीं करता। इसमें शक नहीं कि धर्म-शास्त्र युक्ति-संगत है। पर खेद है कि मेरा स्वभाव बिगड़ा हुआ है।"

"प्रभु, प्रार्थना से सुधर जायगा।" टाम ने धीमे स्वर में कहा।

"टाम, तुम कैसे जानते हो कि मैं प्रार्थना नहीं करता ?" सेण्टक्ले-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यर ने पूछा।

टाम बोला, "प्रभु, क्या आप प्रार्थना करते हैं ?"

"मैं अवश्य करता, पर किसके सामने करूं, कुछ भी तो नहीं दिखाई देता। किंतु टाम, तुम इस समय प्रार्थना करो, मैं सुनता हूं।" सेण्टक्लेयर ने एक सांस में कहा।

टाम बड़े भक्ति-भाव से ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। उसकी सरल प्रार्थना से सेण्टक्लेयर का हृदय भर आया। प्रार्थना की धारा में उसका मन स्वर्ग की ओर बह चला। उसने प्रत्यक्ष ही अनुभव किया कि इवा अमृतमय की अमृत-गोद में विराज रही है।

टाम की प्रार्थना समाप्त होने पर सेण्टक्लेयर ने कहा, "टाम, तुम जब-तब मेरे सामने ऐसे ही प्रार्थना किया करो। परंतु इस समय तुम मुझे थोड़ी देर एकांत में रहने की छुट्टी दो। मैं और किसी समय तुमसे अधिक बातें करूंगा।"

टाम चुपचाप उस कमरे से चला गया।

३१ : : पिता-पुत्री का पुनर्मिलन

समय किसी की बाट नहीं देखता। हफ्तों-पर-हफ्ते, महीनों-पर-महीने और वर्षों-पर-वर्ष निकले जा रहे हैं। संसार-भर के नर-नारियों को अपनी छाती पर लादकर काल का प्रवाह अनन्त-सागर की ओर दौड़ा जा रहा है। इवा की नन्हीं-सी जीवन-नौका भी अनन्त-सागर में समा गई। दो-चार दिन घर-बाहर सभी ने शोक मनाया और आंसू बहाये, पर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, लोग अपने दुःख को भूलते गये। सब अपने-अपने धंधों में लग गये। गाना-बजाना, खाना-पीना, सभी ज्यों-के-त्यों होने लगे। पर देखना यह है कि क्या सभी एक-से हैं ? क्या सेण्टक्लेयर के जीवन की गाड़ी भी उसी चाल से चल रही है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस संसार में केवल इवा ही सेण्टक्लेयर के जीवन की सर्वस्व थी। इवा के लिए ही उसका जीना, इवा ही के लिए धन-संग्रह करना, इवा ही के लिए काम-काज, और इवा ही के लिए सब-कुछ था। इवा के चले जाने से सेण्टक्लेयर का जीवन लक्ष्य-शून्य हो गया। अब वह संसार में किसके लिए जिये और दुनिया के झंझटों में किसके लिए फंसे ?

आशाएं टूट जाने पर मनुष्य संसार में क्या सचमुच उद्देश्यहीन हो जाता है ? क्या सांसारिक तुच्छ आशाओं के अतिरिक्त मानव-जीवन का अन्य कोई महान उद्देश्य नहीं है ? नहीं, यह बात नहीं। इन्हीं उद्देश्यों से आगे भी बहुत-कुछ है।

मानव-जीवन के महान उद्देश्य से सेण्टलेक्यर अनभिज्ञ न था। इसी से उसका जीवन सर्वथा लक्ष्य-हीन नहीं हुआ, विशेषकर इवा के अन्तिम शब्द हर घड़ी उसके कानों में गूंजते थे। सोते-जागते, उठते-बैठते, हर घड़ी इवा का वह सुमधुर वाक्य उसे याद आता। उसे हर समय यही दिखाई पड़ता, मानो इवा अपने नन्हे-नन्हे हाथों की अंगुलियों के इशारे से उसे जीवन-मार्ग—स्वर्गपथ—दिखा रही है। पर उसका चिर-सहचर आलस्य और उसका वर्तमान शोक उससे कर्तव्य-मार्ग—स्वर्ग—की ओर अग्रसर होने में बाधा डालता था। उसमें इन सब विघ्न-बाधाओं को पार करके जीवन के महान उद्देश्य की पूर्ति करने की शक्ति थी। यद्यपि वह देश में प्रचलित किसी प्रकार की धर्मोपासना में योग न देता था, तथापि वह बचपन से ही बड़ा सूक्ष्मदर्शी और भावुक था। उसके मन में सदा नये-नये भाव उठते रहते थे। वास्तव में इस संसार में कभी-कभी ऐसा होता है कि जो लोग लोक और परलोक की तनिक भी परवाह नहीं करते, बल्कि काम पड़ने पर उनके मानने वालों की निन्दा तक करने से नहीं चूकते, उन्हीं के मुख से कभी-कभी धर्म के ऐसे गूढ़-तत्व सुनने में आते हैं कि दंग रह जाना पड़ता है। मूर, बायरन और गेटे जन्म-भर धर्म पर अपनी अनास्था ही दिखलाते रहे, पर उन्होंने धर्म के कई ऐसे जटिल तत्वों की, जिन्हें बहुत से धर्म-गुरुओं ने भी नहीं समझा था, ऐसी सुन्दर व्याख्या की कि देखते ही बनती है।

धर्म से सेण्टक्लेयर को कभी द्वेष न था। पर वह जानता था कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म-पालन खांडे की धार पर चलने के समान है। दुर्बल मन के मनुष्यों के लिए वह सर्वथा असाध्य है। इससे धर्म को ग्रहण करके उसका पालन न करने की अपेक्षा तो यही अच्छा है कि धर्म के पचड़े में ही न पड़ा जाय। यही सोचकर वह सदा इन धर्म-चर्चाओं से अलग रहता था। पर अब उस धर्म के अनुसरण के सिवा उसके जीवन का और लक्ष्य ही क्या रह गया ? अब वह इवा की छोटी बाइबिल को बड़े प्रेम से पढ़ने लगा। और दास-दासियों के विषय में अपने कर्तव्य की बात भी सोचने लगा। उसने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया कि इवा का कहना बिल्कुल सच था कि इन दास-दासियों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर देना ही ठीक है। अपने नगरवाले मकान में आते ही उसने सबसे पहले टाम को दासत्व से मुक्त करने का पक्का निश्चय किया। इसके लिए उसने अपने वकील से मुक्तिपत्र का मसविदा बनाने को कहा। टाम आजकल हर समय उसी के साथ लगा रहता है। टाम इवा को बड़ा प्यारा था, इसलिए उसे देखकर जितनी जल्दी सेण्टक्लेयर को इवा का स्मरण होता था, उतना और किसी को देखने से नहीं। इसी से टाम को इवा के स्मृति-चिह्न की भांति सेण्टक्लेयर हर घड़ी अपने साथ रखता था।

एक दिन सेंण्टक्लेयर ने कहा, "टाम, मैं तुम्हें दासता की बेड़ी से मुक्त कर दूंगा। तुम केण्टाकी के लिए तैयार रहना। अपना सामान ठीक कर रखना।"

यह बात सुनते ही टाम का चेहरा प्रफुल्लित हो गया। वह हाथ उठाकर बोला, "भगवान आपका भला करें!"

पर टाम की इस प्रसन्नता के भाव से सेण्टक्लेयर मन-ही-मन दुःखी हुआ। उसने यह नहीं सोचा था कि टाम उसे छोड़कर जाने के लिए इतनी खुशी दिखायेगा।

उसने शुष्क स्वर में कहा, "टाम, तुम्हें तो हमारे यहां कभी कोई तकलीफ नहीं हुई, फिर हमारा घर छोड़कर जाने की बात पर इतने खुश क्यों हुए ?"

टाम ने गम्भीर होकर कहा, "प्रभु, यह आप का घर छोड़कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाने की प्रसन्नता नहीं है। यह प्रसन्नता इस बात की है कि मैं स्वाधीन हो जाऊंगा।"

सेण्टक्लेयर बोला, "स्वाधीन हो जाने की अपेक्षा क्या इस समय तुम यहां अधिक सुखी नहीं हो?"

टाम ने कहा, "कभी नहीं!"

"टाम," सेण्टक्लेयर बोला, "जैसा अच्छा तुम यहां खाते-पीते हो और जिस आराम से रहते हो, उतने आराम से रहने के लिए तुम स्वाधीन होकर कमाई नहीं कर सकोगे।"

टाम ने कहा, "स्वामी, किन्तु स्वाधीनता स्वाधीनता ही है।.... स्वाधीनता में मोटा-महीन, बुरा-भला जो कुछ मिले, सब अच्छा है। पराधीनता की मेवा-मिठाई भी किस काम की! इसी से कहा है, 'पराधीन सपनेहु सुख नाही।' यह मनुष्य का स्वाभाविक भाव है।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैं मानता हूं, यही बात होगी; पर तुम्हें अभी यहां एक महीना और ठहरना होगा।"

"स्वामी, मैं आपको कष्ट में छोड़कर नहीं जाऊंगा। आप जबतक रखना चाहें, यह दास आपकी सेवा में रहेगा। यदि मेरा यह शरीर आप के किसी काम आ जाय, तो इससे अधिक सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या होगी?"

सेण्टक्लेयर ने उदासीनता से बाहर की ओर नजर डालते हुए कहा, "टाम, तुम मेरे इस कष्ट के दूर होने पर जाना। मेरा यह कष्ट कब मिटेगा?"

"जब ईश्वर में आपकी भक्ति होगी और धर्म में मन लगेगा।"

"तबतक तुम यहां ठहरना चाहते हो? नहीं-नहीं, मैं तबतक तुम्हें यहां नहीं रोकूंगा। तुम्हें शीघ्र ही छुट्टी दे दूंगा। तुम अपने घर पहुंच कर बाल-बच्चों से मिलना और उन्हें मेरा आशीर्वाद कहना।"

टाम ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा, "स्वामी, मेरा अटल विश्वास है कि वह दिन शीघ्र ही आयेगा और आप के हाथ से ईश्वर अपना कोई काम करायेगा।"

सेण्टक्लेयर ने गद्‌गद होकर कहा, "मुझसे, ईश्वर का काम!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा टाम, बतलाओ, तुम्हारी समझ में वह कौन-सा काम है ?"

"स्वामी, मैं तो निपट मूर्ख हूं, किन्तु परमेश्वर ने मुझे भी अपना काम करने को सौंपा है। फिर आप तो बहुत होशियार हैं, ऐश्वर्यवान हैं, बन्धु-बान्धुवों वाले हैं—चाहें तो ईश्वर के कितने ही प्रिय कार्य कर सकते हैं।" टाम ने बड़ी भावना से कहा।

सेण्टक्लेयर मुस्कराते बोला, "टाम, तुम्हारी समझ में क्या ईश्वर को अपने कुछ काम मनुष्य से कराने की जरूरत पड़ा करती है ?"

"जरूर। हम जब किसी मनुष्य के लिए कुछ करते हैं तब वह ईश्वर ही के लिए करते हैं, क्योंकि सभी मनुष्य उसी प्रभु की संतान हैं।"

सेण्टक्लेयर यह सुनकर अभिभूत हो उठा। बोला, "टाम, तुम्हारा यह धर्म-शास्त्र हमारे यहां के पादरियों के मत से कहीं अच्छा जान पड़ता है।"

तभी कुछ लोग सेण्टक्लेयर से मिलने आ गये। इससे उसकी और टाम की बातें यहीं रुक गईं।

इवा के शोक में मेरी बड़ी ही अधीर हो गई थी। पर उसमें एक बहुत बड़ी बुराई थी कि जब वह किसी शोक के कारण दुःख से स्वयं अधीर होती थी, तब दास-दासियों को उससे सौगुना अधीर कर देती थी। इवा जीते-जी इस अत्याचार से दास-दासियों की रक्षा करने की चेष्टा किया करती थी; पर अब इन बेचारे निस्सहायों की रक्षा कौन करेगा ? इसीसे इवा के लिए दास-दासी बहुत दुःखित होते थे, विशेषकर मामी अपने बाल-बच्चों से अलग पड़े रहने के दुःख को इवा के कारण भूली हुई थी। अब इवा की मृत्यु के बाद वह दिन-रात चुपचाप रोया करती थी। इस दशा में उससे कभी-कभी मेरी की टहल में कुछ चूक हो जाती तो उसके लिए मेरी उसे सदा डांटा करती थी।

मिस अफिलिया को इवा की मृत्यु बहुत दुःख देती रही थी; पर वह चुपचाप गम्भीर-भाव से उस दुःख को सहन कर रही थी। वह पहले की भांति सदा काम में लगी रहती थी। वह पहले की अपेक्षा अब अधिक यत्न से टप्सी को पढ़ाने-लिखाने लगी। वह अब टप्सी को अपनी कन्या की भांति प्यार करती है, हब्शी जानकर उससे घृणा नहीं करती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टप्सी का चरित्र भी धीरे-धीरे सुधरने लगा । यह नहीं कि वह एक ही दिन में भली बन गई हो । हां, इवा के आचरण से उसका मन बहुत-कुछ पलट गया था । पहले उसकी मानसिक जड़ता इस प्रकार की थी कि उस पर कोई उपदेश असर ही नहीं करता था, पर अब यह भाव दूर हो गया ।

एक दिन, जब वह तेजी से अपने कपड़ों में कोई चीज़ छिपाये चली आ रही थी, रोज़ा ने तत्काल उसे पकड़कर कहा, "बोल इसमें क्या है ? लगता है, तूने कोई चीज़ चुराई है ! कपड़ों में जल्दी-जल्दी क्या छिपा रही थी ?"

टप्सी अपनी छिपाई हुई चीज को दोनों हाथों से मजबूती से पकड़े हुए थी । हाथ छुड़ाने के लिए रोज़ा जोर से उसे खींचने लगी, पर टप्सी ने हाथ नहीं छोड़ा । वह ज़मीन पर लोट कर चिल्लाने लगी और साथ ही रोजा को एक लात जमा दी । टप्सी की चीख़ सुनकर अफिलिया और सेण्टक्लेयर दोनों नीचे आये तो रोज़ा ने बताया कि इसने कुछ चुराया है । टप्सी ने सिसकते हुए कहा कि, "मैंने कुछ भी नहीं चुराया ।"

"मिस अफिलिया ने दृढ़ता से कहा, "तेरे हाथों में जो कुछ हो, मुझे दे दे ।"

पहले तो टप्सी ने देने में आनाकानी की, पर दुबारा मांगने पर उसने अपने कपड़ों में से एक फटे हुए मोजों की पोटली निकालकर उसके हाथ में पकड़ा दी । उसमें इवा की दी हुई एक छोटी-सी पुस्तक और इवा के बालों की एक लट निकली । ये चीजें देखकर सेण्टक्लेयर की आंखें भर आईं ।

टप्सी रो-रो कर कहने लगी, "मेरी ये चीजें मुझसे मत छीनिये !"

सेण्टक्लेयर की आंखों से आंसू बहने लगे । वह टप्सी को सान्त्वना देकर बोले, "तेरी ये चीजें कोई नहीं लेगा ।" इतना कहकर और वे चीजें उसे लौटाकर अफिलिया सहित वह तेजी से चला गया ।

उसने अफिलिया से कहा, "बहन, मुझे जान पड़ता है कि अब तुम टप्सी का चरित्र सुधारने में सफल होओगी । जिस हृदय में शोक और आघात लगता है, उसे सहज ही अच्छे रास्ते पर लाया जा सकता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें अब इसके साथ खूब कोशिश करनी चाहिए।"

अफिलिया ने कहा, "पहले से टप्सी बहुत सुधर गई है। मुझे अब इसके विषय में पूरी आशा हो गई है, पर मैं तुमसे एक बात पूछती हूं कि यह है किसकी? तुम्हारी या मेरी?"

"क्यों? मैं तो इसे तुम्हें सौंप चुका हूं!" विस्मय से सेण्टक्लेयर ने कहा।

अफिलिया बोली, "नहीं, क़ानूनन वह मेरी नहीं है। मैं क़ानूनन उसे अपना बनाना चाहती हूं।"

"बहन, तुम इसे कानूनन लेना तो चाहती हो, पर तुम्हारे यहां का दास-प्रथा-विरोधी दल इसके लिए तुम्हारी निन्दा करेगा।"

"इसमें क्या है, मैं वहां जाकर इसे स्वाधीन कर दूंगी। मैं इसके लिए इतना परिश्रम कर रही हूं, यदि इसे अपने साथ न ले जा सकी तो मेरी सारी मेहनत बेकार चली जायगी।"

"बहन, बाद को अच्छा नतीजा हासिल करने के लिए पहले एक बुरा काम करने का मैं तो अनुमोदन नहीं कर सकता।" सेंटक्लेयर ने विनोद भाव से कहा।

अफिलिया बोली, "हँसी-मजाक छोड़कर जरा सोचो! यदि उसे गुलामी से छुटकारा न दिया जा सके तो सारी धर्म-शिक्षा देना व्यर्थ है। तुम अगर इसे सचमुच मुझे देना चाहते हो तो एकदम पक्की लिखा-पढ़ी कर दो।"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "अच्छा–अच्छा, कर दूंगा।" यह कहकर उसने समाचार-पत्र पढ़ना आरम्भ कर दिया।"

अफिलिया बोली, "मैं चाहती हूं, यह काम अभी हो जाय।"

"तुम्हें इतनी जल्दी क्या है?"

"जो काम करना है, उसके लिए यही उचित समय है। उसमें फिर देर का क्या काम? कहा भी है—"कालिह करै सो आज कर आज करै सो अब। पल में परलय होयगी, फेर करेगा कब?" यह लो कलम-दवात और लिखना है सो अभी लिख दो।"

सेण्टक्लेयर का स्वभाव आलसी था। उसने कुछ आना-कानी की,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर अफिलिया के सामने उसकी एक न चली। उसने तुरन्त एक दान-पत्र लिखा और मिस अफिलिया को सौंप कर कहा, "लो, कहो, अब तो कुछ करना बाकी नहीं रहा ?"

पर, इस पर किसी की गवाही भी तो होनी चाहिए!

"ओफ, मुसीबत का पार नहीं।" इतना कहकर सेण्टक्लेयर ने दरवाजा खोलकर पुकारा, "मेरी, बहन तुम्हें गवाह बनाना चाहती हैं। ज़रा यहां आकर इस कागज पर दस्तखत तो कर देना।"

मेरी ने उस कागज को पढ़कर कहा, "यह कैसी मजाक की बात है! इसकी भी लिखा-पढ़ी! लेकिन मैं समझती थी कि दीदी अपनी धर्मभीरुता के कारण दास रखने जैसा बुरा काम नहीं करेंगी। पर खैर, अगर इसके लिए इनकी इच्छा है तो हम लोग बड़ी प्रसन्नता से इनके मन की बात पूरी करेंगे।"

इतना कहकर मेरी ने कागज पर हस्ताक्षर कर दिये और चली गई।

सेण्टक्लेयर ने वह कागज अफिलिया को सौंपते हुए कहा, "आज से टप्सी का शरीर और आत्मा तुम्हारी मिलकियत हुई।"

अफिलिया बोली, "वह तो जैसी तब थी वैसी ही अब भी है। ईश्वर के सिवा और किसी की क्षमता नहीं कि उसे मुझे दे सके, पर अब मैंने उसकी रक्षा करने का अधिकार हासिल कर लिया है।"

"खैर, अब वह बनावटी कानून के अनुसार तुम्हारी चीज हुई।" यह कहकर सेण्टक्लेयर अपने कमरे में चला गया। मिस अफिलिया ने उस कागज को यत्न से अपने सन्दूक में बंद करके सेण्टक्लेयर के कमरे में चली गई। उसे मेरी के साथ देर तक बैठकर बातचीत करना अच्छा नहीं लगता था।

वहां जाकर मिस अफिलिया बुनने का सामान लेकर बैठ गई। उसने सहसा सेण्टक्लेयर से कहा, "अगस्टिन, तुम्हारे बाद तुम्हारे गुलामों की क्या स्थिति होगी, इसका भी तुमने कोई बन्दोबस्त किया है ?"

"नहीं।"

"तब तुम्हारा उन्हें इस समय यह सब आराम देना व्यर्थ है, उल्टा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह उनके साथ बद-सलूकी करना है।"

सेण्टक्लेयर प्रायः इस विषय को स्वयं सोचा करता था; पर अभी तक उसने कोई बन्दोबस्त नहीं किया था। उसने कहा, "मैं इन लोगों के लिए कोई प्रवन्ध करूंगा।"

"कब ?"

"इसी बीच में किसी दिन।"

"मान लो, यदि पहले ही तुम चल बसो तो ?"

सेण्टक्लेयर ने अपने हाथ का अखबार रखकर उसकी ओर देखते हुए कहा, "बहन, आखिर ऐसा क्या हुआ है ? मेरे शरीर में क्या तुम्हें हैजे या प्लेग के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, जो तुम मेरे बिल्कुल अन्तिम समय का बंदोबस्त किये दे रही हो ?"

सेण्टक्लेयर उठा और अखबार को किनारे रखकर धीरे-धीरे बरामदे की ओर चला गया। उसे ऐसी बातें अच्छी नहीं लगती थीं। इसी से वह उठ गया था। लेकिन आप-ही-आप यंत्र की भांति उसके मुंह से 'मृत्यु' शब्द निकलने लगा। वह सोचने लगा कि जगत में कोई ऐसा आदमी नहीं, जिसकी मृत्यु न होगी। यह एक साधारण बात है फिर भी हम मृत्यु को भूले हुए हैं, यह बड़े आश्चर्य का विषय है। आज मनुष्य बड़ी-बड़ी आशाओं के पुल बांध रहा है, घमंड से पागल हुआ जा रहा है। कल ही उसे मौत ने आ दबोचा, तो सदा के लिए छुट्टी। सारे विचार यों ही रखे रह जायंगे।...

यह सब सोचते हुए जाते-जाते उसने बरामदे के दूसरी ओर टाम को देखा। अपने सामने बाइबिल रखे हुए टाम बड़े ध्यान से उसका एक-एक शब्द पढ़ रहा था। सेण्टक्लेयर ने अलमस्त की तरह टाम के पास बैठकर कहा, "टाम, कहो तो मैं तुम्हें बाइबिल पढ़कर सुनाऊं ?"

टाम ने कहा, "यदि प्रभु कृपा करके पढ़ें तो बहुत अच्छी बात है। आपके पढ़ने से बहुत साफ-साफ समझ में आवेगी।"

सेण्टक्लेयर ने पुस्तक उठा ली और उस स्थल को पढ़ने लगा, जहां टाम ने बड़े-बड़े निशान लगा रक्खे थे। विषय था : "सारे देवदूतों से घिरे हुए ईश्वर-पुत्र जब सिंहासन पर बैठकर विचार करने लगेंगे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय सब जातियां उनके सामने इकट्ठी होंगी। तब वह पुण्यात्माओं में से पापियों को छांटेंगे। फिर उन पापियों को समुचित दण्ड देकर कहेंगे, "मुझसे दूर हो जाओ। मुझे प्यास लगने पर तुमने पानी नहीं दिया, भूखे होने पर अन्न नहीं दिया, नंगे होने पर वस्त्र नहीं दिया और जेल में पड़े रहने पर मेरी सुध नहीं ली।" यह सुनकर पापी लोग कहेंगे, "भगवन्, हमने कब आपको भूखे, प्यासे, नंगे और जेल में पड़े देखकर आपकी सुध नहीं ली?" यह सुनकर वह कहेंगे, "हमारे इन अत्यन्त दीन-हीन भाइयों पर तुम लोगों ने जो अत्याचार किये हैं, सख्तियां की हैं, वे सब मुझपर ही हुई हैं।"

बाइबिल से ये बातें पढ़ते हुए सेण्टलेक्यर का मन द्रवित हो उठा। उसने इन पंक्तियों को मन-ही-मन पढ़ा और एकाग्रता से सोचने लगा। फिर बोला, "टाम, मेरे ही जैसे आनन्द और सुख में जीवन बिताने वाले लोग, जो स्वयं मौज में हैं, मस्त हैं और भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मरनेवाले अपने दीन बंधुओं की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते, वही तो ईश्वर के विचार से दण्ड पावेंगे?"

टाम ने इसका उत्तर नहीं दिया।

सेण्टक्लेयर चिंता में डूबा हुआ बरामदे में इधर-उधर टहलने लगा। वह विचारों में इतना खो गया कि उसे चाय की घंटी की आवाज भी सुनाई नहीं दी। टाम ने दो बार घंटी की याद दिलाई, तब जाकर वह चाय पीने गया। चाय पीने के समय भी वह चिंता-मग्न था। चाय के बाद वह, उसकी स्त्री और मिस अफिलिया चुपचाप बैठक में आये।

आते ही मेरी पलंग पर लेट गई और देखते-देखते सो गई। अफि-लिया बुनने में लग गई। सेण्टक्लेयर पियानो के पास जाकर धीरे-धीरे एक करुण धुन बजाने लगा। वह उस समय भी चिंता-शून्य न था। उसे देखकर जान पड़ता था, मानो वह बाजे के अंदर बैठकर स्वयं बोल रहा है। कुछ देर बाद उसने दराज़ से एक पुरानी पुस्तक निकाली और उसके पन्ने उलटते-उलटते मिस अफिलिया से कहा, "इधर आओ, यह मेरी मां की पुस्तक है। यह देखो, मेरी माताजी के हस्ताक्षर हैं।"

अफिलिया उठकर उसके निकट आई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मां यह गीत प्रायः गाया करती थी। ऐसा जान पड़ता है, मानो इस समय मैं मां का गीत सुन रहा हूं।" इतना कहकर सेण्टक्लेयर ने एक पुराना, बड़ा गम्भीर, लैटिन गीत गाया।

टाम बरामदे में बैठा था। गाना सुनकर वह दरवाज़े के पास आकर खड़ा हो गया। गाने का अर्थ कुछ भी उसकी समझ में नहीं आया, पर गाने और बजाने की धुन पर उसका हृदय रीझ उठा, विशेषतः उस समय जब सेण्टक्लेयर उस गीत का करुण अंश गाने लगा। फिर तो वह एकदम मोहित हो गया।

गीत समाप्त होने पर सेण्टक्लेयर सिर पर हाथ रखकर स्थिर चित्त से कुछ सोचने लगा। कुछ देर बाद उठकर घर में टहलने लगा। फिर मिस अफिलिया के पास आकर बोला, "बहन, परलोक-संबंधी विश्वास मनुष्य के हृदय में कैसी अनोखी शांति ला देता है। केवल शांति ही नहीं, यह विश्वास मनुष्य को संसार के अत्याचार, अन्याय और सब प्रकार के कष्ट सहने में समर्थ बनाता है। इस विश्वास के बल पर आशा लगी रहती है कि कभी तो एक दिन आयेगा जब सारे दुःखों का अंत होगा।"

अफिलिया ने कहा, "पर, हम लोगों-जैसे पापियों के लिए यह भयकर वस्तु है।"

सेण्टक्लेयर बोला, "हाँ, मेरे लिए तो सचमुच ही भयंकर है। मैं आज टाम को बाइबिल से परलोक के विचार के सम्बंध में पढ़कर सुना रहा था। पढ़ते-पढ़ते मेरा कलेजा थर्रा उठा। मेरा खयाल था कि बुरा काम करना ही पाप है, और बहुत बुरे कामों के फल से ही लोग स्वर्ग से वंचित रहते हैं, पर बाइबिल का यह मत नहीं है। वास्तव में अच्छे काम न करना ही घोर पाप है, इसी पाप के लिए परलोक में दण्ड भोगना पड़ता है।"

अफिलिया ने कहा, "मैं समझती हूं कि जो अच्छा काम नहीं करता, उसे बुरा काम करना ही पड़ेगा। सत् और असत्-दो ही मार्ग ठहरे, तीसरा कोई मार्ग ही नहीं है। इच्छा हो, सन्मार्ग से जाओ, नहीं तो असन्मार्ग से जाना ही पड़ेगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेण्टक्लेयर व्याकुल-चित्त से आप-ही-आप कहने लगा, "तो—तो जिस आदमी ने समाज के अभावों को जानने और जोरों से उनका बखान करते हुए भी अपने मन और अपनी उच्च शिक्षा को समाज की भलाई में नहीं लगाया, जिसने बिल्कुल उदासीन दर्शक की भांति सैकड़ों मनुष्यों की यन्त्रणा और दुर्दशा देखकर भी कार्य-क्षेत्र में पैर नहीं रक्खा, और जो स्वप्न-सागर में बह रहा है, उसके सम्बंध में क्या कहा जायगा ?"

अफिलिया ने कहा, "मैं तो कहती हूं कि उसे अपनी पिछली बातों को भूलकर इसी क्षण कर्म में लग जाना चाहिए।"

सेण्टक्लेयर ने मुस्करा कर फिर कहा, "बहन, तुम ठीक-ठिकाने पर असल काम की बात को कहती हो। तुम मुझे सोचने-विचारने का जरा भी समय नहीं देना चाहतीं। तुम मेरी भावी चिंता के प्रवाह को घुमा-फिरा कर वर्तमान की ओर ले आती हो, तुम्हारी आँखों के सामने एक विराट् वर्तमान पड़ा हुआ है।"

अफिलिया बोली, "मेरा तो यह मत है कि जो कुछ करना हो, वह अभी कर डालना चाहिए। जो घड़ी सामने है, उसके सिवा और किसी घड़ी पर मनुष्य का अधिकार नहीं है।"

सेण्टक्लेयर ने धीरेसे कहा, "उस प्यारी नन्हीं इवा ने, मुझे काम में लगाने के लिए, मेरी भलाई के लिए, जी जान से यत्न किया था।"

इवा की मृत्यु के सम्बन्ध में सेण्टक्लेयर ने कभी अधिक चर्चा नहीं की थी; पर आज अत्यन्त गहरे शोक को बलपूर्वक दबाकर ये बातें कह ही डालीं। फिर कहा, "धर्म के विषय में मेरा यह मत है कि कोई मनुष्य उस समय तक धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता, जबतक कि वह सब प्रकार के सामाजिक और राजनैतिक अत्याचारों, दुःखों और कष्टों को दूर करने के लिए अपना उत्सर्ग नहीं करता, जबतक देश में प्रचलित सारी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का यत्न नहीं करता और संसार का दुःख-दारिद्रय दूर करने की चेष्टा नहीं करता। मनुष्य तभी धर्मात्मा कहा जा सकता है, जब वह संसार के समस्त नर-नारियों को समान अधिकार दिलाने के संग्राम के लिए कमर कस ले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उस संग्राम में जीवन की मोह-ममता छोड़ कर प्राण-विसर्जन करने को तैयार हो जाय। पर यहां तो जो धर्म-प्रचारक कहलाते हैं, जिन्होंने लोगों को धर्मात्मा बना देने का बीड़ा उठा रक्खा है, वे निर्बलों पर सबलों के अत्याचारों एवं अन्यायों की तथा सारी सामाजिक बुराइयों की उपेक्षा करते हैं। यही कारण है कि समझदारों को उनके कार्यों पर आस्था नहीं रहती।"

मिस अफिलिया बोली, "यदि तुम यह सब जानते-बूझते हो, तो फिर तुम्हीं ये सब काम क्यों नहीं करते ?"

सेण्टक्लेयर ने कहा, "मैं जानता-बूझता सब हूं, पर मेरी सहृदयता यहीं तक है कि मैं स्वयं कुछ करूंगा-धरूंगा नहीं। दूध से सफेद विस्तर पर पड़ा रहूंगा और पादरियों की, चाहे वे सब-के-सब धर्मवीर ही क्यों न हों, चाहे वे सत्य के लिए प्राण ही देनेवाले क्यों न हों, निन्दा करता रहूंगा और उनपर वाक्य-वाण बरसाता रहूंगा। दूसरों को कर्तव्य के पीछे, धर्म के पीछे, प्राण तक दे डालने चाहिए, इसे मैं खूब समझता हूं; और जो अपना कर्तव्य-पालन नहीं करते, उनकी निन्दा भी खूब करना जानता हूं। पर कुछ भी कहो, मुझसे वह नहीं होने का।"

अफिलिया ने कहा, "अब आगे से क्या तुम्हारे जीवन का दूसरा ढंग होगा ?"

सेण्टक्लेयर बोला, "आगे की भगवान् जाने! हां, पहले से अब साहस बढ़ गया है, क्योंकि अब सोने-खाने को कुछ रहा नहीं, सबकुछ हार चुका और जिसका हाथ खाली है उसे विपत्ति का क्या डर ?"

"तो तुम करना क्या चाहते हो ?"

"मैं अपने दास-दासियों को दासता से मुक्त करके उनकी उन्नति की चेष्टा करूंगा। फिर धीरे-धीरे ऐसा उपाय सोचूंगा जिसमें देश-भर से यह बुरी प्रथा उठ जाय।"

"क्या तुम सोचते हो कि पूरा देश अपनी इच्छा से इस प्रथा को छोड़ देगा ?"

"यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन हां, आजकल स्वेच्छा से त्याग और निस्स्वार्थ प्रेम के दृष्टान्त बहुत जगह देखे जाते हैं। उस दिन यूरोप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हंगरी के जमींदारों ने लाखों की हानि सहकर प्रजा का कर माफ कर दिया। उनकी प्रजा बिल्कुल पराधीन थी। उसे स्वाधीनता दे दी गई। क्या हमारे देश में ऐसे दो-चार सहृदय मनुष्य नहीं मिलेंगे, जो जातीय गौरव और न्याय के लिए अर्थ की हानि को सहर्ष सहन कर लें ?"

मिस अफिलिया ने गम्भीर होकर कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता। अंग्रेज जाति बड़ी अर्थ-पिशाच होती है, बल्कि फ्रेंच इनसे अधिक सहृदय होते हैं।"

सेण्टक्लेयर बोला, "न मालूम क्यों, मुझे बार-बार अपनी माता की याद आ रही है। ऐसा लग रहा है, मानो वह मेरे बहुत पास है।"

यह कहकर वह कुछ देर घर में टहला, फिर हाथ में टोपी लेकर यह कहता बाहर निकल गया, "जरा बाहर घूम आऊं और आज की खबरें भी सुनता आऊं।"

टाम तुरन्त उसके पीछे-पीछे हो लिया। सेण्टक्लेयर ने उसे देख कर कहा—"तुम्हारे साथ जाने की जरूरत नहीं है। मैं जल्दी ही लौटूंगा।"

टाम बरामदे में आकर बैठ गया। उस समय रात के नौ बजे थे। चाँद की शीतल चाँदनी धरती पर चारों ओर छिटकी हुई थी। टाम वहीं बैठा-बैठा सोचने लगा—अब उसकी गुलामी की बेड़ी टूटने में ज्यादा देर नहीं है। वह दस ही पांच दिनों में घर चला जायगा। सोचते-सोचते उसे अपने स्त्री-पुत्रों की याद हो आई, मन में नई-नई आशाएं उठने लगीं। सोचने लगा कि अपने शरीर की मेहनत से धन कमाकर वह अपनी पत्नी और बच्चों को भी गुलामी से छुड़ा लेगा। इस विचार के आते ही उसके हृदय में आनन्द की लहरें उठने लगीं। फिर अपने मालिक सेण्टक्लेयर की सहृदयता का स्मरण करके उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। इसके कुछ देर बाद उसे इवा की याद आई। जान पड़ा, मानो स्वर्ग की देव-बालाओं से घिरी हुई इवा उसके सामने खड़ी है। यों ही सोचते-विचारते टाम को नींद ने आ घेरा। स्वप्न में उसे दिखाई पड़ने लगा कि नाना प्रकार की पुष्प-मालाएं धारण किये इवा उसके पास आ रही है। उसका मुख-कमल चमक रहा है, उसकी दोनों आंखों से अमृत की वर्षा हो रही है, पर ज्योंही उसने उसके मुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की ओर देखा, वह स्वर्ग की ओर उड़ी, उसके कपोलों पर लालिमा छा गई। उसकी आंखों से दैवी ज्योति निकलने लगी और पल-भर में वह अन्तर्धान हो गई।

तभी उसकी आंख खुल गई। जागते ही उसने घर के द्वार पर बहुत से लोगों का शोर-गुल सुना। उसने सपाटे से जाकर दरवाजा खोला। देखा, कुछ लोग कपड़ों से ढकी हुई एक लाश लिये खड़े हैं। मृत व्यक्ति के मुख की ओर दृष्टि जाते ही टाम निराशा और दुःख के मारे चीख उठा। जो लोग उस व्यक्ति को कन्धे पर लादकर लाये थे, उन्होंने घर में जाकर, जहां अफिलिया बैठी थी, वहां उसे उतारकर लिटा दिया।

सन्ध्या के समाचार-पत्र पढ़ने के लिए सेण्टक्लेयर किसी चाय-खाने में गया था। वहां बैठकर जब वह पत्र पढ़ रहा था तो उसने देखा कि दो भलेमानस शराब के नशे में मतवाले हुए आपस में मार-पीट कर रहे हैं। सेण्टक्लेयर तथा और दो-एक अन्य व्यक्ति उन्हें छुड़ाने की चेष्टा करने लगे। इनमें से एक के हाथ में तेज छुरा था। वह छुरा एकाएक सेण्ट-क्लेयर की बगल में घुस गया। वह तत्काल मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। कुछ लोगों ने उसे कन्धे पर उठाकर उसके घर पहुंचा दिया।

सेण्टक्लेयर की यह दशा देखकर घर के सारे दास-दासी रोने-चीखने लगे। सबकी बुद्धि चकरा गई। कोई जमीन पर लोट-लोटकर रोने लगा। कोई पागल की तरह चीखता हुआ इधर-से-उधर दौड़ने लगा। केवल मिस अफिलिया और टाम मन को साधकर सेण्टक्लेयर को होश में लाने के लिए भांति-भांति के उपाय करने लगे। अफिलिया के कहने से टाम ने तत्काल बिस्तर बिछा दिया और सेण्टक्लेयर को उसपर लिटाकर दवा दे दी। कुछ देर के बाद सेण्टक्लेयर को चेत हुआ। वह आंखें मलकर एक-एक करके सबको देखने लगा। अन्त में कमरे में टंगी अपनी माता की तसवीर पर जाकर उसकी दृष्टि अटक गई। वह एकटक उसी की ओर देखने लगा।

शीघ्र ही डाक्टर आया और घावों की जांच करने लगा। डाक्टर के चिंतितचेहरे को देखकर लोगों ने समझ लिया कि उसके जीने की कोई आशा नहीं है। डाक्टर घावों पर पट्टी बांधने लगा। टाम और मिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अफिलिया दोनों बड़े धीरज से सेण्टक्लेयर की सहायता करने लगे। सब दास-दासी वहीं बैठे-बैठे रोते रहे। डाक्टर ने कहा कि बीमार के पास शोरगुल नहीं होना चाहिए। इन दास-दासियों को कमरे से बाहर करके इसको एकान्त में रखना चाहिए।

इसी समय सेण्टक्लेयर ने फिर आंखें खोलीं। जिन दास-दासियों को डाक्टर और अफिलिया ने बाहर चले जाने को कहा था, उनके चेहरों की ओर देखते हुए ठण्डी सांस लेकर उसने कहा, "अभागे गुलामो!"

ये शब्द मुंह से निकलते समय ऐसा जान पड़ता था, मानो उसके हृदय में आत्मग्लानि की आग धधक रही है। एडाल्फ नाम का दास वहां से किसी तरह जाने को राजी न हुआ, वहीं धरती पर लोट गया। दूसरे दास-दासियों को जब मिस अफिलिया ने बहुत समझाया, तब वे अनिच्छा-पूर्वक वहां से हटे।

सेण्टक्लेयर की बोली एकदम रुक गई। वह आंखें बन्द किये पड़ा रहा। उसके चेहरे से मालूम हो रहा था, मानो दुःसह अनुताप की आग में उसका हृदय जल रहा है। टाम उसकी बगल में घुटने टेककर बैठा हुआ था। सेण्टक्लेयर ने कुछ देर बाद टाम के हाथ पर हाथ रख कर कहा, "टाम! दुःखी टाम!"

टाम ने बड़ी व्याकुलता से कहा, "स्वामी, क्या चाहते है?"

सेण्टक्लेयर ने उसका हाथ दबाते हुए कहा, "मेरे जाने का समय आ गया है। प्रार्थना करो!"

यह सुनकर डाक्टर ने कहा, "किसी पादरी को क्यों न बुला लिया जाय?"

सेण्टक्लेयर ने सिर हिलाकर असहमति प्रकट की और टाम से फिर कहा, "टाम, प्रार्थना करो।"

परलोकगामी आत्मा के कल्याण के लिए टाम भारी हृदय से बड़ी व्याकुलतापूर्वक प्रार्थना करने लगा। टाम की प्रार्थना समाप्त होने पर भी सेण्टक्लेयर उसका हाथ पकड़े हुए उसकी ओर देखता रहा, पर कुछ बोल न सका। धीरे-धीरे उसकी आंखें मुंदने लगीं, लेकिन टाम का हाथ वह थामे ही रहा। अंतिम सांस तक स्नेह के साथ वह काले हाथ को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पकड़े रहा।

उसका शरीर एकदम निस्तेज हो गया, मृत्यु की मलिन छाया ने उसके मुख-मण्डल को ढक लिया, किन्तु इस मलिन छाया के साथ-साथ उसके मुख पर मधुर कान्ति छा गई। ऐसा जान पड़ा, मानो स्वर्ग से किसी दयालु आत्मा ने अकस्मात् उतरकर शान्ति की मृदुल प्रभा से उसके मुख-मण्डल को अनुरंजित कर दिया है।

अंतिम समय सेण्टक्लेयर के मुंह से कोई बात नहीं निकली। बस 'मां' कहते ही उसके प्राण निकल गए। लगा, जैसे अपनी माता को सामने देखकर दुधमुंहा बच्चा उसकी गोद में कूद पड़ा।

३२ : : मेरी की क्रूरता

गुलामों के मालिक के मर जाने पर या कर्जदार हो जाने पर गुलामों पर बड़ी विपत्ति आया करती है। इस दशा में पहले मालिक के उत्तराधिकारी या उनके महाजन इन अभागे, असहाय तथा अनाथ गुलामों को प्रायः नीलाम कर डालते हैं। उस समय माता की गोद से बालक को और स्वामी के पास से स्त्री को अलग होना पड़ता है।

जिस बच्चे के मां-बाप मर जाते हैं और उनका पालन-पोषण उसके आत्मीय जन करते हैं, उसे देशप्रचलित कानून के अनुसार, मनुष्य के अधिकारों से वंचित नहीं होना पड़ता। पर क्रीत दासों को किसी प्रकार के मानवीय स्वत्व प्राप्त नहीं हैं। घर की दूसरी वस्तुओं की भांति इनका भी क्रय-विक्रय होता है।

सेण्टक्लेयर की मृत्यु से उसके दास-दासी बड़े सोच में पड़ गये। सभी के मन में चिन्ता होने लगी कि आगे न जाने कैसे निर्दयी के हाथ में पड़ना पड़ेगा। सेण्टक्लेयर का-सा दयालु मालिक दास-प्रथा के चलन के इस देश में मिलना एकदम मुश्किल है। ऐसे सहृदय मालिक को खो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दास-दासियों को कितना शोक हुआ होगा, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

मेरी सेण्टक्लेयर ने अपने को छूट दे-देकर शरीर और मन को बिलकुल निकम्मा कर लिया था। अतः स्वामी की मृत्यु के समय धीर चित्त से उसकी परिचर्या करना तो दूर, उसके सामने खड़ी भी न हो सकी। भय के कारण वह बार-बार बेहोश होने लगी। जिसके साथ मेरी पवित्र बन्धन में बंधी थी, वह पत्नी से कुछ कहे बिना ही सदा के लिए बिदा हो गया।

मिस अफिलिया ने अन्तिम समय तक तन-मन से सेण्टक्लेयर की सेवा-शुश्रूषा की। अफिलिया के सिवा इन बेचारे ग़ुलामों पर और कोई करुणा की दृष्टि डालनेवाला न था। इसीसे सब-के-सब अब व्याकुल-चित्त से मिस अफिलिया की ओर देखते थे।

जिस समय सेण्टक्लेयर की लाश कब्र में दफनाई जाने लगी, उस समय उसकी छाती पर एक स्त्री का छोटा-सा चित्र और उसी के पीछे एक गुच्छा बालों का लगा हुआ मिला। गाड़ने के समय वह सैकड़ों आशाओं का, स्वप्नमय तरुण जीवन का, स्मृति-चिह्न उस निष्प्राण वक्षःस्थल पर ही रख दिया गया।

टाम का मन परलोक की चिन्ता में डूब गया। एक बार भी उसके मन में यह बात न आई कि सेण्टक्लेयर की आकस्मिक मृत्यु के कारण अब उसे जन्म भर के लिए दासता की बेड़ियों में ही जकड़े रहना पड़ेगा। उसने मालिक की मृत्यु के समय बड़े भक्ति-भाव और विश्वास के साथ परमात्मा की प्रार्थना की। उसे इस बात का विश्वास हो गया कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। इससे उसे अन्दर-ही-अन्दर बड़ी शान्ति प्राप्त हुई।

काले वस्त्रों के आडम्बर, पादरियों की अभ्यस्त प्रार्थना और बाह्य गंभीरता के साथ सेण्टक्लेयर की अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई। फिर सदा से जो होता आया है, वही प्रश्न सबके सामने आया, — इसके बाद क्या करना होगा ?

उदास दास-दासियों से घिरे, शोकसूचक काले वस्त्रों के नमूने देखते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए, मेरी के मन में यही सवाल पैदा हुआ। मिस अफिलिया के मन में यह बात उठी तो उसने उत्तर में अपने पिता के घर लौट जाने की ठानी। पर उन अनाथ गुलामों के मन में यह प्रश्न उठते ही उनकी जान सूख गई। अब जिसके हाथ में उनकी लगाम आई थी, उसकी कठोरता किसी से छिपी न थी। वे खूब जानते थे कि अबतक वह सेण्टक्लेयर के कारण ही उनपर अत्याचार नहीं करने पाती थी, पर अब जान बचने की कोई सूरत न रही।

सेण्टक्लेयर की अन्त्येष्टि-क्रिया के पन्द्रह दिन बाद की बात है। एक दिन मिस अफिलिया अपने कमरे में बैठी हुई कुछ काम कर रही थी, इतने में किसी ने धीरे-से उसका दरवाजा खटखटाया। उसने दरवाजा खोलकर देखा कि बाहर वर्ण-संकर सुन्दरी युवती रोज़ा खड़ी है। उसके बाल बिखरे हुए थे और रोते-रोते उसकी आंखें सूज गई थीं।

रोज़ा मिस अफिलिया के पैरों पर गिर पड़ी और उसके कपड़े का कोना पकड़कर रोते-रोते कहने लगी, "मिस फीली, मेरी तरफ से मेरी मालिकिन को कुछ कहिये, मेरी जान बचाइये। वह बेंत लगवाने के लिए मुझे दण्ड-गृह में भेज रही हैं। यह देखिये!" इतना कहकर उसने मिस अफिलिया के हाथ में एक कागज थमा दिया। इस कागज में दण्ड-गृह के अध्यक्ष को लिखा गया था कि रोज़ा को पन्द्रह कोड़े लगाये जांय।

मिस अफिलिया ने कहा, "बात क्या थी?"

रोजा बोली, "मिस फीली, आप जानती हैं, मेरा मिजाज बड़ा खराब है। मुझे जरासी बात में गुस्सा आ जाता है। मैं मालकिन का कपड़ा अपने बदन पर पहन कर देख रही थी। इसपर उन्होंने मेरे गाल पर एक थप्पड़ जमा दिया। इससे मुझे गुस्सा आ गया। बिना सोचे-बिचारे जो भला-बुरा मेरे मुंह से निकला, मैं बक गई। इसपर मालकिन ने कहा, "देख, अब तेरा सिर चढ़ना कैसे उतारती हूं। तब तू समझेगी कि मैं कौन हूं। तेरा यह घमण्ड अधिक दिन तक नहीं टिकेगा।"

कागज हाथ में लिये हुए खड़ी मिस अफिलिया सोचने लगी।

रोज़ा ने कहा, "मिस फीली, देखिये, मैं मार से नहीं डरती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि मालकिन या आप घर बिठाकर मुझे पचास बेत लगावें तो कोई शर्म नहीं। पर मर्द के पास भेजना, और वह भी ऐसे भयंकर नीच के पास— कैसी शर्म की बात है!"

मिस अफिलिया ने पहले भी यह सुन रखा था कि गुलामी की प्रथा-वाले प्रदेशों में, दासों के मालिक युवती दासियों को बड़ी नीच प्रकृति-वाले पुरुषों के पास दण्ड देने को भेजते हैं। इन अभागिनों को इस तरह दण्ड मिलने में लज्जा, शील और यहां तक कि मनुष्यता को भी तिलांजलि दे देनी पड़ती थी। पर इस प्रकार दण्ड मिलने से स्त्रियों को कैसा भयंकर कष्ट होता था, यह बात कानों से सुनकर भी हृदय में बैठी नहीं थी। आज भय और दुःख से थर-थर कांपती हुई रोज़ा को देखकर सब बातें हृदय में अंकित हो गईं।

घृणा से मिस अफिलिया का चेहरा लाल हो गया। किन्तु उसने कागज को मजबूती से अपने हाथ में थाम रख रोज़ा से कहा, "बच्ची, तुम यहां बैठो। मैं तुम्हारी मालकिन के पास जाती हूं।"

अफिलिया ने मेरी के पास जाकर देखा, वह कुर्सी पर बैठी हुई है, उसकी आंखें अधखुली हैं। मामी पीछे खड़ी उसके बाल झाड़ रही है और जेन जमीन पर बैठी उसके पैर दबा रही है।

मिस अफिलिया ने उससे पूछा, "कहिये, आज आपकी तबीयत कैसी है?"

सुनते ही मेरी ने ठण्डी सांस लेकर आंखें बन्द करते हुए कहा, "जैसी हमेशा रहती हूं वैसी ही हूं।" यह कहकर उसने एक बढ़िया रूमाल से आंखें पोंछीं।

मिस अफिलिया ने इस ढंग से, जैसे कोई मुश्किल बात कहता हो, सूखे गले से कहा, "मैं रोज़ा के बारे में तुमसे कुछ कहने आई हूं।"

अब मेरी की आंखें खुल गईं, मंह लाल हो गया। कर्कश स्वर से बोली, "रोज़ा के बारे में क्या कहना है?"

"वह अपने अपराध के लिए बहुत पछता रही है।"

"पछता रही है! पछता रही है? इसके क्या माने! अभी उसे बहुत पछताना पड़ेगा। मैं थोड़े में छोड़नेवाली नहीं हूं। मैंने बहुत दिनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक इस छोकरी की धृष्टता सही है । अब मैं इसे दुरुस्त करूंगी, धूल में मिला दूंगी ।"

"क्या तुम उसे और किसी प्रकार की सजा नहीं दे सकती हो, जो इससे कम लज्जाजनक हो ?"

"मेरा तो मतलब ही उसे शर्म दिलाने से है ।....यही तो मैं चाहती हूं । यह छोकरी जन्म से ही शेखी के मारे ऐंठकर अपनी असलियत को भूल गई है । अब मैं इसकी सारी शेखी और अकड़ निकाल दूंगी ।"

"पर बहन, सोचकर देखने की बात है । किसी जवान लड़की की लज्जा नष्ट करना, उसके पतित होने के मार्ग को साफ कर देना है ।"

घृणा के साथ हंसकर मेरी ने कहा, "लज्जा ! मैं उसे बतलाऊंगी कि फटे कपड़े पहनकर राह में जो स्त्रियां ठोकरें खाती फिरती हैं, उनसे वह किसी तरह अच्छी नहीं है...मेरे सामने उसकी अब शेखी नहीं चलेगी ।"

मिस अफिलिया ने जोर के साथ कहा, "इस निर्दयता के लिए तुम्हें ईश्वर के यहां जवाब देना पड़ेगा ।"

"निर्दयता ? मुझे बतलाओ, इसमें क्या निर्दयता है ? मैंने तो बस पंद्रह कोड़े लगाने को लिखा है, सो भी हल्के-हल्के । मैं इसमें कुछ भी निर्दयता नहीं देखती ।"

मिस अफिलिया ने कहा, "निर्दयता नहीं है ? मेरा विश्वास है कि इस दण्ड की अपेक्षा स्त्रियां मृत्यु को कहीं अच्छा समझेंगी ।"

मेरी बोली, "तुम्हारा जैसा दिल जिसका है, उसमें ऐसा भाव आ सकता है, पर इन दासियों को ऐसा दण्ड भोगने का अभ्यास है । उनकी अक्ल को ठिकाने रखने का यही एकमात्र उपाय है । एक बार माफ कर देने से तो ये लोग सिर पर चढ़ जाते हैं । मैं अबतक इन्हें छोड़ती रही हूं, इसीसे ये बिगड़ गए । मैं अब इन्हें ठीक करूंगी । जो कसूर करेगा, उसे तुरन्त दण्ड-गृह में कोड़े लगवाने भेज दूंगी ।"

जेन, जो मेरी के पैर दबा रही थी, यह बात सुनकर एकदम चौंक उठी । उसने सोचा, यह अंतिम बात उसीको सुनाकर कही गई है । शायद रोज़ा के बाद उसी की बारी आये ।

मिस अफिलिया को मेरी की बात पर बड़ा क्रोध आया । उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीर कांपने लगा। पर उसने सोचा, उसके साथ झगड़ा करने का कोई नतीजा न होगा। वह वहां से उठकर अपने कमरे में चली गई। रोज़ा के दुःख से वह इतनी दुखी हुई कि लौटकर रोज़ा से यह बात नहीं कह सकी कि मेरी ने उसकी बात नहीं मानी।

कुछ देर के बाद एक काला गुलाम मेरी की आज्ञा से रोजा को पकड़कर दण्ड-गृह में ले गया। रोजा रोई-चिल्लाई, पर मेरी का वज्र-हृदय न पसीजा।

एडाल्फ पर मेरी खार खाये हुई थी। परन्तु सेण्टक्लेयर की वजह से किसी दास-दासी पर उसका बस न चलता था, इसीसे अबतक वह एडाल्फ को किसी प्रकार का दण्ड न दे सकी थी। सेण्टक्लेयर की मृत्यु से एडाल्फ एकदम निराशा के सागर में डूब गया। अब वह हरदम मेरी के डर से कांपा करता था। मेरी ने सेण्टक्लेयर के भाई अल्फ्रेड और अपने वकील से सलाह करके निश्चय किया कि वह सेंटक्लेयर के मकान और सब गुलामों को बेच डालेगी। बस उन गुलामों को, जो उसके निजी हैं, अपने साथ लेकर पिता के घर जाकर रहेगी। एडाल्फ ने यह बात सुनली। इसलिए एक दिन टाम से जाकर कहा, "टाम, क्या तुम्हें मालूम है कि मालकिन हम लोगों को बेच डालेंगी ?"

टाम ने पूछा, "तुमने किससे सुना ?"

एडाल्फ बोला, "मेरी जब वकील से बातें कर रही थी, तब मैंने पर्दे की ओट से सब बातें सुनी थीं। टाम, अब कुछ ही दिनों में हम लोग नीलामघर भेज दिये जांयगे।"

टाम ने ठण्डी सांस लेकर कहा, "जो ईश्वर की मर्जी होगी।"

एडाल्फ बोला, "अब ऐसा दयालु मालिक नहीं मिलेगा। लेकिन इस मालकिन के पास रहने से तो दूसरे के हाथ बिकना ही अच्छा है।"

टाम घूमकर खड़ा हो गया। उसका हृदय विषाद से भरा हुआ था। कहां तो वह स्वाधीन होने की खुशियां मना रहा था, और शीघ्र ही अपने बाल-बच्चों से मिलने की आशा में फूला न समाता था और कहां यह एकाएक विपत्ति का पहाड़ उस पर टूट पड़ा ! नाव किनारे लगते-लगते डूब गई ! आजाद होने की जो आशाएं उसने संजो रखी थीं, वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धूल में मिल गईं। टाम स्वाधीनता को बड़ा मूल्यवान समझता था, फिर भी ईश्वर के भरोसे उसने धीरज न छोड़ा। उसने ऊपर को सिर उठाया और हाथ जोड़कर कहने लगा, "प्रभो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो!" पर यह वाक्य कहते समय उसका हृदय विदीर्ण होने लगा।

कुछ देर बाद वह मिस अफिलिया के कमरे में गया। इवा की मृत्यु के उपरान्त मिस अफिलिया टाम पर विशेष स्नेह रखती थी।

टाम ने कहा, "मिस फीली! मालिक सेण्टक्लेयर ने मुझे गुलामी से मुक्त कर देने का वचन दिया था। वकील से इस मामले में उन्होंने मसविदा बनाने को भी कह दिया था। अब आप मालकिन से कहें तो वह मालिक के वचनों को पूरा कर सकतीं हैं।"

मिस अफिलिया बोली, "टाम, मैं तुम्हारे लिए कहूंगी, भरसक प्रयत्न करूंगी, पर मुझे आशा नहीं कि मेरी कुछ करेंगी। कोशिश वेकार ही होगी।"

टाम को विदा करके मिस अफिलिया सोचने लगी कि शायद रोज़ा के लिए अनुरोध करते समय मेरे मुंह से कुछ कठोर बातें निकल गई थीं। इसीसे उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। आज मैं उसे मीठी-मीठी बातों से राजी करूंगी। शायद इस तरह वह टाम को छोड़ने पर राज़ी हो जाय। यह सोचकर वह मेरी के कमरे में गई।

मेरी खाट पर लेटी हुई थी और जेन उसे तरह-तरह के काले कपड़ों के नमूने दिखा रही थी। मेरी ने उन नमूनों में से एक चुनकर कहा, "यह ठीक है, लेकिन मैं कह नहीं सकती कि यह पूरी तरह शोकसूचक होगा या नहीं।"

जेन ने कहा, "आप क्या कहती हैं? अभी उस दिन जनरल डरबन के मरने पर उनकी मेम ने यही कपड़ा पहना था। पहनने पर साहव यह बहुत जोरदार लगता है। इससे दर्शकों का मन खिच उठता है।"

मेरी ने मिस अफिलिया से कहा, "आपकी समझ में यह कपड़ा कैसा है?"

मिस अफिलिया बोली, "यह अपने-अपने यहां की रीति पर निर्भर है। मेरी अपेक्षा तुम इस बात को अच्छी तरह जानती हो।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी ने कहा, "असल में मेरे लायक एक भी पोशाक नहीं है, पर अगले ही हफ्ते मैं जानेवाली हूं। इससे कोई एक पसन्द कर लेना है।"

मिस अफिलिया ने कहा, "तुम इतनी जल्दी जाओगी?"

मेरी बोली, "हां, अल्फ्रेड और वकील की राय है कि घर का माल-असबाब तथा दास-दासी सबको नीलाम कर डालना ही ठीक है।"

मिस अफिलिया ने गंभीर स्वर में कहा, "मैं तुमसे एक बात कहने वाली थी। अगस्टिन ने टाम को आजाद कर देने का वचन दिया था, यहांतक कि उसके लिए मसविदा बनवाने की भी बात-चीत हो गई थी। मैं आशा करती हूं कि तुम वकील से जल्दी ही आजादी की सनद लिखवा लोगी।"

"नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी। टाम के पूरे दाम आवेंगे। वह इस तरह कैसे भी नहीं छोड़ा जा सकता। फिर उसे आजादी की ऐसी जरूरत ही क्या है? आजाद होने पर वह मौजूदा हालत से अच्छा तो रह न सकेगा।"

"पर आजाद होने की उसकी बड़ी इच्छा है, और उसके मालिक ने उसे आजाद कर देने का वचन दिया था।"

"हां, टाम की यह इच्छा हो सकती है। ये लोग तो जन्मभर असंतुष्ट ही बने रहते हैं। जो इन्हें नहीं मिलता, उसकी ये बराबर इच्छा किया करते हैं। मैं तो सदा से गुलामी को खत्म करने के खिलाफ हूं। जबतक ये हब्शी किसी मालिक की अधीनता में रहते हैं तबतक अच्छे रहते हैं। लेकिन आजादी मिलते ही ये आलसी हो जाते हैं। शराब पीना आरम्भ कर देते हैं। नीचे गिरते चले जाते हैं। मैंने सैकड़ों बार यही बात देखी है। इन्हें आजाद करने में इनका भला नहीं, उल्टे इनका बिगाड़ करना है।

मिस अफिलिया बोली, "पर टाम तो भलामानस, मेहनती और धार्मिक है।"

"ओह, मुझे तुम्हारे समझाने की जरूरत नहीं है। मैंने ऐसे सैकड़ों देख डाले हैं। सौ बात की बात यह है कि वे गुलामी में ही अच्छे रहते हैं।"

"पर खयाल करो, जब तुम इसे नीलाम करोगी तब हो सकता है कि कोई बेरहम आदमी इसे खरीद ले जाय।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ये सब फिजूल की बातें हैं। नौकर अच्छा हो तो सैकड़ों में एक भी मालिक बुरा नहीं मिलता। मालिकों की लोग नाहक झूठी शिकायत करते हैं। मैं जन्म से इसी दक्षिणी क्षेत्र में हूं। पर अबतक ऐसा एक भी मालिक नहीं देखा, जो अपने दासों के साथ अच्छा व्यवहार न करता हो। मैं इसपर विश्वास नहीं करती कि टाम का होनेवाला मालिक उससे बेरहमी का बर्ताव करेगा।"

अफिलिया ने कहा, "खैर, मैं जानती हूं कि तुम्हारे पति की अंतिम इच्छा टाम को मुक्त कर देने की थी। उसने इवा की मृत्यु के समय उस से भी इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि टाम को बहुत शीघ्र आजाद कर दिया जायगा। कोई कारण नहीं कि तुम अपने स्वामी और कन्या की इच्छा को इस तरह ठुकरा दो।"

मेरी ने रूमाल से अपना चेहरा ढक लिया और सिसक-सिसक कर रोने लगी। बेहोशी के डर से बार-बार एमोनिया की शीशी सूंघते-सूंघते भरे हुए गले से कहने लगी, "जो आता है, मुझसे ही लड़ने चला आता है। कोई मेरे दुःख का खयाल नहीं करता। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम मुझे शोक की याद दिलाकर कटे पर नमक छिड़कने आओगी। तुम्हें भी मुझे ही सताने की सूझी। तुम्हें मेरा जी दुखाने में तनिक भी दया नहीं आई! पर मेरी सोचता कौन है? मेरी दशा को समझता कौन है? सबको अपने-अपने सुख की पड़ी है। मेरे एक लड़की थी, उसे भी भगवान ने उठा लिया। उसके बाद मेरे पति चल बसे। तुम्हारे मन में जरा भी मोह-माया नहीं है। इसीसे तुमने भी मेरी बेटी और स्वामी की मौत की बात कहकर मेरे दुःख की आग में घी डाल दिया।"

मेरी और जोर-जोर से रोने लगी। बेहोशी के लक्षण दिखाई देने लगे। वह मामी से कहने लगी, "अरे खिड़की खोल दे! कपूर की शीशी ला! मेरे सिर पर पानी डाल। मेरे कपड़े ढीले कर दे।"

चारों ओर बड़ा शोर मचा। इसी बीच मिस अफिलिया किसी तरह जान बचाकर अपने कमरे की ओर भागी।

मिस अफिलिया ने देखा कि मेरी से बहस करना फिजूल है। बेहोशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुलाने की उसमें अद्भुत क्षमता है। इसके बाद जब कभी दास-दासियों के सम्बन्ध में सेण्टक्लेयर और इवा की इच्छा की चर्चा की जाती, वह बखेड़ा कर देती थी। मिस अफिलिया ने टाम के छुटकारे का कोई उपाय न देखकर मिसेज शेल्बी को टाम के दुःख की सारी बातें साफ-साफ लिख दीं और उसे शीघ्र छुड़ा ले जाने का विशेष अनुरोध किया।

इसके दूसरे ही दिन, टाम, एडाल्फ तथा दूसरे छः दास नीलाम करने के लिए नीलाम-घर भेज दिये गये।

३३ : : गुलामों की बिक्री के हृदय-विदारक दृश्य

"गुलामों के बेचने की आढ़त ?" शायद यह नाम सुनकर ही लगे कि यह बड़ा विकट स्थान होगा और मालगोदामों की तरह न मालूम कितना अंधकार से भरा और मैला-कुचैला होगा। पर नहीं, यह बात नहीं है। सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ लोग सभ्य प्रणाली और चतुराई से बुरे काम करना सीखते हैं। दासों का व्यापार करनेवाले इस बात की बड़ी फिक्र रखते थे कि मानव-सम्पदा, अर्थात जीवात्मा-रूपी माल के दाम बाजार में किसी प्रकार कम न आवें। वे लोग बिकने के पहले गुलामों को अच्छा खाने और अच्छा पहनने को देते थे। उन्हें कोई रोग न होने पावे, इस ओर भी उनका पूरा ध्यान रहता था। इसीसे गुलामी का धंधा करनेवाले आढ़तिये अपने स्थानों को बड़ा साफ-सुथरा रखते थे। इन आढ़तघरों के सामने सजे-सजाये खुले बरामदे होते थे। वहां गुलामों को एक कतार में खड़ा किया जाता था। बाहरी आदमी देखते ही समझ लेता था कि इस घर में नर-नारियों का सौदा होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। खरीदारों को आढ़तिये बड़ी आव-भगत से बुलाकर गुलामों को दिखाते थे। पर अंदर जाकर लोग देखते थे कि स्वामी, स्त्री, पिता, माता, बालक—ये एक-दूसरे से सदा के लिए विछुड़ जाने की बात सोच-सोचकर बिलख रहे हैं। पति के कंधे पर सिर रखकर स्त्री कह रही है, "हे ईश्वर अब जन्मभर के लिए हम लोगों का विछोह हो जायगा। ईश्वर करे, हम दोनों को एक ही आदमी खरीद ले।" कहीं स्त्री का कंधा पकड़ कर पति कह रहा है, "मेरा यह जीवन वृथा है। मैंने क्यों यह नर-तन पाया?" बच्चे को हृदय से चिपकाकर मां बार-बार उसका मुख चूमती है और सिर पीटकर कहती है, "हे भगवान, तूने मुझे सन्तान क्यों दी? मृत्यु, तू कहां छिप गई है?" बच्चे मजबूती से अपनी माताओं के कपड़े पकड़े हुए हैं। सोचते हैं, बस, वे कपड़े पकड़े रहेंगे तो उन्हें कोई अलग नहीं कर सकेगा। इन दृश्यों को देखकर पत्थर का कलेजा भी पिघल जाता है। पर उन अर्थलोलुप नर-पिशाच अंगरेज बनियों के हृदय की कठोरता की कोई हद नहीं है।

जो मानव-आत्मा अमृत की अधिकारी है, विश्वपति की अमृत-गोद जिसके लिए खुली हुई है, धन के लोभ से आज उन्हीं आत्माओं के सौदे हो रहे हैं। यह घृणित सौदा करनेवाली वही गोरी जाति है, जो सभ्यता की लम्बी-लम्बी डींगें हांकती है और दूसरी जातियों को ठग बतला कर स्वयं बड़ी शहंशाह बनती है।

टाम और एडाल्फ के सिवा सेण्टक्लेयर के और भी आधे दर्जन दास-दासी स्केग नामक आढ़तिये के यहां पहुंचाये गए। वहां और भी बहुतेरे दास-दासी आये हुए थे। इन सबको हर समय खुश रखने के लिए आढ़त के मालिकों की बड़ी चेष्टा रहती थी। उदास मुख देखने से कहीं ग्राहक कम दाम न लगावें, इसीलिए भांति-भांति के उपायों से इन्हें हँसाने का यत्न किया जाता था। चारों ओर हँसी-मजाक तथा तमाशे हो रहे थे। पर क्या टाम-जैसे आदमी को इस दशा में हँसी आ सकती थी? एक तो इवा और सेण्टक्लेयर का शोक ही उसके हृदय को साल रहा था, उसपर उसकी यह दुर्दशा हो रही थी! कोई भी, जिसमें आत्मा है, इस दशा में हँस नहीं सकता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम दूसरे दास-दासियों से कुछ दूर घर के एक कोने में, अपने सन्दूक का सहारा लेकर बैठ गया। वह बहुत ही उदास था, पर आढ़तवाले किसी को उदास बैठने देनेवाले न थे। वे इन्हें खुश रखने के लिए बजाने को बाजा देते और नाचने-गाने का हुक्म देते थे। इनमें जो दुःख के कारण हँसी-खुशी मनाने में असमर्थ होते, वे 'बदमाश' गिने जाते थे। इन सब बदमाशों को नाना प्रकार का दण्ड भोगना पड़ता था। खरीदारों के सामने जो हँसते हुए खड़े न होते, उनकी जान मुसीबत में कर दी जाती थी।

स्केग की आढ़त का सहकारी कार्याध्यक्ष साम्बो नामक एक हब्शी था। यह सदा सबको खुश करने की फिक्र में रहता था और जिनको उदास बैठे पाता, उनपर कोड़े फटकारता था। पूछा जा सकता है कि हब्शी होकर यह अपने स्वजातीयों पर इतना अत्याचार क्यों करता था? बात यह है कि संसार में जो जाति पराधीन और पराजित होती है, उस जाति के लोगों का पतन हो जाता है। वे परम स्वार्थी और नीच हो जाते हैं। स्वयं कोई पद या अधिकार पा जाने से वे भिन्न-जातीय मालिक को खुश करने के लिए खुशामद के मारे अपने ही भाइयों को अकारण सताने में अपनी शान और बड़प्पन समझते हैं। इसीसे यहां साम्बो अपने ही भाइयों पर जो अत्याचार करता था, उसके लिए हम उसे अपराधी नहीं समझते।

साम्बो ने जब देखा कि टाम अलग एक कोने में उदास बैठा है, तो वह फौरन उसके पास पहुंचकर बोला, "तुम क्या करते हो?"

टाम ने शान्ति से कहा, "कल मेरा नीलाम होगा।"

उसको हँसाने के लिए साम्बो खिलखिलाकर हंसते हुए बोला, "हमारा भी कल नीलाम होगा।"

साम्बो ने समझा कि उसने यह बड़े मजाक की बात कही है और टाम इसपर जरूर हंस पड़ेगा। इसके बाद साम्बो एडाल्फ के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "इन सब लोगों का कल नीलाम होगा।"

एडाल्फ ने छिटककर कहा, "मेहरबानी करके मुझसे अलग रहो।"

इसपर साम्बो बोला, "बाप रे बाप! यह तो गोरा हब्शी है। इसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो तमाखूवाले के यहां तमाखू बेचने बैठा दिया जाय, तो बड़ा अच्छा रहे।"

एडाल्फ ने गुस्से में भर कर कहा, "तुमसे कहता हूं कि हट जाओ। क्या नहीं हटोगे ?"

"हमारा गोरा हब्शी लोग को बड़ा जल्दी गुस्सा आता है।" यह कहकर वह हाथ नचा-नचाकर एडाल्फ की नकल करने लगा और व्यंग से बोला, "मालूम होता है, यह किसी बड़े आदमी के यहां था।"

"हां, मैं जिसके यहां था, वह तेरे ऐसे छप्पन गुलाम खरीद सकता था।"

"बाबा, तब तो वह कोई बहुत ही बड़ा आदमी होगा।"

एडाल्फ ने अभिमान के साथ कहा, "मैं सेण्टक्लेयर के परिवार में था।"

साम्बो ने मजाक में कहा, "हां, बड़े आदमी न होते तो उस घर की ये टूटी-फूटी चायदानियां यहां क्यों बिकने आतीं !"

इस मजाक से एडाल्फ को बड़ा क्रोध आया। वह साम्बो पर तेजी से झपटा। दूसरे लोग यह देखकर तालियां बजाने लगे, इससे बड़ा शोर-गुल मचा। शोर सुनकर आढ़त का प्रधान अध्यक्ष हाथ में चाबुक लिये वहां पहुंचा। उसे देखकर सब अपनी-अपनी जगह पर जा डटे। साम्बो ने उसे देखकर कहा, "सरकार, पहले वाले लोगों में कोई गुल-गपाड़ा नहीं करता। हमने सबको सीधा कर दिया। ये जो नये गुलाम आये हैं, बड़ा उत्पात करते हैं।"

इस पर अध्यक्ष साहब बिना पूछ-ताछ के टाम और एडाल्फ को दो चार लात-घूंसे जमाकर चलता बना। जाते-जाते कह गया कि सब चुप-चाप सो जाओ, शोर मत मचाना।

दासों के घर का दृश्य देखने के बाद अब दासियों की दशा जानने का कौतूहल हो सकता है। आइये, हमारे साथ इस घर में चलिये। यहां आपको बहुत-सी दासियां दिखाई देंगी। इनमें बूढ़ी भी हैं, जवान भी; अधेड़ भी हैं, लड़कियां भी। सभी तरह की हैं। अस्सी बरस की बुढ़िया से लेकर तीन वर्ष की लड़कियां तक यहां देखिये, यह एक दस बरस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की लड़की किस तरह बिलख-बिलखकर रो रही है। कल इसकी माता नीलाम कर दी गई है, आज कोई इसकी ओर आंख उठाकर भी देखने-वाला नहीं। बालिका 'मां-मां' कह-कहकर चिल्ला रही है, पर कोई उसे पूछनेवाला नहीं।

और देखिये, यह अस्सी पार किये, कठोर मेहनत के कारण वात-रोग से पीड़ित, बुढ़िया बैठी हुई चुपचाप रो रही है। तीन बार इसकी डाक बोली गई, लेकिन बेकाम समझकर किसी ने इसे नहीं खरीदा। इसके पांच-छह लड़के-लड़कियों को लोग खरीद ले गए हैं। शोक से व्याकुल जननी उन्हींके लिए आंसू बहा रही है।

और देखियेगा? चलिये, देखते चलिये। अभी आपने देखा ही क्या है? इधर देखिये, दो स्त्रियां साधारण स्त्रियों से कुछ दूर बैठी हैं। ये कपड़े-लत्ते से भलीमानस-सी जान पड़ती हैं। रंग भी इनका क़रीब-क़रीब अंगरेजों-जैसा है। इनमें एक की उम्र ४५ साल की होगी, इसके अंग खूब गठीले हैं। इसके पासवाली दूसरी युवती की उम्र पन्द्रह बरस की होगी। इन दोनों के चेहरों से जान पड़ता है कि दूसरी पहली की बेटी है। पहली स्त्री अंगरेज़ पिता और हब्शी माता से है। लड़की भी अंगरेज़ से ही पैदा हुई जान पड़ती है। इनके कपड़ों के रंग-ढंग तथा हाथों की कोमलता पर ध्यान देने से पता चलता है कि इन्होंने क़भी परेशानी नहीं उठाई है। कल इन दोनों का नीलाम होगा।

न्यूयार्क-निवासी क्रिश्चियन-चर्च के एक धर्मात्मा मेम्बर साहब की ओर से ये नीलाम के लिए आई हैं। इनके दाम के हकदार वही धर्मात्मा मेम्बर साहब होंगे। पर वे साहब जैसे धार्मिक क्रिश्चियन हैं, उससे इस बात में कोई शक नहीं रह जाता है कि इन रुपयों में से वे कुछ तो गिर्जाघर बनाने के लिए और कुछ लार्ड बिशप साहब के खर्च के लिए अवश्य देंगे।

उन दोनों स्त्रियों में माता का नाम सूसन और कन्या का एमेलिन है। ये न्यू अर्लिन्स की एक सहृदय और सम्भ्रान्त महिला की दासियां थीं। उसने इन्हें बड़ी लगन से लिखाया-पढ़ाया था। पर फिजूल-खर्ची के कारण उसका इकलौता लड़का न्यूयार्क की बी० एण्ड-कम्पनी का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क़र्जदार हो गया। उस कम्पनी ने नालिश करके उसपर डिगरी करा ली। डिगरी में अचल सम्पत्ति की कुरकी और नीलाम में बड़ा खर्चा और परेशानी की बात बतला कर कम्पनी के वकील ने चल सम्पत्ति कुर्क कराकर नीलाम कराने की सलाह दी। चल सम्पत्ति में दास-दासी ही सबसे ज्यादा कीमती होते हैं। पर एक बड़ी अड़चन थी। कम्पनी के साहब उत्तरी प्रदेश के और एक खास तरह के क्रिश्चियन हैं। वह भला नर-नारियों का सौदा करने की प्रथा का सहारा कैसे लें! इस मामले को लेकर बड़ी लिखा-पढ़ी होने लगी। चल सम्पत्ति बेचे बिना तीस हजार रुपयों के जल्दी उतरने की सम्भावना नहीं थी। एक ओर तीस हजार की रकम और दूसरी ओर क्रिश्चियन धर्म, दोनों की होड़ लगी थी। अन्त में तीस हजार की ही जीत रही। कम्पनी के साहब ने वकील को चल सम्पत्ति कुर्क कराकर नीलाम कराने को पत्र लिखा। पत्र पाते ही वकील ने सूसन और उसकी कन्या एमेलिन को कुर्क करके नीलाम में भेज दिया। उन्हीं दोनों मां-बेटियों को आप यहां गोदाममें बैठी बिलखती देख रहे हैं।

एमेलिन कहती है, "मां, तुम मेरी जांघ पर सिर रखकर थोड़ा आराम कर लो।"

"नहीं, बेटी, मुझे नींद नहीं आवेगी। जान पड़ता है, हम लोगों के मिलन का यह आखिरी दिन है।" सूसन ने सिसकते हुए कहा।

एमेलिन ने धीरज से कहा, "मां, तुम ऐसा क्यों कहती हो? शायद हम दोनों को कोई एक ही आदमी खरीद ले।"

सूसन आंसू पोंछतेहुए बोली, "नहीं बेटी, इसकी कोई उम्मीद नहीं। मैं झूठी उम्मीद दिलाकर मन को भुलाना नहीं चाहती।"

"क्यों, वह नीलामवाला तो कहता था कि हम दोनों एक ही-सी हैं। इससे दोनों की एक ही डाक कर देगा।"

सूसन की उम्र अधिक होने के कारण उसका अनुभव भी बहुत था। वह आदमियों को देखकर ताड़ जाती थी कि कौन कैसा है। उस आदमी के चेहरे का रंग-ढंग देखकर, उसकी बातें सुनकर, सूसन के होश उड़ गए। उस गोदाम का रक्षक जब एमेलिन का हाथ पकड़कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसके सुन्दर बालों को हिला-डुलाकर देखते हुए कहने लगा कि "यह माल बड़ा बढ़िया है, इसके खूब दाम आवेंगे," तभी सूसन की जान निकल गई। सूसन का हृदय बहुत ही धार्मिक था। इससे यह सोचकर उसका हृदय दहकने लगा कि उसके गर्भ से जन्मी हुई कन्या को कोई लम्पट पिशाच अंगरेज खरीद कर उपपत्नी बनायेगा।

एमेलिन ने फिर कहा, "मां, तुम रसोई बहुत अच्छी बनाना जानती हो। किसी भले घर में तुम्हें रसोईदारिन का और मुझे दरजिन का काम मिल जाय, तो हम लोगों के दिन बड़े मजे में कटेंगे।"

सूसन ने कहा, "बेटी, मैं चाहती हूं कि तेरे सिर के सब बाल पीछे की ओर सीधे-सीधे कर दूं।"

एमेलिन ने पूछा, "क्यों मां, ऐसा करने से तो मैं अच्छी नहीं लगूंगी। क्या कोई भला आदमी ऐसे बाल देखकर खरीदेगा ?"

सूसन ने कहा, "हां, खरीद सकता है।"

"कैसे ?"

"भले आदमी साफ और सीधे-सादे लोगों को अधिक पसन्द करते हैं, बनाव-श्रृंगार और ठाट-बाट उन्हें नहीं रुचता। ठाट-बाट देखकर तो लम्पट ही रीझकर खरीदते हैं। बेटी, ये सब बातें मैं तुमसे ज्यादा जानती हूं। मैं तुझसे कहती हूं कि अगर हम लोग अलग-अलग बिके तो तू जहां रहे, अपने धर्म से रहना। मेरी इस बात को याद रखना कि प्राण दे देना, पर धर्म न खोना। अगर कोई गोरा तेरा धर्म भ्रष्ट करने पर तुल जाय तो आत्म-हत्या करके अपने धर्म की रक्षा करना। मेम साहब के उपदेशों को मत भूलना। अपनी बाइबिल और भजनों की पुस्तक हमेशा साथ रखना। ईश्वर को मत भूलना, वह सदा तेरी रक्षा करेगा।"

सूसन बड़े निराश-हृदय से कन्या को उपदेश दे रही थी। वह सोचती थी कि कल उसकी परम-सुन्दरी पवित्र-हृदया कन्या को वही नीच अंग्रेज खरीद लेगा, जिसके पास धन होगा। वह बार-बार कहने लगी, "मेरी आंखों की पुतली एमेलिन आज यदि सुन्दर न होकर कुरूप होती और शिक्षित न होकर मूर्ख होती तो अच्छा था।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे समय में ईश्वर की प्रार्थना करने और उस पर भरोसा रखने के सिवा और किसी तरह धीरज नहीं आ सकता। पर आज-तक इस गोदाम में से न मालूम ईश्वर से ऐसी कितनी ही जीवित प्रार्थनाएं और पुकारें हुई हैं, जिनका कोई ठिकाना नहीं। क्या ईश्वर इनकी प्रार्थनाएं नहीं सुनता? क्या वह इन्हें भूल गया? कदापि नहीं। वह परम न्यायी, परम करुणामय, दीनदयाल भगवान किसी छोटी-से-छोटी आत्मा तक को एक पल के लिए नहीं भूलता। अरे पाखण्डी, निर्मोही, अर्थपिशाच गोरे बनियो, तुम सबको निश्चय ही इस पाप का फल भोगना पड़ेगा। तुम नहीं तो तुम्हारी सन्तानें अपने रक्त से इस पाप का प्रायश्चित्त करेंगी। जिस बाइबिल को तुम लोग अपना धर्मशास्त्र कहते हो, उसी बाइबिल में लिखा है, "गले में पत्थर बांधकर समुद्र में डूब जाने से जो हानि होती है, उससे भी अधिक हानि उन लोगों को उठानी पड़ेगी, जो एक छोटी-से-छोटी आत्मा का भी अपमान करते हैं।"

देखते-देखते रात गहरी हो चली। सूसन और उसकी कन्या हृदय के पट खोलकर ईश्वर को पुकारने लगीं। नाना प्रकार के भजन गाने लगीं।

ओ सूसन, ओ एमेलिन, तुम जन्म-भर के लिए एक-दूसरे से विदा मांग लो। आज की रात की समाप्ति के साथ-साथ तुम्हारे भाग्य का सूर्य भी सदा के लिए अस्त हो जायगा।

सवेरा हुआ। सब लोग अपने-अपने काम में लग गए। स्केग नाम का साहब आज के नीलाम का प्रबन्ध करने लगा। बिकने के लिए आये हुए दास-दासियों को वह तरतीब से खड़ा करने लगा। नीलाम बोलने के पहले खरीदारों के अंतिम दिखावे के लिए उसने सबको एक पंक्ति में खड़ा किया।

स्केग साहब एक हाथ में चुरुट और दूसरे में नीलाम की पुस्तक लिये हुए इधर-से-उधर टहलकर देखने लगा। देखते-देखते सूसन और एमेलिन के पास जाकर बोला, "तेरे वह घुंघराले बाल क्या हुए?"

एमेलिन ने सकपकाकर उसकी ओर देखा। उसकी माता ने कहा, "मैंने इसे बाल साफ करके जूड़ा बांधने को कहा था। बिखरे और बल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाये हुए बाल उड़-उड़कर मुंह पर पड़ते थे। जूड़ा उससे साफ और अच्छा दीखता है।"

स्केग ने चाबुक संभाल कर उसे धमकाते हुए कहा, "जा जल्दी ! जैसे बाल थे, वैसे करके ला।" फिर उसकी माता से कहा, "तू जाकर ठीक करा दे। घुंघराले बाल रहने से सौ रुपये ज्यादा मिलेंगे।"

धीरे-धीरे नीलाम-घर भर गया। खरीदार आपस में तरह-तरह की बातें करने लगे। एक खरीदार एडाल्फ का बदन जाँच कर देख रहा था। तबतक किसी ने कहा, "ओहो, अल्फ्रेड ! कहो, तुम कहां चले ?"

अल्फ्रेड ने कहा, "भाई, मुझे एक अरदली की जरूरत है। मैंने सुना कि सेण्टक्लेयर के गुलाम बिक रहे हैं। इससे यहां खरीदने आया हूं।"

उस आदमी ने कहा, "सेण्टक्लेयर के गुलाम खरीदोगे ? मैं तो कभी ऐसा नहीं कर सकता।" सेण्टक्लेयर के यहां के गुलाम आदर पा-पाकर, बिगड़कर, दो कौड़ी के हो गये हैं।"

अल्फ्रेड बोला, "इसका मुझे डर नहीं। मेरे हाथ में पड़ते ही इनका बाबूपन हवा हो जायगा। दो दिन में समझ जायंगे कि मैं सेण्टक्लेयर नहीं हूं। यह आदमी शक्ल-सूरत का अच्छा है, इसीको लूंगा।"

उस आदमी ने कहा, "यह बड़ा फिजूल खर्च है।"

अल्फ्रेड ने जवाब दिया, "हमारे यहां इसकी दाल नहीं गलने की। दो बार दण्डगृह की हवा खिलाई कि इसके होश ठिकाने आ जायंगे।"

टाम बड़ी विनम्र दीनता से हरएक खरीदार का मुंह देखने लगा। वह देखना चाहता था कि इनमें कोई दयालु खरीदार भी है या नहीं। पर जितने आदमियों को उसने देखा, उनमें कोई अच्छा नहीं जान पड़ा। किसी के चेहरे पर क्रोध झलक रहा था, तो कोई देखने में बड़ा निर्दयी मालूम पड़ता था, कोई कामी दिखाई देता। यों ही सैकड़ों मुख देखे, पर सेण्टक्लेयर की-सी मधुर और शान्त मूर्ति कहीं न दिखाई दी।

नीलाम आरम्भ होने ही को था कि एक मजबूत-सा नाटा आदमी आया और गुलामों को टो-टोकर, बदन में हाथ लगा-लगाकर, देखने लगा। इसके चेहरे से मालूम होता था, मानो नरक का द्वारपाल हो। इसे देखते ही टाम का हृदय भयभीत हुआ और बड़ी घृणा पैदा हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस आदमी ने एक-एक करके सब दास-दासियों को परखा और अंत में टाम के पास पहुंच कर तथा उसके मुंह में उंगली डालकर देखने लगा, फिर पैरों की ताकत देखने के लिए उसे कुदवाया। परीक्षा समाप्त होने पर टाम से बोला, "सबसे पहले तू कहां के दास-व्यापारी के यहां था ?"

टाम ने कहा, "केण्टाकी में, साहब !"

"वहां क्या करता था ?"

"अपने मालिक के खेत का काम देखता था।"

"ठीक है।"

टाम से हटकर वह एडाल्फ के पास पहुंचा, पर घृणा से उसके मुख की ओर देखकर वहां जा पहुंचा, जहां सूसन और एमेलिन खड़ी थीं। उसने अपना वज्र-सा कठोर हाथ फैला कर एमेलिन को अपने निकट खींच लिया। एमेलिन भय से कांप उठी। उसने एमेलिन के कन्धे, छाती और भुजाओं पर हाथ लगाकर उसकी शारीरिक दशा देखी, फिर सतृष्ण नयनों से बारम्बार उसकी ओर ताकने लगा। इसके बाद उसे उसकी माता की ओर धकेलकर चलता बना।

जिस समय वह नर-पिशाच जैसा खरीदार एमेलिन को देख रहा था, उस समय उसकी माता का हृदय भय और शंका से कांप रहा था। एमेलिन स्वयं भी उसका मुख देखकर बहुत डर गई और रोने लगी। उसका रोना देखकर नीलाम वाले बहुत बिगड़े और बोले, "यहां रोना-झींकना मचायेगी तो डंडे पड़ेंगे।"

अब नीलाम आरंभ हुआ। नीलाम की चौकी पर पहले एडाल्फ खड़ा किया गया। दो-चार डाक बोलने के बाद उसे अल्फ्रेड ने ख़रीद लिया। यों एक-एक करके सेण्टक्लेयर के सब दास-दासियों को भिन्न-भिन्न लोगों ने खरीद लिया। अंत में टाम की बारी आई।

नीलाम की चौकी पर खड़ा होकर टाम इधर-उधर देखने लगा। पांच-छह डाक होने के बाद वह भी बिक गया। जिस नाटे-से आदमी को देखकर टाम को भय और घृणा हुई थी, उसीने उसे ख़रीदा। दाम चुकाकर उसे नीचे उतारा और गला पकड़कर एक किनारे थोड़ी दूर बिठा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद सूसन का नीलाम हुआ। पर नीलाम की चौकी से उतरते समय वह सतृष्ण नयनों से पीछे घूमकर अपनी कन्या की ओर देखने लगी। उसकी कन्या ने उसकी ओर हाथ फैलाया। सूसन ने अपने ख़रीदार से बड़ी दीनतापूर्वक कहा, "स्वामी, कृपा करके मेरी कन्या को भी आप ही खरीद लीजिये।"

उसका खरीदार औरों की निस्बत सहृदय जान पड़ता था। उसने कहा, "कोशिश करूंगा। पर इसके दाम ऊंचे आंयगे। मुझे उम्मीद नहीं कि मैं उतने दाम दे सकूँगा।"

एमेलिन नीलाम की चौकी पर खड़ी की गयी। उसका वह सरलता-पूर्ण मुख-कमल डर से पीला पड़ गया, क़िन्तु उसके सौन्दर्य में कुछ कमी नहीं आई थी, उलटे एक अनुपम नवीन सौन्दर्य का भाव उसके मुख पर छा गया। यह देखकर उसकी माता मन-ही-मन, पछताकर कहने लगी, इससे तो अच्छा था कि यह कुरूप होती। एमेलिन को ख़रीदने की इच्छा से बहुत लोगों ने डाकें बोलीं। एमेलिन की मां का ख़रीदार भी दो-तीन डाक बढ़ा, पर देखते-ही-देखते डाक इतनी बढ़ी कि उसने अपनी हिम्मत के बाहर दाम बढ़े देखकर मौन साध लिया। यों ही धीरे-धीरे कई ख़रीदार चुप हो गये। अंत में केवल दो आदमियों की बोली रह गई। इनमें एक वही टाम का ख़रीदार था और दूसरा था इस प्रदेश का एक धनी और कुलीन पुरुष। अंत में आखिरीडाक में टाम के ख़रीदार ने ही एमेलिन को ख़रीदा। नर-पिशाच साइमन लेग्री ही उस सरल-हृदय सच्चरित्र पंचदश-वर्षीया बालिका के जीवन का मालिक हुआ। इस दुरात्मा के हाथ से एमेलिन की रक्षा करनेवाला दीनबंधु भगवान के सिवा और कोई नहीं है।

एमेलिन सावधान! अपनी माता का अंतिम उपदेश सदा याद रखना! प्राण देना, पर धर्म मत खोना।

एमेलिन के इस प्रकार बिक जाने पर उसकी माता बिलख-बिलख कर रोने लगी। उसकी माता का ख़रीदार कुछ सहृदय था। इससे वह मन-ही-मन में कुछ दुःखित हुआ। पर ऐसे दृश्य आठ पहर चौंसठ-घड़ी इन लोगों की आंखों के सामने फिरा करते थे। इससे इनका कलेजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पक जाता था ।

अतः वह आनन्दपूर्वक अपनी खरीदी हुई सम्पत्ति सूसन को लेकर अपने घर की ओर रवाना हुआ ।

इस नीलाम के दो-तीन दिन बाद क्रिश्चियन फर्म बी० एंड को० के वकील ने सूसन और एमेलिन की बिक्री के रुपयों में से अपना कमीशन और नीलाम का खर्च काटकर बाकी रुपये उस कम्पनी के क्रिश्चियन मालिक को भेज दिये ।

३४ :: नाव में

रेड नदी में एक छोटी-सी नाव पाल डाले दक्षिण की ओर बढ़ी चली जा रही है। नाव से कई दास-दासियों के रोने और सिसकने की आवाज आ रही है। टाम इन्हींके बीच बैठा है। उसके हाथ-पैर जंजीर से जकड़े हुए हैं, पर उसका हृदय जिस दुःख से दबा जा रहा है, उस दुःख का बोझ हथकड़ी-बेड़ियों से भी अधिक है। उसकी सारी आशा-आकांक्षाओं पर पानी फिर गया है। पीछे छूटते हुए नदी-तट के वृक्षों की भांति उसके सामने जो कुछ था, वह एक-एक करके पीछे छूट गया। अब वे नहीं दीख पड़ेंगे, अब वे नहीं लौटेंगे। केण्टाकी का घर, स्त्री, पुत्र, कन्या और उस उदार स्वामी का परिवार आज कहां है? सेण्टक्लेयर का घर। उस घर की वह विपुल शोभा-समृद्धि, इवा का वह देवोपम मुखचन्द्र। वह उन्नतचेता सुन्दर प्रफुल्लमूर्ति, कोमल-प्राण सेण्टक्लेयर, वह परिश्रम-रहित जीवन, वह सुख के विश्राम-दिवस---सब एक-एक करके जाते रहे, अब उनकी जगह रह गई है स्वप्न की-सी स्मृति।

टाम के नये खरीदार लेग्री साहब ने न्यू अर्लिन्स की कई आढ़तों से आठ दास-दासी खरीदे थे। इनमें दो-दो को एक बन्धन में जकड़ रखा था। लेग्री साहब कुछ दूर नाव पर चलने के बाद, राह में नदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मुहाने पर, सबको साथ लेकर 'पॉट्रेस्ट' नामक जहाज़ पर सवार हुआ। सब दास-दासियों को सवार करा लेने के बाद वह टाम के पास आया। सेण्टक्लेयर के यहां टाम सदा अच्छे कपड़े पहना करता था। बेचने के पहले आढ़त वालों ने टाम को अपना सबसे बढ़िया कपड़ा पहनने का हुक्म दिया था। उस समय का पहना बढ़िया कपड़ा अभी तक उसके बदन पर था। लेग्री ने आकर उससे कहा, "खड़ा हो!"

टाम खड़ा हो गया।

अब लेग्री ने उससे वह बढ़िया कपड़ा उतार देने को कहा। टाम उतारने लगा। पर हाथ जंजीर में जकड़े होने से वह झटपट उतार न सका। इस पर लेग्री ने स्वयं जोर से उसके कपड़े खींचकर उतारे। फिर वह सेण्टक्लेयर के दिये हुए उसके बक्स की ओर घूमा। इसे उसने पहले ही खोलकर देख लिया था। उसमें से पुराना कोट और पतलून निकालकर टाम को पहनने को दिया। टाम इस पतलून को घुड़साल में काम करने के वक्त के सिवा और कभी न पहनता था। इस समय लेग्री की आज्ञानुसार वह फटीपुरानी पतलून उसे पहननी पड़ी। फिर लेग्री ने उसके बूट उतरवा कर एक जोड़ी फटा जूता पहनने को दिया। वह भी उसने पहन लिया।

इस जल्दी में भी, कपड़ों की अदला-बदली में, टाम ने अपने पहले कोट की पाकेट से बाइबिल निकाल ली, नहीं तो उसे इससे भी हाथ धोना पड़ता। कपड़े उतारते ही लेग्री उसकी जेबें टटोलने लगा कि उनमें क्या रखा है। कोट की पाकेट से इवा का दिया हुआ एक रेशमी रूमाल निकला। उसे तुरन्त उसने अपनी जेब के हवाले किया। फिर दूसरी जेब से एक प्रार्थना-पुस्तक निकली। टाम जल्दी में इसे निकालना भूल गया था। इस पुस्तक को देखते ही लेग्री क्रोध से जल उठा। बोला, "क्यों रे, तेरा गिर्जे से ताल्लुक रहता है?"

टाम ने दृढ़ता से कहा, "जी सरकार!"

लेग्री ने आग-बबूला होकर कहा, "मैं तेरे यह सब पाखंड जल्दी ही निकाल दूंगा। मैं अपने खेत के कुली-कबाड़ियों को भजन या उपासना नहीं करने देता। इसे अच्छी तरह समझ ले। अब तू अपने मन में जान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले कि मैं ही तेरा गिर्जा और मैं ही तेरा सब-कुछ हूं। जो मैं कहूंगा, वही तुझे करना पड़ेगा।"

लेग्री ने बड़ी लाल-पीली [आंखें करके टाम से ये बातें कहीं। उस समय टाम चुप था, पर उसकी अन्तरात्मा कह रही थी—नहीं, कभी नहीं, न तू मेरा गिर्जा है, न कुछ है। इस समय बाइबिल का वह वाक्य, जो सदा इवा उसके सामने पढ़ा करती थी, उसे याद आया—जान पड़ा, मानो उसे धीरज दिलाने के लिए कहीं से आवाज आ रही है—"डरना मत; क्योंकि मैंने तेरा उद्धार किया है।....मैंने तुझे अपना नाम दिया है। तू मेरा ही होगा!"

पर लेग्री के कानों में यह ध्वनि नहीं पड़ी। पाप-पूर्ण कर्णों में यह ध्वनि प्रवेश नहीं कर सकती थी। टाम के नीचे किये हुए चेहरे की ओर जरा देर लेग्री देखता रहा, फिर दूसरी ओर को चल दिया। सेण्ट-क्लेयर ने टामको कुछ कीमती कपड़े दिये थे। अर्थपिशाच लेग्री ने लोभ में पड़कर टाम का सब-कुछ नीलाम कर डाला, यहां तक कि सन्दूक भी बेच दिया और जो कुछ मिला, सब हड़प गया। कानून से दासों का किसी चीज़ पर अधिकार नहीं है। इसी से जब टाम को लेग्री खरीद चुका तो उसके सारे माल-असबाब का भी वही मालिक हो गया। इस नीलाम के समय टाम पर क्या बीती, यह वही जानता था।

माल-असबाब का नीलाम कर चुकने पर लेग्री फिर टाम के पास पहुंचकर बोला, "टाम, तेरा जो कुछ असबाब का झंझट था, सब मैंने नीलाम में पार कर दिया। अब जो कपड़े तेरे पास हैं, उन्हें संभाल कर रखना। एक बरस के पहले मेरे यहां दूसरे कपड़े नहीं मिलेंगे। मैं अपने यहां के हब्शियों को साल में बस एक बार कपड़े देता हूं।"

इसके बाद जहां एमेलिन दूसरी स्त्री के साथ जंजीर में बंधी बैठी थी, वहां लेग्री पहुंचा। उसने एमेलिन की ठोड़ी पकड़कर कहा, "मेरी प्यारी, उदासी को छोड़ो!"

वह सच्चरित्र बालिका भय और घृणा से उसकी ओर देखने लगी। यह देखकर उसने कहा, "इस तरह मुंह बनाने से काम नहीं चलेगा। यह सब छोड़ो। मेरे सामने सदा खुश रहना पड़ेगा। सुनती है न?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर एमेलिन के साथ जंजीर से बंधी हुई दूसरा स्त्री को धक्का देकर बोला, "अरी बुढ़िया, यह हांडी-सा मुंह बनाये क्या पड़ी है? तुझसे कहता हूं, जरा हंसकर बोल। यह मुंह बनाना छोड़ दे।"

दो-चार क़दम पीछे हटकर और फिर आगे बढ़कर वह बोला, "मैं तुम सभी से कहता हूं, मुंह इधर करके एक बार मेरी ओर देखो, ठीक मेरी आंखों की ओर ताको। (ज़ोर से पृथ्वी पर पैर पटक कर) एक बार, एक नज़र से मेरी ओर देखो।"

मारे डर के सबकी आंखें उसकी ओर लग गईं। फिर वह लोहे का मुग्दर-सा अपना मुक्का दिखाकर कहने लगा, "ज़रा इस मुक्के की ओर देखो। यह मुक्का लोहे से भी सख्त है। हब्शियों को ठोकते-ठोकते ही हाथ ऐसा कड़ा हो गया है।"

इतना कहते-कहते अपना वह मुक्का बंधा हुआ हाथ टाम के मुंह के पास ले गया। टाम डरकर पीछे सरक गया। फिर लेग्री कहने लगा, "मैं तुम सबको समझाये देता हूं, मैं खेत में रखवाला नहीं रखता, सब काम खुद ही देखता-सुनता हूं। तुम सभी को अच्छी तरह काम करना पड़ेगा। जब जो बात बोलूंगा, उसकी तामील तुरन्त करनी पड़ेगी। इसी ढंग से मैं काम लेता हूं। मेरे यहां दया-माया से कोई सरोकार नहीं। इसे तुम लोग खूब समझ लो। मुझे वह सब दया-माया दिखलाना पसन्द नहीं है।"

उसकी बातें सुनकर दास-दासियों की जान सूख गई और सब ठण्डी सांसें लेने लगे। कुछ देर बाद वह शराब पीने के लिए जहाज के दूसरे कमरे में जाने लगा। उसके पास ही कोई भलामानस आदमी खड़ा था। उससे वह कहने लगा, "मैं अपने हब्शियों के साथ इसी तरह का बर्ताव आरम्भ करता हूं। मेरी यह चाल है कि ख़रीदकर लाते ही मैं इन्हें सब समझा देता हूं कि किस तरह से इन्हें मेरे साथ रहना होगा।"

उस अपरिचित भलेमानस ने बड़े गौर से उसकी ओर इस तरह देखा, मानो कोई पण्डित किसी नई वस्तु की जांच कर रहा हो। फिर कहा, "बेशक!"

लेग्री ने और आगे कहा, "हां, मैं ऐसे नाजुक-नाजुक हाथोंवाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेतिहर नहीं हूं कि कुलियों को कोड़े लगाने का काम रखवाले को सौंपूं। यह देखिये, मेरी मुट्ठी और अंगुलियां एकदम फ़ौलाद की मानिन्द हैं। इस जगह का हाथ का मांस पत्थर-सा कड़ा हो गया है। और कोई बात नहीं, यह हब्शियों को ठोकते-ठोकते ऐसा हो गया है।"

उस अपरिचित ने लेग्री का हाथ देखकर कहा, "बेशक, बहुत कड़ा हो गया है; पर मैं समझता हूं कि इस अभ्यास से तुम्हारा हृदय इससे भी ज्यादा सख्त हो गया है।"

लेग्री ने हँसते हुए कहा, "हां, क्यों नहीं, यह तो ठीक ही है। मैं काम में दया-माया के चक्कर में नहीं पड़ता।"

"तुमने बहुत अच्छे दास-दासी खरीदे हैं।"

"हां, अच्छे ही हैं। यह जो टाम दीख पड़ता है, इसकी सब लोगों ने तारीफ़ की थी। इसके लिए मुझे कुछ ज्यादा देना पड़ा, पर इससे काम भी खूब लूंगा। लेकिन इसने कुछ बुरी बातें सीख रक्खी हैं। धर्म की ओर इसका बड़ा झुकाव है, पर यह सब मैं जल्दी ही निकाल बाहर करूंगा। यह अधेड़ दासी खूब सस्ते में हाथ लगी। मैं समझता हूं, इसे कोई बीमारी होगी। सोचता हूं, दो बरस तो चलेगी, और दो बरस में मैं खूब मेहनत लेकर अपनी कीमत वसूल कर लूंगा। बहुत-से खेतिहर, बीमार पड़ जाने पर मर जाने के डर से, कुलियों से अधिक काम नहीं लेते। पर मेरा वैसा हिसाब नहीं है। बीमार हो या अच्छा, बंधा हुआ काम करना ही पड़ेगा। थोड़ा काम करके चार बरस जीने से जो नतीजा निकलता है, ज्यादा मेहनत करके दो बरस जीने से भी वही नतीजा निकलता है। एक हब्शी से थोड़ा काम लेकर ज्यादा दिन जिलाने से कोई फायदा नहीं होता। ज्यादा मेहनत लेने से जल्दी मर जाय तो फिर उसके बदले में एक और नया गुलाम खरीद लेने से अधिक नफे की उम्मेद रहती है।"

अपरिचित ने पूछा, "तुम्हारे खेत में गुलाम साधारणतः कितने वर्ष जीते हैं?"

लेग्री ने जवाब दिया, "इसका कोई हिसाब नहीं। कोई कुछ कम, कोई कुछ ज्यादा! लेकिन मामूली तौर से जवान हो तो छ-सात बरस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और चालीस के पार हो तो दो-तीन बरस से ज्यादा नहीं टिकते। पहले बीमार पड़ने पर मैं भी हब्शियों को दवा दिया करता था और कम्बल देता था। लेकिन आखिर में नतीजा कुछ नहीं निकला, नाहक में चीजों की बरबादी होती थी। अब इन अड़ंगों से मैं दूर रहता हूं। बीमारी में भी काम लेता हूं। मर जाने पर और नये खरीद लेता हूं। इससे हर तरह की सहूलियत रहती है।"

वह अपरिचित आदमी लेग्री के पास से हट कर थोड़ी दूर पर बैठे हुए एक युवक के निकट जाकर बैठ गया। वह देर से इन लोगों की सारी बातें सुन रहा था।

उस पहले आदमी ने इस युवक से कहा, "दक्षिण प्रदेश के सभी खेतिहर इस आदमी की भांति सख्त नहीं हैं।"

युवक ने कहा, "ऐसा न होना ही अच्छा है।"

पहला आदमी बोला, "यह आदमी तो महानीच और बदमाश है। इसका बर्ताव तो सचमुच ही पशुओं-जैसा है।"

युवक ने कहा, "पर आपके देश के कानून की यह खूबी है कि वह ऐसे ही निष्ठुर और नीच आदमियों को अनगिनत नर-नारियों के जीवन का अधिकारी बनने का अवसर देता है। ऐसा कोई कानून आपके यहां नहीं है, जिसकी रू से ऐसे निष्ठुर आदमियों के अत्याचार से इन बेचारे गुलामों की रक्षा हो सके। खेतवालों में अधिकांश ऐसे ही हृदयहीन होते हैं।"

पहला आदमी बोला, "खेतवालों में जहां बुरे बहुत हैं, वहां कुछ भले भी हैं।"

युवक ने कहा, "दलील के लिए मान भी लिया जाय कि आपके खेतवालों में भले भी हैं, तो भी मैं कहता हूं कि अत्याचार और निष्ठुरता के लिए वही पूरी तरह दोषी हैं, क्योंकि ऐसे ही दो-चार भलेमानसों के कारण यह घृणित प्रथा अबतक दूर नहीं हुई। यदि सभी खेतवाले लेग्री-सरीखे होते, तो क्या फिर भी यह प्रथा बनी रहती ?"

इधर जब इन दोनों में ये बातें हो रही थीं, उधर जहाज में दूसरे स्थान पर एक जंजीर में जकड़ी हुई एमेलिन और लूसी भी आपस में बातें कर रही थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एमेलिन ने कहा, "तुम किसके यहां रही थी ?"

लूसी बोली, "एलिस साहब के यहां थी। तुमने शायद उन्हें देखा हो।"

"क्या वह तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करते थे ?"

"बीमार पड़ने के पहले तो वह बहुत ही अच्छा बर्ताव करते थे पर बीमार होने के बाद उनका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो गया, और सबसे रूखा व्यवहार करने लगे। मुझे रात-रात भर उनकी टहल के लिए जागना पड़ता था। पर एक दिन मुझे नींद आ गई, इस पर उन्होंने गुस्सा करके कहा कि तुझे किसी खूब सख्त आदमी के हाथ बेचूंगा।"

"तुम्हारे दुःख-दर्द का कोई साथी है ?"

"मेरा पति है। वह लुहार का काम करता है। मालिक ने उसे एक दूसरी जगह किराये पर दे रक्खा है। मेरे चार लड़के हैं, लेकिन मुझे ऐसी जल्दी नीलाम-घर में भेज दिया कि मैं अपने स्वामी या लड़कों से एक बार भी न मिल पाई।"

यह कहते-कहते लूसी रोने लगी। किसी का दुःख देखकर मनुष्य के मन में स्वभावतः उसे धीरज देने की इच्छा होती है। लूसी की दुःख-गाथा सुनकर एमेलिन उसे कुछ धीरज दिलाने वाली बात कहना चाहती थी, पर उसकी समझ में न आया कि क्या कहे। इस भयंकर मालिक के डर से वे दोनों इतनी डरी हुई थीं कि हृदय से कोई बात ही न उठती थी।

घोर संकट के समय मनुष्य को धार्मिक विश्वास बड़ी सान्त्वना देता है। लूसी अपढ़ होने पर भी धर्म में बड़ा विश्वास रखती थी एमेलिन ने भी धर्म के विषय में नियमित शिक्षा पाई थी और उसका हृदय धर्म की भावना से भरा था। पर ये ऐसी दुर्दशा में पड़ गई थीं, ऐसे राक्षस-प्रकृति लम्पट अंगरेज़ के हाथ में पड़ी थीं कि इस दशा में धार्मिक मनुष्य भी ईश्वर पर भरोसा रखकर सान्त्वना प्राप्त कर सकता है या नहीं, इसमें सन्देह है।

जहाज़ धीरे-धीरे बढ़ने लगा। अन्त में एक छोटे कस्बे के पास आकर उसने लंगर डाला। लेग्री अपने दास-दासियों को साथ लेकर वहीं उतर गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३५ : : नरक-स्थली

बड़े ही दुर्गम और बीहड़ रास्ते से एक गाड़ी चली जा रही है। उसके पीछे-पीछे टाम और कई गुलाम बड़ी कठिनाई से मार्ग पार कर रहे हैं। गाड़ी के अंदर हजरत लेग्री साहब बैठे हुए हैं। पीछे की ओर माल-असवाब से सटी दो स्त्रियां बंधी हुई बैठी हैं। यह दल लेग्री साहब के खेत की ओर जा रहा है।

यह जन-शून्य मार्ग मुसाफिरों के लिए वैसे ही कष्टकर था; पर स्त्री, पुत्र और पिता-माता से बिछुड़े हुए गुलामों के लिए तो यह और भी दु:खदायक था। इस दल में अकेला लेग्री ही ऐसा था, जो मस्त चला जा रहा था। बीच-बीच में वह ब्रांडी का एकाध घूंट लेता जाता था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर उसको नशा चढ़ आया। उससे उत्तेजित होकर अपने गुलामों को गाने का हुक्म दिया। भला उन दु:खीहृदयों से कहीं संगीत की ध्वनि निकल सकती थी? वे सब एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। लेकिन लेग्री ने उन पर चाबुक फटकारते हुए कहा, "गाओ सूअरो, देर क्यों करते हो।"

तब टाम ने गाना आरम्भ किया :

मेरे यरूशलम सुख-धाम,
कितना मधुर तुम्हारा नाम।
नाश जब होगा दु:ख का फंद,
लहूँगा तवदर्शन-आनन्द !

लेग्री को टाम का गाना बिल्कुल पसन्द नहीं आया, उल्टा वह गुस्से से उस पर चाबुक चला कर बोला, "रहने दे अपने यह भजन-वजन ! मैं नहीं सुनना चाहता। मैं एक मजेदार गीत सुनना चाहता हूं।" अब लेग्री के साथ उसका जो एक पुराना नौकर था, वह गाने लगा—

तुमको कहता कौन मनुज, बाबा, तुम राक्षस-अवतार !
हरते हृदय-हारिणी निज पत्नी की गर्दन मार॥ बाबा० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपि-स्वभाव हनुमत के चेले, ये सब हैं तव पापड़ बेले।
स्वाँग सभ्यता के वश खेले, केवल सभा-मंझार ।। बाबा० ।।
ईसा मूसा का सिर खाया, और सकल उपदेश भुलाया।
इब्राहीम दास दल भाया, थे जो कई हजार ।। बाबा० ।।

उस हब्शी गुलाम के इस तरह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने पर लेग्री ऐसा मस्त हुआ कि खुद भी उसी के सुर-में-सुर मिलाकर चीखने लगा। रास्ते-भर मालिक और नौकर दोनों यों ही गाते हुए चले जाते थे।

थोड़ी देर बाद लेग्री ने एमेलिन की ओर घूम-घूमकर उसके कन्धे पर हाथ धरते हुए कहा, "प्यारी जान, अब हमारा घर आ पहुंचा।"

लेग्री ने जब एमेलिन का तिरस्कार किया था, तब वह बहुत ही डरी थी। पर अब, जब इस नीच ने, प्यारी जान कहकर उसके कन्धे पर हाथ रक्खा, तब उसने सोचा कि इस मधुर व्यवहार की अपेक्षा लेग्री यदि उसे ठोकर मारता तो कहीं अच्छा था। लेग्री की आंखों का भाव देखते ही एमेलिन की छाती धड़कने लगी। लेग्री के छूने से वह और पीछे हट गई और पूर्वोक्त रमणी के साथ सटकर उसकी ओर ऐसी कातर दृष्टि से देखने लगी जैसे संकट के समय बच्चा मां की ओर देखता है।

फिर लेग्री ने उसके कान छूकर कहा, "तुमने कभी झुमका नहीं पहना?"

"जी नहीं!" डरते हुए एमेलिन बोली।

"तुम यदि मेरी बात सुनो और मानो तो मैं घर चलकर तुम्हें एक जोड़ा झुमका दूंगा। तुम्हें इतना डरने की जरूरत नहीं। मैं तुमसे कोई बहुत मेहनत का काम नही लूंगा। तुम मेरे साथ मौज में रहोगी, बड़े आदमियों की तरह रहोगी—सिर्फ़ मेरी बात माननी पड़ेगी।"

यों ही बातें होते-होते गाड़ी लेग्री के खेत के पास जा पहुंची। पहले इस खेत का मालिक एक अंग्रेज था। वह लेग्री-जैसा नीच नहीं था। उस समय यह जगह भी देखने में आज-जैसी बेडौल न थी। लेकिन उसका दिवाला निकल जाने पर लेग्री ने बड़े सस्ते दामों में यह खेत खरीद लिया था। इस समय यह जगह बिल्कुल नरक के समान दिखाई पड़ती थी।

गाड़ी जब घर के फाटक पर पहुंची, तब तीन-चार दासों के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकारी कुत्ते खडखड़ाहट सुनकर भौंकते हुए वाहर निकले। पीछे से यदि वहां का एक हब्शी गुलाम इन कुत्तों को न डांटता और लेग्री उतर कर इन्हें न पुकारता, तो जरूर ये कुत्ते टाम औरनये आये दासों को नोच डालते।

लेग्री ने टाम तथा दूसरे गुलामों की ओर घूमकर कहा, "देखते हो, कैसे वेढव कुत्ते हैं। अगर किसी ने यहाँ से भागने की कोशिश की, तो ये कुत्ते वोटी-वोटी नोच डालेंगे।"

फिर लेग्री ने पुकारा, "साम्बो!"

एक नर-पिशाच-सा हब्शी सामने आकर खड़ा हो गया।

लेग्री ने पूछा, "काम-काज तो खैरियत से चलता है?"

"जी हुजूर, वड़ी खैरियत से।"

फिर "कुइम्वो' कहते ही एक और नर-पिशाच वहां आ पहुंचा। वह अवतक एक किनारे खड़ा अपने मालिक का मन अपनी ओर खींचने की चेष्टा कर रहा था।

लेग्री ने पूछा, "उस दिन तुझसे जो काम करने को वतलाया था, वह सव हुआ?"

"जी हां, सव हो गया।"

ये दो काले पिशाच लेग्री के खेत के प्रधान कार्याध्यक्ष थे। बहुत दिनों से निर्दय आचरण करते-करते अव ये ऐसे नृशंस हो गए थे कि कोई भी नीच-से-नीच काम करने में नहीं हिचकते थे। लेग्री ने इन्हें शिकारी कुत्तों से भी वढ़कर खूंख्वार बना दिया था। गुलामी की प्रथा के देश में ये हब्शी अंगरेजों से भी अधिक अत्याचार करने लगे थे। और कोई कारण नहीं, केवल इन हब्शियों की आत्मा का वेहद पतन हो गयां था। संसार में चाहे जिधर नजर उठाकर देखिये, अत्याचार-पीड़ित या चिर-पराजित जाति के लोगों के मन में किसी प्रकार का वीरोचित भाव नहीं जमने पाता। ऐसी जाति के हृदयमें नीचता, ईर्ष्या, द्वेष और हिंसा आदि अनेक प्रकार के दोष अपना घर कर लेते हैं।

अपने खेत का काम खूबी से चलाने के लिए लेग्री ने एक वड़ी चाल खेल रखी थी। वह इस बात को अच्छी तरह जानता था कि अत्याचार-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ित जाति के लोगों में परस्पर किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं होती। कुइम्बो साम्बो से खार खाता था और जलता था और साम्बो कुइम्बो से। मौका मिलने पर कोई किसी की बुराई करने से न चूकता था। और खेत के और गुलाम इन दोनों से द्वेष रखते थे। लेग्री साम्बो का कसूर कुइम्बो से और कुइम्बो का साम्बो से जान लेता था।

लेग्री के सामने उसके दोनों पार्षद साम्बो और कुइम्बो के खड़े होने पर ऐसा जान पड़ता था, मानो तीन भयानक दानव खड़े हैं। जंगल के खूंख्वार पशुओं से भी इनकी प्रकृति निकृष्ट थी। उनकी वे भयावनी शक्लें, डरावनी आंखें और कर्कश आवाज सर्वथा इस स्थान के उपयुक्त जान पड़ती थीं।

लेग्री ने कहा, "साम्बो, इन सबको ठिकाने पर लेजा। यह औरत तेरे लिए लाया हूं। मैंने तुझसे वादा किया था कि अब की बार तेरे लिए एक गोरी मेम लाऊंगा। इसे लेजा।" इतना कहकर एमेलिन की जंजीर से बंधी हुई लूसी को खोलकर साम्बो की ओर ढकेल दिया।

लूसी चौंककर पीछे हटी और बोली, "सरकार, नव अर्लिन्स में मेरा बूढ़ा पति है।"

लेग्री ने कहा, "तो इससे क्या हुआ? यहां तुझे एक पति नहीं चाहिए? मैं वे सब बातें नहीं सुनता। (चाबुक उठाकर) जा, चुपचाप साम्बो के साथ हो ले।"

फिर एमेलिन से बोला—"प्यारी, आओ, तुम मेरे साथ अन्दर चलो!"

लेग्री ने आंगन में खड़े होकर जब एमेलिन को 'प्यारी' कहा, तब घर के झरोखे में से एक स्त्री का चेहरा बाहर झांकते हुए दिखाई दिया। दरवाजा खोलकर लेग्री के अन्दर जाते ही उस स्त्री ने गुस्से से दो-चार बातें सुनाईं। इस पर लेग्री ने कहा, "तेरा साझा, चुप रह! जो मेरे जी में आवेगा, करूंगा। एक छोड़कर तीन लाऊंगा।"

टाम अश्रुपूर्ण नेत्रों से एमेलिन की ओर देख रहा था। उसने लेग्री की सब बातें सुनी थीं, पर आगे न सुन सका, क्योंकि वह शीघ्र ही साम्बो के साथ चला गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेग्री के दासों के रहने का स्थान बड़ा ही मैला-कुचैला और गन्दा था। घुड़साल की तरह फूस की छोटी-छोटी झोंपड़ियां थीं। उन सब गन्दी झोंपड़ियों को देखकर टाम की जान सूख गई। वह पहले खुद ही एक झोंपड़ी में इधर-उधर घूमकर अपनी बाइबिल रखने के लिए कोई जगह ढूंढ़ने लगा। फिर साम्बो से बोला, "इनमें से मुझे कौन-सी झोंपड़ी मिलेगी ?"

साम्बो ने कहा, "अभी तो मालूम नहीं, सारी झोंपड़ियां बन्द पड़ी हैं। तुमको कहां रखा जायगा, सो हम नहीं जानता।"

बड़ी देर के बाद टाम को एक जगह मिली, पर वह ऐसी जगह थी, जिसके बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।

शाम को सब दास-दासी खेत से अपनी-अपनी झोंपड़ी को लौटे। इनमें से हरएक के बदन पर फटे-पुराने कपड़े थे, शरीर धूल से लथपथ और मुंह बिल्कुल पिचके हुए। अकाल-पीड़ित लोगों की भांति भूख-प्यास से घबराकर वे झोंपड़ियों में घुसे। सुबह से शाम तक ये खेत में काम पर पिसे, बीच-बीच में कितनी ही बार कारिन्दे की लातें और चाबुकों की मार खाई। अब इस वक्त यहां आकर इन्हें खाने के लिए एक-एक पाव गेहूं दिया गया। उसी गेहूं को पीसकर इन्हें रोटियां पकानी पड़ेंगी। अपना साथी होने लायक कोई आदमी ढूंढ़ने की गरज से टाम हरएक पुरुष और स्त्री का मुंह ध्यान से देखने लगा, पर यहां उसे एक बालक तक में मनुष्यात्मा की गन्ध न मिली। पुरुष पशुओं की तरह खूंख्वार, खुदगर्ज और बेरहम थे; स्त्रियां बहुत सताई हुई और कमजोर थीं। उनमें दूसरी जो कुछ सबल थीं, वे निर्बलों को धकेलकर अपना काम बनाती चली जा रही थीं। किसी के मुख पर दया का नाम-निशान तक न था। हरएक दूसरे को वैर-भाव से घूर रहा था। सबको अपने-अपने पेट की चिंता पड़ी थी। वास्तव में घोर अत्याचार सहते-सहते इनका कलेजा पत्थर-जैसा कठोर हो गया था। भूख-प्यास के सिवा मानव-प्रकृति की अन्य सब प्रकार की आकांक्षाएं मिट गई थीं। सन्ध्या-समय हर एक को जो गेहूं मिलता, उसे सब अलग-अलग पीसते। दासों की संख्या के हिसाब से चक्कियों की संख्या बहुत कम थी। इससे बड़ी रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक चक्कियों की घरघराहट चला करती। जो बलवान थे वे सबसे पहले अपना काम बना लेते, और निर्बलों की भोजन बनाने की बारी सबके अन्त में आती।

लेग्री ने साम्बो को जो अधिक अवस्था वाली स्त्री सौंपी थी, उसकी ओर साम्बो ने एक थैली गेहूं फेंककर पूछा, "तेरा नाम क्या है ?"

स्त्री ने कहा, "लूसी।"

"अच्छा, लूसी, आज से तुम मेरी औरत हो। यह गेहूं ले जाकर मेरे और अपने खाने के लिए रोटियां पका लो।"

"मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूं, कभी होने की भी नहीं। तुम यहां से जाओ।"

"फिर ऐसा कहेगी तो डंडे से सिर फोड़ दूंगा।"

"तेरी खुशी! अभी मार डाल। जितनी जल्दी मौत आवे उतना ही अच्छा। अबतक मर गई होती तो अच्छा था।"

साम्बो जब उसे मारने चला तब कुइम्बो ने, जो कई स्त्रियों को धकेलकर अपना गेहूं पीस रहा था, कहा, "खबरदार साम्बो, आदमी मार कर तुम काम का नुकसान करते हो। मैं मालिक से कह दूंगा।"

इस पर साम्बो ने कहा, "मैं मालिक से कह दूंगा कि तू चार स्त्रियों को धकेल कर अपना गेहूं पीस रहा था।"

टाम को सारे दिन पैदल चलना पड़ा था, इससे वह थककर चूर हो गया था। भूख से तबियत परेशान थी, पर ठिकाना नहीं था कि कब खाना नसीब होगा। कुइम्बो ने उसके हाथ में एक थैली गेहूं थमा कर कहा, "ले यह गेहूं, जा रोटी बना-खा। यह एक हफ्ते की खुराक है।"

करीब आधी रात तक टाम देखता रहा, पर उसकी गेहूं पीसने की बारी न आई। रात के एक बजे जब चक्की खाली हुई तो उसने देखा कि दो रोगी स्त्रियां चक्की के पास बैठी हुई हैं। वे बहुत थकी हुई थीं, उनके शरीर में ताकत नहीं थी। यहां बहुत पहले आने पर भी अबतक उन्हें किसी ने गेहूं नहीं पीसने दिया।

टाम ने उठकर पहले उनके गेहूं खुद पीस दिये और फिर अपने पीसे। यह पहला मौका था। इसके पहले कभी किसी ने दया नहीं दिखाई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां के लिए यह एक अलौकिक वात थी। वहुत मामूली दया का काम होने पर भी टाम का यह आचरण देखकर उन दोनों स्त्रियों का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उनका श्रम-खिन्न कठोर मुंह स्त्री-सुलभ ममता के भाव से चमक उठा। वदले में उन्होंने टाम की रोटियां बना दीं। जब वे दोनों रोटियां बना रही थीं, टाम ने चूल्हे के पास वैठकर अपनी वाइविल निकाली। उसके हाथ में पुस्तक देखकर एक स्त्री ने कहा, "तुम्हारे हाथ में यह क्या है ?"

टाम ने कहा, "वाइविल।"

"दीनवन्धु, केण्टाकी छोड़ने के बाद अवतक बाईविल के दर्शन नहीं हुए थे।"

टाम ने चाव से कहा, "तुम क्या पहले केण्टाकी में थीं ?"

"हां, वहीं थी, और अच्छी थी। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी दुर्दशा में पड़ना होगा।"

दूसरी स्त्री ने कहा, "वह कौन-सी पुस्तक वतलाई ?"

टाम वोला, "वाइविल।"

दूसरी स्त्री ने कहा, "बाइबिल क्या होती है ?"

पहली स्त्री बोली, "तुमने क्या कभी इस पुस्तक का नाम नहीं सुना? केण्टाकी में मेरी मालकिन कभी-कभी यह पुस्तक पढ़ा करती थी। तब मैं भी सुना करती थी। यहां तो केवल गाली-गलौज सुनने में आती है। अच्छा, तुम पढ़ो, जरा मैं भी सुनूं।"

टाम बाइबिल में से पढ़ने लगा—"थके-मांदे, भार से दवे हुए मनुष्यो, तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।"

पहली स्त्री ने कहा, "वाह, ये तो बड़ी बढ़िया बात है। ये वातें कौन कहता है ?"

टाम बोला, "ईश्वर !"

पहली स्त्री ने पूछा, "ईश्वर कहां मिलेंगे ? पता लग जाता तो मैं उनके पास जाती। उनके पास गये बिना मुझे विश्राम नहीं मिलेगा। मेरा शरीर वहुत थक गया है। इस पर साम्बो मुझे नित्य धमकाता और कोड़े लगाता है। कोई दिन ऐसा नहीं होता कि आधी रात के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले खाना नसीव हो जाय। खाकर जरा आंख झपकी कि सवेरा हुआ ही दीखता है और चट से खेत में जाने का घण्टा बज जाता है। अगर परमेश्वर का पता मालूम हो जाता तो उनसे ये सब बातें जाकर कहती। हाय भगवान, अब तो यह कष्ट नहीं सहा जाता।"

टाम ने कहा, "ईश्वर यहां भी है, और सब जगह है।"

स्त्री बोली, "तुम्हारी बात पर मेरा विश्वास नहीं जमता, ऐसी बातें बहुत बार सुनी हैं कि ईश्वर यहां है, वहां है; पर न मालूम कहां है कि हम लोगों का दुःख देख कर भी वह क्यों कुछ नहीं करता। मैं अब झोंपड़ी में लेटकर सोती हूं, यहां ईश्वर हर्गिज नहीं है।"

यह कहकर वह स्त्री चली गई। टाम अकेला बैठा प्रार्थना करने लगा।

नीले आकाश में जैसे यह चन्द्रमा उदय होकर चुपचाप, गम्भीरता-पूर्वक जगत का निरीक्षण कर रहा है, उसी प्रकार परमात्मा चुपचाप गम्भीर भाव से जगत् के पाप, ताप और अत्याचारों को देख रहा था। जिस समय यह काला गुलाम हाथ में बाइविल लिये हुए असहाय दशा में उसको पुकार रहा था, उस समय उसकी हर बात उस परमात्मा के कानों तक पहुंच रही थी। वह घट-घट-व्यापी अन्तर्यामी है। पर ईश्वर यहां मौजूद है, इसका विश्वास उस अनपढ़ स्त्री को कोई कैसे करावे ? भला इस अत्याचार और यन्त्रणा में पड़ी हुई ऐसी स्त्री के लिए ईश्वर पर विश्वास करना कब सम्भव हो सकता था ?"

टाम के मन को आज उपासना के अन्त में पूरी शान्ति नहीं मिली। वह बड़े अशान्त चित्त से सोने गया। किन्तु झोंपड़ी की गन्दी हवा और दुर्गन्ध के मारे उसकी वहां ठहरने की इच्छा न होती थी, लेकिन करता क्या ? वेतरह थका हुआ था, जाड़ा भी सता रहा था, लाचार जाकर पड़ रहा। सोते ही आंख लग गई। स्वप्न आया, मानो झील के किनारे बाग में वह चबूतरे पर बैठा हुआ है और इवा बड़ी गम्भीरता से उसके सामने बाइविल पढ़ रही है।

"जब तुम जल पर से पैदल जाओगे तब मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और जल तुम्हें डुबा न सकेगा। जब तुम अग्नि में कूदोगे, तब भी मैं तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ रहूंगा, इससे अग्नि तुम्हें जला न सकेगी। मैं तुम्हारा एकमात्र विधाता और परमेश्वर हूं।"

ये शब्द मधुर संगीत की भांति टाम के कानों में गूंजने लगे, मानो इवा सोने के रथ पर चढ़ी हुई बार-बार स्नेह-दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई आकाश में उड़ रही थी और रथ में से उस पर फूलों की वर्षा कर रही थी।

टाम की आंख खुल गई। लेकिन यह कैसा स्वप्न है ? अविश्वासी इसे स्वप्न समझकर झूठ मान सकता है, पर जिस दयालु बालिका ने जीते-जी सदा दूसरों के दुःख पर आंसू बहाये, क्या वह मृत्यु के बाद दुःखी को धीरज देने नहीं आ सकती ? क्या यह सम्भव है ? कदापि नहीं !

३६ : : अत्याचारों की पराकाष्ठा

टाम ने थोड़े ही समय में लेग्री के खेत के काम का ढंग और यहां का रवैया समझ लिया। कार्य में वह बड़ा चतुर था, और अपने पुराने अभ्यास तथा चरित्र की साधुता के कारण किसी कार्य में भूल अथवा लापरवाही न करता था। उसका स्वभाव भी शांत था, इससे उसने मन-ही-मन सोचा कि यदि मेहनत करने में हीला-हवाला न किया जाय तो कदाचित कोड़ों की मार न सहनी पड़े। यहां के भयानक अत्याचार और उत्पीड़न देखकर उसकी छाती दहल गई। पर वह ईश्वर को आत्मसमर्पण करके धीरज के साथ काम करने लगा। उसका मन कभी एकदम निराश न होता था। उसका दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर सदा उसकी रक्षा करेगा। किसी-न-किसी तरह वह मंगलमय पिता मेरा बेड़ा अवश्य पार लगायेगा।

लेग्री साहब टाम का काम-काज विशेष ध्यान देकर देखने लगा। उसने शीघ्र ही समझ लिया कि काम में टाम बड़ा चतुर है, पर टाम के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रति उसका जो विद्वेष-भाव था, वह किसी तरह न टला। इसका मूल तत्व क्या था, यह लेग्री-सरीखे मनुष्य की समझ के बाहर था। झूठे का सच्चे पर, पापी का पुण्यात्मा पर और अधर्मी का धर्मात्मा पर एक प्रकार का सहज द्वेषभाव होता है। यही कारण है कि संसार में परम धार्मिक देशसुधारक अपने ही देश वालों की दृष्टि में खटकते हैं। जिन के लिए वे अपनी जान न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं, वही लोग उनकी जान के गाहक बन जाते हैं।

लेग्री इस बात को भली भांति समझ गया था कि वह गुलामों के साथ जो कठोर वर्ताव और अत्याचार करता है, उसे टाम बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता है। पर संसार का नियम है कि भले-बुरे सभी प्रकार के लोग दूसरे की प्रशंसा के भूखे रहते हैं। जबतक दूसरे लोग उनके आचरण और मत का अनुमोदन न करें, तबतक उनके जी को संतोष नहीं होता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक गुलाम तक का प्रतिकूल मत असह्य हो जाता है। इसके सिवा लेंग्री ने यह भी देखा कि टाम जब-तब दूसरे दास-दासियों पर दया प्रकट करता है, उनको कोई कष्ट होने पर स्वयं दुःखित होता है। लेग्री के खेत में दास-दासियों में परस्पर कभी सहानुभूति के चिह्न दिखाई नहीं पड़े थे। इससे टाम का आचरण उसे असह्य हो गया। टाम को परिदर्शक के काम पर नियुक्ति करने के लिए ही लेग्री इतने अधिक दाम देकर उसे खरीद कर लाया था; लेकिन जिस आदमी की प्रकृति अत्यन्त कठोर न हो वह परिदर्शक के काम के लिए नहीं चुना जा सकता। परिदर्शक को सदा कुलियों की पीठ पर कोड़े लगाने का काम करना पड़ता था। टाम अन्य सब कामों में पक्का होने पर भी इस अत्यावश्यक गुण से सर्वथा वंचित था। इससे लेग्री साहब ने सोचा कि टाम का हृदय कठिन और निष्ठुर बनाने के लिए शीघ्र ही उपाय करना होगा। हृदय को निष्ठुर बनाने की नवीन शिक्षा-प्रणाली का उपयोग अविलम्ब किया गया।

एक दिन प्रातःकाल जब सब दास-दासी खेत पर जाने के लिए जुटे, उस समय टाम ने इस दल में आश्चर्य के साथ एक नई स्त्री को देखा। टाम का ध्यान उसकी ओर खिंच गया। स्त्री लम्बी और कमनीय थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके हाथ-पैर कोमल थे और उसके वस्त्र भलेमानसों के-से थे। उम्र चालीस-पैंतालीस के लगभग होगी। इसके मुख पर ऐसा भाव था कि जिसने एक बार देख लिया, वह सहज ही भूल नहीं सकता था। इसके भाव से ऐसा जान पड़ता था, मानो इसके जीवन का इतिहास अनेक कष्टकर और अदभुत घटनाओं से भरा हुआ है। इसका प्रशस्त ललाट, विशाल उज्वल नेत्र, टेढ़ी और घनी भौंहें मुखमण्डल को शोभायमान कर रही थीं। इसके अंगों की गठन से जान पड़ता था कि यह रमणी युवावस्था में वड़ी सुन्दर रही होगी। लेकिन शोक और दुःख के चिह्नों ने अव उस सौन्दर्य को बिगाड़ दिया था। उसके चेहरे पर घोर विद्वेष, नैराश्य और अहंकारजन्य एक अद्‌भुत सहिष्णुता का भाव झलक रहा था। वह स्त्री कहां से आई और कौन है, टाम को इसका कुछ भी पता न था। पर वह स्त्री खेत को जाते समय वरावर टाम की वग़ल में चल रही थी। मालूम होता था कि खेत के अन्य दास-दासी इसे भली भांति जानते थे, क्योंकि उन नीच-प्रकृति के जीर्ण-शीर्ण कपड़ोंसे ढके कुलियों में कोई उसे देखकर मुस्कराया, किसी ने मज़ाक उड़ाया, कोई उसे घूरने लगा और किसी-किसी ने वड़ा आनन्द मनाया। एक ने कहा, "क्यों बीवी, अंत में आ न गई ठिकाने पर! मुझे बड़ी खुशी हुई।"

दूसरे ने कहा, "अब मालूम होगा, बीबी, कि यहां गुलछर्रे नहीं उड़ते हैं।"

तीसरा बोला, "देखना है, कैसा काम करती है। काम न करने पर इसकी भी कोड़ों से खबर ली जायगी।"

चौथे ने कहा, "इसकी पीठ पर कोड़े लगें तो मैं बड़ा खुश होऊंगा।"

उस स्त्री ने इस सबकी कुछ भी परवा न की। वह अपनी उसी गम्भीर चाल से चलती रही, मानो वह कुछ सुनती ही नहीं। टाम सदा से सभ्यों में रहा था। स्त्रीकी चाल-ढालसे उसने समझ लिया कि जरूर यह कोई सभ्य स्त्री होगी। पर इसकी यहदुर्दशा क्यों हो रही है, इसका कुछ निर्णय न कर सका। स्त्री यद्यपि बराबर टाम के पास चल रही थी, पर टाम से एक शब्द भी न बोली।

टाम शीघ्र ही खेत पर पहुंचकर काम में लग गया। वह स्त्री इससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत दूर न थी। इससे वह बीच-बीच में आंख उठाकर उसके काम की ओर देखता जाता था। उसने देखा कि वह बड़ी फूर्ती से काम कर रही है। औरों की अपेक्षा वह बहुत शीघ्रता और आसानी से कपास चुनने लगी; पर जान पड़ता था कि वह बड़ी विरक्ति, घृणा और अभि-मान के साथ यह काम कर रही है।

टाम के बगल में ही, नीलाम में उसके साथ खरीदी हुई, लूसी नाम की दासी बैठी कपास बीन रही थी। यहां आने के बाद यह स्त्री बहुत ही कमजोर और बीमार हो गई। वह कपास बीनती जाती थी और क्षण-क्षण में मृत्यु को बुलाती जाती थी। कभी-कभी एकदम धरती पर पसर जाती थी। टाम ने उसके पास सरककर चुपके से अपनी डलिया में से थोड़ी कपास निकालकर उसकी डलिया में डाल दी।

लूसी ने आश्चर्य के साथ देखते हुए कहा, "अरे, नहीं-नहीं, ऐसा मत करो। इसके लिए तुम आफत में पड़ जाओगे।"

ठीक इसी समय वहां साम्बो आ पहुंचा। लूसी को एक ठोकर मारी। इससे लूसी बेहोश हो गई।

तब साम्बो टाम के पास जाकर उसके मुंह और पीठ पर चाबुक फटकारने लगा।

टाम चुपचाप अपना काम करता रहा। पर लूसी को अचेत हुई देखकर परिदर्शक का एक दूसरा साथी नौकर कहने लगा, "अभी इस हरामजादी को होश में लाता हूं।"

इतना कहकर उसने जेब से एक आलपीन निकालकर उसके सिर में चुभो दी। इससे लूसी कराह उठी। परिचालक बोला, "उठ हराम-जादी, मुझसे यह सब ढोंग नहीं चलेगा। मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूंगा।"

लूसी होश में आकर कुछ उत्तेजित-सी होकर तेजी के साथ कपास इकट्ठी करने लगी।

उस आदमी ने कहा, "देख, अगर इसी तरह जल्दी-जल्दी काम नहीं करेगी तो तुझे यमराज के घर पहुंचा दूंगा।"

टाम ने सुना, लूसी ने कहा, "जल्दी भेज दो तो जान बचे!" फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुना, "हे भगवान्, हे परमात्मन्, अब कितना सहना पड़ेगा ! क्या इस दुनिया से मुझे नहीं उठा लोगे ?"

टाम जानता था कि यदि शाम तक लूसी डलिया-भर कपास न दे सकी, तो इसकी जान की खैरियत नहीं । लेग्री मारे कोड़ों के इसकी चमड़ी उधेड़ देगा । अतः उसके लिए अपनी आफत की कुछ भी परवा न करके उसने अपनी सारी कपास उसकी डलिया में डाल दी ।

लूसी ने कहा, "अरे, ऐसा मत करो ।....तुम नहीं जानते कि इसके लिए वह तुम्हारी कितनी आफत करेंगे ।"

"मैं तुम्हारी निस्वत अच्छी तरह सह सकता हूं ।" इतना कहकर टाम फिर अपनी जगह पर जा डटा । यह एक क्षण-भर की बात थी ।

एकाएक पूर्वोक्त अपरिचित रमणी काम करते-करते टाम के इतने निकट आगई कि उसने टाम के अन्तिम शब्द सुने, और फिर पल-भर अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखें उन लोगों पर गड़ाकर देखने लगी । इसके बाद अपनी डलिया से थोड़ी-सी कपास लेकर टाम की डलिया में डाल कर बोली, "तुम अभी यहां का कायदा बिल्कुल नहीं जानते हो । यहां एक महीना तो बीतने दो, फिर दूसरे की सहायता करना तो दूर रहा, तुम्हें अपनी ही जान बचानी मुश्किल हो जायगी ।"

एक परिचालक थोड़ी दूर पर उस स्त्री की यह कारंवाई देख रहा था । वह चाबुक लिये हुए वहां पहुंचा और विजय के स्वर में बोला, "हां हां, क्या करती हो ? मैं तुम्हारी सारी हरकतें देखता हूं । तुम इस समय मेरे वश में हो, यह सब चाल नहीं चलेगी ।"

उस स्त्री ने बड़ी कड़ी नजर से परिचालक की ओर देखा । उसके ओंठ फड़कने लगे और आंखों से चिनगारियां बरसने लगीं । वह परिचालक को डांटकर बोली, "सूअर, पाजी ! आ तो एक बार मेरे पास । देखूं तेरी हिम्मत ! अब भी मुझमें इतनी क्षमता है कि शिकारी कुत्तों से तेरी बोटी-बोटी नुचवाकर जीता गड़वा दूं । तू मेरे सामने रौब दिखाने आया है !"

उसकी बातों से सहम कर परिचालक बोला, "शैतान की बच्ची, तब तू यहां काम करने क्यों आई है ? मिस कासी, तुम मेरा कोई नुकसान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न करना ।"

रमणी बोली, "तू, यहां से दूर हट !"

परिचालक वहां से हटकर दूसरी ओर कुलियों का काम देखने चला गया।

वह स्त्री फिर तेजी से अपने काम में लग गई। उसका गजब का फुर्तीलापन देखकर टाम चौंधिया गया। दिन डूबने के पहले ही उसकी डलिया फिर भर गई और तारीफ यह कि बीच में उसने कई वार अपनी कपास टाम की डलिया में भी डाल दी थी। संध्या के बाद अधिक अंधकार हो जाने पर सब कुली सिर पर अपनी डलिया रक्खे हुए कपास के गोदाम पर, जहां तौल होता था, पहुंचे। लेग्री वहां बैठा दो परिचालकों से घुल-घुलकर बातें कर रहा था।

लेग्री ने कहा, "इस काले गुलाम टाम को ठीक करना चाहिए। यह जल्दी रास्ते पर नहीं आवेगा, बड़ी मेहनत लेगा।"

हवशी परिचालक खीसें निकालकर हंसने लगा। पर कुइम्बो बोला, "हुजूर ही से यह ठीक होगा। आप जिस जोर से चाबुक लगाना जानते हैं, शैतान भी वैसा नहीं जानता।"

लेग्री बोला, "इसे सिखाने का सबसे अच्छा और सीधा उपाय यह होगा कि इसे दूसरी स्त्रियों को कोड़े लगाने का काम सौंपा जाय।"

कुइम्बो ने कहा, "हां, सरकार, लेकिन यह बात वह कभी मंजूर नहीं करेगा। मार-पीट करने के लिए वह कभी तैयार न होगा। उसका वह धरमपना दूर करना सरल नहीं है।"

लेग्री बोली, "मैं आज ही उसका धरमपना निकाले देता हूं।"

इतने में साम्बो ने कहा, "यह देखिये, लूसी ने कोई काम नहीं किया। दिन-भर बैठी रही, यह बड़ी बदजात है। कुलियों में ऐसा और कोई पाजी नहीं है।"

कुइम्बो बोला, "खबरदार साम्बो, मैं जानता हूं कि लूसी से तू क्यों खार खाता है।"

साम्बो ने लेग्री की ओर देखकर कहा, "सरदार, आप ही ने तो उसे मेरी औरत बनाने को कहा था, पर वह आपकी बात नहीं मानती।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेग्री ने बहादुरी से कहा, "मैं मारते-मारते उसकी चमड़ी उधेड़ देता। लेकिन आज-कल काम की भीड़ है, इससे नुक्सान होगा।"

"लूसी बड़ी बद है, वह कुछ नहीं करना चाहती। सिर्फ दिक़ करती है और यह टाम उसकी मदद करता है।" कुइम्बो ने कहा।

"टाम ने इसकी मदद की है? अच्छा, तो टाम ही इसको कोड़े भी लगावे। इससे टाम खूब सीख जायगा। यह शैतान यों ही अधमरी हो रही है। तुम लोगों की मार से तो मरने का भी डर है, पर टाम उतने जोर से कोड़े नहीं लगावेगा, इससे वह भी डर नहीं है।"

यह बात सुनकर साम्बो और कुइम्बो खीसें निकालकर हंसने लगे।

परिचालकों ने कहा, "लेकिन सरकार, टाम ने और मिस कासी ने लूसी की डलिया में बड़ी कपास डाली है।"

लेग्री बोला, "मैं अभी तौले लेता हूं।" वे दोनों परिचालक फिर ठठाकर हँसे।

लेग्री ने पूछा, "मिस कासी ने अपना दिन-भर का काम तो पूरा कर लिया है न?"

परिचालक ने जवाब दिया, "सरकार, काम तो वह शैतान की तरह करती है।"

लेग्री ने सबकी कपास तौलने की आज्ञा दी। कुली बहुत थक गए थे। इससे बड़े कष्ट से अपनी-अपनी डलिया उठाकर कांटे पर रखने लगे। लेग्री हाथ में स्लेट लेकर तौल और नाम लिखने लगा।

टाम की टोकरी का तौल हुआ और उसका काम सन्तोषजनक पाया गया। अपनी टोकरी तुल जाने के बाद टाम बड़ी उत्कण्ठा से लूसी की टोकरी की ओर देखने लगा।

लूसी ने डरते और कांपते हुए अपनी टोकरी लाकर रखी। तौल में वह पूरी थी, पर लेग्री ने उसे धमकाने की नीयत से बनावटी गुस्से से कहा, "यह हरामज़ादी बड़ी सुस्त है। आज भी कपास कम है। इसे किनारे खड़ा करो, अभी इसकी ख़बर ली जाती है।" लूसी ने निराशा से एक ठण्डी सांस ली और एक तख़्ते पर बैठ गई।

फिर उस कासी नाम की स्त्री ने बड़ी अवज्ञा और उद्धतता के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ अपनी टोकरी लाकर रक्खी। लेग्री विद्रूप और कौतूहल से उसका मुख देखने लगा।

कासी आंखें गड़ा कर लेग्री की ओर घूरने लगी। उसके होंठ फड़कने लगे। उसने फ्रेंच भाषा में लेग्री से कुछ कहा। बात किसी की समझ में न आई, पर लेग्री का चेहरा पिशाच-सा हो गया, और उसने साकी को मारने के लिए हाथ उठाया। रमणी घृणा दिखाती हुई निर्भीकतापूर्वक वहां से चल दी।

कुछ देर बाद लेग्री ने टाम को बुलाकर कहा, "टाम, मैंने तुझे साधारण कुली का काम करने के लिए नहीं खरीदा है। मैं तुझे परि-चालक का ओहदा दूंगा और ठीक काम करने पर तू तरक्की पाकर परिदर्शक भी हो सकेगा। कुलियों को किस तरह कोड़ों से पीटा जाता है, यह तूने इतने दिन देख-सुनकर खूब सीख लिया होगा। जा, इस लूसी को कोड़े लगा! यह हरामजादी बड़ी शरारती है।"

टाम ने कहा, "मुझे माफ़ कीजिये। कृपा करके मुझे इस काम में मत लगाइये। यह मुझसे नहीं हो सकेगा। न मैंने कभी ऐसा काम किया है, न करूंगा।"

टाम की बात सुनकर लेग्री क्रुद्ध होकर कहने लगा, "तू ज़रूर कर सकेगा।"

इतना कहकर और चमड़े का चाबुक लेकर वह टाम को पीटने और उसके मुंह पर घूंसों की वर्षा करने लगा। क़रीब पन्द्रह मिनट तक लात, घूंसे और कोड़े बरसाकर बोला, "बोल, अब भी इनकार करता है?"

टाम की नाक से खून बहने लगा। उसे पोंछते हुए उसने कहा, "सरकार, मैं दिन-रात काम करने को तैयार हूं। इस शरीर में जितने दिन तक प्राण हैं, आपकी नौकरी बजाऊंगा; लेकिन इस काम को मैं अनुचित समझता हूं। सरकार, यह मुझसे कभी नहीं होगा—मैं कभी नहीं करूंगा—कभी नहीं।"

टाम बोलने में सदा से विनयी था। उसके बोलने का ढंग विशेष सम्मान-सूचक था। लेग्री ने सोचा कि टाम डर गया है, शीघ्र ही वश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में आ जायगा। पर उसके अंतिम शब्द सुनकर कुली लोग चौंक पड़े। लूसी हाथ जोड़कर बोली, "हे भगवान् !"

सब लोग एक-दूसरे का मुंह देखने लगे, सब शंकित मन से आनेवाली विपत्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

लेग्री कुछ देर निस्तब्ध-सा और हतबुद्धि-सा रहा, लेकिन थोड़ी देर बाद गरजकर बोला "क्यों रे हरामी के बच्चे, बोल, तू मेरी बात को अनुचित समझता है? तुझे उचित और अनुचित का विचार करने की क्या पड़ी है? क्यों बे, तू अपने को क्या समझता है? सूअर, तू अपने को बड़ा शरीफ का बच्चा समझता है कि अपने मालिक के सामने उचित-अनुचित करता है! इस छोकड़ी को कोड़े लगाने को तू अन्याय समझने का बहाना लगाता है।"

टाम ने कहा, "सरकार, मैं इसे मारना अन्याय समझता हूं। यह स्त्री रोगी और कमजोर है, इसे मारना निर्दयता है। मैं ऐसा काम नहीं करूंगा। सरकार, मुझे मारना चाहें तो मार डालें। मुझे मरना कबूल है, लेकिन इनमें से किसी को मारने के लिए मेरा हाथ नहीं उठेगा।"

टाम ने धीमे स्वर में बातें कही थीं; पर उसके वाक्यों से उसके हृदय की दृढ़ता और अटल प्रतिज्ञा का पता चलता था। लेग्री क्रोध से कांपने लगा। उसकी आंखों से चिनगारियां निकलने लगीं, पर जैसे कुछ भयंकर जन्तु अपने शिकार को एकदम न मारकर धीरे-धीरे खिला-खिला कर मारते हैं, वैसे ही लेग्री ने भी टाम को तत्काल कोई जबरदस्त सजा नहीं दी। क्रोध के वेग को तनिक रोककर वह उसपर तीव्र व्यंग्य-बाण छोड़ते हुए कहने लगा, "चलो, अंत में हम पापियों के दल में यह एक धर्मात्मा कुत्ता आ गया। यह किसी महात्मा और किसी सज्जन से कम नहीं। हम सब पाखंडी हैं। यह हम लोगों को यहां हमारे पापों की जानकारी कराने आया है। वाह, कैसा धर्मात्मा है! क्यों रे बदजात, तू धर्म का तो बड़ा ढोंग रचता है, पर क्या तूने बाइबिल से यह बात नहीं सुनी—'अरे नौकरो, अपने मालिक के हुक्म की तामील करो।' मैं क्या तेरा मालिक नहीं हूं? तेरे इस काले शरीर के बारह सौ डालर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकद नहीं गिने ? बोल, इस समय तेरी आत्मा और शरीर मेरा है या नहीं ?" उसने टाम को अपने डबल जूतों की जोर से ठोकर लगाते हुए कहा, "बोल, बोल, बतला !"

इस भयंकर शारीरिक यन्त्रणा में, इस घोर पाशविक अत्याचार से मुर्दार हुए रहने पर भी, टाम के हृदय में लेग्री के इस प्रश्न से आनन्द और जयोल्लास की धारा वह निकली। वह एकाएक सिर ऊंचा करके खड़ा हुआ। उसके घायल मुख से जो खून की धार बह रही थी, उस खून के साथ आंसुओं की धारा का मेल होने लगा। टाम आंखें उठा-कर विश्वासपूर्वक कहनेलगा, "नहीं, नहीं, नहीं, सरकार, मेरी आत्मा आपकी कभी नहीं है। आपने इसे नहीं खरीदा है—तुम इसे नहीं खरीद सकते। यह उसी एक के हाथ बिकी हुई है, जो इसकी रक्षा कर ने में समर्थ है। कोई परवा नहीं, कोई परवा नहीं! इस शरीर को तुम जितना चाहो, उतना सता लो, आत्मा का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

लेग्री ने त्यौरी चढ़ाकर कहा, "मैं कुछ नहीं बिगाड़ सकता ? देखता हूं, देखता हूं। अरे साम्बो, कुइम्बो, लो, इस सूअर को दुरुस्त करो। ऐसी मार मारो कि महीने भर खाट से सिर न उठा सके।"

दोनों यमदूत-सरीखे नर-पिशाच तत्काल टाम को बाहर खींच कर ले गये और पीटने लगे। यह देखकर लूसी बार-बार चीखने लगी।

३७ : : कासी की करुण कहानी

रात के दो पहर बीत चुके होंगे। चारों ओर घनघोर अंधियारी छाई हुई है। सड़ी-गली कपास और इधर-उधर फैली टूटी-फूटी चीजों से भरी हुई एक तंग कोठरी में टाम अचेत पड़ा है। दिन-भर अन्न-पानी नसीब नहीं हुआ। इससे उसके प्राण कण्ठ में आ लगे हैं। इस पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोठरी में मच्छरों की भरमार। जरा आंखें बन्द करने तक का आराम नहीं है।

टाम जमीन पर पड़ा पुकार रहा है, "हे भगवान्! दीनबन्धु! एक बार दीन की ओर आंख उठाकर देखो! पाप और अत्याचार पर विजय पाने की शक्ति दो!"

तभी उसे अपनी कोठरी की ओर आते किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी और लालटेन की मद्धिम रोशनी उसके मुंह पर पड़ी।

टाम ने कहा, "कौन है? ईश्वर के लिए मुझे एक घूंट पानी पिला दो!"

कासी ने, जिसके पैरों की आहट सुनाई दी थी, लालटेन को जमीन पर रखकर, अपने साथ लाई हुई बोतल से थोड़ा पानी एक गिलास में निकाला और टाम का सिर उठाकर उसे पिलाया। बुखार की तेजी के कारण टाम ने और दो गिलास पानी पिया।

कासी ने कहा, जितना चाहो, पानी पी लो। मैं काफी लायी हूं। जानती थी कि ऐसी हालत में तुम्हें पानी की कितनी जरूरत होगी। तुम्हारी जैसी हालत होने पर मैं कुलियों को अक्सर पानी पिलाने जाती हूं। आज तुम्हारे लिए पानी लेकर पहली बार नहीं आई हूं।

टाम ने पानी पीकर कहा, "श्रीमतीजी, आपको अनेक धन्यवाद!"

कासी दुःखित स्वर में बोली, "मुझे 'श्रीमतीजी' मत कहो। मैं भी तुम्हारी तरह एक अभागिन गुलाम हूं, बल्कि तुमसे भी गई-बीती हूं।"

फिर कासी ने वह खाट और बिछौना भी टाम के सामने रखा, जिन्हें वह अपने साथ लाई थी। उसने एक चादर को ठंडे जल से भिगोकर टाम की चारपाई पर बिछाया और बोली, "मेरे अभागे साथी, किसी तरह हिम्मत करो और गिरते-पड़ते भी आकर इस खाट पर लेट जाओ।"

टाम का सारा बदन लहू-लुहान था। उसमें हिलने-डुलने की तनिक भी शक्ति नहीं थी, परन्तु बड़े कष्ट से जैसे-तैसे सरकते-सरकते वह उस ठंडे बिछौने पर जा लेटा। उसपर पहुंचते ही उसे कुछ आराम मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ।

बहुत समय से इस नरक-जैसे अत्याचारपूर्ण स्थान में रहते-रहते कासी घावों की सफाई और उनकी परिचर्या के काम में अनुभवी हो गई थी। वह टाम के घावों पर अपने हाथ से मलहम लगाने लगी। मलहम के लगते ही टाम की पीड़ा और कम हो गई। इसके बाद उसने टाम का सिर ऊंचा उठाकर उसके नीचे थोड़ी-सी रुई रख दी। फिर बोली, "तुम्हारे लिए मैं जो कुछ कर सकती थी, उतना करने की मैंने कोशिश की है।"

टाम ने इसके उत्तर में अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। कासी अब जमीन पर बैठ गई और दोनों हाथ घुटनों पर लपेटकर तीव्र यन्त्रणा व्यंजक भाव से एकटक सामने की ओर देखने लगी। उसके सिर का कपड़ा पीठ पर गिर गया, और उसके लम्बे-लम्बे काले बाल उदासी-भरे मुंह के चारों ओर बिखर गए।

कुछ देर बाद कासी बोली, "इसका कोई नतीजा नहीं, अभागे साथी, तुम्हारी सारी कोशिशें बेकार हैं। तुमने आज बड़ा विलक्षण साहस दिखलाया है। न्याय भी तुम्हारी ही ओर था, पर यह लड़ाई व्यर्थ है। इसमें तुम्हारी जीत होगी, ऐसा नहीं लगता। तुम अबकी बार साक्षात् शैतान के पंजे में फंस गए हो। वह बहुत ही निर्दयी है। अन्त में तुम्हें हारकर आत्म-समर्पण करना होगा—न्याय का पक्ष छोड़ना होगा।"

न्याय का पक्ष छोड़ना होगा! क्या मेरी मानसिक निर्बलता और शारीरिक यन्त्रणा ने भी कुछ देर पहले चुपके से मेरे कानों में यही बात नहीं कही थी?— टाम कांप उठा। जिस प्रलोभन के साथ टाम आजतक बराबर लड़ता चला आया था, विषाद-भरी कासी उसे उसी प्रलोभन की 'जिन्दा तस्वीर' जान पड़ने लगी। टाम आर्त्त होकर बोला, "हे भगवान! हे परम दयालु पिता! मैं न्याय का पक्ष कैसे छोड़ सकता हूं?"

कासी ने स्थिर स्वर में कहा, "ईश्वर से पुकार करने का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। ईश्वर कुछ सुनता-सुनाता नहीं है। मेरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वास है कि ईश्वर है ही नहीं, और यदि है तो वह हम-जैसे लोगों का विरोधी है। लोक और परलोक, सभी हम लोगों के विरोधी हैं। दुनिया की हर चीज हमें नरक की ओर धकेल रही है। फिर हम नरक में क्यों न जायं ?"

टाम ने आंखें मूंद लीं। कासी के मुंह से ऐसी नास्तिकता-भरी बातें सुनकर उसका हृदय दहल उठा। कासी फिर कहने लगी, "देखो, यहां के बारे में तुम कुछ नहीं जानते, पर मैं यहां की हर चीज को जानती हूं। मुझे यहां रहते पांच बरस बीत गये हैं। मेरे शरीर और आत्मा सब इसी के पैरों के नीचे हैं, फिर भी मैं इस नर-पशु को हृदय से घृणा करती हूं। यहां पर अगर तुम जीवित ही गाड़ दिए जाओ, आग में डाल दिये जाओ, तुम्हारे शरीर की बोटी-बोटी कर दी जाय, तुम्हें कुत्तों से नुचवा डाला जाय, या पेड़ से लटकाकर कोड़ों से तुम्हारी जान तक ले ली जाय, तो भी उसपर कोई कार्रवाई नहीं होगी। किसी अंगरेज को गवाह बनाये बिना कोई अपराध सिद्ध नहीं किया जा सकता। और यहां पांच-पांच मील तक कोई अंगरेज नहीं है। हो भी तो क्या ? यह झूठी अंगरेज कौम क्या किसी भी बुरे काम से परहेज करती है ? वे क्या तुम्हारे-हमारे लिए अदालत में सच्ची बात कहेंगे ? ईश्वर का या मनुष्य का बनाया ऐसा कोई कानून यहां नहीं है, जिससे हम लोगों का कुछ भला हो सके। और यह नराधम ! संसार का ऐसा कोई पाप नहीं है, जिसे करने में संकोच करे। मैंने यहां आकर जो कुछ देखा है, उसे अगर मैं पूरा-पूरा कह सकूं तो कोई भी आदमी मारे डर के पागल हो जायगा। इस पाखण्डी की इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम करने का कुछ नतीजा नहीं निकलेगा। मैं क्या अपनी इच्छा से इस नीच के साथ रह रही हूं ? क्या यहां आने से पहले मैं एक सभ्य महिला नहीं थी ? और वह—हे ईश्वर, यह व्यक्ति क्या था और क्या हो गया ! फिर भी पांच साल से इसके साथ हूं। इन पांच सालों में मैं दिन-रात—हर घड़ी—अपने भाग्य को कोसती रही हूं। लेकिन अब यह पामर पशु मुझे छोड़कर, एक पन्द्रह साल की कन्या को पत्नी बनाने को ले आया है। उसी के मुंह से मैंने सुना कि उसकी भलीमानस मालकिन ने उसे बाइबिल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढना सिखाया है और वह अपनी बाइविल यहां भी साथ लाई है—नरक में अपने साथ बाइबिल लेकर आई है !"

इतना कहते-कहते कासी पागल की तरह हँस पड़ी।

कासी की बातें सुनकर टाम की आंखों के सामने अन्धकार छा गया। वह हाथ जोड़कर बोल उठा, "हे नाथ, तुम कहां हो ? क्या हम दीन-दुखियों की सुध एकदम ही बिसार दी ? हे पिता, तुम्हारे सहायक हुए बिना निस्तार नहीं है।"

कासी फिर सूखेपन से कहने लगी, "और तुम्हें क्या पड़ी है जो तुम इन अभागे कुत्तों-जैसे नीच गुलामों के लिए इतना कष्ट सहते हो ! इन्हें जरा-सा मौका मिलना चाहिए, फिर ये कभी तुम्हारी बुराई करने से नहीं चूकेंगे। तुम इनमें से किसी को बेंत लगाने को राजी नहीं हो; पर इन्हें मालिक का इशारा मिल जाय तो ये तुरन्त तुम्हें पीट डालेंगे। ये एक-दूसरे के लिए बड़े निर्दयी हैं। इनके लिए तुम्हारे कष्ट उठाने का कोई नतीजा नहीं होगा।"

टाम बोला, "हाय ! ये इतने निर्दयी कैसे हो गये ? अगर मैं भी इन्हीं की तरह दूसरे साथियों को बेंत लगाने को तैयार हो जाऊं, तो मैं भी धीरे-धीरे इन्हीं-जैसा हो जाऊंगा। नहीं-नहीं, मेमसाहब, मैं सबकुछ खो चुका हूं—पत्नी,पुत्र, कन्या, घर-द्वार—सब जाता रहा। एक दयालु मालिक मिले थे, सो वह भी परलोक सिधार गये। यदि एक सप्ताह मौत उन्हें और छुट्टी दे देती तो मुझे वे गुलामी से मुक्त कर देते। इस संसार में मेरा अब कुछ नहीं रहा—कुछ नहीं रहा—मैं अपना सब-कुछ खो चुका हूं। अब मैं अपना परलोक नहीं बिगाड़ूंगा। नहीं-नहीं, मैं कभी पाप नहीं कमाऊंगा।"

कासी ने कहा, "यह नहीं हो सकता कि इन पापों को ईश्वर हमारे हिसाब में दर्ज करे। जब हमें मजबूर करके पाप कराया जाता है तो इसके लिए वह हमें अपराधी नहीं ठहरायेगा। वह उन्हीं के सिर पाप का बोझा लादेगा, जो हमें दबाकर पाप कराते हैं।"

टाम ने कहा, "तुम्हारी बात ठीक है, लेकिन हाथों से पाप करते-करते हमारा हृदय कलुषित हो जायगा। अगर मैं साम्बो-जैसा कठोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय और दुराचारी हो जाऊं—इससे क्या कि मैं वैसा कैसे हुआ हूं—मेरा हृदय एक बार भी दुराचारी बना कि फिर दुराचारी ही बना रहेगा। तुम्हारे तर्क से हृदय का दुराचारी होना रोका नहीं जा सकता, मुझे सबसे बड़ा डर इसी का है।"

टाम की बातें सुनकर कासी पागलकी तरह उसकी ओर देखने लगी। लगा, जैसे सहसा किसी नये विचार ने उसके हृदय पर आघात किया हो। वह ठंडी सांस लेकर बोली, "हे भगवान, मैं भी कैसी पापिन हूं! टाम, तुमने सच्ची बात कही है। हाय-हाय-हाय!"...कहते-कहते गहरे मानसिक दुख से कातर होकर वह ज़मीन पर गिर पड़ी।

इसके बाद दोनों कुछ देर तक चुप रहे। अंत में टाम क्षीण स्वर में कहा, "मेमसाहब कृपा करके....

कासी तुरंत उठ खड़ी हुई। उसका मुंह पहले-जैसा ही उदास था।

टाम ने कहा, "मुझे पीटते समय उन लोगों ने मेरा कोट इस कोने में फेंक दिया था। उसकी जेब में मेरी बाइबिल है। आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप उसे उठा दें।"

कासी कोने में गई और बाइबिल ले आई। टाम ने बाइबिल को खोला और उसमें अपनी एक निशान-लगी हुई जगह दिखाते हुए कासी से कहा, "मेम साहब, यदि आप कृपा करके मुझे इसे पढ़कर सुना दें तो पानी पीकर मैं जितना सुखी हुआ हूं, उससे अधिक सुखी होऊंगा।"

कासी ने सूखे हृदय और अश्रद्धा से बाइबिल को हाथ में लेकर टाम द्वारा निशान लगाई हुई जगह से आगे पढ़ना शुरू किया। वह पढ़ना-लिखना खूब जानती थी, अतः ईसा को सूली पर चढ़ाये जाने का हाल बड़ी स्पष्टता तथा मधुरता से पढ़ने लगी। पढ़ते हुए बार-बार उसका दिल कांपने लगा। बीच-बीच में वह रुकने लगी। दो क्षण ठहर कर संभल जाती और फिर आगे पढ़ने लगती। अंत में जब वह पढ़ते-पढ़ते "पिता, इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं।"—इस वाक्य पर पहुंची तो पुस्तक बंद करके रोने लगी। टाम भी रो रहा था।

कुछ देर बाद टाम ने कहा, "अगर हम लोग ईसा के दृष्टान्त का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुसरण कर सकते, तो क्या इस तरह दुःखों और कष्टों से हार मान लेते ? ईसा का यह दृष्टान्त तो हमें कठिनाइयों का सामना करना सिखलाता है। मेम साहब, मैं देखता हूं कि आप खूब पढ़ी-लिखी हैं। हर बात में मुझसे बढ़-चढ़ कर हैं, पर एक विषय में आपको इस गंवार टाम से भी शिक्षा मिल सकती है। आपने कहा है कि ईश्वर गोरों के पक्ष में हम लोगों के विरुद्ध है, नहीं तो हम पर इतना अत्याचार होने पर भी वह इसका विचार क्यों नहीं करता ? आपका यह संस्कार गलत बुनियाद पर टिका है। आप ध्यानपूर्वक देखें कि ईसा ने अपनी संतान के लिए कसे-कैसे भारी कष्ट सहन किये। किस तरह ईसा ने दीनों की भांति जीवन बिताया, और यहां तक कि पापियों ने अंत में उनके प्राण तक ले लिये। लेकिन क्या हममें से किसी की भी दशा उनकी सी-हुई है ? निश्चयपूर्वक कहता हूं कि ईश्वर हम लोगों को भूले नहीं हैं। हमें यह नहीं सोच लेना चाहिए कि हमारे दुःख और कष्ट में पड़े रहने से ईश्वर हमारा सहायक नहीं रहा उस पर विश्वास रखकर यदि हम अपने को पापों से दूर रख सकें तो अंत में अवश्य हमें स्वर्ग मिलेगा। यह विपत्ति, यह दुःखों और कष्टों के पहाड़, हमें अग्नि में तपाये हुए सोने के समान शुद्ध करके ,ईश्वर के साथ रहने योग्य बना रहे हैं।"

कासी ने कहा, "पर जिस दुर्दशा में पड़ने से हमारे लिये पाप के रास्ते से हट कर चलना मुश्किल हो जाता है, वैसी दुर्दशा में वह हमें क्यों डालता है ?"

टाम ने उत्तर दिया, "कैसा भी संकट क्यों न हो, मेरी समझ में, हम उसे पार कर सकते हैं। किसी भी दशा में पाप के मार्ग से हटकर चलना हमारे लिए असंभव नहीं है।"

कासी बोली, "सो तो तुम्हारे सामने आयेगा। वे कल फिर तुम्हें सतायेंगे, तब क्या करोगे ? मैं यहां की सब बातें जानती हूं। तुम्हें वे जैसी-जैसी तकलीफें देंगे, उनका विचार-मात्र करनेसे रौंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी तकलीफें दे-देकर अंत में वे तुम्हें पापकर्म करने पर मजबूर करेंगे।"

टाम कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला, "हे भगवान् ! क्या तुम मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्षा नहीं करोगे ? प्रभो, आप मेरे सहायक हो। देखना, तुम्हारा दास पीड़ा और अत्याचार के डर से कुमार्गी न होने पाये !"

कासी फिर बोली, "मैं यहां पहले ही क्रन्दन और कितनी ही प्रार्थनाएं सुन चुकी हूं; पर अंत में होता यही है कि लोगों का संकल्प टूट जाता है। ये पापी उन्हें अपने वश में लाने में सफल हो जाते हैं। देखो न, उधर एमेलिन जी-जान से चेष्टा कर रही है और इधर तुम भी पूरी ताकत से अपनी कोशिश में लगे हो, पर इसका नतीजा क्या होगा—या तो तुम्हें इनकी बात माननी पड़ेगी या तुम कुत्तों से नुचवाये जाओगे।"

टाम ने कहा, "अच्छा, तो मुझे मरना ही मंजूर है। उन्हें जी चाहे उतना सता लेने दो। एक-न-एक दिन मरना तो अवश्य ही है। उसे तो कोई टाल नहीं सकता। मार डालने के सिवा वे मेरा कुछ और बिगाड़ ही नहीं सकते। मरने पर इनके हाथों से मुक्त हो जाऊंगा। ईश्वर मेरे साथ है, वही मुझे इस परीक्षा में उत्तीर्ण करेगा।"

कासी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया वह अपनी आंखें गड़ाये पृथ्वी की ओर देखती रही।

कुछ देर बाद वह आप-ही-आप बुदबुदाने लगी—"यह हो सकता है ! पर जो अत्याचार और उत्पीड़न से अधीर होकर आगे बढ़ चुके हैं, उनके लिए तो कोई आशा ही नहीं है, कुछ भी नहीं है। अपवित्रता में पड़े-पड़े हमारा यहां तक पतन हो जाता है कि हमें अपने-आप से ही घृणा हो जाती है। मरने की इच्छा होती है, पर आत्म-हत्या करने का साहस नहीं होता। कोई आशा नहीं है ! हाय-हाय ! कोई आशा नहीं है ! यह बालिका एमेलिन...उस समय ठीक मेरी भी यही उम्र थी।"

बड़ी शीघ्रता से बोलते हुए उसने टाम से कहा, "तुम देखते हो, आज मैं क्या हो गई हूं। मैं भी कभी ऐश्वर्य की गोद में पली थी। मुझे याद है कि मैं बचपन में गुड़िया की तरह सज-धजकर मौज से खेलती फिरती थी। सभी संगी-साथी और हमारे घर आने वाले मेरे रूप की प्रशंसा किया करते थे। हमारे यहां एक बाग था। उसमें मैं अपने भाई-बहनों के साथ नारंगियों के पेड़ों के नीचे आंखमिचौनी खेला करती थी। मुझे ग्यारह साल की उम्र में एक पाठशाला में भेजा गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहां मैंने गाना-बजाना, फ्रेंच भाषा तथा अन्य कितनी ही बातों की शिक्षा पाई। लेकिन पिता की मृत्यु के कारण, मुझे चौदह साल की उम्र में घर वापस आना पड़ा। उनकी मृत्यु अकस्मात् हो गई थी। उनके पीछे जब सारी सम्पत्ति का हिसाब लगाकर देखा गया, तब मालूम हुआ कि इतने से तो कर्ज भी मुश्किल से चुकेगा। लेनदारों ने जायदाद की सूची बनाते समय मेरा नाम भी उसमें चढ़ा दिया। मैं मोल ली हुई दासी के गर्भ से जन्मी थी, पर मेरे पिता सदा मुझे मन-ही-मन स्वतंत्र कर देने की इच्छा रखते थे। किंतु उन्होंने यह किया नहीं था, इससे मैं भी जायदाद की सूची में चढ़ाई गई। मैं सदा से जानती थी कि मैं कौन हूं, पर इस सम्बंध में मैंने कभी अधिक नहीं सोचा। किसी को भी यह आशंका नहीं थी कि ऐसा हट्टा-कट्टा और तंदुरुस्त आदमी इतनी जल्दी मर जायगा। मेरे पिता की देखते-देखते, हैजे से मृत्यु हो गई थी। उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया के दूसरे ही दिन उनकी विवाहिता स्त्री सब बाल-बच्चों को लेकर अपने पिता के घर चल दी और मुझे वहीं वकील के जिम्मे छोड़ दिया। उनके इस व्यवहार से मैं बड़ी चकित हुई, पर इसका कारण मेरी समझ में नहीं आया। जिस वकील को अन्य सब चीजों के साथ मुझे सौंपा गया था, वह हमारे घर के पास-पड़ोस में ही रहता था और नित्य ही एक बार घर आया करता था। मुझसे उसका व्यवहार बड़ी सज्जनता का था। एक दिन वह अपने साथ एक रूपवान युवक को लाया। वह युवक मुझे इतना सुन्दर मालूम हुआ कि वैसा सुन्दर आदमी मैंने इससे पहले नहीं देखा था। मैं उस सन्ध्या को कभी नहीं भूलूंगी। मैं बाग में उसके साथ टहली थी। मैं रंज और दुःख से अकेली मुर्दा-सी पड़ी रहती थी। उसने मेरे साथ ऐसी दया और सज्जनता का व्यवहार किया कि मैं क्या कहूं! उसने मुझसे कहा कि मदरसे में जाने से पहले उसने मुझे देखा था और तभी से मुझ पर उसका प्रेम हो गया था। अब वह मेरा बन्धु और रक्षक बनना चाहता था। असल बात यह थी—यद्यपि उसने मुझसे कही नहीं थी—कि उसने मुझे दो हजार डालर में खरीद लिया था, और मैं उसकी सम्पत्ति थी, फिर भी अपनी इच्छा से मैंने उसे आत्म-समर्पण कर दिया, क्योंकि मैं उससे प्रेम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती थी। हाय! मेरा उस पर कितना प्रेम था! अब मेरा उस पर कितना प्रेम है, और जबतक मेरी सांस है तबतक रहेगा भी। वह कितना सुन्दर, कितना उदार और कितने महान दिल का था! उसने मुझे दास-दासी, घोड़ा-गाड़ी, बाग-बगीचे, कपड़े-जेवर तथा अन्य प्रकार की सामग्रियों से भरे, एक बहुत सजे हुए मकान में रखा था। धन से जो भी चीजें मिल सकती हैं वे सब उसने मुझे दीं। पर मैं उन चीजों की कुछ भी कदर नहीं करती थी—मैं तो केवल उसी को चाहती थी और उसकी जरा-सी इच्छा पर सर्वस्व वार सकती थी।

मेरी केवल एक ही इच्छा थी—मैं चाहती थी कि वह मुझे शास्त्र-विधि से ब्याह ले। मैं सोचती थी कि जब वह मुझ से इतना प्रेम करता है, तो विवाह करके वह मुझे अवश्य दासता की बेड़ियों से मुक्त कर देगा। पर जब भी मैं उसके सामने यह बात उठाती, वह कहता कि यह बात लोकाचार और देशाचार की दृष्टि में निषिद्ध होने के कारण असम्भव है। वह मुझे समझाता—यदि हम दोनों एक-दूसरे से विश्वास-घात न करें, तो, यहां न सही, ईश्वर के यहां हम दोनों विवाहित ही हैं। अगर यह सच है तो क्या मैं उसकी पत्नी न थी? क्या मैंने उससे कभी विश्वासघात किया था? क्या सात बरस तक मैं उसकी प्रकृति का अध्ययन नहीं करती रही? एक बार उसे मियादी बुखार हो गया था, उस समय लगातार इक्कीस दिन तक मैं उसकी सेवा करती रही। मैंने अकेले अपने हाथ से उसका सारा दवा-पानी और पथ्य आदि सब-कुछ किया। अच्छा होने पर वह मुझे अपनी मंगलकारिणी देवी कहा करता और कहता कि मैंने ही उसकी जान बचाई है। हमारे दो सुन्दर संतानें हुईं। पहला पुत्र था और पिता के नाम पर उसका नाम हेनरी रखा गया। उसकी सूरत-शक्ल ठीक अपने पिता-जैसी थी। सुन्दर नेत्र, चौड़ा और खुला माथा, लटकते घुंघराले बाल सब उसके पिता-जैसे ही थे। रूप के साथ ही उसने अपने पिता का तेज और दूसरे गुण भी पाये थे। छोटी सन्तान एलिस नाम की कन्या थी, जिसे वह मुझ-से मिलती हुई बतलाया करता था। उसे मुझ पर और अपनी दोनों सन्तानों पर बड़ा गर्व था। वह मुझे और अपने दोनों बच्चों को कपड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जेवरों से खूब सजा-सजाकर अपने साथ खुली गाड़ी पर हवा खिलाने ले जाता था। रास्ते में मिलनेवाले लोग मेरे और मेरी संतानों के रूप की जो प्रशंसा करते, उसे वह हवाखोरी से लौटकर मुझे रोज सुनाता था। वे कैसे सुख के दिन थे! मैं संसार में अपने को सबसे अधिक सुखी मानती थी। पर अचानक ही वह सुख मुझसे छिन गया। दु:ख की घड़ियां शुरूहो गईं। उसका एक चचेरा भाई, जिसे वह अपना बड़ा मित्र और संसार भर में एक ही मित्र समझता आया था, वहां आया। न जाने क्यों, उसे प्रथम वार देखते ही मुझे डर मालूम हुआ। मुझे मेरी आत्मा ने वताया कि यह हम लोगों पर मुसीवत ढायेगा। वह व्यक्ति हेनरी को रोज घुमाने ले जाता और घर लौटते प्राय: रात के दो-दो तीन-तीन बज जाते। इसके लिए मेरा एक शब्द कहने का साहस न होता, क्योंकि मैं जानती थी कि वह बड़ा अभिमानी है, इसी से मुझे वड़ा भय मालूम होता था। वह दुराचारी उसे जूओं के अड्डों की हवा खिलाने लगा और धीरे-धीरे उसे उसमें बिल्कुल लिप्त कर दिया। उसका तो स्वभाव था कि किसी चीज में फंस जाने के बाद उससे निकलना असंभव था। इसके बाद उसने उसका एक और अंग्रेज युवती से परिचय करा दिया। मैंने शीघ्र ही देख लिया कि उसका हृदय मेरे हाथ से निकल गया। उसने मुझसे खुलकर कभी कहा तो नहीं, पर मैंने सब समझ-बूझ लिया। दिन-दिन मेरी छाती फटती जाती, पर मैं मुंह खोल कर कुछ न कह पाती। इधर जुए में हारते-हारते वह कर्जदार हो गया। तब उस पाजी मित्र ने उसे सलाह दी कि वह मुझे मेरी सन्तानों-सहित वेचकर पहले ऋण चुकाये और बाद में उस अंग्रेज युवती से विवाह कर ले। और स्वयं आगे बढ़कर वह हम लोगों को खरीदने को तैयार हो गया। तब हेनरी ने दोनों सन्तानों-सहित मुझे उस सत्यानाशी के हाथ वेच डाला। एक दिन हेनरी ने मुझसे कहा कि किसी काम से दो-तीन हफ्तों के लिए उसे बाहर जाना है। उसने आज और दिनों की अपेक्षा अधिक प्रेम दिखाया और कहा कि मैं शीघ्र ही लौट आऊंगा। पर मैं भुलावे में नहीं आई। मैंने समझ लिया कि सत्यानाश का समय आ पहुंचा है। मैं बोल न सकी, आंखों ने आंसू बहाये। उसने मुझे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को बार-बार चूमा, फिर बाहर खड़े घोड़े पर सवार होकर चला गया। मैं एकटक उसकी ओर देखती रह गई। उसके आंखों से ओट होते ही मैं अचेत होकर गिर पड़ी।

उसके दूसरे दिन वह पाखण्डी बटलर मेरे पास आया और बोला कि मैंने तुम्हें तुम्हारी दोनों सन्तानों-सहित खरीद लिया है। उसने मुझे लिखे हुए कागज भी दिखलाये। मैंने उसे बार-बार शाप देकर कहा कि मैं जीते-जी कभी तेरे साथ नहीं रहूंगी।

बटलर ने कहा, "ठीक है! तुम्हारी जैसी इच्छा! पर देख लो। अगर नहीं मानती हो तो मैं तुम्हारी दोनों सन्तानों को ऐसी जगह बेच डालूंगा, जहां तुम फिर कभी उन्हें नहीं देख सकोगी।"

उसने आगे कहा कि मुझे मोल लेने के अभिप्राय से ही उसने जाल रचकर हेनरी को कर्जदार बनाया और एक दूसरी स्त्री के साथ उसे लगाकर मुझे बेचने की सलाह दी। वह पाखण्डी कहने लगा, "मैं दो-चार बूंद आंसुओं अथवा तिरस्कारों से हटनेवाला नहीं हूं। तुम मेरी मुट्ठी में हो। मेरी बात न मानने में तुम्हारी भलाई नहीं है।

मैंने देखा कि मेरे हाथ-पैर बंधे हैं --मेरी दोनों सन्तानें उसी के हाथ में थीं। मैं जब उसकी इच्छा के खिलाफ कुछ करती तो वह उन्हें बेच डालने की धमकी देता। सन्तानों की रक्षा के लिए मैं उसके वश में हो गई। पर वह कैसा घृणित जीवन था हृदय में दिन-रात मर्मभेदी यन्त्रणा की आग धधकती रहती थी। जिस नर-पशु को मैं रोम-रोम से घृणा करती और जिसे देखकर हर समय मेरी क्रोधाग्नि भभक उठती थी, उसीके पैरों में मुझे देह, आत्मा और सर्वस्व की आहुति देनी पड़ी! हेनरी के सामने मैं सदा खुशी से पढ़ती, नाचती और गाती थी, पर इस व्यक्ति की खुशी के लिए मुझे जो कुछ करना पड़ता था वह मैं बड़े भय और अनिच्छा से करती थी। किंतु जिन दो सन्तानों के लिए मैं उस पापी के वश में हुई, उनसे वह बड़ा ही रूखा व्यवहार करने लगा। मेरी कन्या बड़ी भयभीत थी, वह उसके डर से सदा सशंक रहती। पर मेरा पुत्र अपने पिता की भांति तेजस्वी और स्वाधीनता-प्रिय था। वह सदा उस नीच के साथ लड़ता-झगड़ता रहता था। यह देखकर मैं सदा डरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती और अपनी दोनों सन्तानों को सदा उससे दूर रखती। पर मेरे सब कुछ करते रहने पर भी उस निर्दयी ने मेरी दोनों प्रिय सन्तानों को बेच डाला। कब और किसके हाथ बेचा, यह मुझे मालूम नहीं हो सका। एक दिन वह पापी मुझे साथ लेकर घूमने गया, परन्तु फिर घर लौटने पर मुझे अपनी सन्तान का मुंह देखने को नहीं मिला। पूछते ही उस नर-पिशाच ने बिना किसी हिचक-संकोच के कहा कि उन दोनों को बेच दिया गया। उसने मुझे रुपये—उनके खून के दाग—दिखाये। सन्तान की बिक्री की बात सुनकर मैं पागल-सी हो गई। मेरा भले-बुरे का ज्ञान जाता रहा, मैं उसे ईश्वर के नाम पर शाप देने लगी और उसपर तरह-तरह की गालियों की वर्षा करने लगी। मेरी यह दशा देखकर वह पाखण्डी कुछ भयभीत हुआ। पर जिन्होंने षड़यन्त्र, धोखादेही, चालाकी और जालसाजी को ही अपना अस्त्र बना रखा है, उनका हृदय कभी नहीं हारता, कभी नहीं पसीजता। ये लोग ऐसे जाल फैला करके ही लोगों को फुसलाने की चेष्टा करते हैं। वह धूर्त फिर मुझे कौशल द्वारा वशीभूत करने के लिए कहने लगा कि यदि मैं उसकी आज्ञा में नहीं रहूंगी तो मेरी सन्तानों को और भी बड़ी तकलीफें सहन करनी पड़ेंगी; लेकिन यदि मैं उसके आदेशों को मानकर चलूंगी तो वह कभी-कभी सन्तानों को देखने का अवसर देगा और वह फिर से खरीदकर भी ला सकता है। किसी स्त्री की सन्तान को कब्जे में कर लेने के बाद फिर उस स्त्री से आप चाहे जो करा सकते हैं। उस पाखण्डी ने इस प्रकार भय दिखाकर और आशा बंधाकर फिर वश में कर लिया। इस प्रकार दो-तीन सप्ताह एक प्रकार से निर्विरोध बीते। फिर एक दिन जब मैं दण्ड-गृह के पास होकर घूमने जा रही थी, वहां भीड़ देखकर तथा एक बालक की चीख-पुकार सुनकर मैं कुछ दूर पर खड़ी होकर देखने लगी। तत्काल उस घर में से मेरा हेनरी तीन-चार आदमियों को धक्के देकर चिल्लाता हुआ निकला और दौड़कर उसने मेरा कपड़ा पकड़ लिया। वे तीनों-चारों आदमी बड़ी बुरी गालियां बकते हुए उसे पकड़ने के लिए दौड़े आये। उनमें एक निरा पिशाच-सा अंगरेज था। वह कहने लगा कि मैं हेनरी को दण्ड-गृह को ले जा रहा था कि वह हाथ छुड़ाकर भाग आया है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अब उसे चौगुनी सजा दी जायगी। उस आदमी का चेहरा मुझे जीवन-भर न भूलेगा। वह हृदय-हीनता का साक्षात् अवतार लगता था। मैं उस समय अत्यन्त विनयपूर्वक उन लोगों से पुत्र हेनरी को छोड़ देने को कहने लगी, पर मेरी कातरता देखकर उलटे वे सब हँसने लगे। हेनरी बड़ी निराश दृष्टि से मेरी ओर देखकर रोने लगा। उसने मजबूती से मेरा कपड़ा पकड़ लिया। दण्ड-गृह के वे निर्दयी मनुष्य उसे खींच ले जाने के लिए मेरे कपड़े का भी कुछ अंश फाड़कर ले गए। जब उसे जबर्दस्ती ले जाया जाने लगा तो वह 'मां! मां!' कहकर चीखने लगा। मेरे पास एक भलामानस आदमी खड़ा था। मैंने उससे कहा, "मेरे पास जो कुछ रुपये हैं, उन्हें मैं तुम्हें देती हूं। तुम कृपा करके किसी तरह मेरे पुत्र को बेंत की सजा से बचा लो।" वह सिर हिलाकर बोला, "नहीं-नहीं, जो आदमी इसे यहां लाया है, वह किसी तरह इसे माफ नहीं करेगा। वह कहता है कि यह कैसे भी काबू में नहीं आता, कोड़े लगवाने के सिवाय और कोई उपाय इसे काबू में लाने का नहीं है।" मैं दौड़ती-दौड़ती घर आई। पूरे रास्ते हेनरी का क्रन्दन और उसकी चीख-पुकार मेरे कानों में आती रही। मैंने घर पहुंचते ही उस नराधम बटलर के कमरे में जाकर बहुत घिघियाते हुए, बड़ी विनय के साथ, हेनरी को इस संकट से बचाने के लिए कहा। वह पामर हँसते हुए बोला "बहुत ठीक हुआ! हेनरी जैसी शरारतें करता है, वैसा ही नतीजा भी है। बिना कोड़ों के वह दुरुस्त होने का भी नहीं।"

उस निष्ठुर नीच का यह हृदयहीन व्यवहार देखकर और उसके मुंह से ऐसे मर्मवेधी वचन सुनकर मैं उन्मत्त-सी हो गई। मुझे लगा, मानो मेरे सिर पर वज्र गिरा हो। मेरा सिर घूम गया। मैंने भयंकर मूर्ति धारण की। इसके बाद क्या हुआ, सो मुझे याद नहीं। केवल इतना याद है कि सामने मेज पर पड़ी छुरी उठाकर मैं उसका सिर धड़ से जुदा कर देने को झपटी थी। इसके बाद मैं बेहोश हो गई और फिर कई दिन तक उसी दशा में पड़ी रही।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि एक अपरिचित सुन्दर कमरे में पड़ी हुई हूं। एक काली स्त्री मेरी सेवा-सुश्रूषा में लगी हुई है। एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाक्टर मुझे रोज देखने आता है। मेरे लिए बड़ी सावधानी बरती जा रही है। थोड़ी देर बाद मुझे मालूम हुआ कि वह पापी मुझे यहां बेचने के लिए छोड़कर चला गया है और यही कारण है कि ये लोग मेरे लिए इतना कष्ट उठा रहे हैं।

अब मुझे जीने की कोई साध न थी। मैं हमेशा मौत को बुलाती थी, पर उसने मुझे अपनाया नहीं। अनिच्छा होते हुए भी मैं दिन-ब-दिन ठीक होने लगी और अंत में फिर पहले की तरह चंगी हो गई।

इसके बाद वहां वाले मुझे अच्छे और कीमती वस्त्र पहनने को देते। कई धनी लोग वहां आते, मेरे पास आकर बैठते, मेरे शरीर की जांच करते, मेरे साथ तरह-तरह की बातें करते और वहां वालों से मेरे मूल्य को लेकर मोल-तोल करते। पर मैं ऐसी उदासीन बनी बैठी रहती कि कोई मुझे खरीदने का आग्रह न करता। यह देखकर वहांवाले मुझे कोड़े लगाने को तैयार होते और हँसी-खुशी से बातें करने को कहते। अंत में एक दिन कप्तान स्टुअर्ट नाम का एक साहब आया। वह कुछ सहृदय जान पड़ा। उसने समझ लिया कि किसी गहरे शोक के कारण मेरी यह दशा हो गई है। उसने अनेक बार अकेले में भेंट करके मुझसे अपनी दुःखों की कहानी सुनाने के लिए कहा। आखिर उसने मुझे खरीद लिया और वचन दिया कि जहां तक होगा, वह मेरी दोनों सन्तानों की तलाश करके खरीदने की चेष्टा करेगा। हेनरी की तलाश करने पर उसे पता चला कि वह पर्ल नदी के पार किसी खेतिहर के हाथ बेच दिया गया था। इस प्रकार हेनरी को फिर से खरीदे जाने की आशा समाप्त हो गई। पुत्र के संबंध में मैंने वही अन्तिम बात सुनी थी, तब से आज अठारह वर्ष हो गये, कुछ नहीं सुना। फिर वह मेरी कन्या की खोज में गया और देखा कि एक वृद्धा स्त्री उसका पालन कर रही है। स्टुअर्ट ने एक बड़ी रकम देकर उसे खरीदना चाहा, किंतु नर-पिशाच दुष्टात्मा बटलर जान गया कि मेरे ही लिए स्टुअर्ट मेरी कन्या को खरीद रहा है, अतः मुझे कष्ट देने की इच्छा से उसे स्टुअर्ट के हाथ नहीं बेचा। कप्तान स्टुअर्ट बहुत ही नरम दिल का था। वह मुझे साथ लेकर अपने कपास के खेतवाले मकान में जाकर रहने लगा। मैं भी वहां उसके साथ ही रहने लगी। एक वर्ष के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीतर ही स्टुअर्ट से मेरे एक लड़का पैदा हुआ। ओह ! कैसा सुन्दर था वह। मैं उसे कितना प्यार करती थी। देखने में वह ठीक हेनरी-जैसा था। परन्तु मैंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि सन्तान को पाल-पोसकर बड़ा नहीं करूंगी। पन्द्रहवें दिन मैंने उस बालक को बार-बार चूमा, बार-बार उसकी ओर देखा, और तब उसे अफीम खिला छाती से चिपटाकर सो गई। बालक चिरनिद्रा में डूब गया। दो ही घण्टे बाद उसकी सांस बन्द हो गई। सारी रात मैं उसे छाती से लगाये रही। फिर मैंने कई बार उसका मुंह चूमने के बाद कहा, 'बेटा, मैंने तुझे इन पाखण्डी गोरों के हाथों से मुक्त कर दिया। अब तुझे दासी के गर्भ से जन्म लेने के कारण कोई कष्ट न उठाना पड़ेगा।' इस तरह अपने ही हाथों अपने पुत्र के मारे जाने से मुझे कोई कष्ट न हुआ, बल्कि उलटे इस खयाल से कि मैंने उसे अत्याचार और उत्पीड़न से बचा दिया, मुझे कुछ सन्तोष ही हुआ। और यह अच्छा ही हुआ। गुलाम अपनी संतान को मौत के सिवा अधिक सुखदायी और शान्तिप्रद दूसरी क्या चीज दे सकते हैं? कुछ दिनों के बाद कप्तान को हैजे की बीमारी हुई और वह मर गया। संसार की कैसी उलटी गति है! जो लोग जीना चाहते हैं, वे मर जाते हैं, और मुझ-जैसे अभागे, जो बार-बार मौत मांगते हैं, जीवित रहते हैं।

स्टुअर्ट के मरने के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने मुझे बेच डाला। इस प्रकार मैं एक-एक करके कई आदमियों के हाथों में रही। उसके बाद यह नर-पिशाच मुझे खरीद लाया और पांच बरस से मैं यहां हूं।"

यह कहते-कहते कासी का कण्ठ सूख गया, वह और आगे नहीं बोल सकी। मालूम होता है, लेग्री का खयाल आते ही उसके हृदय में एक विशेष प्रकार का शोक, दुःख तथा विद्वेष का भाव जाग उठा था।

यह कहानी सुनाते समय कासी कभी टाम को सम्बोधन करके कह रही थी और कभी अपने-आप ही, पागलों की तरह, बोलती चली जा रही थी।

कासी की जीवन-कहानी सुनते-सुनते टाम अपने शारीरिक दुःख को एकदम भूल गया। वह अपनी आंखों से एकटक कासी को देखे जा रहा था। उसने अपने हाथों का सहारा लिया हुआ था।

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ देर ठहरने से बाद कासी ने फिर कहा, "टाम, तुम मुझसे कहते हो कि पृथ्वी पर परमेश्वर है और वह सब-कुछ देखता है। हो सकता है कि ईश्वर हो। मैं जब शिक्षाश्रम में थी, तब वहां की भगिनियां (सिस्टर्स) मुझसे कहा करती थीं कि एक दिन मनुष्यों के पाप और पुण्य का विचार होगा। पर क्या उस दिन गोरों को अपने पापों का नतीजा नहीं भोगना पड़ेगा? क्या वे अपने पापों के लिए दण्ड नहीं पावेंगे? उनकी समझ में हम लोगों को कोई कष्ट नहीं है। हम लोगों के दिलों में अपने बाल-बच्चों के लिए कुछ दुःख नहीं होता है। हम लोगों की सन्तानों को भी कोई कष्ट नहीं होता है किंतु मुझे मालूम होता है कि केवल मेरे हृदय में शोक की जो आग दवी हुई है, उससे ही यह सारा देश भस्म हो जा सकता है। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करती हूं कि मुझ सहित यह सारा देश पृथ्वी के गर्भ में समा जाय, पृथ्वी से आग निकले और यह पूरा देश जलकर खाक हो जाय। वह विचार का दिन शीघ्र आवे। जिन अत्याचारी अंगरेजों ने मेरा और मेरी सन्तान का सत्यानाश किया है, जिन्होंने न केवल हमारे शरीरों बल्कि आत्माओं तक का निर्मम विनाश किया है, उन लोगों के विरुद्ध मैं राजाधिराज ईश्वर के सामने खड़ी होकर अपील करूंगी, उनसे विनयपूर्वक न्याय करने की प्रार्थना करूंगी।

बचपन में धर्म पर मेरी विशेष भक्ति थी, ईश्वर पर मेरा प्रेम था और मैं उसकी उपासना करती थी। अब तो मेरे शरीर और आत्मा का बिल्कुल पतन हो गया है। शैतान सदा मेरे सिर पर सवार रहता है। वह मुझे अपने हाथ से अत्याचारों और कठोरताओं का प्रतिफल देने को उकसाता है। इसी बीच मैं किसी दिन इस अत्याचार का फल दूंगी। इस नर-पिशाच लेग्री को ठिकाने लगाऊंगी। किसी रात्रि को मौका मिलते ही अपना मनोरथ सिद्ध करूंगी।"

यह कहकर कासी अकस्मात खिल-खिलाकर हंस पड़ी, और तभी सहसा वह अचेत होकर गिर पड़ी। कुछ देर बाद वह होश में आई और संभलकर उठ बैठी। फिर टाम से बोली, "बोलो, तुम्हारे लिए और क्या करना होगा? और पानी दूं?"

जब कासी के मुंह से दया की बात निकलती, तब तो वह साक्षात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दया की देवी जान पड़ती; पर जब वह प्रतिहिंसा से उत्तेजित होती तो ठीक राक्षसी-जैसा रूप धारण कर लेती। इस संसार में सभी मनुष्यों का यही हाल है। वे कभी देव और कभी दानव का स्वांग करते रहते हैं। जब दया, प्रेम और भक्ति की लहर चढ़ी रहती है तब मनुष्य देवता जान पड़ता है; पर द्वेष और प्रतिहिंसा का भाव आते ही वह दानव की शक्ल में बदल जाता है।"

टाम ने पानी पिया और दयापूर्ण हृदय तथा व्याकुल नेत्रों से उसकी ओर देखकर कहा, "मेमसाहब, मैं चाहता हूं कि आप उस ईश्वर की शरण लें जो दु:खी, पापी, ज्ञानी, सबको बिना भेद-भाव के शान्ति का अमृत प्रदान करता है।"

कासी ने कहा, "टाम, बताओ, वह ईश्वर कहां है? कौन है? मैं उसके पास जाना चाहती हूं।"

टाम बोला, "उसके सम्बन्ध में अभी आपने मेरे सामने पढ़ा है।"

कासी ने कहा, "बचपन में कभी मैंने उसका सिंहासन पर बैठे हुए चित्र देखा था, पर वह यहां नहीं है। यहां पाप और अत्याचार के सिवा और कुछ नहीं दीख पड़ता है।"

इतना कहकर कासी छाती पीटने लगी। टाम ने फिर कुछ कहना चाहा, परन्तु कासी ने उसे रोककर कहा, "बस, अब सो जाओ, बातें न करो!"

यह कहकर उसने पानी का पात्र उसके पास रक्खा और फिर उसके आराम का इंतजाम करके उस कोठरी से चली गई।

३८ : : भभकती यंत्रणा

लेग्री अपने घर में बैठा ब्राण्डी ढाल रहा है और गुस्से से आप-ही-आप भनभना रहा है—यह इसी साम्बो की बदमाशी है।...इसी का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठाया हुआ सब बखेड़ा है। टाम एक महीने में भी उठने-बैठने लायक होता नहीं दिखाई देता। इधर फसल का —कपास चुनने का—समय आ गया। कुलियों की कमी से बहुत नुकसान होगा, कारबार ही बन्द हो जायगा। साम्बो अगर शिकायत न करता तो यह बखेड़ा ही न उठता।

लेग्री की ये बातें समाप्त भी न होने पाई थीं कि पीछे से किसी ने कहा, "असल में यही बात है! इन बखेड़ों में हानि के सिवा कोई लाभ नहीं है।"

लेग्री ने पीछे को घूमकर देखा तो वहां कासी को खड़े पाया। लेग्री ने कहा, "क्यों री चुड़ैल, तू फिर आ पहुंची?"

कासी ने कहा, "हां, आ तो गई हूं।"

लेग्री बोला, "तू बड़ी झूठी है, बड़ी कुलटा है। मैं कहता हूं, मेरा कहना मान, शान्ति से रहा कर, नहीं तो मैं तुझसे कुली का काम कराऊंगा।"

कासी ने उत्तर दिया, "एक बार नहीं, हजार बार मैं कुली का काम करूंगी। मुझे कुलियों की तरह टूटी झोंपड़ी में रहना मंजूर है, पर आगे से मैं तेरी छाया में नहीं रहना चाहती।"

लेग्री बोला, "तू मेरे पैरों-तले तो अब भी है। खैर, जाने दे, झगड़े की ज़रूरत नहीं (कासी की कमर में हाथ डालकर और उसकी कलाई पकड़ कर) मेरी प्यारी, मेरी जान, इधर आ और मेरी जांघ पर बैठ! सुन, मैं तेरे फायदे की बात कहता हूं।"

कासी ने कड़ककर कहा, "खबरदार! मुझे छूना मत। मुझ पर शैतान सवार है।"

कासी की लाल-लाल आंखें और कड़कती आवाज सुनकर लेग्री थोड़ा सहम गया। वास्तव में लेग्री के डरने का कुछ विलक्षण कारण है। पर उसने डरने पर भी अपने मन का भाव छिपाते हुए पहले तो कासी को धमकाया, "जा, जा, चल यहां से!" फिर कुछ देर के बाद बोला, "कासी, तू ऐसा व्यवहार क्यों करती है? पहले जैसे तू मुझपर प्रेम किया करती थी, मित्रता का बर्ताव करती थी, वैसे अब क्यों नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती ?"

कासी ने रुखाई से कहा, "क्या कहा ? मैं तुमसे प्रेम करती थी !" किंतु इतना कहते-कहते उसका गला रुक गया।

पशुओं-जैसा आचरण करने वाले पुरुषों को उन्मत्त स्त्रियां सहज में दबा सकती हैं। कासी भी जब चाहती, लेग्री को दबा लेती। पर आज़-कल कासी के साथ लेग्री का झगड़ा हो रहा था। वह एमेलिन को उप-पत्नी बनाने की गरज से लाया था, पर वह किसी तरह अपना धर्म छोड़ने को राजी नहीं होती थी। इससे दुराचारी लेग्री एमेलिन पर तरह-तरह के अत्याचार करता था, जब-तब उस पर आक्रमण करने की भी इच्छा करता था। एमेलिन की दुर्दशा देखकर कासी के हृदय की सहानुभूति जाग उठती थी। इससे वह एमेलिन का पक्ष लेकर तरह-तरह की चतु-राइयों से उसे लेग्री के आक्रमणों से बचाती थी। इसीलिए कासी और लेग्री का विवाद बढ़ गया था। लेग्री ने कासी को तंग करने के लिए अन्य कुलियों के साथ खेत पर भेज दिया। उसने सोचा, इससे कासी की अक्ल ठिकाने आ जायगी। पर वह इससे भी उसके वश में न हुई और उसकी उपेक्षा करके खेत का काम करने को तैयार हो गई। यही कारण था कि इसके पहले दिन कासी कुलियों के साथ खेतों पर काम करने गई थी। कासी का यह आचरण देखकर लेग्री के मन में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। पहले दिन खेत में किये हुए काम की जांच के समय लेग्री ने उसके साथ मेल करने की इच्छा से, कुछ सान्त्वना-मिश्रित घृणा के भाव से, उससे बातें की थीं। पर कासी उससे मुंह फेरकर चली गई। आज फिर लेग्री कहने लगा, "कासी, तुम सीधी-सादी होकर रहो, उत्पात मत बढ़ाओ !"

कासी ने जवाब में कहा, "मुझी को क्यों कहते हो ? तुम स्वयं क्या कर रहे हो ? तुम सिर्फ दूसरों को कहना जानते हो। तुम्हें खुद तो ज़रा-सी भी अक्ल नहीं है। इन काम के दिनों में तुमने एक परिश्रमी और काम-काजी आदमी को अपनी सनक में आकर पीट-पाट कर निकम्मा बना दिया। इस काम में तुमने कौन-सी अक्लमन्दी की ?"

लेग्री बोला, "सचमुच मैंने बेवकूफी की है, लेकिन यह भी तो सोचो कि कोई आदमी जिद पकड़ ले तो उसे दुरुस्त भी तो करना चाहिए !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कासी ने कहा, "मैं कहती हूं, इस विषय में वह तुम्हारे किये कभी दुरुस्त नहीं होने का।"

लेग्री ने तब क्रोध से उठते हुए कहा, "मुझसे दुरुस्त नहीं होने का ? मैं करके देखूंगा, होता है कि नहीं। ऐसा तो आजतक कोई गुलाम मुझे नहीं मिला, जो मेरे हाथ से दुरुस्त न हुआ हो। मैं उसकी हड्डी-पसली चूर कर दूंगा।"

उसी समय कमरे का द्वार खोलकर साम्बो अन्दर आया। वह हाथ में एक काली-सी पोटली लटकाये हुए था। उसे देखकर लेग्री ने कहा, "क्यों ने सूअर, तेरे हाथ में क्या है ?"

साम्बो ने कहा, "सरकार, जादू की पुड़िया !"

लेग्री बोला, "वह क्या होती है ?"

साम्बो ने उत्तर दिया, "हब्शी लोग जादू की पुड़िया पास रखते हैं। इसके पास रहने से कोड़ों की मार असर नहीं करती। टाम ने काले डोरे से इसे गले में बांध रखा था।"

ईश्वर-शून्य हृदय ही कायरता और कुसंस्कारों के पनपने के लिए उपयुक्त होता है। लेग्री को ईश्वर पर जरा भी विश्वास न था, इसीसे उसका मन नाना प्रकार के कुसंस्कारों का घर बना हूआ था।

ज्योंही उसने पोटली को हाथ में लेकर खोला, त्योंही उसमें से एक चांदी का सिक्का और नम्बे-घुंघराले बालों का एक गुच्छा निकला। सुवर्ण की तरह चमकता हुआ वह बालों का गुच्छा, किसी जीवित पदार्थ की तरह, लेग्री की उंगलियों से चिपट गया। वह भय से चिल्ला कर बोल उठा, "चूल्हे में जाय !" उसका तात्कालिक भाव देखकर मालूम हुआ, मानो बालों के इस गुच्छे के छू जाने से उसका हाथ जल रहा है। वह जोरसे जमीन पर लात पटक कर, अंगुलियों से बालों को छुड़ाकर फेंकते हुए, साम्बो से बोला, "तुझे ये बाल कहां मिले ? ले, अभी तुरन्त ले जाकर जला डाल !" इतना कहकर सामने जलती हुई आग में उन बालों को फेंक दिया और साम्बो से बोला, "खबरदार, जो ऐसी चीजें फिर कभी मेरे पास लाया !"

साम्बो आश्चर्य से देखता खड़ा रह गया। कासी भी यह देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विस्मय से लेग्री का मुंह ताकने लगी। लेग्री ने कुछ स्थिर होकर साम्बो को घूंसा दिखाते हुए कहा, "फिर कभी मेरे सामने यह जंजाल मत लाना!" लेग्री का ऐसा रुख देखकर साम्बो वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया। उसके चले जाने पर लेग्री यह सोचकर कि ऐसी छोटी-सी बात पर मुझे इतना गुस्सा नहीं करना चाहिए, कुछ लज्जित-सा हो गया और फिर गिलास में ब्राण्डी ढालकर गले में उंडेलने लगा। कासी बाहर आकर चुपके-से टाम को कुछ दवा-पानी देने चली गई।

यहां यह जानने की उत्कण्ठा होगी कि बालों के इस गुच्छे को देख कर लेग्री का क्रोध इतना क्यों भड़क उठा। वह उन्हें देखकर इतना क्यों डर गया! इसका मूल कारण जानने के लिए लेग्री के पूर्व जीवन की दो-चार घटनाओं का उल्लेख करना आवश्यक है।

इस पापात्मा लेग्री की माता अत्यन्त सच्चरित्र और स्नेहमयी थी। अतः कितनी ही बार उत्तम-उत्तम भजनों के शब्द और ईश्वर का नाम लेग्री के कानों में बचपन में पड़ता रहा था। किंतु माता जितनी धामिक थी, पिता उतना ही दुष्टात्मा था। लेग्री की उम्र बढ़ने के साथ-साथ इसके स्वभाव पर इसके दुष्ट पिता के संस्कार गहरे होने लगे। लेग्री की मां आयलैंड के एक किसान की बेटी थी। उस सहृदय रमणी का भाग्य दैवेच्छा से इस पाशविक प्रकृति वाले हृदयहीन मनुष्य के साथ बंध गया। युवावस्था शुरू होने के पहले ही लेग्री ने नाना तरह के नीच कर्मों में हिस्सा लिया था और इस विषय में अपनी साध्वी मां के रोने-झींकने की भी कोई चिन्ता नहीं की थी। धन कमाकर उसके द्वारा भोग-विलास करना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में ही उसने घर छोड़कर अपने को जहाज के काम में लगाया। उस समय से वह जल-मार्ग से जानेवाली महिलाओं पर, समय-असमय घोर अत्याचार करता था। इसके बाद लेग्री केवल एक बार ही अपने घर गया था। उस समय उसकी माता ने उसे घर पर रहकर ही भले लोगों की तरह जीवन बिताने को कहा। मां के रोने-धोने से लेग्री का मन क्षण-भर के लिए पसीजा। इसकी जिन्दगी में केवल यही क्षण इसके सुधार के लिए उपयुक्त था। यदि इस क्षण का उपयोग वह कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाता तो शायद सुधर जाता। पर उसके हृदय पर पाप की ही विजय रही। उसने मां के वचनों को नहीं माना। तब वह स्नेहमयी जननी बेटे के गले से लगकर रोने लगी, किंतु वह अपनी मां को पैर से धकेल कर घर से चला आया। उसकी मां बेहोश होकर जमीन पर पड़ी रही। विदेश जाकर फिर कभी उसने अपनी मां की खोज-खबर नहीं ली।

एक दिन की बात है। वह अपने ही जैसे दुराचारी मित्रों के साथ बैठकर शराब पी रहा था और दो-तीन अनाथ कुली औरतों की अस्मत को जबरदस्ती बिगाड़ने की तैयारी कर रहा था कि इसी बीच एक नौकर ने आकर उसके हाथ में एक पत्र दिया। पत्र खोलते ही उसमें से बालों का एक गुच्छा निकला। वह बालों का गुच्छा उसकी अंगुलियों से लिपट गया। इस पत्र में उसकी मां की मृत्यु की खबर थी और लिखा था कि मृत्यु के समय उसने पुत्र के सारे अपराधों को क्षमा करके ईश्वर से उसके कल्याण की प्रार्थना की थी। पत्र को पढ़कर लेग्री के मन में भय का संचार हुआ। अपनी मां के वे सजल नेत्र उसे याद आये, जब वह उसे अन्तिम बार पैर से धकेलकर चला आया था। माता द्वारा मृत्यु के समय की गई प्रार्थना का स्मरण करते ही उसका हृदय कांप उठा। परन्तु ब्राण्डी की बोतल और कुली युवतियां सामने बैठी थीं, यदि जल्दी ही जननी-संबंधी सारी स्मृति को हृदय से दूर नहीं किया तो सारा मजा ही किरकिरा हो जायगा। उसने तुरन्त अपनी जननी के बालों का गुच्छा और वह चिट्ठी आग में डाल दी। पर बालों के उस गुच्छे के जलते ही उसे फिर उसी भयंकर नरक की याद आई। उसका हृदय फिर कांप उठा, किन्तु वह सामने रखी हुई बोतल से ब्राण्डी ढाल-ढालकर पीने लगा, और किसी तरह इस भयानक चिन्ता से अपने को बचाने की फिक्र करने लगा। कुछ देर के लिए ब्राण्डी ने उसके हृदय से वह स्मृति दूर कर दी। पर तब से प्रायः वह रात्रि के समय अपनी मां को अपनी चारपाई के पास ही खड़ी देखा करता था। मां का चेहरा उदास होता और उसकी आंखों में आंसू होते। मां के वे बाल आकर उसकी अंगुलियों में लिपट जाते और वह भय तथा त्रास से कांप-कांप जाता। बाल जलाने के सम्बन्ध में लेग्री के जीवन में एक ऐसी ही घटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घट चुकी है, इसीसे आज फिर बाल जलाने के समय उसे बड़ा डर लगा। इसी कारण वह साम्बो पर इतना गुस्सा हुआ था। साम्बो और कासी के चले जाने पर भी वह अपने मन को स्थिर नहीं कर सका। कुछ ही पलों के बाद बोला, "भाड़ में जांय ये सब बातें! इनको सोच-कर क्या होगा!" वह फिर ब्राण्डी के प्याले-पर-प्याले ढालने लगा। फिर मन-ही-मन सोचने लगा—"क्या बात है? वे बाल जैसे अंगुलियों से लिपट गए थे, वैसे ही ये बाल भी क्यों लिपट गए? क्या बालों में भी जान होती है? वे बाल क्या आग में जले नहीं?" वह फिर सोचने लगा—"मैं अब इन चिन्ताओं को मन में नहीं आने दूंगा। चलता हूं एमेलिन के पास....बंदरिया मुझसे घिन करती है, पर मैं उसे हत्थे पर लाऊंगा। आज मैं उसे किसी भी तरह नहीं छोड़ने का!"

इतना कहकर लेग्री ऊपर के कमरे में एमेलिन के पास जाने लगा। सीढ़ी पर पांव रखते ही उसके कानों ने एक गीत की कड़ी सुनी। गीत सुनकर वह ठिठक गया। केशों को जलाने से उसका मन अस्थिर हो गया था, अब गीत सुनकर वह और भी घबराया।

कोई अत्यन्त करुण स्वर से गा रहा था:

हाय! कब छूटेगा संसार?
कबतक रोऊंगी अभाग्य पर, पड़कर नरक-मँझार।
शोक-निशा है ग्रसनेवाली, हैं पीड़ा अपरंअपार॥
हाय! कब छूटेगा संसार?

गीत को सुनकर लेग्री का मन और भी उद्विग्न तथा अस्थिर हो गया। वह मन-ही-मन कहने लगा, भाड़ में जाय यह अभागी! मैं इस का गला घोंटकर मार डालूंगा। इसके बाद जल्दी-जल्दी पुकारने लगा, "एम! एम!" परन्तु कहीं से कोई उत्तर न आया। केवल मां! मां! की प्रतिध्वनि ही उसे सुनाई पड़ रही थी। गीत अभी चल रहा था:

महाभयंकर वह दिन होगा, हा विधि! हा कर्तार!
जब पापानल में जल-भुनकर, होऊंगी मैं छार॥
हाय! कब छूटेगा संसार?

लेग्री फिर ठहरा। उसके सिर से पसीना निकलने लगा। उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय कांपने लगा। उसे मालूम होने लगा, मानो उस के सामने आंसू बहाती हुई उसकी मां ही खड़ी है। तब वह मन में सोचने लगा—यह क्या हुआ ? सचमुच ही यह टाम जादू करना जानता है क्या ? चलो, आगे उसे नहीं मारूंगा। लेकिन यह बालों का गुच्छा उसने कहां से पाया ? क्या वे मेरी मां के ही वाल थे ? वे कैसे हो सकते हैं ? उन्हें जलाये तो मुझे कई साल वीत गये ! यह वालों का गुच्छा ठीक वैसा ही क्यों जान पड़ता था ? अगर उन जले हुए बालों में जान आ गई, तो यह वड़ा मजाक होगा !

अरे ओ नराधम लेग्री ! तू इन केशों की महिमा क्या जाने ! तेरे-जैसा पापी इसे नहीं समझ सकता। इन केशों ने ही आज तेरे हाथ-पैरों में बंधन डाल दिये। ऐसा न होता तो इसी घड़ी तू उस निर्दोष निर्मल-चरित्र एमेलिन का जीवन-सर्वस्व हरण करके उसके परम पवित्र शरीर को अपवित्र कर देता। उसके निर्मल जीवन में कलंक की कालिमा लगा देता।

आज लेग्री के मन में भभकी हुई यन्त्रणा की ज्वाला किसी भी उपाय से शान्त नहीं हो रही है। अतः उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि आज मैं अकेला नहीं रहूंगा। साम्बो और कुइम्बो को बुलाकर वह सारी रात उनके साथ शराव-कवाब उड़ाता रहा और हल्ला मचाता रहा। इनके शोरगुल के मारे दूसरे लोगों की नींद हराम हो रही थी। टाम को पथ्य-पानी देकर कासी रात को एक बजे के बाद घर लौट रही थी। घर में घुसते ही उसे इनका शोर सुनाई पड़ा। उसने देखा कि शराव के नशे में चूर होकर लेग्री, साम्बो और कुइम्बो तीनों हाथापाई कर रहे हैं। कासी ने बरामदे में आकर, पर्दे को थोड़ा खिसकाकर इन लोगों की ओर देखा। उसकी आंखों में उस समय घोर द्वेष और घृणा के भाव दिखाई पड़े। वह मन-ही-मन सोचने लगी—क्या इस नर-पिशाच से मानव-समाज को मुक्त करने की कोई सूरत निकलेगी ? यही सोचते हुए वह सीढ़ियां चढ़कर दुमंजिले पर पहुंची और धीरे-धीरे एमेलिन का दरवाजा खटखटाने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३९ :: समवेदना का प्रभाव

कासी ने कमरे के अन्दर पहुंचकर देखा कि एमेलिन एक कोने में दुबकी हुई भयभीत बैठी है। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ है। कासी के आने की आहट सुनकर वह चौंक उठी। पर उसने जब कासी को देखा तो दौड़कर उसकी बांहें पकड़ लीं और बोली, "कासी ! तुम हो ? मैंने सोचा था, कोई और आ रहा है। बड़ा अच्छा हुआ जो तुम आ गईं। मुझे डर बहुत ही सता रहा था। तुम नहीं जानती हो कि नीचे के कमरे में कितना भयंकर शोर हो रहा है।"

कासी ने कहा, "मैं सब जानती हूं, बहुत दिनों से सुनती आती हूं।"

एमेलिन बोली, "कासी, क्या यहां से हम लोगों के निकल चलने का कोई उपाय नहीं है ? इस जंगल में सांपों और शेरों के बीच रहना अच्छा है, पर यहां नहीं।"

कासी ने कहा, "कब्र के लिए और कोई जगह नहीं है।"

दो क्षण ठहरकर एमेलिन बोली, "तुमने कभी चेष्टा की है ?"

कासी ने उत्तर दिया, "मैंने खूब चेष्टा कर देखी है, पर कोई नतीजा नहीं।"

एमेलिन ने कहा, "मुझे वन में, दलदल में, पेड़ों के पत्ते खाकर रहना मंजूर है। मैं भयंकर सांपों से भी इतना नहीं डरती, जितना लेग्री-जैसे नर-पशुओं के निकट रहने से डरती हूं।"

कासी बोली, "बहुतों ने तुम्हारी ही भांति यहां से भाग निकलने की बात सोची, पर भागने से कहां छुटकारा है ? वह तुम्हें दलदल में भी नहीं टिकने देगा। शिकारी कुत्तों से पता लगवा लेगा, पकड़वा मंगायेगा, और---तब—तब "

एमेलिन ने पूछा, "और तब क्या करेगा ?"

कासी बोली, "इसके बदले यह पूछो कि क्या नहीं करेगा। जल-दस्युओं में रहकर यह अपने पेशे में क्रूर हो गया है। यदि मैं तुम्हें उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी-कभी मजाक में कही हुई बातें सुनाऊं और यहां का अपना आंखों-देखा हाल बताऊं तो तुम्हें रात में नींद आना भी मुश्किल हो जायगा। इस घर के पिछवाड़े एक अधजला पेड़ है। उस पेड़ के नीचे की जमीन काली राख से ढकी पड़ी है। यहां के किसी आदमी से पूछो कि यहां क्या हुआ है ? देखो, फिर वह कहने की भी हिम्मत करता है या नहीं।"

एमेलिन ने जिज्ञासा से पूछा, "तुम्हारे कहने का मतलब मैं नहीं समझी।"

तब कासी ने बताया, "मैं तुमसे वह सब नहीं कहूंगी। मैं उन बातों को मन में लाना भी बुरा समझती हूं। और मैं तुमसे कहती हूं कि यदि कल भी टाम अपनी जिद पर अड़ा रहा और, उसने लेग्री की बात नहीं मानी, तो परमात्मा ही जानता है कि हमें कल कैसा भयानक दृश्य देखना पड़ेगा।"

एमेलिन भय से पीली पड़कर बोली, "ओफ ! कितना भयंकर है। अरी कासी, मुझे रास्ता बता। मैं अब क्या करूं ?"

कासी ने समझाया, "जो मैंने किया है, और अन्त में झख मारकर जो तुम्हें भी करना पड़ेगा, वही करो !"

एमेलिन ने अपनी व्यथा सुनाई, "वह मुझे अपनी घिनौनी ब्राण्डी पिलाना चाहता है और मैं उससे हद से ज्यादा नफरत करती हूं।"

कासी ने बताया, "ब्राण्डी पीना अच्छा रहेगा। पहले मैं भी ब्राण्डी से घृणा करती थी, लेकिन अब तो मैं उसके बिना जी नहीं सकती। यह सब-कुछ खाये-पीये बिना काम नहीं चलता। जब तुम पीने लगोगी, तब इतनी बुरी भी नहीं लगेगी।"

एमेलिन बोली, "मां मुझे बराबर कहा करती थीं कि ऐसी चीजों को छूना तक नहीं चाहिए।"

कासी ने कहा, "तुम्हारी मां तुम्हें ऐसा कहती थी, यह अचरज की बात है। मां की कही हुई इन बातों का क्या नतीजा होना है ? जिसने हमें मोल लिया है, वह हमारे शरीर और आत्मा का मालिक है। उसकी कही बात हमें माननी होगी। मैं कहती हूं तुम ब्राण्डी पीओ ! जितनी पी सको, उतनी पीओ ! इससे तुम्हारी मानसिक पीड़ा बहुत-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ दूर हो जायगी।"

एमेलिन ने प्रार्थना की, "कासी ! कासी ! मुझ पर दया करो !"

कासी चौंक कर बोली, "क्या मैं नहीं करती हूं ? तुम्हारी-जैसी एक मेरी भी बेटी थी। ईश्वर जाने, वह अब कहां है ! कैसी है ! संभव है, जिस रास्ते का उसकी माता ने सहारा लिया है, वह भी उसी पर चली हो, और उसकी संतानें भी उसी पर जांयगी। हाय, इस बदकिस्मती का क्या ठिकाना है !"

एमेलिन ने अपने हाथों को ऐंठते हुए कहा, "मेरा जन्म ही न होता तो अच्छा था।"

कासी बोली, "मेरे लिए तो यह पुरानी इच्छा है। बहुत बार मैंने ऐसी इच्छा की है। मन में आता है कि जान दे दूं, पर हिम्मत नहीं होती।"

एमेलिन ने कहा, "आत्म-हत्या करना पाप है।"

"मैं नहीं जानती कि आत्म-हत्या को क्यों पाप बताया जाता है ?" कासी ने दुखी स्वर में कहा, "हम नित्य जिन पापों में लिप्त रहती हैं, उनसे भी बड़ा क्या कोई पाप है ? पर जब मैं शिक्षाश्रम में थी, तब वहां की भगिनियों से मैंने इस विषय में जो बातें सुनी थीं, उन्हें याद करके आत्म-हत्या करने में डर लगता है। यदि आत्म-हत्या के साथ आत्मा का लोप हो जाता, तो फिर....."

एमेलिन ने यह सुनकर, पीछे हटकर, दोनों हाथों से मुंह ढक लिया।

यहां जब ये बातें हो रही थीं, उस समय लेग्री शराब के गहरे नशे में मस्त होकर नीचे के कमरे में पड़ा नींद में खुर्राटे भर रहा था।

नींद की दशा में वह स्वप्न देख रहा था कि सफेद कपड़े पहने हुए कोई मूर्ति उसके पास खड़ी है और बरफ जैसे ठंडे हाथों से उसके शरीर को छू रही है। यह मूर्ति उसे कुछ परिचित-सी जान पड़ी। डर के मारे उसका सारा शरीर जड़ हो गया। फिर उसे ऐसा लगा, जैसे वह बालों की लट आकर उसकी अंगुलियों के चारों ओर लिपट गई। देखते-देखते वह लट गले तक जा पहुंची और उसने गले को सब ओर से लपेटकर बांध लिया। लेग्री की सांस रुक गई। तब वह श्वेत वस्त्रधारी मूर्ति उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान में कुछ कहने लगी। उसकी बात सुनकर लेग्री को लगा कि उसके हृदय की गति रुकने लगी है। उसने फिर देखा कि वह किसी कुएं के किनारे खड़ा हुआ है। कासी वहां हँसती हुई आई और उसे कुएं में धकेल दिया। फिर उसने उसी श्वेत वस्त्रधारी मूर्ति को अपने सामने देखा। उस मूर्ति ने अपने मुंह पर से पड़ा पर्दा हटा दिया। लेग्री ने देखा, अरे, यह तो उसकी मां है! उसे देखकर मां वापस चली गई और वह एक बड़े गहरे खड्ड में जा गिरा। वहां चारों ओर शोर-गुल, चिल्लाहट, आर्त्त-नाद और भूत-प्रेतों की विकट हास्य-ध्वनि सुनकर लेग्री की नींद खुल गई।

इधर सवेरा हो गया था।

प्रतिदिन प्रातःकालीन सूर्य मानव-हृदय में नयी-नयी भावनाएं जगाता है। प्रातःकालीन समीर मधुर स्वर से कहता है—"अरे मनुष्यो, अपने पापासक्त मन को सुमार्ग पर लाने के लिए, अपने हृदय का मैल धो डालने के लिए, ईश्वर ने तुम्हें फिर यह एक नया अवसर दिया है।" लेकिन न तो प्रातःकालीन सूर्य, और न प्रातःकालीन पवन, कोई भी, लेग्री-सरीखे पाप-पंक में लिप्त व्यक्ति के मन में शुभ भावना जगा सका। लेग्री के मन में प्रभात-काल किसी प्रेरणा का उदय नहीं कर पाता था। वह बिस्तर से उठा नहीं कि शराब की बोतल हाथ में ले लेता था।

कासी को, जो उसी समय दूसरे दरवाजे से कमरे में आई थी, देखकर लेग्री बोला, "कासी, आज रात को मुझे बड़ी तकलीफ हुई।"

कासी ने रूखेपन से कहा, "आज ही क्या, अभी आगे-आगे और भी कष्ट भोगना होगा।"

लेग्री ने पूछा, "तुम्हारे ऐसा कहने का क्या मतलब है?"

कासी ने कहा, "अभी नहीं, बाद को समझोगे। लेग्री, मैं तुम्हारे भले के लिए एक सलाह देती हूं।"

लेग्री बोला, "क्या?"

कासी बोली, "वह सलाह यही है कि अब तुम टाम को सताना बन्द कर दो।"

लेग्री गुर्राकर बोला, "इस बात से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कासी ने धीरज से जवाब दिया, "मेरा इस बात से सीधा कोई संबंध नहीं है, लेकिन मैं तुम्हें जो समझाना चाहती हूं वह यह है कि ये काम के दिन हैं, इस वक्त मार-पीट करने से तुम्हारा ही नुकसान है। आखिर तुम बारह सौ डालर नक़द गिनकर एक आदमी लाओ और उसे इस तरह बेकार ही मार डालो, तो सोचो, कितना नुकसान होगा। तुम्हारी हानि के खयाल से ही मैं उसे जल्दी चंगा करने की कोशिश करती हूं।"

लेग्री ने क्रोध के साथ कहा, "तू उसे ठीक करने क्यों गई? मेरे मामले में तेरे टांग अड़ाने का क्या मतलब है?"

कासी बोली, "सचमुच कुछ भी नहीं। पर मैंने इसी तरह कई बार तुम्हारा रुपया बचा दिया। अगर फसल अच्छी न हुई तो तुम्हारी आंखें खुल जायंगी।"

कपास की फसल के लिए लेग्री जी-जान से कोशिश करता था। इसीसे कासी ने, टाम की मार टालने के खयाल से, बड़ी चतुराई से बात शुरू की थी।

लेग्री बोला, "खैर, मैं इस बार उसे छोड़ दूंगा। लेकिन शर्त यह है कि वह मुझसे क्षमा मांगे और भविष्य में मेरी बात पर चलने का वादा करे।"

कासी ने तुरन्त कहा, "यह वह नहीं करेगा।"

लेग्री ने पूछा, "नहीं करेगा?"

कासी ने दृढ़ता से कहा, "नहीं करेगा।"

लेग्री बोला, "मुझे मालूम तो हो, कि क्यों नहीं करेगा?"

कासी ने समझाया, "उसका विश्वास है कि उसने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। वह कभी नहीं कहेगा कि उसने अनुचित किया है।"

लेग्री झुंझलाकर बोला, "हब्शी गुलामों का भी क्या कोई न्याय-अन्याय होता है? मैं जो कहूंगा, वही उसे करना होगा।"

कासी ने स्थिर स्वर में उत्तर दिया, "तब वह काम के समय खाट पर ही रहेगा और इस साल तुम्हारी फसल खराब होगी।"

लेग्री अकड़ से बोला, "लेकिन वह जरूर माफी मांगेगा, जरूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांगेगा। मैं क्या इन हब्शी गुलामों को नहीं पहचानता ?"

कासी ने उसे पुनः वही उत्तर दिया, "लेग्री, मेरी इस बात का गांठ बांध लो, वह कभी माफी नही मांगेगा। तुम उसे मामूली गुलाम मत समझना। तुम उसकी बोटी-बोटी काट डालोगे, तब भी वह अपनी बात से नहीं टलेगा।"

लेग्री बोला, "मैं उसे देखूंगा। वह इस समय कहां है ?"

कासी ने बताया, "जिस कोठरी में सड़ी रुई और पुराना माल-असबाब पड़ा है, उसी में है।"

लेग्री ने कासी के सामने इस तरह हेकड़ी तो जाहिर की, किन्तु उसके मन में भी शंका होने लगी कि टाम क्षमा नहीं मांगेगा। उसने सोचा कि यदि वह टाम से क्षमा नहीं मंगवा सका तो साथ रहनेवाले लोगों में उसकी हेठी होगी, रौब में फर्क पड़ेगा, इसलिए वह अकेला ही टाम की कोठरी की ओर गया। उसने मन-ही-मन सोचा कि यदि टाम क्षमा नहीं मांगेगा तो भी उसे इस वक्त नहीं मारूंगा, फसल का मौसम बीत जाने पर उसे दुरुस्त करूंगा।

हम पहले ही कह आये हैं कि सवेरे की हवा और सवेरे का सूर्य लोगों की भिन्न-भिन्न प्रकृति के अनुसार उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के भाव जगाता है। किन्तु लेग्री-जैसे भावहीन चिताशून्य, अर्थलोलुप, इन्द्रियासक्त पिशाच के हृदय में किसी प्रकार का भाव प्रवेश नहीं कर सकता। उसका ध्यान केवल कपास के खेत, पैसा इकट्ठा करना, शराब और कुली औरतों में लगा है। किन्तु अपढ़ होने पर भी टाम का मन भावों और चिन्ताओं से शून्य नहीं हैं। प्रभातकालीन सजीवता ने उसके हृदय में नवीन बल का संचार किया। उसे मालूम होने लगा—मानो शुक्र तारा आकाश से उतरकर उससे कह रहा है—"टाम, डरना नहीं। ईश्वर तुम्हारे साथ है।" टाम को मन-ही-मन बड़ी प्रसन्नता होने लगी, विशेषकर इस बात से कि लेग्री उसे जान से मार डालेगा। पहले उसने इस बात को नहीं सोचा था, परन्तु कासी की पहले दिन की बातचीत के ढंग से वह समझ गया था कि अब उसकी मृत्यु बहुत निकट है। अतः इस मृत्यु-संवाद को पाकर उसकी आत्मा विमल आनन्द से पूर्ण हो गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह सोचने लगा, मृत्यु के उपरान्त वह ईश्वर के उस प्रेम-राज्य में जा कर विश्राम करेगा, जहां द्वेष, हिंसा और अत्याचार की गंध भी नहीं है। वहां प्राणों से प्रिय इवांजेलिन का मुख-कमल देखेगा और यह भी देखेगा कि परम दयालु मालिक सेण्टक्लेयर की नास्तिकता परलोक में जाकर दूर हो गई है। अहा, टाम के लिए इससे बढ़कर सुख और सन्तोष की बात और क्या हो सकती है? वह अपने शारीरिक कष्टों को भूलकर आनन्द से विह्वल हो गया। उसके मुखमण्डल पर प्रसन्नता एवं किंचित हास्य का आभास दिखाई दे रहा था। इसी समय नर-पिशाच लेग्री ने वहां पहुंचकर उसे पुकारा और पैरों से ठुकराते हुए कहा, "कहो बच्चू, कैसे हो? मैंने तुझसे नहीं कहा था कि तुझे सिखादूंगा? बोल, यह शिक्षा कैसी लगती है? अभी कुछ जिद बाकी है कि निकल गई? आज इस पापी को कुछ धर्म नहीं सिखावेगा?"

टाम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

इसपर लेग्री ने उसे फिर ठोकर मारते हुए कहा, "उठ सूअर!"

पिछले दिन की मार से टाम बहुत शक्तिहीन हो गया था, इससे बोला, "क्यों, तुझे क्या हो गया है? मालूम होता है, रात की ठण्डी हवा से सर्दी खाकर अकड़ गया है।"

टाम बड़े कष्ट से उस पापी उत्पीड़क के सामने निडर होकर खड़ा हो गया।

लेग्री कहने लगा, "अरे शैतान, मैं समझता हूं कि अभी तुझे काफी सजा नहीं मिली है। मेरे सामने घुटने टेककर माफी मांग, नहीं तो और पीटता हूं। जल्दी कर! माफी मांगता है कि नहीं?" इतना कहकर हाथ में लिये कोड़े से वह उसे सड़ासड़ पीटने लगा।

टाम ने कहा, "सरकार, लेग्री साहब, यह मुझसे नहीं होगा। मैंने केवल वही किया है, जिसे मैंने उचित समझा है। आगे भी, काम पड़ने पर, मैं ऐसा ही करूंगा। चाहे कुछ भी हो जाय, मैं किसी को मारने-पीटने का हृदयहीन काम कभी नहीं करूंगा।"

लेग्री बोला, "ठीक है। लेकिन हजरत, अभी आपको यह पता नहीं कि इसके बाद आपकी क्या दुर्गति होगी। तू समझता है कि कल जो कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ, वह काफी हो गया पर मैं तुझे बताता हूं कि वह तो बस बानगी था। जरा उस मज़े का खयाल करके देख, जब तुझे पेड़ से बांध दिया जायगा और नीचे धीमी-धीमी आग जलाकर तुझे भूना जायगा।"

टाम ने कहा, "सरकार, मैं जानता हूं कि आप भयंकर-से-भयंकर काम कर सकते हैं।"

इतना कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू आ गये और वह ऊपर को हाथ उठाकर कहने लगा, "किंतु इस शरीर का नाश कर डालने के बाद आप और कुछ अधिक नहीं कर सकेंगे—उसके बाद तो मैं अनन्त में मिल जाऊंगा।"

अनन्त! कैसा चमत्कारी शब्द है! प्रेम और आनन्द, दोनों इस में समाये हुए हैं। काले टाम के हृदय में इसने शान्ति और आनन्द का स्रोत बहा दिया। और यही शब्द लेग्री को भीतर-ही-भीतर बिच्छू के डंक-जैसा लगा। इस पर वह दांत किचकिचाने लगा।

टाम फिर स्वाधीनतापूर्वक कहने लगा, "लेग्रीसाहब, तुमने मुझे खरीदा है, इससे मैं तुम्हारा दास हूं। अवश्य ही मैं जी-जान से तुम्हारा काम करूंगा। मेरा शारीरिक बल और समय तुम्हारे काम के लिए है, परन्तु अपनी आत्मा को मैं कभी तुम्हारे हाथ में अर्पण नहीं करूंगा। जान रहे या जाय, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, लेकिन मैं ईश्वर के आदेश का पालन अवश्य करूंगा। मेरी यह आत्मा उसीके चरणों में समर्पित है। मैं उसके आदेश का उल्लंघन करके कभी हृदयहीन व्यवहार नहीं करूंगा! —कभी नहीं! तुम्हारा जी चाहे, मुझे कोड़ों से मारो, लाठियों से मारो, आग में जलाकर बिल्कुल खत्म कर दो—कुछ भी करो, परन्तु मैं धर्म को नहीं छोड़ूंगा। हर्गिज नहीं—हर्गिज नहीं!!"

लेग्री ने क्रोध से उबलते हुए कहा, "देखता जा' मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूंगा। जब तुझे ठिकाने से मार पड़ेगी, तब तू समझेगा।"

टाम बोला, "मुझे मदद मिलेगी!"

लेग्री ने पूछा, "कौन तेरी मदद करेगा?"

टाम ने कहा, "सर्वशक्तिमान ईश्वर मेरी मदद करेंगे।"

लेग्री ने एक घूंसा मारकर टाम को जमीन पर धकेल दिया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा, "देखूंगा, तेरा ईश्वर कैसे तेरी मदद करता है।"

इसी समय पीछे से एक ठण्डा और कोमल हाथ लेग्री के शरीर पर लगा। उसने फिर देखा, कासी है, परन्तु ठण्डे हाथ के स्पर्श से उसे पिछली रात के सपने की याद हो आई और वह कुछ भयभीत हो गया।

कासी ने फ्रेंच भाषा में कहा, "लेग्री, तुम भी कैसे अहमक हो ! छोड़ो इसे। काम के वक्त तुम नाहक का टंटा लेकर खड़े हो गए हो। तुम्हें मैं कई वार समझा चुकी हूं। मैं इसकी दवा-पानी करके देखती हूं कि किसी तरह जल्दी अच्छा होकर खेत के काम लायक हो जाय।"

यह सही है कि मगर और गैंडे के चमड़े पर गोली असर नहीं करती, लेकिन उनके शरीर में भी एक ऐसा स्थान होता है, जिसे भेदकर गोली उनका काम तमाम कर सकती है। उसी भांति नीच, लम्पट, निर्दयी, अविश्वासियों और नास्तिकों को डराने का भी एक-न-एक रास्ता होता है। भ्रान्त संस्कारों से पैदा हुआ भय सदा ही उनके मनों में घर किये रहता है। पिछली रात के सपने में देखी हुई अपनी मां की दृष्टि का स्मरण आते ही लेग्री का हृदय कांप गया।

लेग्री ने कासी से कहा, "अच्छा इसे तुम्हीं संभालो !"

फिर वह टाम से बोला, "इस वक्त तो मैं तुझे छोड़ता हूं, क्योंकि आज-कल काम के दिन हैं। पर याद रखना, इसके बाद मैं तुझे समझूंगा। तुझे सीधा न किया तो मेरा नाम लेग्री नहीं !"

इतना कहकर वह चला गया।

कासी मन-ही-मन बोली, 'अब तो तुम यहां से सरको, फिर देखा जायगा। तुम्हारे भी तो दिन नजदीक ही आ रहे हैं।'

फिर कासी ने टाम से पूछा, "कहो तुम्हारे, क्या हाल हैं ?"

टाम ने कहा, "इस समय ईश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंह का मुंह बन्द कर दिया है।"

कासी बोली, "हां, इस समय तो सचमुच मुंह बन्द कर दिया। लेकिन अब वह तुमसे बुरी तरह मार खाकर गया है। धीरे-धीरे तुम्हारा खून चूस-चूसकर वह तुम्हारी जान लेगा। मैं इस पाजी को भली भांति जानती हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४० : : स्वतंत्रता का नव-प्रभात

टाम लोकर एक वृद्धा क्वेकर रमणी के घर पर शारीरिक यंत्रणा से कराह रहा था। अपने साथी मार्क को गालियां दे रहा था और कभी फिर उसका साथ न देने के लिए सौ-सौ कसमें खा रहा था ।

वह दयालु बुढ़िया लोकर के पास बैठी माता की तरह उसकी टहल कर रही है। वृद्धा का नाम डार्कस हैं । सब लोग उसे 'डार्कस मौसी' कहकर पुकारते हैं। वृद्धा कद में जरा लम्बी है। इसके मुंह पर दया, ममता, स्नेह और धर्म के चिह्न लक्षित होते हैं। इसके कपड़े भी एकदम सादे और सफेद हैं, यह दिन-रात बड़े ध्यान से लोकर के पथ्य-पानी की सार-संभाल करती है।

लोकर बिछौने की चादर को इधर-उधर लपेटते हुए कह रहा है, "ओफ ! कैसी गरमी है ! यह कम्बख्त चादर भी खाये जाती है।"

वृद्धा डार्कस मौसी ने उसके बिस्तर की सलवटों को ठीक करते हुए कहा, "टामस बाबा, तुम्हें ऐसी भाषा का व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

लोकर ने कहा, "मौसी, मेरा शरीर जल रहा है, मुझसे सहा नहीं जाता।"

डार्कस ने समझाया, "गालियां बकना, सौगन्द खाना और गन्दे शब्दों का व्यवहार करना भले आदमियों का काम नहीं। इन गन्दी आदतों को छोड़ने की चेष्टा करो !"

लोकर ने कहा, "यह कम्बख्त मार्क बड़ा शैतान का बच्चा है। पहले वकालत करता था, इसी से इतना लालची है। ऐसा गुस्सा आता है कि बदमाश को फांसी पर लटका दूं।"

इतना कहकर लोकर ने फिर सारे बिछौने को सिकोड़-सिकोड़ कर उलट-पुलट कर डाला।

क्षण-भर के बाद फिर वह कहने लगा, "वे भगोड़े दास-दासी यहीं हैं क्या ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डार्कस ने बताया, "यहीं हैं।"

लोकर ने कहा, "उनसे कह दो कि जितनी जल्दी झील के किनारे जाकर जहाज पर सवार हो जांय, उतना ही इच्छा है।"

डार्कस बोली, "शायद वे ऐसा ही करेंगे।"

लोकर ने सावधान किया, "उन्हें बड़ी होशियारी से जाने को कहना! सेनडस्की के जहाज के आफिस में हमारे आदमी लगे हैं। वे कड़ी पूछ-ताछ करेंगे। मैं यह सब इसलिए बता रहा हूं कि उस नामाकूल मार्क को कौड़ी भी हाथ न लगे।"

डार्कस ने कहा, "फिर तुम गन्दे शब्द मुंह से निकालते हो!"

लोकर बोला, "डार्कस मौसी, मुझे इतना कस कर मत बांधो। बहुत कसने से सब टूट जायगा। मैं धीरे-धीरे अपने को सुधार लूंगा। लेकिन उन भगोड़ों की बाबत मैं जो कहता हूं, उसे ध्यान से सुनो। उस औरत से कह देना कि वह मर्दाना वेश बनाकर जहाज पर चढ़े और बालक को बालिका-जैसे कपड़े पहना दे। उन लोगों का हुलिया सैनडस्की भेजा जा चुका है।"

डार्कस ने कहा, "हम लोग सावधानी से काम करेंगे।"

टाम लोकर तीन सप्ताह तक वहां बीमार पड़ा रहा। फिर नीरोग होकर घर चला गया। वहां पहुंचने के बाद उसने गुलामों को पकड़ने का धन्धा एकदम छोड़ दिया और किसी अच्छे धन्धे में लग गया। तीन सप्ताह तक क्वेकर-परिवार के सत्संग में रहने के कारण उसके स्वभाव में बड़ा परिवर्तन हो गया था। क्वेकर-समुदाय वालों को वह बड़ी भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। डार्कस मौसी की तो वह अपनी मां से भी अधिक भक्ति करने लगा था।

लोकर के मुंह से यह सुनकर कि सैनडस्की में उनका हुलिया पहुंच चुका है और वहां कड़ी जांच होगी, उन्होंने विशेष सावधानी से काम लेने का निश्चय किया। साथ जाने से पकड़े जाने का खतरा देखकर जिम और उसकी माता दो दिन पहले चल पड़े। उसके बाद जार्ज और इलाइजा अपने बालक-सहित रात को सैनडस्की पहुंचे।

रात बीत चली थी। स्वतंत्रता का सुख-सूर्य हृदयाकाश में उदित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होने को ही था। स्वतंत्रता— अहा, कैसा जादू-भरा शब्द है ! इसका उच्चारण करते ही हृदय आनन्द से नाच उठता है । देवि स्वतन्त्रते ! तुम साथ रहो तो खप्पर में मांगकर खाना और वृक्षों के नीचे जीवन बिताना भी सुखकर है; परन्तु तुम्हारे बिना तो राज-भोग भी उच्छिष्ट-जैसा है। तुम्हें पाने के लिए अमरीका के अंगरेजों ने जान की बाजी लगा दी और अपने कितने ही वीरों की रण में आहुति दी। सारा संसार तुम्हारे लिए लालायित है। पर जहां वीरता और एकता है, वहीं तुम्हारा निवास होता है। भीरुता, कायरता, स्वार्थपरता तथा फूट के तो तुम पास भी नहीं फटती हो। इनसे तुम्हें बड़ी नफरत है। इस संसार में निर्बल, भीरु और स्वार्थान्ध जातियां तुम्हारे मुख-दर्शन की आशा नहीं कर सकतीं, और जिस जाति से तुम दूर हो, उसमें जीवन कहां ? संसार का कोई सुख पराधीन जाति को सुखी नहीं कर सकता । उसके लिए संसार की सब चीजें दुखदायी हैं। परंतु देवि ! तुमसे नाता जोड़ते ही स्वार्थपरता का अंधकार और निर्बलता की मार देखते-ही-देखते काफूर हो जाती है। तब हताश और संकीर्ण मानव-हृदय में सार्वभौम प्रेम का चन्द्रमा उदय होता है।

संसार में क्या कोई ऐसी वस्तु है, जिसे कोई जाति तो अत्यंत सुख और प्रिय समझती हो, किंतु कोई मनुष्य उसे प्रिय न समझता हो ? स्वतंत्रता जितनी किसी जाति को प्रिय होती है, एक मनुष्य को भी वह उतनी ही प्रिय होती है। जातीय और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में भेद ही क्या है ? अलग-अलग व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के समूह को ही जातीय स्वतंत्रता कहते हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बिना जातिगत स्वतंत्रता भी कब सम्भव है ? यह युवक जार्ज हेरिस, जो यहां मुंह लटकाये विषाद-मग्न बैठा है, कैसी स्वतंत्रता के लिए व्याकुल है ? यह व्यक्ति कैसा अधिकार चाहता है ! केवल इतना ही अधिकार—कि वह अपनी स्त्री को अपनी समझ सके; दूसरों के अत्याचार से उसकी रक्षा कर सके; अपनी संतान को अपनी समझकर अच्छी शिक्षा दे सके; अपनी मेहनत की कौड़ी, को अपनी मशक्कत की कमाई को अपने लिए खर्च कर सके,—और अपने धार्मिक विश्वास के अनुसार काम कर सके। बस, इससे अधिक वह और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ नहीं चाहता ।

स्वार्थी नर-पिशाचो ! क्या तुम उसे इतना भी अधिकार नहीं दोगे ? क्या इन अधिकारों के विना भी मनुष्य जीवित रह सकता है ? मनुष्य के कुछ स्वभाव-सिद्ध अधिकारों को पाने के लिए आज जार्ज तुम्हारे देश से भागने का उद्योग कर रहा है । अपनी स्त्री का मर्दाना-वेश बना रहा है—उसके लम्बे सुन्दर बाल काट रहा है ।

बाल कट जाने के बाद इलाइजा मुस्कराकर बोली, "कहो जार्ज, क्या अब मैं एक सुन्दर युवक-सी नहीं दीख पड़ती ?"

जार्ज ने कहा, "तुम किसी भी वेश में हो, मुझे हमेशा बहुत सुंदर लगती हो ।"

इलाइजा ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "जार्ज, तुम इतने उदास क्यों हो रहे हो ? अब तो कैनेडा यहां से केवल चौबीस घंटों की दूरी पर है । सिर्फ एक दिन और एक रात का सफर बाकी है—और उसके बाद, अहा ! उसके बाद...."

जार्ज ने इलाइजा को अपनी ओर खींचकर धीरे-से कहा, "इलाइजा, मुझे बड़ा डर मालूम हो रहा है । कहीं इतनी दूर आये हुए पकड़े गए, तो सारी मेहनत और सारा किया-धरा मिट्टी में मिल जायगा । किनारे लगकर भी नाव डूब जायगी । ऐसा होने पर मैं जीवित नहीं रह सकूंगा ।"

इलाइजा ने उसे धीरज बंधाया, "जार्ज, डरो मत । उस दयामय को यदि हम लोगों को पार न लगाना होता तो वह हमें हर्गिज इतनी दूर न लाता । जार्ज, मुझे लगता है कि वह हम लोगों के साथ है । फिर डरने की क्या बात है ?"

जार्ज बोला, "इलाइजा, तुम देवी हो ! तुम ईश्वर का साथ रहना अनुभव करती हो । पर बोलो, क्या जन्म से सहते आये हमारे इन दुःखों का अन्त हो जायगा ? क्या हम स्वतन्त्र हो जायंगे ?"

इलाइजा ने कहा, "जार्ज, मुझे तो इसका निश्चय है । मुझे मालूम हो रहा है कि ईश्वर ही हम लोगों को स्वतंत्र करने के लिए यहां से जा रहा है ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज बोला, "ठीक है, मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास होता है।"

इसके बाद जार्ज ने इलाइजा को मर्दानी टोपी ओढ़ाकर कहा, "गाड़ी का समय तो हो चला। मुझे आश्चर्य होता है कि मिसेज स्मिथ हेरी को लेकर अबतक क्यों नहीं आई।"

इतने ही में दरवाजा खुला और एक अधेड़ अवस्था की महिला बालक हेरी को, बालिका के वेश में सजाये हुए, साथ लेकर अन्दर आई।

इलाइजा ने उसे देखते ही कहा, "वाह, क्या खूबसूरत लड़की बनी है। अब हम लोग इसे हैरियट के नाम से पुकारेंगे। क्यों, ठीक होगा न!"

माता को मर्दाने कपड़ों में, बाल कटाये हुए देखकर, बालक हत-बुद्धि हो गया। वह बार-बार ठंडी सांसें लेने लगा। इलाइजा ने उसकी ओर हाथ बढ़ाकर कहा, "क्यों हेरी, अपनी मां को पहचानता है?"

बालक शर्माकर उस अधेड़ स्त्री से चिपक गया।

जार्ज ने कहा, "इलाइजा, जब तुम जानती हो कि उसे तुमसे अलग रखने की व्यवस्था की गई है, तो अब उसे नाहक क्यों अपने पास बुलाने की कोशिश करती हो?"

इलाइजा बोली, "मैं जानती हूं। यह मेरी मूर्खता है। लेकिन इसे अलग रखने को मेरा जी नहीं मानता। खैर, लबादा कहां है?"

इसके बाद जब इलाइजा मर्दाना लबादा पहन कर तैयार हो गई तब जार्ज ने मिसेज स्मिथ से कहा, "अब से हम लोग आपको बुआ कहेंगे और लोगों पर यह प्रकट करना होगा कि हम लोग अपनी बुआ के साथ जा रहे हैं।"

मिसेज स्मिथ ने कहा, "मैंने सुना है कि जो लोग तुम्हें पकड़ने आये हैं, वे टिकटघर में बैठे बाट देख रहे हैं।"

जार्ज ने कहा, "वे लोग बैठे हैं! खैर, चलो, देखा जायगा। अगर हम लोगों की उनसे भेंट हो गई तो हम उन्हें बतला देंगे।"

इसके बाद ये लोग एक किराये की गाड़ी पर सवार होकर चले। जिस आदमी ने इन्हें अपने घर में शरण दी थी, वह गाड़ी तक इनके साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया और चलते समय उसने इनके उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

इन सब लोगों का छद्म-वेश ऐसा बन गया था कि कोई इन्हें पहचान नहीं सकता था। असल में यह टाम लोकर के साथ भलाई करने का नतीजा था। कभी-कभी भलाई का फल हाथों-हाथ मिलता है। यदि इन्होंने, वैर चुकाने की नीयत से, लोकर को जंगल में ही रहने दिया होता, उसे ये डाकंस के घर न उठा लाये होते, तो आज अपने सामान्य वेश में आने पर यहां जरूर पकड़े जाते। टाम लोकर के साथ इन्होंने जो भलाई की, इन्हें उसका बहुत अच्छा फल मिला।

मिसेज स्मिथ कैनेडा की एक प्रतिष्ठित महिला नागरिक थीं। वह कैनेडा लौट रही थीं। इन लोगों की दुर्दशा देखकर उन्हें दया आ गई और उन्होंने इनकी सहायता करने की ठान ली। दो दिन पहले ही हेरी उनके जिम्मे कर दिया गया था। इन दो दिनों में मेवा-मिठाई और खिलौने वगैरा देकर उन्होंने हेरी को ऐसा हिला लिया था कि वह उनका साथ ही नहीं छोड़ता था।

इनकी गाड़ी जहाज-घाट के किनारे जा लगी। जार्ज उतर कर टिकट लेने गया, तो उसने दो आदमियों को अपने सम्बन्ध में आपस में बातें करते सुना। उनमें से एक दूसरे से कह रहा था, "भाई, मैंने एक-एक करके सब मुसाफिरों को देख लिया, तुम्हारे भगोड़े इनमें नहीं हैं। फिर जार्ज ने देखा कि इनमें पहला मार्क है, और दूसरा एक जहाज का क्लर्क है।

मार्क बोला, "उस स्त्री को तो तुम मुश्किल से पहचान सकते हो कि वह दासी है, क्योंकि वह अंग्रेजों-जैसी गोरी है और पुरुष भी वैसा ही है, पर उसके एक हाथ पर जलने का दाग है।"

जार्ज उस समय हाथ बढ़ाकर टिकट ले रहा था। उसका हाथ कांप उठा, पर वह संभलकर धीरे-धीरे वहां से हट गया और वहां जा पहुंचा, जहां इलाइजा और मिसेज स्मिथ बैठी हुई थीं।

मिसेज स्मिथ हेरी को साथ लेकर स्त्रियों के कमरे में चली गईं।

जहाज ने जब चलने की सीटी दी और घण्टा बजा तो जार्ज के हृदय में आनन्द की लहरें उठने लगीं और मार्क ठण्डी सांसें लेता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाज से उतरकर किनारे आया। वह मन-ही-मन निराश होकर कहने लगा कि वकालत के धन्धे में आमदनी की सूरत न देखकर दूसरी तरह से उसी देश के प्रचलित कानून की रक्षा के लिए यह नया धन्धा किया, पर इसमें भी कुछ होता-जाता नजर नहीं आता। यही सब सोचते-सोचते मार्क खिन्न मन से अपने देश को लौट गया।

दूसरे दिन जहाज ने एमहर्स्टबर्ग जाकर लंगर डाला। यह कनाडा का एक छोटा-सा कस्बा है। जार्ज, इलाइजा आदि सब आकर किनारे पर उतरे। स्वाधीन भूमि पर पैर रखते ही उनका हृदय आनन्द से भर गया। आज उन्हें गुलामी से छुट्टी मिली। आज स्त्री और पुत्र को अपना कहने का मानवीय स्वत्व जार्ज को प्राप्त हुआ। स्वामी और स्त्री, दोनों एक-दूसरे के गले से लिपट गए। दोनों के नेत्रों से आनन्द के आंसू बहने लगे और घुटने टेककर उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना में यह गीत गाया—

विपति-सिन्धु में तुम्हीं जहाज !
कौन बचावे दीन-हीन को तुम बिन हे महाराज !
निपट निराशा अंधकार था मम-हित महा कुसाज।
उदय हुआ सुख-भानु पूर्व में, तव करुणा से आज ॥
जैसे तुम्हें पुकारा दुख में, वैसे पा सुख-साज।
ध्यान तुम्हारा ही करते हैं, गाते सुयश दराज ॥

प्रार्थना के बाद सब लोग उठे और मिसेज स्मिथ उन्हें उसी नगर के निवासी एक सज्जन पादरी साहब के पास ले गईं। यह उदार पादरी अपने घर ऐसे ही निराश्रित और भागे हुए दास-दासियों को शरण दिया करता था।

जार्ज और इलाइजा के आज के आनंद का पारावार नहीं है। भला भाषा के द्वारा इनके इस स्वतंत्रता के आनंद का वर्णन कैसे हो सकता है? आज रात-भर उन्हें नींद नहीं आई। सारी रात आनन्द की उमंगों में बीत गई। इस आनंद में इन लोगों ने एक बार भी यह सोचने तक का कष्ट न उठाया कि आखिर यहां करना क्या होगा, जिंदगी कैसे कटेगी ! न इनके घर-द्वार है, न कोई साज-सरंजाम। कल तक के खाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए इनके पास कोई ठिकाना नहीं है। फिर भी यह स्वतंत्रता-प्राप्ति के आनन्द में ऐसे फूले हुए हैं कि उन्हें और किसी बात की चिंता ही नहीं है। वास्तव में पूछिये तो मनुष्य-जीवन में स्वतंत्रता की अपेक्षा और अमूल्य वस्तु है ही क्या, जिसकी मनुष्य परवाह करे ? जो लोग प्रभुत्व अथवा धन के लोभ से किसी व्यक्ति अथवा जाति-विशेष को ऐसे अनमोल रत्न से वंचित करते हैं, उन्हें अवश्य ईश्वर का कोप-भाजन बनना पड़ेगा—उसके सामने जवाबदेह होना पड़ेगा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी उन्हें अत्याचारों का फल चखना पड़ेगा।

४१ : : जयोल्लास

क्या सभी दशाओं में मृत्यु कष्टकर जान पड़ती है ? बहुत-से लोग तो इस दु:खों—यंत्रणाओं से भरे संसार में ऐसे होते हैं, जो खुशी-खुशी मरना चाहते हैं। वे मृत्यु को भयानक नहीं समझते। कितने ही ऐसे धर्मवीर हुए हैं, जिन्होंने निर्भीक होकर मृत्यु से भेंट की। सत्य और धर्म के लिए, संसार से अन्याय को दूर करने के लिए, कितने ही धर्मवीर और कर्मवीर प्रसन्नता से मृत्यु की वेदी पर बलि हो गये। क्या उन्हें उस समय मृत्यु कष्टकर जान पड़ी थी? कदापि नहीं! मनुष्य जब सत्य विश्वास से उत्तेजित हो जाता है और हृदय में उमड़े हुए धर्म-प्रेम और प्रेमावेश के कारण अपने-आपको भूल जाता है, उस समय वह बाह्य ज्ञान से सर्वथा रहित हो जाता है। किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट उसकी अन्तरात्मा को स्पर्श नहीं कर सकता।

परन्तु जिन्हें नित्य मार कर कष्ट सहन करना पड़ता है, जिन्हें अत्याचारी लोग बूंद-बूंद रक्त चूसकर मारते हैं और कठोर आचरण सहते-सहते जिनके हृदय की दया, ममता, एवं अन्य सब प्रकार के सद्भावों का शनैः-शनैः नाश हो जाता है, उन्हें भी क्या मृत्यु कष्टकर नहीं है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे अधिक कष्टकर मृत्यु संसार में और हो भी क्या सकती है?

नर-पिशाच लेग्री जब टाम को पीटता था और उसे मार डालने की धमकी देता था, उस समय टाम मन-ही-मन सोचता था कि अब उसके संसार छोड़ने का समय आ गया है, अब शीघ्र ही मृत्यु आकर उसके सारे दुःख-दर्दों को दूर किये देती है। अतः उसके भयभीत होने का कोई कारण नहीं था। सत्य-विश्वास से उत्तेजित होकर, धर्मवीरों की भांति, बेधड़क होकर, वह लेग्री के सामने डटकर खड़ा हो जाता और ईश्वर के सद्दृष्टान्त के अनुसरण करने का विचार करके मन-ही-मन हर्षित होता था। जब वह उसे ठोंक-पीटकर चला जाता और टाम देखता कि मृत्यु तो आई नहीं, उस समय हृदय का वह उमड़ा हुआ धर्म-वेग और मार के समय की उत्तेजना शनैः-शनैः मन्द पड़ जाती और तब उसे मार का दर्द बहुत अखरता। उसका शरीर शिथिल पड़ जाता और साथ ही उसकी अन्तरात्मा को भी अवसन्नता धर दबाती। उसके दिल में निराशा आ जाती और अपनी दुर्दशा का स्मरण होते ही उसके दिल में असह्य यंत्रणा की अग्नि धधक उठती।

पहले दिन की मार से ही टाम का शरीर जगह-जगह से छिल गया था और वह बहुत अशक्त हो गया था। पर लेग्री ने वह अशक्तता दूर होने के पूर्व ही, मारे हठ के, उसे खेत के काम में जोत दिया। अन्य कुलियों के साथ उसे काम पर जाना पड़ता था। अपनी इस कमजोरी की हालत में भी वह जी लगाकर खेत का काम करता था, परन्तु खेत के रखवाले केवल अपनी हिंसक-वृत्ति को चरितार्थ करने के लिए—समय-समय पर उसे बेंत लगाते रहते थे। भला इस निष्ठुर आचरण पर भी कोई सहिष्णु रह सकता था? परन्तु टाम बड़ी ही शान्त प्रकृति का आदमी था। उसके धीरज और सहिष्णुता की सीमा नहीं थी। परन्तु कभी-कभी साम्बो और कुइम्बो के हृदयहीन आचरण से उसका मन भी सहिष्णुता को भुला बैठता था। टाम की समझ में अभी तक यह बात नहीं आई थी कि लेग्री के खेत के कुली ऐसे मनुष्यत्व-विहीन और दुश्चरित्र क्यों हो गए हैं! उनका हृदय केवल हिंसा, द्वेष, वैर-विरोध, स्वार्थपरता, निष्ठुरता का घर क्यों बन गया है! वह इस बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से हैरान था कि इन कुलियों के जड़-हृदय में क्षण भर के लिए भी सहानुभूति का संचार क्यों नहीं होता ? परन्तु अब उसे उनके किसी आचरण से आश्चर्य नहीं रहा। अब उसने सहज ही समझ लिया कि अपनी इस प्रकृति का निष्ठुर आचरण के अवश्यंभावी फल के सिवा और कोई कारण नहीं है, पर वह अपने मन में बहुत डरा कि समय पाकर वह निष्ठुर आचरण कहीं उसकी प्रकृति को भी भ्रष्ट न कर दे। इस डर से वह जब ज़रा-सा अवकाश पाता, तुरन्त अपनी बाइबिल लेकर बैठ जाता। परन्तु आजकल काम का इतना जोर था कि रविवार तक काम के बोझ से छुट्टी नहीं मिलती। कपास चुने जाने के दिनों में कई महीनों तक लेग्री कुलियों को रविवार की भी छुट्टी नहीं देता था। क्यों देता ? धर्म तो उसका कुछ था ही नहीं, उसके लिए तो देवता और देवता का मन्दिर वही कपास का खेत था—और था नगदनारायण !

पहले टाम खेत से लौटने पर नित्य रात्रि को रोटी बनाने के समय, चूल्हे के उजाले में बैठकर, बाइबिल के एक-दो उपदेश पढ़ लिया करता था, किंतु आजकल वह इतना कमजोर हो गया था कि खेत से लौटने पर पल-भर भी उससे बैठा न जाता था। आते ही थकावट के मारे वह झोंपड़ी में पड़ रहता और दर्द से छटपटाने लगता।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जब-तब टाम-सरीखे पक्के धर्म-विश्वासी का मन भी डावांडोल होने लगा। जिस सुदृढ़ विश्वास के कारण उसने सारे जीवन किसी भी कष्ट की परवाह नहीं की, उसी अदम्य धर्म-विश्वास के, निष्ठुर आचरण के सामने परास्त होने की संभावना होने लगी। अज्ञेय अन्धकारपूर्ण जीवन-पहेली के संबंध में उसके मन में भांति-भांति के प्रश्न उठने लगे। हृदय सुस्त पड़ने लगा। अपने मन में वह प्रश्न करने लगा—ज़गत्-पिता कहां है ? वह चुप क्यों है ? क्या संसार में सचमुच पाप ही की जय होती है ? फिर आप-ही-आप सोचने लगा—नहीं, परमात्मा मुझे कभी नहीं भुलावेगा। सम्भव है, मिस अफिलिया के पत्र पाने पर केण्टाकी से कोई मेरा उद्धार करने आता हो।

यों सोचते-सोचते वह व्याकुल होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। वह प्रतिदिन सवेरे उठकर बडी आशा से मार्ग की ओर देखता था कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केण्टाकी से कोई उसे मुक्त कराने के लिए आ रहा है या नहीं। यों ही देखते-देखते कितने ही दिन बीत गए, परन्तु कोई कहीं से आया-गया नहीं। तब फिर उसके मन में वही पुराना प्रश्न जाग उठा, "क्या ईश्वर ने मेरी सुध बिल्कुल ही बिसार दी है?"

एक दिन सन्ध्या के उपरान्त खेत से आकर वह ऐसा शक्तिहीन हो गया कि धड़ाम से जमीन पर गिर गया। आज उसकी उठने की शक्ति एकदम जाती रही। लेटे-लेटे ही रोटियां बनाने की फिक्र में लगा। बीच में उसकी बाइबिल पढ़ने की इच्छा हुई। तब चूल्हे की आग ज़रा तेज करके निशान लगाये हुए अपनी पसन्द वाले बाइबिल के अंशों को पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते मन-ही-मन प्रश्न करने लगा—क्या संसार से शास्त्र की शक्ति जाती रही है? क्या यह धर्मशास्त्र भग्न हृदयों को बल और निष्प्रभ चक्षुओं में ज्योति नहीं देता? इसके बाद ठण्डी सांस लेकर उसने ज्यों-ही बाइबिल बंद की, त्योंही उसे पीछे से किसी का विकट हास्य सुनाई दिया। गर्दन घुमाकर देखने पर उसने लेग्री को अपने पीछे खड़ा पाया।

लेग्री बोला, "अब तो समझ लिया न, कि धर्म तेरी कुछ मदद नहीं करने का? मैंने तो पहले ही कहा था कि तेरा धर्म-कर्म सब हवा कर दूंगा।"

धर्म के सम्बन्ध में इस व्यंग्य ने टाम के हृदय में बरछी मार दी! इतना कष्ट उसे दिन-भर की भूख-प्यास से भी नहीं हुआ था।

लेग्री ने कहा, "तू निरा गधा है। मैंने खरीद के समय तुझे कोई बड़ा ओहदा देने की बात सोची थी। मैं तुझे साम्बो और कुइम्बो से भी ऊंची जगह देता। आज वे तुझे कोड़े लगाते हैं, लेकिन मेरी बात मानकर तू उन सबको कोड़े लगा सकता था। मैं तुझे बीच-बीच में थोड़ी व्हिस्की या ब्राण्डी भी पीने को दिया करता। मैं अब भी कहता हूं कि तू अपने ये सब ढोंग छोड़ दे। अपनी उस फटी-पुरानी पोथी को चूल्हे में झोंककर मेरा धर्म अंगीकार कर!"

टाम ने शान्ति से कहा, "ईश्वर न करे, कहीं ऐसा हो!"

लेग्री बोला, "तू देखता तो है कि ईश्वर तेरी कुछ भी मदद नहीं कर रहा है। अगर उसे तेरी मदद करना मंजूर होता तो वह तुझे मेरे हाथ में ही न पड़ने देता। टाम, तेरा यह धरम-करम एक तरह का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूठा ढोंग है। मैं अच्छी तरह जानता हूं। मेरी बात मानकर चलना ही तेरे लिए अच्छा रहेगा। मैं सामर्थ्यवान आदमी हूं और तेरा कुछ उपकार कर सकता हूं।"

टाम ने उत्तर दिया, "नहीं सरकार, मैं अपना संकल्प नहीं छोड़ूंगा। भगवान मेरी सहायता करे या न करे, पर मैं उसकी शरण रहूंगा और अन्त तक उसपर विश्वास रखूंगा।"

लेग्री ने ठोकर मारकर उसपर थूकते हुए कहा, "तू बड़ा मूर्ख है! खैर, कुछ परवाह नहीं, मैं तुझे समझूंगा। तू देखेगा कि मैं तुझसे कैसे अपनी बात मनवाता हूं।"—यह कहकर लेग्री वहां से चला गया।

यन्त्रणा के बड़े भार से जब आत्मा सर्वथा अवसन्न हो जाता है और धैर्य सीमा को पहुंच जाता है, उस समय देह और मन की सब शक्तियां उस भार को अलग फेंकने के लिए तिलमिलाने लगती हैं। इसी से प्रायः घोरतम यन्त्रणा के उपरान्त तत्काल हृदय में आनन्द और साहस का स्रोत बहते देखा जाता है। यही दशा इस समय टाम की थी।

निर्दय मालिक के नास्तिकता-पूर्ण तानों ने उसके दुःख से बोझिल हृदय को और अधिक अवसन्न कर दिया। यद्यपि उसका विश्वास उस अनन्त परमेश्वर से डिगा नहीं, पर निराशा से वह सर्वथा शिथिल हो गया। टाम चूल्हे के पास संज्ञा-शून्य की भांति बैठा रहा। सहसा उसके चारों ओर के पदार्थ मानो शून्य में विलीन हो गए और कांटों का ताज पहने, रक्त से आरक्त, आहत ईसा की मूर्ति उसके नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हुई। भय और आश्चर्य से उस आगत के चेहरे के महान सहिष्णु भाव की ओर वह निहारने लगा। उन गम्भीर और करुणा से उद्दीप्त युगल नेत्रों की दृष्टि उसके अन्तस्तल पर पड़ी, इससे उसकी अवसन्न और मुमूर्षु आत्मा जाग उठी। वह घुटने टेककर और दोनों हाथ आगे फैलाकर बैठ गया। उसी समय शनैः-शनैः उस आकृति का रूप बदलने लगा। कांटों के मुकुट की जगह किरणें चमकने लगीं। एक अपूर्व प्रभा-मण्डल से उद्‌भासित उस मुख ने स्नेह-चक्षुओं से उसकी ओर देखा। उस कण्ठ मे सुधा की धारा बह निकली। टाम ने सुना, वाणी कह रही थी, "जैसे मैंने पाप और अत्याचारों पर विजय प्राप्त कर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिता के साथ पवित्र सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त किया, वैसे ही वह भी मेरे साथ इस सिंहासन पर बैठ सकेगा, जो संसार में पाप और अत्याचारों पर विजय प्राप्त करेगा।"

टाम कितनी देर तक यहां पड़ा रहा, इसका उसे कुछ भी होश न था। जब वह होश में आया, तब उसने देखा कि आग बुझ गई है, उस के कपड़ों और शरीर को ओस ने तर कर दिया है,परन्तु आत्मा का वह संकट-काल निकल गया है। अब उसके हृदय में एक अपूर्व आनंद भरा हुआ है। उस आनन्द की उमंग में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, अपमान और नैराश्य आदि की सभी यन्त्रणाओं को उसने बिसार दिया है। इस जीवन की समस्त आशाओं को तिलांजलि देकर उसने अपना चित्त अनादि देव के चरणों में लगा दिया। आकाश के उज्ज्वल तारों की ओर आंखें लगाकर टाम आकाश को प्रतिध्वनित करता हुआ आत्मा के गम्भीर आनन्द में मगन होकर, यह गीत गाने लगा -

हिम सम पृथ्वी गल जायेगी, भानु भस्म हो जायेगा।
तब भी मैं प्रभु, तेरा हूंगा, तू मेरा कहलायेगा।।
होगा पूर्ण धरा का जीवन, जड़ शरीर यह मन्द।
शान्ति-सरोवर में तैरूंगा, पाकर के मैं ब्रह्मानन्द।।
वर्ष सहस्र यहां पर रहकर फिर प्रकाश-युत भानु-समान।
गाता नित्य रहूंगा वैसे जैसे था जब छेड़ा गान।।

यह कोई नई घटना नहीं थी। धर्म-विश्वासी गुलामों में ऐसी अचरज-भरी घटनाएं प्रायः होती रहती थीं। मनोविज्ञानी पण्डितों का मत है कि ऐसी भी अवस्थाएं हुआ करती हैं, जिनमें मन के भाव और कल्पनाएं इतनी उत्तेजित और प्रबल हो जाती हैं कि उस समय समस्त बाहरी इन्द्रियों पर उनका प्रभाव हो जाता है, और ऐसी अवस्था में कल्पित पदार्थ प्रत्यक्ष-से दीख पड़ने लगते हैं। सर्वव्यापी परमेश्वर मनुष्य को वे शक्तियां देकर उसके जीवन में जो अनेक घटनाएं घटाता है, उनकी गिनती कौन कर सकता है ? और इस बात का निर्णय कौन कर सकता है कि वह किन-किन उपायों के द्वारा निराशा और असहाय आत्माओं में नये बल का संचार करता है ? यदि यह दास विश्वास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करे कि ईसा ने उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया था, उससे बातें की थीं ,तो कौन उसकी बात का प्रतिवाद करेगा !

दूसरे दिन प्रातःकाल, जब हड्डियों के ढांचे बने गुलाम लोग खेतों की ओर चले, तब उन चीथड़ों में लिपटे, जाड़े से कांपते अभागों में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा था, जो उमंग से पैर रखता मस्तानी चाल से जा रहा था। कारण यही था कि ईश्वर के अनन्त प्रेम पर उसका अटल विश्वास जम गया था। अरे लेग्री ! तू अब अपनी सारी शक्ति आज़मा कर देख ले। अति दारुण यन्त्रणा, शोक, अपमान—सबके-सब इसके लिए शान्ति-निकेतन की सीढ़ियां बनकर इसे स्वर्ग की ओर अग्रसर करने में सहायता करेंगे।

उत्पीड़ित टाम का विनीत हृदय अब और भी अधिक शान्ति-पूर्ण हो गया। नित्य-पवित्र परमेश्वर ने उसके श्रद्धापूर्ण हृदय को अपना पवित्र मंदिर बना लिया। इस जीवन का मर्मान्तिक परिताप बीत चुका। इस जीवन की आशा, भय और आकांक्षा का उद्वेलन पीछे छूट गया और पल-पल की संग्राम-क्लिष्ट रुधिराक्त मानवीय इच्छाएं सम्पूर्ण रूप से ईश्वरीय इच्छा में विलीन हो गईं। टाम को अपनी जीवन-यात्रा का बचा भाग बहुत अल्प प्रतीत होने लगा और अनन्त शान्ति तथा अनन्त सुख इतना पास और इतना स्पष्ट जान पड़ने लगा कि जीवन के दुस्सह-तम कष्ट भी उसके हृदय पर असर न कर सके।

उसका यह बाहरी परिवर्तन सबको दिखाई पड़ने लगा। उसका मुख हर समय प्रफुल्ल रहने लगा और हर काम में उसका फुर्तीलापन फिर दिखाई देने लगा। वह बड़े धीरज, सहिष्णुता और शांति के साथ अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार सहने लगा। किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार से उसके मन में उद्विग्नता या उत्कण्ठा नहीं पैदा होती थी। यह देख कर एक दिन लेग्री ने साम्बो से कहा, "टाम पर आजकल कौन-सा भूत सवार हो गया है ? थोड़े दिन हुए तब तो वह बिल्कुल हिल गया था, लेकिन आजकल तो वह बड़ी तेजी दिखलाता है !"

साम्बो ने कहा, "कुछ ठीक नहीं मालूम, सरकार ! शायद यहां से भाग जाने की जुगत कर रहा होगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेग्री ने अपनी छिपी इच्छा व्यक्त की, "एक बार भागने की कोशिश करे तो अपना काम ही बन जाय। मैं भी यही चाहता हूं।"

साम्बो ने हंसते हुए कहा, "जान पड़ता है, हम लोगों को जल्दी ही वह दिन देखना नसीब होगा। जरूर वह भागने की ताक में है। भागने पर जब शिकारी कुत्ते उसे दांतों में दबा लायेंगे तब बड़ा मजा आयेगा। एक बार जब मोली नाम की दासी भागी थी तो कैसा तमाशा हुआ था। मेरा तो उस वक्त हँसते-हँसते पेट फटा जा रहा था। कुत्तों ने जाकर उसे पकड़ा और हम लोगों के पहुंचने से पहले ही उसका आधा शरीर नोच डाला। उसे देखकर मुझे ऐसी हँसी छूटती थी कि क्या कहूं!

लेग्री बोला, "मालूम होता है, लूसी अब शीघ्र ही कब्र में आराम करेगी; लेकिन साम्बो, जब भी कोई दास या दासी बहुत खुश और तेज दिखाई पड़े तो तुम्हें फौरन उसका मिजाज दुरुस्त करने की ओर ध्यान देना चाहिए।"

साम्बो ने उत्तर दिया, "आप बेखटके रहिये। मैं खुद ही सब ठीक कर लूंगा।"

यह तीसरे पहर की बातें थीं, जब लेग्री घोड़े पर सवार होकर पास के किसी कस्बे में जा रहा था। उसने मन-ही-मन सोचा था कि उधर से लौटते हुए कुलियों के झोंपड़े देखता चलूंगा।

कस्बे से लौटते हुए जब वह कुलियों की झोंपड़ियों से थोड़ी दूर रह गया, तब उसे किसी के गाने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने जरा ठहरकर सुना तो मालूम हुआ कि टाम गा रहा है:

जब देखूंगा, लिखा हुआ है स्वर्ग-द्वार पर मेरा नाम,
भय-भावना विदा कर दूंगा, अश्रु पोंछ लूंगा विश्राम।
वैरी बन जग लड़ने आवे और नरक से बरसें बाण,
तो भी धरा भृकुटि को निर्भय देखूं गिनूं तुच्छ शैतान।
प्रलय-समुद्र उमड़ आवे या घोर शोक का हो तूफान,
मुझको कुछ परवाह न होगी, कुछ न पड़ेगा मुझको जान।
मिले निरापद मुझे स्वर्ग-गृह परम पिता सर्वस्व-समान।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह गीत सुनकर लेग्री मन-ही-मन कहने लगा, "हा-हा, बदमाश सोचता है कि स्वर्ग जाऊंगा। इसका गीत सुनकर मेरे तो कान जल उठते हैं!"

इसके बाद वह टाम के सामने पहुंचा और चाबुक ऊंचा उठाकर बोला, "हरामजादे! इतनी रात में बाहर पड़ा क्या गोलमाल कर रहा है?"

बहुत ही प्रसन्न और विनम्र-भाव से "जो हुकुम सरकार" कहकर जब टाम अपनी झोंपड़ी में जाने लगा, तो उसकी प्रसन्नता देखकर लेग्री के मन में असीम क्रोध की ज्वाला भड़क उठी और तत्काल उसने उसके कंधों और पीठ पर कोड़े बरसाते हुए कहा, "क्यों रे सूअर, तू यहां बड़ी मौज उड़ा रहा है!"

परंतु यह चाबुक की मार ऊपर-की-ऊपर ही रह गई, टाम के भीतर हृदय पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसे इस मार का कोई दुख नहीं हुआ। वह अब जीवन्मुक्त हो चुका है। उसकी यह पंचभौतिक काया आत्मा से पृथक् हो चुकी है। अतः कोई भी बाह्य कष्ट उसे कष्ट नहीं जान पड़ता। टाम सिर झुकाये खड़ा रहा। लेग्री ने महसूस किया कि इसे अपने ढंग पर लाना शक्ति से बाहर है। उसने समझा, ईश्वर अत्याचारों से इसकी रक्षा कर रहा है। ऐसा सोचकर वह ईश्वर को गालियां देने लगा। ताने, धमकियों और बेंतों की मार—किसी से भी टाम के हृदय की शान्ति को लेग्री नष्ट नहीं कर सका। इन दशाओं में जब उसने टाम को विनम्रता और प्रफुल्लता से दिन काटते देखा, तो वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। ईसा को सताने वालों ने, उन्हें प्रसन्नता से अत्याचारों को सहते देखकर कहा था—"ईसा, तू क्या हम लोगों के हृदय की अग्नि को समय से पूर्व ही सुलगा देगा?" लेग्री के हृदय में भी आज यही भाव उत्पन्न हुआ। वह टाम को दुखी देखने के लिए कोड़े लगाता, परन्तु टाम इससे तनिक भी दुःखी न होता। यह देखकर लेग्री के हृदय में अशान्ति की भयानक आग धधकने लगी।

लेग्री के खेत में काम करनेवाले दीन-दुखी कुलियों की दुर्दशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखकर टाम के हृदय में बड़ा ही क्लेश हुआ। उसके अपने दुःखों का अंत हो गया है, स्वयं वह स्वर्गीय शान्ति का अधिकारी वन चुका है, अब वह अपनी इस शान्ति-संपदा का कुछ अंश इन दीन-दुखियों को बांटने की चिन्ता करने लगा। उसने कुलियों के साथ धर्म-चर्चा करके उन्हें शान्ति के रास्ते पर लाने की बात सोची, परन्तु उनके साथ धर्म-चर्चा करने का बिल्कुल ही अवकाश नहीं था। केवल खेत में आते-जाते समय बातें करने का कुछ अवसर था। टाम ने इन्हीं क्षणों का सदुपयोग करके अभागे कुलियों के साथ धर्म-चर्चा प्रारम्भ कर दी। पहले तो उसके सद्विचार का मर्म कोई भी नहीं समझ सका, परन्तु धीरे-धीरे उनका वह कठोर हृदय भी पसीजने लगा। कभी वह आप भूखा रहकर अपना भोजन किसी दूसरे को दे डालता, कभी किसी सर्दी से परेशान रोगी कुली का कष्ट देखकर उसे अपना फटा कम्बल दे देता और खुद जमीन पर ही पड़ रहता। कभी किसी कम-जोर स्त्री मजदूर को कपास चुनने में असमर्थ देखकर अपनी चुनी हुई कपास उसकी टोकरी में डाल देता। यह सब करते हुए उसने एक वार भी परवाह नहीं की कि इन कार्रवाइयों से उसकी पीठ की चमड़ी उधेड़ी जा सकती है।

उसका ऐसा दयालुतापूर्ण आचरण देखकर खेत के सारे कुलियों का हृदय उसकी ओर आकर्षित होने लगा। कुछ समय बाद कपास चुनने के दिन निकल गए, अतः कुलियों को अब उतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। उन्हें काफी अवकाश रहता था। इस समय वे अक्सर टाम के पास बैठकर धर्म-कथाएं सुनते तथा टाम के साथ-साथ प्रार्थना किया करते थे।

परन्तु प्रार्थना से लेग्री बहुत चिढ़ता था। वह जब सुनता कि कुली लोग टाम के पास बैठकर धर्म-चर्चा कर रहे हैं तो वह वहां पहुंचकर उन्हें बहुत मारता-पीटता। इससे उनकी धर्म-चर्चा की तृष्णा और भी बढ़ गई। वास्तव में धर्म-विद्वेषियों का अपना स्वयं का आचरण ही धर्म-प्रचार में सर्वाधिक सहायक होता है।

निरंतर अत्याचारों और हृदयहीनताओं के कारण लूसी का धर्म-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाव सर्वथा नष्ट होनेवाला था, पर टाम के उपदेशों और धर्म-संगति से उसका मृतप्राय विश्वास पुनः सजीव हो उठा। औरों की बात जाने दीजिये, कासी जो इतनी प्रतिहिंसक, क्रूर और उत्मत्त हो गई थी, उसके हृदय में भी भक्ति, विश्वास और प्रेम का संचार हो गया।

कासी का हृदय पहले से ही असह्य यन्त्रणाओं की आग में जल रहा था, सन्तान-शोक के कारण वह प्रायः सनकी-सी हो गई थी, इससे उसने मन-ही-मन ठान लिया था कि मौका मिलने पर वह इस अत्याचारी लेग्री को उसके कुकर्मों का मजा जरूर चखावेगी।

एक दिन रात के समय, जब और सब लोग पड़े सो रहे थे, टाम ने एकाएक उठकर देखा कि कासी उसे इशारे से बाहर बुला रही है।

टाम कुटिया से बाहर आया। रात के दो बजे होंगे। चारों ओर चांदनी छिटकी हुई थी। टाम ने आज कासी के चेहरे पर विलक्षण आशा और उत्साह का भाव देखा। वैसे उसका चेहरा सदा निराशा की मूर्ति बना रहता था, परन्तु आज उस सर्वग्रासी निराशा की जगह पर आशा की चमक थी।

कासी ने बड़ी व्यस्तता से टाम की कलाई इस सख्ती से पकड़कर, मानो उसके हाथ इस्पात के बने हों, उसे आगे को खींचते हुए कहा, "पिता टाम, इधर आओ। तुमसे एक खास बात कहनी है।"

टाम ने कुछ शंकालु-भाव से पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

कासी ने कहा, "क्यों, तुम स्वतंत्र होना पसन्द नहीं करते?"

टाम बोला, "जब ईश्वर की मर्जी होगी, तब स्वतंत्रता मिलेगी।"

कासी ने बड़े उल्लास से कहा, "लेकिन तुम्हें आज ही रात को स्वतंत्रता मिल सकती है। इधर आओ, इधर आओ!"

इसके बाद कासी चुपके-चुपके टाम के कान में कहने लगी, "अभी लेग्री नींद में बेहोश है। मैंने ब्राण्डी में अफीम मिला दी है। अतः जल्दी नींद नहीं खुलेगी। इधर आओ। पिछवाड़े का दरवाजा खुला है। वहां मैंने पहले से ही एक कुल्हाड़ी रख छोड़ी है। मैं तुम्हें मार्ग बतलाये देती हूं। मैं अपने हाथों से काम कर लेती, पर मेरे हाथों में इतना बल नहीं है। तुम मेरे साथ आओ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम ने बड़ी दृढ़ता से कहा, "संसार-भर का राज्य मुझे मिले तो भी मैं ऐसा पाप-कर्म नहीं करूंगा।"

कासी बोली, "पर जरा इन अभागों की दुर्दशा पर तो विचार करो। हम लोग इन सब गुलामों को मुक्त कर देंगे और फिर किसी द्वीप में चलकर बसेंगे।"

टाम बोला, "मिस कासी, मैं तुम्हें भी मना करता हूं। ऐसा बुरा काम कभी न करना। बुरे काम का नतीजा कभी अच्छा नहीं होगा। ईश्वर के लिए कष्ट सहो, पर इस पाप से हाथ न रंगो। कासी, ऐसा काम मत करना। नहीं नहीं, तुम एक तो योंही पाप के समुद्र में डूब रही हो, उसपर अब यह नया पाप मोल मत लो। हमें कष्ट सहते हुए समय का इंतजार करना चाहिए।"

कासी कुछ क्रोध में बोली, "इन्तजार! क्या मैंने इन्तजार नहीं किया? मैंने बहुत इन्तजार किया है। अब इस हाड़-मांस के शरीर से ज्यादा नहीं सहा जाता।"

टाम ने कासी को समझाया, "देखो कासी, ईसा ने अपना रक्त दिया, लेकिन किसी दूसरे का खून नहीं गिराया। हमें शत्रु को भी प्यार करना चाहिए।"

कासी बोली, "प्यार करूं? ऐसे दुश्मन को प्यार करूं? क्या मेरा शरीर लोहे का बना हुआ है?"

टाम ने कहा, "हम लोगों की सच्ची जीत तभी होगी जब हम शत्रु को भी क्षमा करके उसके कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सकें।

इतना कहकर टाम आकाश की ओर देखने लगा।

टाम का यह हृदय-ग्राही उपदेश सुनकर कासी का हृदय पिघल गया। तब उसने कहा, "पिता टाम, मैं तो पहले ही कह चुकी हूं कि मुझ पर शैतान सवार है। मैं प्रार्थना करना चाहती हूं, पर कर नहीं सकती। तुमने जो कहा है, सच है, लेकिन मेरा हृदय न जाने कैसी प्रतिहिंसा से भरा हुआ है कि मैं जब भी प्रार्थना करती हूं, मेरे हृदय में शत्रु के विरुद्ध आग धधकने लगती है।"

टाम बोला, "हाय, तुम्हारी आत्मा में कितनी अशांति भरी हुई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूंगा। कासी बहन, ईश्वर में मन लगाओ !"

कासी चुपचाप खड़ी रही। उसकी आंखों से आंसुओं की बड़ी-बड़ी बूंदें गिरने लगीं।

टाम ने फिर कहा, "कासी बहन, तुम यदि यहां से भागकर कहीं निकल सको तो मैं तुम्हें और एमेलिन को भागने की सलाह देता हूं।"

कासी ने पूछा, "क्या तुम भी हम लोगों के साथ चलोगे ?"

टाम ने बताया, "मैं पहले तो चला भी जाता, लेकिन अब मुझे यहां एक काम है। मैं इन दीन-दुखी दास-दासियों को धर्म की ओर ले जाने की चेष्टा करूंगा। ईश्वर ने मुझे यह काम सौंपा है। लेकिन तुम लोगों का यहां से भाग जाना ही ठीक है। तुम लोग यहां रहोगी तो धीरे-धीरे दूसरी बुराइयों में फंस जाओगी।"

कासी ने कहा, "भागने की कोई सुविधा नहीं है। कहां जाय ? कब्र के सिवा हम लोगों के लिए कहां जगह है ? जहां भी हम जांयगी, लेग्री शिकायती कुत्तों से पकड़वा मंगायेगा। सांपों और मगरों को रहने की जगह है, पर हम लोगों के लिए इस दुनिया में कहीं ठिकाना नहीं है।"

टाम ने कुछ देर चुपचाप कासी की बात सुनी, फिर कहा, "जिसने दानियल को सिंह की मांद से बचाया था, अपनी विश्वासी संतानों की अग्नि-कुण्ड से रक्षा की थी, जो समुद्र-पर से चलाया गया था, और जिसके हुक्म देते ही हवा भी रुक गई थी, वह अब भी विद्यमान है। मुझे जान पड़ता है, वह निश्चय ही यहां से भाग जाने में तुम लोगों की सहायता करेगा। तुम लोग एक बार यत्न करके देखो, तुम लोगों के उद्धार के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा।"

ईश्वर की महिमा विचित्र है ! कौन जान सकता है कि किन विचित्र नियमों के अनुसार हमारे मानसिक कार्य-कलापों और चिंताओं का शासन होता है ! टाम की बात सुनकर कासी के मन में अकस्मात एक विचार उत्पन्न हुआ। पहले उसे भागना असंभव जान पड़ता था, पर अब संभव जान पड़ने लगा। कासी ने पहले तो भागने के विषय में बहुत-कुछ सोचा-विचारा था, पर निश्चय न कर सकी थी कि भाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकलने की भी कोई सूरत है, लेकिन आज उसे ऐसा लगने लगा कि उसके लिए भागना बहुत ही सहज है। इससे उसके मन में आशा का संचार हो गया। वह टाम से बोली, "पिता टाम! मैं चेष्टा करूंगी।"

टाम ने आकाश की ओर देखते हुए कहा, "परमपिता परमात्मा तुम्हारे सहायक हों!

४२ : : पलायन की योजना

पहले बताया जा चुका है कि बहुत धनी और बड़े जमींदार के दिवालिया हो जाने पर लेग्री ने बहुत सस्ते में उसका यह मकान और खेत खरीद लिया था। यह मकान बहुत बड़ा था, इसमें बहुत पुरानी कोठरियां थीं। ज़मींदार के शासन में यहां अनजान लोग रहते थे; पर जबसे यह मकान लेग्री के हाथ में आया है, तबसे इसके चार-पांच सहन तो बिल्कुल सूने पड़े रहते हैं। लेग्री का व्यापार कोई बहुत लम्बा-चौड़ा न था, और न वह वैसा सम्पन्न ही था। कुछ दिनों पहले, जब वह जहाज़ का कप्तान था, उसने इधर-उधर से लूट-खसोट तथा चोरी-जारी करके दो-चार हजार की पूंजी बना ली थी और उसी से बड़े सस्ते में यह घर और खेत खरीद कर काम चालू कर दिया था। पहले मालिक के पास इतने बड़े खेत में काम करने के लिए पांच सौ के लगभग कुली थे, पर अब उसी खेत का काम लेग्रो केवल ५० गुलामों से कराता है। इसी से लेग्री के खेत में काम करने वाले कुल दो-तीन वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहते थे।

मकान में जो ५-६ कमरे खाली पड़े थे, उनमें उत्तर की ओर एक बड़ा कमरा था। यह कमरा कासी के सोने के कमरे से सटा हुआ था। कासी के कमरे के बाईं ओर लेग्री का शयनागार था। उस मकान में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने वाले सब लोगों के मन में यह खयाल जमा हुआ था कि लेग्री के उत्तर दिशा वाले कमरे में भूत रहता है। रात की कौन कहे, दिन में भी लोगों की उस कमरे में जाने की हिम्मत नहीं होती थी। कई वर्ष हुए, लेग्री ने इस कमरे में एक कुली स्त्री-मजदूर को तीन सप्ताह तक भूखी-प्यासी रखकर उसकी जान ले ली थी। तभी से सबको विश्वास हो गया था कि यह कमरा भूतों का अड्डा है। इसी घटना से भूत-कथा का सूत्रपात हुआ। स्वयं लेग्री की भी कमरे में घुसने की हिम्मत न होती, लेकिन वह अपना भय किसी के सामने जाहिर नहीं करता था।

एक दिन कासी, बिना लेग्री से पूछे-ताछे ही, बड़ी घबराहट में सारा माल-असबाब उठाकर अपना कमरा बदलने लगी। दास-दासियों को बुलाकर उसने सारा सामान उठाकर दूसरे कमरे में ले जाने को कहा। कुली लोग बहुत डरते-कांपते हुए वहां की सब चीजें उठाकर दूसरे कमरे में जाकर रखने लगे। उस समय लेग्री घूमने गया हुआ था। जब वह लौटा तो यह उलट-फेर देखकर उसने पूछा, "कासी, क्या बात है ? इस कमरे की चीजें उठाकर वहां क्यों लिये जा रही हो ?"

कासी ने कहा, "मुझे इस कमरे में नींद नहीं आती।"

लेग्री ने पूछा, "क्यों, क्या बात है ?"

कासी ने कहा, "मैं वह सब कहना नहीं चाहती।"

लेग्री बोला, "कहने में क्या हर्ज है ?

तब कासी ने कहा, "इस उत्तर वाले कमरे में ऐसी-ऐसी विचित्र आवाजें आती हैं कि मुझे बड़ा डर लगता है और इसी से नींद नहीं आती।"

लेग्री ने फिर पूछा, "क्या आवाज़ आती है ? वह कैसी आवाज है ?"

कासी ने कहा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं, किसकी वह आवाज़ है, कैसी आवाज है ?

इस बात पर लेग्री आपे से बाहर हो गया और जमीन पर जोर से पैर मारकर उसने कासी के मुंह पर चाबुक चलाई। इस कमरे में कुली स्त्री की मौत हुई थी, इस बात को लेग्री किसी पर प्रकट नहीं होने देता था। इसीसे कासी पर बहुत क्रुद्ध हुआ। चाबुक खाकर कासी एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किनारे हट गई और जोर-जोर से कहने लगी, "लेग्री, तुम्हीं एक रात इस कमरे में सोकर देखो। देखती हूं, तुम डरते हो कि नहीं।"

कासी की इस बात से लेग्री के मन में भय जम कर बैठ गया। असल में जिन अशिक्षित लोगों में धर्म के प्रति विश्वास का भाव नहीं होता, उनके मन में ऐसे कुसंस्कार-मूलक भय का भाव बड़ी जल्दी पैदा हो जाता है।

कासी ने अच्छी तरह जान लिया कि लेग्री के मन में भय समा गया है। इससे वह मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई। इसके बाद कासी उस उत्तर वाले कमरे के पास की एक कोठरी में अपना बिछौना वगैरा तथा सात दिन तक की खाने-पीने की सामग्री रख आई। बीच-बीच में वह ठीक आधी रात को वहां जाकर छिपे-छिपे लेग्री के कमरे का दरवाजा खटखटाती और विचित्र प्रकार की आवाज करती। इससे लेग्री का कुसंस्कारमूलक भय दिन-ब-दिन बढ़ता गया। इस संबंध में कासी दास-दासियों के मन में अधिक भय पैदा करने की नीयत से नित्य नये-नये उपद्रवों के किस्से गढ़कर सुनाती। इससे उन सबका डर बढ़ते-बढ़ते यहां तक बढ़ गया कि रात को वे उस कमरे की ओर आंख उठाकर देखने में भी भय खाने लगे।

तीन-चार दिन में जब कासी ने देख लिया कि अब भूत-सम्बंधी संस्कार सब के मन में खूब गहरे जम गये हैं तो वह भागने की तैयारी करने लगी। बिछौने आदि तो पहले ही रख आई थी, अब अपने और एमेलिन के कपड़े भी ले जाकर वहां रख आई थी।

तीसरे पहर लेग्री बहुत देर से अपने किसी पड़ोसी के यहां गया था। यह सुअवसर पाकर, संध्या के बाद, जब चारों ओर अंधेरा छा गया, कासी ने एमेलिन से कहा, "चल, झटपट उठकर चल। भागने का इससे अच्छा दांव फिर नहीं मिलेगा।"

वे दोनों घर से निकल कर दलदल की ओर चलीं। पहले उन्होंने निश्चय किया था कि पश्चिम की ओर दलदल में चलेंगी, पर यह सोच कर कि वहां रहने से लेग्री उन्हें शिकारी कुत्तों द्वारा पकड़वा मंगायेगा, उन्होंने कुछ दूर पश्चिम और फिर उत्तर जाकर, वहां से पूर्व की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर मुंह कर कुछ बढ़ने पर—सामने की खाई पार करके—भुतहे घर में पहुंचकर पांच-छह दिन वहीं रहने का निश्चय किया और सोचा कि अपने भागने के बाद लेग्री संभवतः चार-पांच दिन उन्हें दलदल में ही इधर-उधर खोजेगा अथवा शिकारी कुत्तों से खोज करायेगा; परन्तु जब चार-पांच दिन में वह खोज कर थक जायगा तब मौके से किसी दिन रात को निकल कर चल देंगी। चलते-चलते जब वे दोनों दलदल के पास पहुंचीं, तब उन्हें पीछे से "पकड़ो! पकड़ो! दासी भागी जा रही हैं!" का शोर सुनाई दिया। कासी ने पहले तो अनुमान किया कि साम्बो चिल्ला रहा है, पर पीछे उसे आवाज़ से मालूम हुआ कि वह आवाज़ साम्बो की नहीं, स्वयं लेग्री की है। इस चिल्लाहट से एमेलिन बहुत डरी और कासी का हाथ पकड़ कर बोली, "कासी मां, मुझे तो बेहोशी आ रही है।"

कासी बोली, "यदि इस समय तुझे बेहोशी आ गई तो मैं तेरी जान ही ले लूंगी, नहीं तो चुपचाप मेरे पीछे दौड़ती चली आ!"

कासी के भय से एमेलिन जी-जान से दौड़ने लगी और शीघ्र ही लेग्री की आंखों से ओझल हो गई। लेग्री ने देखा कि अब इस अंधेरे में बिना शिकारी कुत्तों के इनको पकड़ने की कोई सूरत नहीं है, अतः वह कुत्तों तथा लोगों को साथ लेने के लिए खेत की ओर लौटा और साम्बो, कुइम्बो तथा अन्य दास-दासियों, शिकारी कुत्तों और बन्दूकों को लेकर उन्हें फिर पकड़ने चला।

लेग्री मन-ही-मन जानता था कि वे दोनों सहज ही भागकर नहीं निकल सकेंगी। उसके सब हब्शी गुलाम चारों दिशाओं में फैलकर उनकी खोज करने लगे।

साम्बो ने लेग्री से पूछा, "अच्छा, कासी को देख पाऊं तो क्या करूं?"

लेग्री बोला, "कासी को गोली मार सकता है, पर एमेलिन को जान से मत मारना। और जो इन दोनों को जीवित पकड़ कर ला सके, उसे पांच सौ रुपया इनाम दूंगा।"

इधर कासी और एमेलिन अपने निश्चय के अनुसार रास्ता तय करके उस ठिकाने वाले कमरे में जा पहुंचीं। घर में पहुंचने पर, जंगल के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास खड़ी होकर, एमेलिन ने कासी को बुलाकर कहा, "वह देख, शिकारी कुत्तों को साथ लिये कितने आदमी जा रहे हैं। चलो, हम लोग चलकर किसी अंधेरी कोठरी में छिप रहें।"

कासी बोली, "डर क्या है ? यहीं बरामदे में बैठकर दोनों तमाशा देखेंगी। वे इधर कदापि नहीं आवेंगे।"

सारे दास-दासियों तथा कुत्तों को साथ लिये लेग्री दलदल की ओर निकल गया। घर एकदम सूना पड़ा था। एमेलिन को साथ लेकर कासी धीरे से दक्षिण दिशा वाला दरवाजा खोल कर लेग्री के सोने के कमरे में घुस गई। वहां उसे लेग्री के सन्दूक की कुंजी बिस्तर पर पड़ी हुई मिली, जिसे वह जल्दी में ही वहीं पड़ी छोड़ गया था। कुंजी पाकर कासी को बहुत खुशी हुई। उसने तत्काल सन्दूक खोला और उसमें से तीन-चार हजार रुपयों के नोट निकालकर अपने कपड़ों में छिपा लिये। यह देखकर एमेलिन बहुत डरी। उसने कहा, "ओ कासी मां, यह तुम क्या कर रही हो ? ऐसा बुरा काम मत करो।"

इस पर कासी ने कुछ झुंझलाकर कहा, "चुप रहो ! बिना पैसों के जहाज का भाड़ा और रास्ते का सफर-खर्च कहां से आयेगा ? क्या दलदल में सड़कर मरना है ?"

एमेलिन बोली, "जो भी हो, लेकिन यह तो चोरी ही है।"

कासी ने बड़ी घृणा के साथ कहा, "चोरी है ? जो मनुष्यों की आत्मा और शरीर—सबकुछ चुरा लेते हैं, वे हमसे क्या कह सकते हैं ? लेग्री ने ये रुपये कहां से पाये हैं ? इन कुलियों का खून चूस-चूस कर ही तो ये रुपये बटोरे हैं। यह दास-दासियों का खून है। चोर का माल ले जाने में क्या दोष है ? यह सारे-का-सारा माल चोरी का है।"

इसके बाद कासी एमेलिन का हाथ पकड़ कर उसे उत्तर के कमरे में ले गई। वहां जाकर बोली, "मैंने काफी रोशनी का प्रबन्ध कर रखा है और समय बिताने के लिए कुछ पुस्तकें भी लाकर रख दी हैं। मुझे निश्चय है कि वे हम लोगों को खोजने नहीं आवेंगे। हां, यदि आ ही गये तो सचमुच उन्हें भूतों का तमाशा दिखाकर डराऊंगी।"

एमेलिन ने पूछा, "क्या तुम्हें निश्चय है कि वे लोग हम दोनों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोज में यहां न आ सकेंगे ?

कासी बोली, "मैं तो चाहती हूं कि लेग्री एक वार यहां आवे, पर वह यहां नहीं आवेगा और न दास-दासी ही आना स्वीकार करेंगे।"

एमेलिन ने सीधी-सादी तौर पर पूछा, "अच्छा, तुमने उस समय मुझे मार डालने की धमकी किस मतलव से दी थी ?"

कासी ने बताया, "जिससे तुम्हें मूर्च्छा न आ जाय। यदि उस समय तुम्हें मूर्च्छा आ जाती, तो फिर वे सब तुम्हें पकड़ लेते ।"

यह सुनकर एमेलिन कांप उठी। कुछ देर के बाद वे दोनों चुप हो गईं। फिर कासी एक पुस्तक पढ़ने लगी और पढ़ते-पढ़ते उसे नींद आगई।

आधी रात के वक्त लेग्री जब अपना दल-बल लिये निराश हो कर घर लौटा, तो बड़ा शोरगुल होने लगा। शोर-गुल होने से कासी और एमेलिन की नींद टूट गई। एमेलिन जागते ही चीख उठी, लेकिन कासी ने उसे धीरज बंधाकर कहा, "कोई भय की बात नहीं है। वह दलदल में हम लोगों को खोज कर लौट आया है। वह देखो, लेग्री के घोड़े के बदन पर कितना कीचड़ लगा हुआ है। लेग्री के बदन पर भी कीचड़ लिपटा है। कुत्ते कैसे थके हुए जीभ लपलपा रहे हैं!"

एमेलिन ने कहा, "धीरे-धीरे बातें करो। चुप रहो, कोई सुन लेगा।"

किंतु कासी ने और जोर से बोलते हुए कहा, "ऐसा क्या डर पड़ा है ? हम लोगों की बात कोई सुनेगा तो भूत के डर से और भी डरेगा।"

धीरे-धीरे अधिक रात बीत गई। लेग्री बहुत थक गया था, अतः वह अपने भाग्य को कोसता हुआ सोने के कमरे में चला गया।

४३ : : कसौटी

चलते-चलते हजारों मील की मंजिल तय हो जाती है और देखते-देखते अमावस्या की घोर निशा बीतकर प्रभात का सूर्य निकल आता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल का अबाध-अनन्त प्रवाह पाप-पंक में डूबे दुराचारियों को धीरे-धीरे उस घोर अमा-निशा की ओर धकेल रहा है, परंतु साधुओं और महात्माओं को विपत्ति-वेदनाओं से हटाकर धीरे-धीरे सूर्य की शत-शत किरणों से प्रदीप्त दिवस की ओर ले जा रहा है।

पार्थिव पद और प्रभुत्व से शून्य टाम के जीवन में कितने ही उलट-फेर हुए। पहले वह स्त्री-पुत्रों-सहित सुख से सानन्द जीवन बिताता था, अकस्मात् दिन फिरे, और सुख की घड़ियों की जगह दुःख की घड़ियों ने उसे घेर लिया। स्त्री-पुत्रों से वियोग हो गया। उस समय उसे दासता की वेड़ियां बहुत अखरीं। समय ने फिर पलटा खाया और सहृदय हाथों में जा पड़ा। इसीलिए वह दासता की लोहे-जैसी कठिन वेड़ी कुसुम-जैसी कोमल हो गई। परन्तु विधाता से उसका यह सुख भी अधिक दिनों तक नहीं देखा गया। देखते-देखते वह ऐसे हाथों में चला गया, जहां उसकी सांसारिक सुख-रूपी आशा-लताओं को जड़-मूल से उखाड़ कर नष्ट कर डाला गया। उसके पश्चात् दुर्भेद्य गहरे अन्धकार को भेदकर स्वर्गीय उज्ज्वल तारों की अपूर्व ज्योति उसके नेत्रों के सम्मुख चमकने लगी, उसके लिए स्वर्ग का द्वार उन्मुक्त हो गया।

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेग्री की क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी और बेचारा टाम ही उस धधकती हुई क्रोधाग्नि का शिकार हुआ। लेग्री जब दोनों दासियों को पकड़ने के लिए सब गुलामों को बुला रहा था, उस समय टाम की आंखों से खुशी टपक रही थी। टाम ने हाथ उठाकर आकाश की ओर देखा। लेग्री ने उसका यह भाव देख लिया था। दूसरे इस बात से भी वह टाम की नीयत जान गया कि सब गुलाम तो भगोड़ी दासियों को पकड़ने के लिए दौड़-धूप करने लगे, पर टाम ने उनका साथ नहीं दिया। लेग्री ने एक बार टाम को पकड़ने वालों के साथ जबर्दस्ती भेजने की सोची, लेकिन फिर उसके पहले आचरण का स्मरण करके उसने उसे भेजना व्यर्थ समझा, क्योंकि टाम जिस बात को बुरा समझता है, उसे वह जीते-जी कभी न करेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेग्री के लाव-लश्कर सहित एमेलिन और कासी को पकड़ने चले जाने पर खेत पर केवल टाम तथा दो-एक वे लोग रह गए, जिन्होंने टाम से प्रार्थना करना सीखा था। ये लोग मिलकर कासी और एमेलिन के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

बहुत खोज के बाद आधी रात के समय लेग्री जब निराश और परेशान होकर घर लौटा, तब टाम पर उसकी क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि जब से उसने टाम को खरीदा है तब से आजतक उसने उसकी आज्ञा का उल्लंघन-ही-उल्लंघन किया है। यह चिन्ता नरकाग्नि की तरह उसके हृदय को जलाने लगी। ज्योंही वह अपने बिस्तर पर बैठा, अपने-आप से बोला, "मैं टाम से नफरत करता हूं। मुझे उससे जबर्दस्त नफरत है। क्या वह मेरी चीज नहीं है? क्या मैं उससे मनमाना व्यवहार नहीं कर सकता? अच्छा देखता हूं, मुझे रोकने वाला कौन है।"—ऐसा कहकर वह बार-बार जमीन पर पैर पटकने लगा। लेकिन उसने फिर सोचा कि टाम को मैंने अधिक दामों पर खरीदा है, ऐसी कीमती चीज को यों नष्ट करना ठीक नहीं है। कल उससे कुछ कहना-सुनना मुनासिब नहीं होगा।

उसने निकट के खेतों से ढूंढने वाले, शिकारी कुत्ते, बन्दूकें और बहुत से गुलाम इकट्ठे किये। अब उसने निश्चय किया कि जितनी दल-दली जमीन है, उसका चप्पा-चप्पा खोज डाला जायगा। यदि कासी और एमेलिन मिल गईं, तब तो ठीक, नहीं तो टाम के प्राण लेने का उसने पक्का संकल्प किया। वह अन्दर से उबलकर दांत पीसने लगा। उसके पापासक्त मन ने इस भयंकर नर-हत्या के संकल्प का पूरी तरह समर्थन किया।

कानून गढ़ने वाले कहा करते कि मनुष्य अपना स्वार्थ सोचकर दास-दासियों के प्राण नहीं ले सकता, पर क्रुद्ध होने पर ये हत्यारे अपने-पराये तथा भले-बुरे का होश खो बैठते हैं। इनके हाथों में बेचारे गुलामों के प्राण सौंपकर उन लोगों ने निःसन्देह बड़ा पापपूर्ण काम किया था।

प्रातःकाल जब लेग्री अपने आदमी इकट्ठे कर रहा था, तब कासी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

उत्तर दिशा वाले दालान के एक सूराख से उसकी सब कार्रवाई देख-सुन रही थी। पकड़ने वाले दल में दो तो पास के दूसरे दो खेतों के परिदर्शक थे और बाकी लेग्री के शराबी सहचर थे। सभी बड़े उत्साह से तैयार हो रहे थे और गिलासों में भर-भरकर शराब उड़ा रहे थे। उनकी सारी बात-चीत सुनने की इच्छा से कासी घर की एक दीवार से कान लगाये चुपचाप खड़ी थी।

उनमें से एक परिदर्शक कह रहा था, "मेरा शिकारी कुत्ता भगोड़ों को पकड़ते ही नोच डालता है।" दूसरे ने कहा, "जैसे ही भगोड़ी दासियां मेरी नजर के सामने पड़ेंगी, मैं उन्हें तुरन्त बन्दूक का निशाना बनाकर भागने का मजा चखा दूंगा।"

उन दोनों राक्षसों की बातें सुनकर कासी बोल उठी, "हे भगवान्! क्या इस संसार में सब पापी-ही-पापी बसते हैं? हमने ऐसा कौन-सा अपराध किया है, जो हम लोगों पर ये इतना अत्याचार करते हैं।" फिर एमेलिन की ओर मुँह करके बोली, "बेटी, तू अगर आज मेरे साथ न होती तो मैं अभी उन सबके पास जाकर कहती, 'लो, मुझे गोली से मार कर अपनी साध पूरी कर लो।' स्वाधीन होकर ही मेरा क्या हुआ जाता है? अब मुझे अपनी दोनों सन्तानों का मुंह देखने को मिलेगा? मैं फिर पहले-जैसा पवित्र जीवन प्राप्त कर सकूंगी?"

कासी के मुंह का भाव देखकर एमेलिन सहम गई और भय से कुछ भी न बोल सकी। उसने एक भयभीत बालक की भांति कासी का हाथ पकड़ लिया।

कासी ने हाथ छुड़ाते हुए कहा, "मेरा हाथ छोड़ दे, मैं तुझे प्यार नहीं करना चाहती। अब संसार में किसी को भी प्यार करने की मुझे इच्छा नहीं होती।"

एमेलिन ने कहा, "दुखिया कासी मां, इतना दुःख मत करो। यदि ईश्वर हमें स्वतन्त्रता देता है तो शायद वह तुम्हें तुम्हारी बेटी से भी मिला देगा। यह न हो सका तो मैं तुम्हारी बेटी बनकर रहूंगी। अब अपनी दुखिया मां को देखने की आशा मैंने भी छोड़ दी है। मैं अब तुम्हीं को अपनी मां समझूंगी। कासी मां, तुम मुझपर प्यार करो या न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो, मैं तुम्हें अवश्य प्यार करूंगी।"

कासी बोली, "ओह, अपनी दोनों सन्तानों के लिए मेरा हृदय कैसा हाहाकार कर रहा है। मेरी आंखें उन्हें देखने के लिए तरस रही हैं।" फिर उसने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "हे भगवान्! मुझे अपनी सन्तानों से मिला दे। मैं तभी शान्तिपूर्ण हृदय से प्रार्थना कर सकूंगी।"

एमेलिन ने कहा, "उस पर विश्वास करो—वह हमारा पिता है!"

कासी बोली, "हम लोगों पर भगवान का कोप बरस रहा है। वह हम लोगों पर नाराज हो रहा है।"

एमेलिन ने बताया, "नहीं कासी, वह अवश्य हम लोगों पर कृपा करेगा। हम लोगों को उसका भरोसा करना चाहिए।"

इन दोनों में जब ये बातें हो रही थीं, उस समय लेग्री अपने आदमियों-सहित निराश और परेशान होकर घर लौट आया था। जब वह बहुत उदास मुंह बनाये घोड़े की पीठ से उतरा, उस समय कासी बड़ी प्रसन्नता से, सूराख के रास्ते, उसे देख रही थी। उतरते ही उसने कुइम्बो से कहा, "जल्दी जा और टाम को यहां ला। इस मामले में जरूर उसका हाथ है। उसके काले चमड़े के अन्दर से सारी बातें बाहर निकालनी होंगी।"

टाम को पकड़ कर लाने के उद्देश्य से साम्बो और कुइम्बो, दोनों बड़ी प्रसन्नता से उछलते-कूदते हुए चले। आपस में इन दोनों की एक घड़ी नहीं बनती थी, लेकिन टाम पर इन दोनों की ही शनि-दृष्टि थी, क्योंकि लेग्री ने टाम को अपना मुख्य परिदर्शक बनाने का संकल्प किया था।

साम्बो और कुइम्बो ने जाकर टाम से कहा, "चलो, साहब बुलाते हैं।" और हाथ पकड़ कर वे उसे ले जाने लगे। टाम ने जान लिया कि कासी और एमेलिन के भागने का वृत्तान्त पूछने के लिए ही लेग्री उसे बुला रहा है। टाम सब बातें जानता था और वे इस समय कहां हैं, इसका भी उसे पता था, पर उसने मन-ही-मन ठान लिया था कि चाहे जान चली जाय, पर वह इस गुप्त भेद को प्रकट करके उन दोनों अनाथ औरतों को सर्वनाश के मुंह में नहीं जाने देगा। यह सोचकर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह ईश्वर के चरणों में अपने को सौंपकर, मृत्यु के लिए कटिबद्ध हो गया। वह हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, "ओ परम पिता, मैं आप के हाथों में अपने प्राणों का समर्पण करता हूं—आजतक आपने ही मेरी रक्षा की है।"

उसे ले जाते हुए कुइम्बो कहने लगा, "अहा-हा! अब की वार बच्चू को छठी का दूध याद आ जायगा, आज मालिक बेहद गुस्सा हो गये हैं। अब छिपने-छिपाने की गुंजाइश नहीं है, सारी बातें पेट से बाहर निकालनी पड़ेंगी। गुलामों को भागने में मदद देने से क्या मजा आता है, यह अबकी बार ही मालूम पड़ेगा। अबकी बार तेरी खोपड़ी दुरुस्त हो जायगी।"

कुइम्वो की असभ्य और क्रूर बातें टाम के कानों में नहीं पहुंचीं। जिस समय कुइम्वो यह सब बकवास कर रहा था, उस समय टाम के कानों में अति मधुर कंठ के ये शब्द सुनाई दे रहे थे, "शारीरिक यातना देने वालों से भय मत करो, क्योंकि इसके आगे उनका कोई वस नही है।"

इस उत्साहपूर्ण वाक्य को सुनने से टाम को अपनी हड्डियों तक में नये बल का अनुभव हुआ। लगा, जैसे ईश्वर के स्पर्श-मात्र से उसके शरीर में नया रक्त और उत्साह दौड़ने लगा है। सैकड़ों आत्माओं का बल मानो उस अकेले की आत्मा में प्रवेश कर रहा है। आगे बढ़ते हुए वह ज्यों-ज्यों पेड़-पत्तों, लता-पादपों एवं दासों के झोंपड़ों को पीछे छोड़ता जाता था, त्यों-त्यों उसे मालूम हो रहा था, मानो वह अपनी दुरवस्था को भी पीछे छोड़ता जा रहा है। उसकी आत्मा आनन्द में नृत्य करने लगी— उसके पिता का घर निकट आ गया है—उसकी दासता की वेड़ियों के टूटने का समय आ पहुंचा है!

लेग्री ने टाम के कोट का कालर पकड़कर खींचते हुए बड़े क्रोध से कहा, "टाम, तू जानता है कि मैंने तुझे मार डालने का संकल्प कर लिया है!"

टाम ने धीरता से कहा, "यह आपके लिए बहुत सहज काम है सरकार!"

लेग्री बोला, "टाम, तू इन भगोड़ी दासियों के सम्बन्ध में जो कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानता है, मेरे सामने कह दे, नहीं तो आज मैंने तेरी जान लेने की ठान ली है।"

टाम इस प्रश्न पर चुप खड़ा रहा।

खूंख्वार शेर की तरह गरजते हुए तथा जमीन पर पैर मारते हुए लेग्री बोला, "मैं जो पूछ रहा हूं, उसका जवाब दे!"

टाम ने दृढ़ता और धीरज से साफ शब्दों में कहा, "सरकार, मुझे कुछ नहीं कहना है।"

लेग्री गालियां देते हुए बरसा, "पाजी, काले ईसाई, तू मुझसे यह कहने की हिम्मत कर सकता है कि तू उनके बारे में कुछ नहीं जानता?

टाम चुप खड़ा था।

लेग्री उसे मारते हुए जोरों से गरजा, "जल्दी बोल! तू क्या जानता है?"

टाम ने कहा, "सरकार, मैं जानता हूं, पर बतला नहीं सकता। मुझे मरना स्वीकार है।"

यह सुनकर लेग्री कुछ देर गुस्से को थाम कर बोला, "सुन वे टाम! एक बार मैंने तुझे छोड़ दिया, इससे तू यह मत समझ कि अबकी बार भी छोड़ दूंगा। इस बार मैंने ठान लिया है कि कुछ रुपयों का नुकसान हो जाय तो कोई परवाह नहीं। मैं या तो तुझे अपने काबू में करूंगा, या तेरे शरीर से रक्त की एक-एक बूंद निकालकर तेरी जान ले लूंगा।"

टाम ने एक बार उसकी आंखों में अपनी आंखें डालकर देखा और उत्तर दिया, "सरकार, अगर आप बीमार होते, किसी आफत में फंसे होते, या आपकी जान के लाले पड़े होते और मेरे प्राण देने से आप बच सकते, तो मैं आपके लिए प्रसन्नता के साथ अपने प्राण न्यौछावर कर देता। अब भी अगर मेरी इस तुच्छ देह के रक्त से आपकी आत्मा का कल्याण हो सके तो मैं बड़ी खुशी से आपके लिए अपने शरीर का सारा खून बहाने को तैयार हूं; परन्तु सरकार, इस नर-हत्या रूपी भयंकर पाप से अपनी आत्मा को कलंकित न कीजिये। इस काम में मेरी निस्बत आपकी ही अधिक बुराई होगी। मेरे प्राण आप खुशी से ले सकते हैं—इससे मेरे तो सारे ही दुःखों का खात्मा हो जायगा, परन्तु अपने पिछले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पापों तथा इस नवीन नर-हत्या रूपी पाप के कारण आपका बहुत ही अमंगल होगा। सरकार, एक बार इसपर गौर करके देखिये।"

टाम की यह बात सुनकर उस पाषाण-हृदय नर-पिशाच अंगरेज के मन में भी पल-भर के लिए डर पैदा हो गया। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे स्वर्ग से उतरा कोई देवदूत उपदेश दे रहा हो।

लेग्री चकित होकर टाम का मुंह देखने लगा। उस समय वहां खड़े सब लोग एकदम सन्न थे। ऐसा सन्नाटा छाया हुआ था कि सुई भी गिरती तो सुनाई देती। यह लेग्री के चरित्र को सुधारने का अन्तिम सुयोग था।

पापी मनुष्य को अपकर्मों से दूर होने के लिए मंगलमय परमात्मा समय-समय पर, पल-पल पर, अवसर देते हैं; क्षण-क्षण पर पापी की आंखों के सामने ऐसी अवस्थाएं आती हैं कि वह इस ईश्वर-प्रदत्त सुअवसर का सदुपयोग करके, सहज में आत्म-संयम करके, अपने जीवन की गति को बदल सकता है। लेग्री, खूब सोच लो, तुम्हारे लिए यह अन्तिम अवसर है।

परन्तु सारे जीवन नर-हत्या करते-करते इन अर्थ-पिशाच स्वार्थी गोरों का हृदय पत्थर से भी ज्यादा सख्त हो गया था। अतः साधु-भाव क्षण-भर से अधिक इस हृदय पर नहीं टिक सका। लेग्री दो-चार पल ठहरा। एक बार मन में विचार आया कि क्या करूं? इस चिन्ता ने मन को डांवाडोल किया, किन्तु अभ्यस्त पैशाचिक भाव के मन में आते ही, तत्काल लेग्री का क्रोध भड़क उठा और वह गाय के चमड़े से बने चाबुक से टाम को पीटने लगा।

उस दिन के भीषण लोमहर्षक काण्ड का वर्णन करने में लेखनी एकदम असमर्थ है। नृशंस प्रकृति का मनुष्य बिना हिचकिचाहट के जो भयंकर अत्याचार करता है, उसे सुनने में भी सहृदय मनुष्य कानों पर हाथ रख लेते हैं। सिर्फ हाथ ही नहीं रखते, कभी-कभी उन कठोर अत्याचारों की बात सुनकर उनके हृदय में बरछी-सी लग जाती है और उनकी मौत का कारण बन जाती है। इसी से दूसरों का कष्ट देखकर इवाजेलिन के हृदय की ग्रन्थि खुल गई और वह संसार को त्याग कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परमपिता की गोद में चली गई।

परम कारुणिक ईसा ने संसार के कल्याण के लिए बड़ी-से-बड़ी यातनाएं, घोर-से-घोर संकट तथा दुस्सह अपमान सहे थे, इसी से वे मृत्यु के उपरान्त देवता समझे गए। फिर उन्हीं ईसा का प्रचारित ईसाई-धर्म जिनकी एकमात्र पूंजी है, वे भला क्यों इस यातना को सहने में असमर्थ होने लगे? जिन राजाओं के भी राजा परमेश्वर ने १९०० वर्ष पूर्व ईसा की सूली के पास आकर कहा था, "बेटा, कोई डर नहीं है! चले आओ! तुम्हारे लिए स्वर्ग-राज्य का द्वार खुला हुआ है।"—वही अनन्त मंगलमय जगत्पिता आज, पार्थिव पद और प्रभुत्व से हीन दीन टाम के पास खड़ा होकर उसे आश्वस्त कर रहा है और मधुर कण्ठ से कह रहा है—"कोई भय नहीं है, टाम! तुम्हारी दुःख-निशा का अन्त हो गया। स्वर्ग का द्वार तुम्हारे लिए मुक्त है। तुम राजमुकुट धारण करके स्वर्ग-राज्य में प्रवेश करो। तुम्हें उठा लेने के लिए मेरी भुजाएं फैली हुई हैं।"

मार खाते-खाते जब टाम बेदम हो गया और उसके प्राण निकलने की तैयारी होने लगी, तब भी उसे लुभाने के लिए लेग्री ने कहा, "भागी हुई दासियां कहां हैं? अब भी बतला दे, तो तुझे छोड़ सकता हूं।"

परन्तु जिसने परम पिता के हाथों में आत्म-समर्पण कर दिया है, उसे कौन लुभा सकता है? उसके मुख से 'हे पिता!' 'हे परमेश्वर!' के सिवा कोई आवाज़ नहीं निकली।

टाम का धीरज देखकर क्रूर हत्यारे साम्बो का हृदय भी क्षण-भर के लिए पिघल गया। उसने लेग्री से कहा, "सरकार, अब और मार की दरकार नहीं। इसकी जान तो यों ही निकल जायगी।"

लेकिन पापिष्ठ लेग्री ने फिर कहा, "अभी और मार! और मार! जबतक कोई बात नहीं बतावेगा, तबतक मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।"

इसी समय धरा पर क्षत-विक्षत पड़े हुए मुमूर्षु टाम ने लेग्री की ओर देखकर कहा, "ओ अभागे! तू मेरा और अधिक कुछ नहीं कर सकता। जा, मैं तेरे सारे अपराधों को क्षमा करता हूं।" इतना कहते-कहते वह अचेत हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके शरीर को हिला-डुलाकर देखते हुए लेग्री ने कहा, "मालूम होता है, मर गया। अच्छा हुआ, अब इसका मुंह बन्द हो गया।"

यह ठीक है लेग्री, कि तूने उसका मुंह तो बंद कर दिया, पर उसकी आवाज़ तो तेरे अन्तःकरण में सदा गूंजती रहेगी ! उसे कौन बन्द कर सकेगा ?

फिर लेग्री वहां से चला गया। लेकिन टाम के प्राण अभी शरीर से नहीं निकले थे। मार के समय टाम ने जो प्रार्थना की थी, उसे सुन कर साम्बो और कुइम्बो जैसे नर-पिशाचों का हृदय भी पिघलने लगा। लेग्री के चले जाने पर वे दोनों तुरन्त उसे उठाकर एक झोंपड़ी के अंदर ले गए और टाम को बचाने की चेष्टा करने लगे।

साम्बो बोला, "हम लोगों ने बड़ा पाप-कर्म किया है। आशा है, इसके लिए मालिक ही को जवाब देना पड़ेगा, हम लोगों का कुछ न होगा।"

फिर वे दोनों टाम के जख्मों को धोने लगे। घावों को धोकर उन्होंने उसे एक खाट पर लिटा दिया। इसके बाद उनमें से एक लेग्री के पास गया और अपने पीने का बहाना बनाकर थोड़ी-सी ब्राण्डी ले आया और थोड़ी-थोड़ी करके टाम के गले में डालने लगा।

कुछ देर में टाम को होश आ गया। कुइम्बो बोला, "टाम भाई ! हम लोगों ने तुम पर बड़े-बड़े अत्याचार किये हैं।"

टाम ने कहा, "मैं हृदय से तुम लोगों को क्षमा करता हूं।"

साम्बो ने कहा, "टाम, हमें एक बत बातलाओ कि ईसा कौन है ? तुमने जिसे पुकारा था, वह कौन है ?"

ईसा का मधुर नाम सुनकर टाम के शरीर में बल आ गया। वह तेजी के साथ ईसा की दया की कथा कहने लगा। तब इन दोनों नराधमों का दिल भी पसीजा और वे कांपते हुए बोले, "आहा ! ऐसा सुन्दर नाम हमने पहले कभी नहीं सुना था। हे ईश्वर ! हम पर दया कर !"

टाम ने कहा, "ओ अभागो ! तुम्हें धर्म-मार्ग पर ले जाने के लिए मैं सारे कष्ट उठा सकता हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना कहकर उसने इन दोनों की आत्माओं के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

टाम की प्रार्थना पूरी हुई। साम्बो और कुइम्बो ने उसी समय कुपथ छोड़कर सुपथ पर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

४४ : : टाम की महायात्रा

इसके दो दिनों के बाद एक छोटी गाड़ी पर चढ़कर एक नौजवान लेग्री के यहां आया और झटपट गाड़ी से उतर कर वहां के लोगों से बोला, "मैं इस घर के मालिक से मिलना चाहता हूं।"

यह जार्ज शेल्बी था। पाठकों को स्मरण होगा कि टाम के नीलाम में भेजे जाने के पहले, मिस अॉफिलिया ने शेल्बी साहब की मेम के पास टाम को छुड़ाने के लिए एक पत्र भेजा था। पर विधि की विडम्बना देखिये, डाकखाने की गलती से वह पत्र इधर-उधर मारा-मारा फिरा और दो महीने बाद श्रीमती शेल्बी को मिला। वह टाम के भावी अमंगल की बात सोचकर बहुत घबड़ाई।

पर इस समय उसके हाथ में टाम की सहायता का कोई उपाय न था। उसके पति रोग-शय्या पर पड़े थे, उन्हीं की सेवा-शुश्रूषा एवं काम-काज के झंझट में वह बेतरह फंसी हुई थी। कुछ दिनों बाद शेल्बी-साहब इस दुनिया से कूच कर गये। इतने सारे काम का बोझ उसी के कंधों पर आ गया। उसके पति पर बहुत ऋण था, उसे चुकाने की उसे बड़ी चिन्ता हुई। पर उस सुशिक्षिता, सहृदया नारी का हृदय केवल स्त्री-सुलभ कोमलता, स्नेह, दया और धर्म का ही आगार न था, बल्कि काम-काज संभालने में भी उसने अपनी असाधारण बुद्धि-मत्ता का परिचय दिया। उसने कुछ हिस्सा खेत का और घर की बहुत-सी फालतू चीजें बेचकर बहुत शीघ्र ही अपने पति का सारा ऋण चुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया और सारे कामों का सिलसिला ठीक कर लिया। उस का तरुण पुत्र अपनी माता के सब कार्यों में हाथ बंटाने लगा।

जब सब ठीक-ठीक हो गया, तब माता और पुत्र दोनों मिलकर टाम के उद्धार का उपाय सोचने लगे। जिस वकील ने सेण्टक्लेयर के दास-दासी एवं घर का माल-असबाब बेचने का भार उठाया था, बुद्धिमती मिस अफिलिया ने अपने पत्र में उसका नाम-पता लिख दिया था। इससे टाम के पते के लिए पहले पत्र लिखा गया, पर वह वकील टाम के वर्तमान खरीदार का ठिकाना नहीं जानता था।

इस संवाद से माता और पुत्रों को बड़ी चिन्ता हुई। इसके छ: महीने बाद माता के किसी काम से जार्ज शेल्बी को दक्षिण की ओर जाना पड़ा। इस अवसर पर उसने स्वयं नवअर्लिन्स में आकर टाम की खोज करने का निश्चय किया। दो महीने तक तो कहीं कुछ पता न लगा, पर अकस्मात एक दिन एक आदमी से भेंट हो गई। उससे मालूम हुआ कि लेग्री नाम का एक आदमी उसे खरीद ले गया है। यह संवाद पाकर वह तुरन्त रेड नदी में खड़े हुए एक जहाज पर सवार हो लिया और आज यहां पहुंचा।

लेग्री से भेंट होते ही जार्ज शेल्बी ने कहा, "मुझे पता चला है कि नवअर्लिन्स से आपने टाम नाम के एक दास को खरीदा है। वह पहले मेरे पिता के खेत में काम करता था। मैं उसे फिर खरीदने आया हूं।"

उसकी बात सुनकर लेग्री का मुंह फ़ीका पड़ गया। वह खीझकर बोला, "हां, मैंने इस नाम के एक आदमी को खरीदा है। बड़ा अच्छा सौदा निकला ! ऐसा बेअदब, हठी और पाजी तो किसी ने कभी न देखा होगा। हमारे गुलामों को भड़का कर भगाता है, अभी दो दासियां उसकी सलाह से भाग गई हैं, जिनका दाम ८०० रु० या १००० रु० से कम न होगा। कहता है, उसने उन्हें भागने की सलाह दी थी। उसी की सलाह से वे भागी हैं, पर जब पता बतलाने को कहा गया तो उसने साफ इन्कार कर दिया। इतनी मार खाने पर भी, जितनी और किसी गुलाम ने नहीं खाई होगी, उसने पता नहीं बतलाया। मालूम होता है, अब वह मरने बैठा है। मैं नहीं कह सकता कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरेगा या नहीं।"

ये बातें सुनकर जार्ज का चेहरा सुर्ख हो गया। उसकी आंखों से आग की चिनगारियां बरसने लगीं। पर झगड़ा करने में कोई अक्लमंदी न समझकर उसने केवल इतना ही पूछा, "वह कहां है? मैं उसे देखना चाहता हूं।"

बाहर जो गुलाम जार्ज का घोड़ा पकड़े हुए खड़ा था, वह बोल उठा, "टाम इसी कुटिया में है।"

लेग्री ने उस गुलाम के एक लात जमाई, पर जार्ज ने वहां पल-भर की भी देर न की और झट से कुटिया की ओर बढ़ा।

टाम दो दिन से इस कुटिया में पड़ा था। शारीरिक कष्ट अनुभव करने की उसकी शक्ति चली गई थी। आत्मा जीवन्मुक्त हो गई थी। पर शरीर पहले खूब हृष्ट-पुष्ट था, इस कारण देह-पिंजर से आत्मा सहज में बाहर नहीं होने पाती थी। इसी से अब भी उसमें प्राण बाकी थे। टाम सदा लेग्री के भूखे दास-दासियों की सहायता किया करता था, कभी-कभी आप भूखा रहकर अपना आहार उन्हें दे देता था। इससे टाम की इस दशा के कारण सब बड़े दुःखी हो रहे थे। लेग्री के डर के मारे टाम को देखने जाने की उनकी हिम्मत न होती थी, पर रात को वे छिपकर उसकी कुटिया में जाते और यथा-शक्ति उसकी सेवा-शुश्रूषा करते थे। अधिक इनसे और क्या होता, जब-तब दो बूंद जल उसके मुख में डाल देते थे।

कासी को टाम की विपत्ति का सब हाल मालूम हो गया। उसके दुःख की बात जानकर उसका हृदय शोक से भर गया। टाम ने उसके और एमेलिन के लिए ही यह अलौकिक त्याग स्वीकार किया था। यह सोचते-सोचते उसके हृदय में कृतज्ञता की लहरें उठने लगीं। वह सारी आफतों को तुच्छ समझ कर पहली रात को टाम को ही देखने के लिए उसकी कुटिया में पहुंची। टाम अपने उस अन्तिम समय में अस्फुट स्वर से कासी को स्नेहपूर्वक जो धर्मोपदेश करने लगा, उसे सुनकर उसके हृदयाकाश से निराशा का अन्धकार सर्वथा दूर हो गया। वह शोक-दग्ध वज्रसम कठोर हृदय पसीज कर नरम पड़ गया। वह रोती हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रार्थना करती जाती थी।

टाम की कुटिया में प्रवेश करते ही उसकी दुर्दशा देखकर जार्ज को चक्कर आने लगा। उसके हृदय में गहरी चोट लगी। वह टाम के बगल में घुटनों के बल बैठकर जोर से बोला, "क्या यह संभव है? क्या मनुष्य मनुष्य के साथ इतना अत्याचार कर सकता है? टाम काका! मेरे दु:खी टाम काका!"

मृत-प्राय टाम के कानों में इस कण्ठ-स्वर से अमृत-सा बरस गया। वह संज्ञाशून्य-सा पड़ा था, पर यह स्वर सुनकर धीरे-धीरे उसने सिर हिलाया, होठों पर जरा हँसी आई। अस्फुट स्वर से बोला, "ईश-कृपा से क्या संभव नहीं है? मृत्युशय्या भी सुख से भर उठती है!"

जार्ज सिर झुकाये एकटक टाम के मुंह की ओर देख रहा था। आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। शोक से रुंधे कण्ठ से कहने लगा, "प्यारे टाम काका! उठो, एक बार बोलो! आंखें ऊपर उठा कर देखो। तुम्हारा मास्टर जार्ज आया है—तुम्हारा प्यारा मास्टर जार्ज आया है। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो?"

टाम ने आंख खोलकर क्षीण कण्ठ से कहा, "मास्टर जार्ज! मास्टर जार्ज!"···वह चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा। फिर बोला, "मास्टर जार्ज!"····मानो धीरे-धीरे अन्त में यह बात उसकी समझ में आई। उसकी शून्य आंखें क्रमशः चमकने लगीं, उसका मुख प्रफुल्लित हो गया। नेत्रों से अश्रु-धारा बह निकली। वह हाथ जोड़ कर क्षीण स्वर से कहने लगा, "धन्य भगवान! अन्त में मेरी इच्छा पूर्ण कर दी। वे मुझे भूले नहीं। इससे मेरी आत्मा को संतोष मिल गया। धन्य भगवान! धन्य भगवान! अब मैं सुख से मरूंगा।"

जार्ज ने कहा, "तुम्हें मरना नहीं होगा। तुम नहीं मरोगे। इस बात का विचार भी मन में मत लाओ। मैं तुम्हें खरीद कर घर ले चलने के लिए आया हूं।"

टाम ने कहा, "ओह, मास्टर जार्ज, तुम बड़ी देर से आये। अब समय नहीं रहा। मैं तो ईश्वर के हाथ बिक चुका हूं। वह मुझे अपने साथ अमृत-धाम को ले जायगा। वहां जाने को जी चाह रहा है। केण्टाकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से स्वर्ग कहीं अच्छा है।"

जार्ज बोला, "टाम काका, ऐसा मत कहो। तुम्हारी बातें सुनकर मेरी छाती फटी जाती है। हाय, तुम्हें कितना सताया गया है! कैसे मैले में डाल रक्खा है हाय, तुम्हारी दशा देखकर मेरे प्राण मुंह को आ रहे हैं! ओफ़!"

टाम ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे दुःखी मत कहो। मैं दुःखी था, पर अब वे सब बातें गई-गुजरीं हो गईं। मैं पिता की गोद में जा रहा हूं। जार्ज, यह देखो स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है। धन्य ईसा! धन्य परमेश्वर!"

जार्ज टाम के इन सचाई से भरे, विश्वास-पूर्ण तेजोमय वाक्य सुन-कर स्तम्भित रह गया। वह अवाक् होकर उसके मुख की ओर देखने लगा।

टाम ने जार्ज का हाथ पकड़ कर कहा, "तुम रोओ मत! छोई से मेरी इस दशा का हाल कहना। ओफ! उसे कितना दुःख होगा। लेकिन तुम उससे कहना कि मेरी मृत्यु शांति से हुई है। मेरे लिए कोई दुःख न करे। उससे यह भी कह देना कि भगवान सर्वत्र मेरे साथ थे। उन्होंने सदा मुझे दुःखों पर विजय दी है। मुझे बच्चों के लिए सदा दुःख होता था। उन्हें मेरे मार्ग पर चलने को कहना। अपने माता-पिता और घर के हर आदमी को मेरा प्रेम कहना। मेरे दिल में हर जीवधारी के लिए प्रेम है। मैं जहां गया, वहां प्रेम के अलावा और कुछ नहीं किया। ओह, मास्टर जार्ज, प्रेम भी क्या ही अनोखी चीज है! वाह, धर्म के रास्ते पर चलने में कितना आनन्द है!"

इसी समय लेग्री वहां कुटिया के द्वार तक आया और एक बार अन्दर की ओर देखकर घृणा प्रकट करते हुए लौट गया।

जार्ज उसे देखकर क्रोध से बोला, "शैतान कहीं का! ईश्वर एक दिन इसे अपने किये का फल देगा।"

टाम ने कहा, "जार्ज, ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। वह बड़ा अभागा जीव है। उसकी बातें सोच-सोच कर दुःख होता है। अब भी अगर वह पश्चात्ताप करे तो ईश्वर उसे क्षमा करेंगे। पर वह कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्चात्ताप नहीं करेगा।"

जार्ज बोला, "उसका पश्चात्ताप न करना ही अच्छा है। उसे स्वर्ग न मिले, यही मैं चाहता हूं।"

टाम ने बड़े दुःख से कहा, "जार्ज, ऐसी बातें मत कहो। मुझे हैरानी होती है। मन में ऐसा भाव मत रक्खो। उसने मेरा कोई बिगाड़ नहीं किया। मेरे लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार खोल दिया।"

जार्ज को देखकर टाम आनन्द से उत्तेजित हो गया था। उसी उत्तेजना से उसका शरीर और भी सुस्त पड़ गया। आंखें बन्द हो गईं। सांस जल्दी-जल्दी चलने लगी और उसकी आत्मा संसार से विदा हो गई। मृत्यु के समय उसके मुंह से ये शब्द निकल रहे थे, "ईसा के प्रेम से हम लोगों को कौन वंचित करेगा!"

जार्ज स्तब्ध होकर एकटक उसके मुख की ओर देख रहा था। उसे जान पड़ने लगा कि टाम का यह मृत्यु-गृह पवित्र स्थल है। उसने घूम कर देखा तो लेग्री को अपने पीछे खड़ा पाया।

टाम का अन्तिम वाक्य सुनकर जार्ज का उत्तेजित भाव कुछ मन्द पड़ गया था, नहीं तो आज वह लेग्री की अवश्य खबर लेता। पर लेग्री का मुंह देखकर उसके हृदय में घृणा उत्पन्न हो गई। जार्ज तुरन्त वहां से उठ जाने को तैयार हुआ और उससे बोला, "तुमसे जो बन सका तुमने कर लिया, अब मैं इस मृत शरीर को साथ ले जाना चाहता हूं। बोलो, इसकी मृत देह के लिए तुम्हें क्या देना है? मैं अच्छी तरह से इसका क्रिया-कर्म करूंगा।"

लेग्री बोला, "मैं मुर्दे हब्शी नहीं बेचता। जहां और जब तुम्हारा जी चाहे, इसे ले जाकर दफन करो।"

वहां दो-तीन दास खड़े हुए लाश की ओर देख रहे थे। जार्ज ने उनसे कहा, "तुम लोग मेरे साथ आकर इस लाश को गाड़ी में रखवा दो और मुझे एक कुदाल ला करके दो।"

लेग्री की आज्ञा की कोई अपेक्षा न करके उनमें से एक कुदाल लाने के लिए दौड़ा, और दो ने उस लाश को गाड़ी पर रखवा दिया। लेग्री भी गाड़ी के पास जाकर देखने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज ने अपना लबादा खोलकर गाड़ी में बिछाया और उसपर टाम की मृत देह को लिटा दिया। उसके बाद गाड़ी हांकते समय लेग्री से कहा, "तुमने जो नर-हत्या की है, इसकी सजा पाओगे। यह मत समझना कि मैं तुम्हें योंही छोड़ दूंगा। मैं मैजिस्ट्रेट के सामने जाकर अभी बयान दूंगा।"

यह सुनकर लेग्री ने ताने से हँसकर कहा, "जाओ, जहां तुम्हारा जी चाहे, बयान दो। ओफ, मुझे तो अब डर के मारे नींद ही नहीं आवेगी! पर अंग्रेज गवाह तुम कहां से पाओगे। ऐसे मुकदमे में गुलामों की गवाही नहीं मानी जाती।"

जार्ज ने मन-ही-मन सोचा, "यह ठीक कहता है। देश के कानून के अनुसार गोरों के विरुद्ध कालों की गवाही नहीं मानी जाती।" यह सोच कर जार्ज को बड़ा कष्ट हुआ।

लेग्री आप-ही-आप कहने लगा, "मेरे तो कुछ समझ में नहीं आता कि एक मुर्दे हब्शी के लिए एक पढ़ा-लिखा अंगरेज इतना बखेड़ा क्यों करता है? कितने ही कुली पुरुष और स्त्रियां योंही मारी जाती हैं। यह मुकदमा चलाने चला है! कोई समझदार अंग्रेज-विचारक तो ऐसे तुच्छ विषय को सुनेगा ही नहीं। कौन भारी अपराध किया है, बस एक कुली ही न मारा है!"

आग लगने से जैसे बारूद का गोदाम भभक उठता है, वैसे ही लेग्री की यह बात सुनकर जार्ज का क्रोध भभक उठा। जार्ज वकीलों की तरह कानून के पन्ने उलट कर कर्तव्य निश्चय नहीं किया करता था। उसमें बड़ा तेज और बल था। उसने कानून नहीं पढ़ा था कि मनुष्यता से विहीन हो जाय। वह तुरन्त गाड़ी से कूदकर लेग्री के मुंह पर जोर-जोर से घूंसे जमाने लगा। लेग्री की नाक से खून की नदी बह निकली। कायर लेग्री और अधिक न सह सका और मुर्दे की भांति जमीन पर गिर पड़ा। जार्ज ने अकेले होते हुए भी यह वीरता दिखाकर प्रातः-स्मरणीय जार्ज वाशिंगटन का नाम सार्थक कर दिया।

संसार में कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि लात खाने पर ही सीधे रहते हैं, ठीक से व्यवहार करना सीखते हैं। लेग्री उन्हीं व्यक्तियों में से था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब उसने भलमनसी अख्तियार की, धूल झाड़ कर उठ बैठा और जब-तक जार्ज की गाड़ी आंखों से ओझल न हो गई, तबतक अपना मुंह नहीं खोला ।

लेग्री के खेत से हटकर एक वृक्ष-लता से आच्छादित सुंदर स्थान में जार्ज ने कुलियों को कब्र खोदने की आज्ञा दी । कब्र तैयार हो जाने पर कुलियों ने जार्ज के पास आकर कहा, "हुजूर, यह लबादा खोल लिया जाय ?" जार्ज ने कहा, "नहीं-नहीं, इसीके साथ उसे दफना दो !" फिर टाम की मृत देह को सम्बोधन करके कहने लगा, "हाय टाम काका, मेरे पास इस समय और कोई अच्छा कपड़ा नहीं है, जिसे तुम्हारे साथ दूं । यही मेरी श्रद्धा का अंतिम चिह्न है ।"

टाम को मिट्टी दे दी गई और कब्र पर फूल बिछा दिये गए । तब जार्ज ने कुलियों को कुछ पैसे देकर कहा, "अब तुम लोग जा सकते हो ।" वे जार्ज से कहने लगे, "हुजूर, हम लोगों को खरीद लीजिये । हम दिन-रात जी-जान से आपका काम करेंगे । यहां हम लोगों को बड़ी तकलीफ है ।"

जार्ज ने कहा, "मैं यहां किसी को नहीं खरीद सकता । यह असभव है । तुम लोग लौट जाओ ।"

वे निराश होकर धीरे-धीरे चलते बने ।

जार्ज टाम की समाधि पर घुटनों के बल बैठकर आंखें और हाथ ऊपर करके कहने लगा, "हे अनन्तस्वरूप परमात्मन् ! मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूं कि देश से इस घृणित दास-प्रथा को दूर करने के लिए, गोरों के अत्याचार-निवारण के लिए, मैंनें आज से अपने तन-मन को समर्पित कर दिया है । आप मेरे इस सत्संकल्प में सदा सहायक हों !"

टाम के समाधि-स्थल पर कोई स्मृति-चिह्न नहीं बना, पर उसका पवित्र जीवन ही उसका एक-मात्र उज्ज्वल स्मृति-चिह्न था ।

टाम के लिए दुःखित होने का कोई कारण नहीं है । ऐसे जीवन और मृत्यु पर तरस खाने की कोई आवश्यकता नहीं है । टाम दया का पात्र या दुःखी व्यक्ति नहीं था । वह जिस धन का धनी था, वह धन बड़े-बड़े महाराजाओं के भंडार में भी नहीं मिलता ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाम के हृदय की सत्यप्रियता, न्यायपरता, धर्म-जिज्ञासा, प्रेम, भक्ति और उसका सत्य-विश्वास क्या संसार के और सारे धनों से अधिक मूल्यवान न था !

४५ : : लेग्री का अंत

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेग्री के दास-दासियों में भूतों की चर्चा ने बड़ा जोर पकड़ा। हर घड़ी उन्हीं की चर्चा होने लगी।

रात को बन्द किये हुए दरवाजे खुले मिलते, रात को किसी के दरवाजा खटखटाने की-सी आवाज आती, इससे सबने यही नतीजा निकाला कि यह सारी कार्रवाई भूतों के सिवा और किसी की नहीं है। दासों में से कोई-कोई कहता, "भूतों के पास सब दरवाजों की तालियां जरूर हैं। बिना ताली के वे दरवाजा कैसे खोल सकते हैं ?" दूसरे उसका खंडन करते, "यह कोई बात नहीं, भूत बिना ताली के भी दरवाजे खोल सकते हैं।"

भूत की सूरत-शक्ल के बारे में भी बड़ा मतभेद होने लगा। किसी ने कहा, "भूत के सिर नहीं होता। उसके दोनों कंधों पर दो आंखें होती हैं।" पर दूसरे ने उसकी बात कपटकर कहा, "मैं तो खुद अपनी आंखों से दो-तीन भूत देख चुका हूं। कोई भी भूत बिना सिर का नहीं होता।" तीसरे ने कहा, "हां-हां सिर तो होता है। यह तो मैं भी मानता हूं, लेकिन वह पीठ की ओर फिरा हुआ होता है। मैंने जितने भूत देखे हैं उसमें एक का भी सिर छाती की तरफ नहीं था।" इस पर चौथा दास बोला, "मालूम होता है, तुम सब लोगों ने जितने भूत देखे हैं, सबके सब विलायती थे, देशी उनमें एक भी नहीं था।"

दास-दासियों में भूत के रूप-रंग के विषय में योंही तर्क-वितर्क होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे, पर कोई बात तय नहीं हुई। मतभेद ज्यों-का-त्यों बना रहा।

दास-दासियों की यह भूत-संबंधी चर्चाएं लेग्री के कानों तक भी पहुंचने लगीं। उसने हजार यत्न किये, पर इन चर्चाओं का अन्त न हुआ। दिन-पर-दिन भूत-चर्चा का बाजार गर्म होता गया। उत्तर के कमरे में बहुधा रात को किसी के पैरों की आहट सुनाई देती थी। इससे उठते ही सवेरे उसकी बात छिड़ जाती थी। रोज-रोज भूतों की कथाएं सुनते-सुनते गंवार, धर्मज्ञानहीन लेग्री के मन में बुरी तरह डर समा गया। इन भयंकर स्मृतियों को मन से दूर रखने के लिए वह पहले से दूनी-चौगुनी शराब पीने लगा।

जिस दिन सवेरे टाम की मृत्यु हुई, उस दिन वह पास के एक दूसरे खेत में गया था। वहां से घर लौटने में अधिक रात हो गई। घर पहुंचते ही वह सोने के कमरे में गया और सारी किवाड़ें बन्द करने लगा। उत्तर की ओर का दरवाजा बन्द करके किवाड़ों के पीछे उसने एक कुर्सी रख दी। अपने सिरहाने एक भरी हुई पिस्तौल रखी। डटकर शराब चढ़ाई। फिर लेट गया। कुछ देर बाद उसे नींद आ गई। नींद में पहले की भांति उसे अपनी माता की मूर्ति दिखाई दी। अनन्तर चिल्लाहट सुनाई दी। इससे उसकी आंख खुल गई और उसे साफ-साफ आदमी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। दरवाजे पर नजर पड़ते ही उसने देखा कि दरवाजा चौपट पड़ा है, घर की रोशनी बुझ गई है, अंधेरे में किसी ने उसके बदन पर ठण्डे हाथ लगाये, जिससे वह खाट से उछलकर दूर जा खड़ा हुआ। इतने में श्वेत-वस्त्रधारी मूर्ति अन्तर्धान हो गई। लेग्री ने दरवाजे के पास जाकर देखा तो दरवाजे को बाहर की ओर से बन्द पाया। देखते ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। सवेरे जागने पर देखा गया कि खाट की जगह वह जमीन पर पड़ा है।

इसके दूसरे दिन से लेग्री ने शराब की मात्रा और बढ़ा दी। उसने मन-ही-मन दो-तीन रात शराब पीकर एकदम बेहोशी की हालत में बिताने का निश्चय किया, जिससे कोई भी दुश्चिन्ता उसके पास न फटकने पावे, पर दो-तीन दिन इस प्रकार खूब शराब पीने के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे भयानक ज्वर आया और वह पागल-जैसा हो गया। पहले किये अपने बुरे कामों तथा निष्ठुर आचरणों की बातें बकने लगा। वे सब लोमहर्षक बातें आदमी के दिल को कंपा देने वाली थीं। इससे उस दशा में कोई उसके पास कोई खड़ा नहीं होता था। दिन-रात वह अकेला बेसुध पड़ा रहता। तीन दिन के बाद उसके मुंह से खून गिरने लगा। और उसी के कुछ क्षणों बाद वह पापात्मा, नराधम अंगरेज अपने चिर-कलंकित जीवन से मुक्त हो गया।

उसकी लाश को उसके गुलामों ने रेड नदी में बहा दिया और उसके पास जो माल-टाल था, उसे लेकर उत्तर की ओर निकल भागे।

जिस रात को लेग्री मूर्च्छित हुआ था, उस रात को तीन-चार गुलामों ने देखा कि दो स्त्रियां सफेद चादर से अपना सारा बदन ढके हुए घर से निकलकर बाहर चली गईं। उसके दूसरे ही दिन सवेरे बाहरी मकान का दरवाजा भी खुला हुआ पाया गया। इससे लेग्री के दिल में और भी डर समा गया था।

सूर्योदय के कुछ ही पहले कासी और एमेलिन नगर के निकट पेड़ों के नीचे बैठकर विश्राम ले रही थीं। वृक्षों की ओट में बैठकर कासी ने स्पेन देश की कुलीन स्त्रियों के वस्त्र धारण किये और एमेलिन ने उसकी परिचारिका का-सा वेश बना लिया। कासी भले घर में जन्मी थी और सभ्य जनों की-सी उसने शिक्षा पाई थी। इससे उसे देखकर कोई भगोड़ी दासी नहीं समझ सकता था। उसने नगर में जाकर एक सन्दूक मोल लिया। उसमें सब कपड़े रक्खे और उसे एक कुली के सिर पर उठवा कर निकट के एक होटल में जाकर रहने लगीं।

उस होटल में पहुंचते ही पहले जार्ज शेल्बी से उसकी भेंट हुई। जार्ज शेल्बी भी यहां जहाज के लिए ठहरा था। कासी ने अपने गुप्त स्थान से जार्ज शेल्बी को टाम की लाश ले जाते देखा था। जब उसने लेग्री को पीटा था, तब भी वह उसे देख रही थी। इससे जार्ज का चेहरा उससे सर्वथा अपरिचित न था, विशेषकर जार्ज के चले के बाद कासी ने दूसरे दास-दासियों की बात-चीत से पता लगा लिया था कि वह टाम के पूर्व मालिक का पुत्र है। अतः उसने आग्रहपूर्वक जार्ज से घनिष्ठता बढ़ाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का यत्न किया।

कासी के कुलीन स्त्रियों के-से वस्त्र एवं आचार-व्यवहार के कारण किसी को उस पर संदेह न हुआ, खासकर होटल में जो खाने-पीने आदि की चीजों का दाम देने में कंजूसी नहीं करता, उससे सब सन्तुष्ट रहते हैं। कासी इन बातों को खूब जानती थी। इसी से वह लेग्री के सन्दूक से अच्छी रकम ले आई थी।

संध्या होते-होते जहाज आ गया। जार्ज शेल्वी ने बड़े शिष्टाचार से कासी का हाथ पकड़ कर उसे नाव पर चढ़ाया और स्वयं विशेष कष्ट सहकर जहाज के बीच का एक अच्छा कमरा उसके लिए किराये पर ले दिया। जहाज जबतक रेड नदी में था, तबतक कासी कमरे से बाहर न निकली। शारीरिक अस्वस्थता का बहाना बना कर कमरे में ही सोती रही, पर जब जहाज मिसीसिपी नदी के मुहाने पर पहुंचा तो कासी आई। जार्ज ने फिर इस नदी वाले जहाज में भी उसके लिए एक कमरा किराये पर ले दिया। इस जहाज में आते ही कासी की शारीरिक अस्वस्थता दूर हो गई और जहाज में वह इधर-उधर खूब टहलने लगी।

जहाज के अन्य यात्री उसके वस्त्र और सौन्दर्य देखकर आपस में कहने लगे, "जवानी में यह स्त्री बड़ी सुन्दर रही होगी।"

जार्ज ने जब से कासी को देखा, उसके मन में यह विचार उठ रहा था कि उसने ऐसा ही सुन्दर चेहरा और कहीं देखा है। इससे वह बड़े ध्यान से कासी के मुख की ओर देखता था। खाते-पीते, बातें करते, बराबर जार्ज की आंखें उसके मुंह पर लगी रहती थीं।

यह देखकर कासी के मन में उद्विग्नता उत्पन्न हो गई। वह सोचने लगी कि वह आदमी निश्चय ही मुझ पर संदेह करता है। पर जार्ज की दया पर भरोसा करके उसने आदि से अंत तक अपना सारा वृत्तान्त उसे कह सुनाया।

सुनकर जार्ज को बड़ा दुःख हुआ। उसने उससे सहानुभूति दिखाई और ढाढस बंधाया। लेग्री के दास-दासियों का कष्ट वह अपनी आंखों देख आया था। इससे वहां से भागी हुई दोनों स्त्रियों पर सहज ही उसके मन में दया हो आई थी। उसने कासी को विश्वास दिलाया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम डरो नहीं। मैं जी-जान से तुम्हारी रक्षा करूंगा।

कासी के कमरे से सटे हुए कमरे में मेडम डिथो नाम की एक फ्रेंच भद्र महिला सफर कर रही थीं। जब उस फ्रेंच महिला को जार्ज की बातचीत से पता चला कि वह केण्टाकी का आदमी है, तो वह उसके साथ बातचीत करने के लिए विशेष उत्सुक हुई। शीघ्र ही उसने जार्ज से परिचय कर लिया। उसके बाद जार्ज प्रायः उसी के कमरे के द्वार पर कुर्सी डाल कर उससे बातें किया करता। कासी अपनी जगह से उनकी सारी बातें सुनती रहती।

एक दिन मेडम डिथो ने बातों-ही-बातों में जार्ज से कहा, "पहले मैं भी केण्टाकी में ही थी।" और उसने केण्टाकी प्रदेश के जिस गांव का नाम लिया, जार्ज शेल्बी का घर भी वहीं था। जार्ज को उसकी बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ।

इसके बाद एक दिन मेडम डिथो ने जार्ज से पूछा, "अपने गाव में तुम हेरिस नाम के आदमी को जानते हो?"

"हां, इस नाम का एक बूढ़ा आदमी हमारे गांव में है।" जार्ज ने उत्तर दिया—"उसके बहुत से दास-दासी हैं न?

"उसकेएक जार्ज नाम के वर्णसंकर दास को आप जानते हैं? शायद आपने उसका नाम सुना होगा," मेडम डिथो ने पूछा।

जार्ज बोला, "क्या? उसका तो मेरी माता की एक दासी से विवाह हुआ था। पर अब तो वह कनेडा भाग गया है।"

मेडम डिथो ने कहा, "अच्छा, कनेडा भाग गया है? ईश्वर का धन्यवाद है!"

जार्ज मैडम डिथो की बात सुनकर बड़ा चकित हुआ, पर उससे आगे कुछ नहीं पूछा। मैडम डिथो दोनों हाथों से मुंह ढक कर आनन्द से अश्रु बहाने लगी। फिर कुछ संभलकर बोली, "जार्ज मेरा भाई है।"

जार्ज ने बहुत विस्मित होकर, ओह, ऐसा!"

मैडम डिथो ने गर्व से सिर उठाकर कहा, "हां मिस्टर शेल्बी जार्ज, हेरिस मेरा भाई है।"

"मुझे आपकी बात सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मिस्टर शेल्वी, जिस समय जार्ज बहुत छोटा था। उसी समय हेरिस ने मुझे दक्षिण के एक दास-व्यवसायी के हाथ बेच डाला था, उस दास-व्यवसायी से मुझे एक सहृदय फ्रांसीसी ने खरीद लिया और गुलामी की बेड़ी से मुक्त करके शास्त्र के अनुसार मुझसे विवाह कर लिया। कुछ दिन हुए मेरे स्वामी की मृत्यु हो गई। अब मैं अपने उस छोटे भाई जार्ज को खरीद कर दासता से मुक्ति देने की इच्छा से केण्टाकी जा रही हूं।"

जार्ज बोला, "जार्ज हेस मुझसे कई बार कहा करता था कि मेरी एमिली नाम की एक बहन को हेरिस ने दक्षिण में बेच डाला है।"

मैडम डिथो ने कहा, "मेरा ही नाम एमिली है।"

"आपका भाई बड़ा बुद्धिमान और चरित्रवान युवक है, पर गुलाम होने के कारण कोई उसके गुणों का आदर नहीं करता। हमारे यहां की दासी से उसका विवाह हुआ था। इसी से मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूं।" जार्ज ने कहा।

"उसकी स्त्री कैसी है?"

"वह भी एक रत्न है। परम सुन्दरी और बुद्धिमती है, मधुर बोलने वाली, सुशील और धर्मपरायण है। मेरी माता ने अपनी कन्या की तरह बड़े यत्न से उसका लालन-पालन किया था। वह लिखने-पढ़ने, सीने-पिरोने तथा घर के सभी कामों में बड़ी निपुण है।"

"क्या वह आप ही के घर जन्मी थी?"

"नहीं, मेरे पिता उसे नवअर्लिन्स से मेरी माता को उपहार में देने के लिए खरीद लाये थे। उस समय वह आठ-नौ बरस की थी। उन्होंने उसे कितने में खरीदा था, यह बात माता के सामने कभी प्रकट नहीं की, पर थोड़े दिन हुए उनके कागज-पत्रों से हम लोगों को मालूम हुआ कि उसके लिए उन्होंने बहुत अधिक मूल्य दिया था। ऐसा लगता है, उसके अपूर्व सौन्दर्य के लिए ही इतने ज्यादा दाम दिये गए थे।"

कासी जार्ज के पीछे बैठी थी। उसके इन बातों को बड़े ध्यान से सुनने का पता जार्ज को नहीं था। पर जार्ज की बात समाप्त होते ही कासी ने उसकी बांह पर हाथ रखकर कहा, "मिस्टर शेल्वी, क्या आप बता सकते हैं कि आपके पिता ने उसे किससे खरीदा था?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज ने कहा, "याद पड़ता है कि सिमन्स नाम के किसी आदमी से उन्होंने खरीदा था।"

"हे भगवान!" यह कहकर कासी तुरन्त मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

कासी की इस आकस्मिक मूर्च्छा का कारण मैडम डिथो और जार्ज की समझ में नहीं आया। वे मिलकर उसे होश में लाने का उपाय करने लगे। होश में आने पर कासी बालिका की भांति जोर-जोर से रोने लगी।

मां कहलाने वाली महिलाएं पूरी तरह से कासी के मनोभाव को समझ सकेंगी। कासी यह मान कर कि वह अब अपनी कन्या से नहीं मिल पायेगी, निराश हो गई थी, पर ईश्वर की कृपा से फिर मन में उसे देख पाने की आशा बंध गई और इसी से वह हृदय के उमड़े वेग को संभाल न सकने के कारण बच्चे की तरह रोने लगी।

४६ : : टाम काका के बलिदान का सुफल

जार्ज शेल्बी ने अपने घर लौटने के कुछ ही दिन पहले अपनी माता को जो पत्र लिखा था, उसमें केवल अपने घर पहुंचने की तारीख के सिवा और किसी बात की चर्चा नहीं की थी। टाम की मृत्यु का समाचार देने की उसकी हिम्मत न पड़ी। कई बार उसने लेखनी उठाई कि टाम की मृत्यु के समय की घटनाएं विस्तार से लिखे, पर कलम उठाते ही उसका हृदय शोक से भर जाता था। दोनों आंखों से आंसू बहने लगते थे। वह तुरंत कागज को फाड़कर फेंक देता था और कलम एक ओर को रखकर आंसू पोंछते हुए अलग जाकर हृदय को शांत करने की चेष्टा करता था।

जिस दिन जार्ज ने घर पहुंचने को लिखा था, उस दिन घर के लोग बड़ी प्रसन्नता से उसके आने की बाट जोह रहे थे। सबकी आशा थी कि आज वह टाम काका को साथ लेकर लौटेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरे पहर का समय था। मिसेज शेल्वी कमरे में बैठी हुई थीं। क्लोई पास खड़ी भोजन की मेज़ पर कांटा-चम्मच सजा रही थी। क्लोई आज बड़ी प्रसन्न थी। पांच वरस बाद स्वामी के दर्शन होंगे। आज क्लोई एक-एक चीज को पांच-पांच बार सजाती थी। मिसेज शेल्वी से वह इस विषय पर बातें करना चाहती थी। मेज के किस तरफ किस कुर्सी पर जार्ज बैठेगा, इत्यादि विषयों पर मालकिन से तरह-तरह की बातें हो रही थीं। अन्त में क्लोई बोली, "मेम साहब, मिस्टर जार्ज की चिट्ठी आई है?"

मेम ने कहा, "हां आई तो है, लेकिन एक ही लाइन की है। बस आज पहुंचने की बात लिखी है।"

क्लोई बोली, "मेरे बूढ़े की कोई बात नहीं लिखी?

"नहीं, क्लोई!"

क्लोई ने उदास होकर कहा, "मिस्टर जार्ज की तो यह पुरानी आदत है। उन्हें ज्यादा लिखना पसंद नहीं। सब बातें सामने ही कहना उन्हें अच्छा लगता है।"

क्लोई थोड़ी देर को अपने में खो गई। फिर बोली, "मेरा बूढ़ा घर आकर लड़कों को नहीं पहचान सकेगा। लड़की को भी मुश्किल से पहचानेगा। उसको ले गये तब तो यह बहुत छोटी थी। अब कितनी बड़ी हो गई। पोली जैसी भोली है वैसी ही चालाक भी है। मैं भोजन बनाकर इधर-उधर चली जाती हूं तो वह बैठी भोजन की रखवाली किया करती है। आज मैंने ठीक वैसा ही भोजन बनाया है, जैसा बूढ़े को ले जाने वाले दिन बनाया था। हे परमेश्वर! उस दिन मेरा जी कैसा करने लगा था।"

मिसेज शेल्वी ने क्लोई की बातें सुनकर ठण्डी सांस ली। उसे अपने हृदय पर बड़ा बोझ-सा जान पड़ा। उसका मन उचट गया। जबसे उसे अपने पुत्र का पत्र मिला था, उसी दिन से उसके मन में तरह-तरह की शंकाएं उठ रही थीं। वह सोचती थी कि जार्ज के पत्र में टाम की बात न लिखने का कोई-न-कोई विशेष कारण होगा।

क्लोई ने कहा, "मेम साहब, मेरे भाड़े के रुपयों के बिल मंगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखे हैं न ?"

"हां, मंगाये पड़े हैं।"

"मैं बूढ़े को ये रुपया दिखलाऊंगी।"

फिर क्लोई ने उल्लास से कहा, "उसे मालूम होगा कि मैंने कितने रुपये पाये हैं। वह मिठाई वाला मुझे और कुछ दिन वहां रहने को कहता था। मैं रह भी जाती, लेकिन बूढ़े के आने के कारण मेरा मन वहां नहीं लगा। मिठाई वाला आदमी बड़ा अच्छा है।"

क्लोई अपने कमाये रुपये दिखाने के लिए बड़ा आग्रह करती थी। मिसेज शेल्वी ने उसके संतोष के लिए उसके बिल और उसमें लिखे रुपये वहां ला रखे थे।

क्लोई फिर कहने लगी, "बूढ़ा पोली को नहीं पहचान सकेगा। कैसे पहचानेगा ?"

"ओफ, उस को गये पांच वरस हो गये। तब तो पोली बहुत छोटी थी। ज़रा-ज़रा खड़ा होना सीखती थी। चलने के समय उसे गिरते-पड़ते देखकर बूढ़ा कैसा खुश होता था। तुरन्त दौड़कर उसे गोद में उठा लेता था। वाह !"

इसी समय गाड़ी के पहियों की घड़घड़ाहट सुनाई दी। "मास्टर जार्ज !" कहते हुए क्लोई खिड़की पर दौड़ गई। मिसेज शेल्वी ने शीघ्र वाहर आकर पुत्र को छाती से लगा लिया।

जार्ज ने वहां क्लोई को खड़े देखते ही उसके दोनों काले हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, "दुखिया क्लोई चाची ! मैं तुम से क्या कहूं ! मैं अपना सब-कुछ देकर भी टाम काका को ला सकता तो लेआता, पर.... वह तो ईश्वर के यहां चला गया !

मिसेज शेल्वी हाहाकार कर उठीं, पर क्लोई कुछ न बोली।

सबने घर में प्रवेश किया। वे रुपये, जिनके लिए क्लोई बहुत गर्वित थी, उस समय भी मेज पर पड़े हुए थे।

क्लोई ने उन रुपयों को बटोर कर कांपते हुए हाथों से मेम के सामने रखकर कहा, "मैं अब कभी इन रुपयों को नहीं देखना चाहती हूं, न इनकी बात ही सुनना चाहती हूं। मैं पहले से जानती थी कि अन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में यही होना है। खेत वालों ने उसका खून कर डाला !"

क्लोई यह कहकर घर से बाहर चल दी। मिसेज शेल्बी उठीं और उसे हाथ से पकड़ लाकर अपने पास बिठाते हुए बोली, "मेरी दुखिया क्लोई !"

क्लोई उसके कंधे पर सिर रखकर रोती हुई कहने लगी, "मुझे क्षमा कीजिये....मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया है।"

मिसेज शेल्बी ने कहा, "मैं यह जानती हूं। मेरी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारी इस व्यथा को शान्त कर सकूं, पर ईश्वर समर्थ है, वह सब कर सकता है। वह टूटे हुए हृदय को जोड़ सकता है और हृदय में लगे हुए घावों को भर सकता है।"

कुछ देर तक वहां सभी आंसू बहा रहे थे। अन्त में जार्ज उस शोकातुर विधवा के पास आकर बैठ गया और उसके हाथ अपने हाथों में लेकर गद्‌गद कण्ठ से उसके स्वामी की वीरोचित मृत्यु की घटना सुनाने लगा।

टाम ने उसके लिए जो प्रेम-सन्देश भेजा था, वह भी कह सुनाया।

इसके कोई एक महीने बाद एक दिन प्रातः काल शेल्बी साहब के घर के सारे दास-दासी अपने नये मालिक की आज्ञानुसार कमरे में इकट्ठे हुए। कुछ देर बाद सबने बड़े विस्मय से देखा कि जार्ज कागजों का एक बंडल हाथ में लिये हुए वहां आया। उसने प्रत्येक के हाथ में एक-एक कागज देकर बतलाया कि यह उनकी दासता से मुक्ति का प्रमाण-पत्र है। आज उसने सारे गुलामों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर दिया।

उसने हर एक के सामने उसका प्रमाण-पत्र पढ़कर सुनाया। दास-दासी आनन्दमग्न होकर रोने लगे। कोई-कोई शोर मचाने लगे और उन में से ही कितनों को इस घटना से बड़ी चिन्ता हुई। वे उस कागज को वापस ले लेने का अनुरोध करने लगे। बोले, "हम जितने आजाद हैं, उससे ज्यादा आजादी नहीं चाहते। हम लोग इस घर को, मेम साहब को और आपको छोड़कर कहीं भी नहीं जाना चाहते।"

जार्ज उन लोगों को सारी बातें अच्छी तरह समझाने का यत्न करने लगा, पर वे सब उसकी बात को अनसुनी करके कहने लगे, "हमलोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां से नहीं जांयगे।" अन्त में जब सब चुप हो गये तब जार्ज ने कहा, "गुलामी से छूटकर तुम लोगों को हमारा घर छोड़कर जाने की जरूरत नहीं है। यहां पहले जितने नौकरों की आवश्यकता थी, अब भी उतनी ही है। घर में जो काम पहले था, वही अब भी है। पर अब तुम लोग पूरी तरह आजाद हो। मैं अब तुम लोगों से तय करके तुम्हें महीने-महीने नौकरी दूंगा। तुम लोगों को आजाद कर देने से तुम्हारा लाभ यह हुआ कि मान लो, अगर मैं किसी का कर्जदार हो जाऊं या मर जाऊं, तो तुम्हें कोई पकड़ ले जाकर बेच नहीं सकेगा। मैं अपना काम अपने-आप चलाऊंगा और तुम लोगों को यह बतलाने का यत्न करूंगा कि इस मिली हुई आजादी का कैसे सदुपयोग करना चाहिए। आशा है कि तुम लोग चरित्रवान बनने का यत्न करोगे और पढ़ाई-लिखाई में मन लगाओगे। मुझे विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से मैं तुम लोगों के लिए कुछ कर सकूंगा। मेरे भाइयो, आज के दिन तुमने जो अनमोल स्वाधीनता-धन पाया है, उसके लिए ईश्वर का गुणगान करो, उसे धन्यवाद दो।"

इसके बाद जार्ज ने निम्नलिखित पद्य में अपनी भावना व्यक्त की :

रहे अब तुम न किसी के दास !
परवश जीवन मृत्यु सदृश है, इसमें कौन सुपास ?
किसने कब सुख पाया जग में करके पर की आस ॥
वह भी जीना क्या जीना है, यदि मन रहा उदास।
इंगित पर औरों के नाचा, सह-सह कर उपहास ॥
सुख-स्वतंत्रता का अनुभव कर, होगा उर उल्लास।
बीतेगा जीवन विनोद में, होंगे विविध विलास ॥
भय न रहा अब तुम्हें किसी का, दूर हुआ दुःख-त्रास।
हो स्वच्छन्द सुखी हो विचरो जग में बारौं मास ॥

एक बहुत ही बूढ़ा हब्शी खड़ा होकर अपने कांपते हुए हाथों को उठाकर कहने लगा, "ईश्वर का धन्यवाद है ! हम सब आप की दया-दृष्टि से गुलामी की बेड़ी से मुक्त हुए हैं।" इस बूढ़े के साथ दूसरे दास-दासी भी कृतज्ञता-सहित बार-बार ईश्वर की प्रार्थना करने लगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रार्थना समाप्त होने पर जार्ज ने उन्हें टाम की मृत्यु के समय की सारी घटनाओं का हाल सुनाकर कहा, "देखो, मुझे एक बात और कहनी है। तुम सब कृतज्ञता के साथ हमारे टाम काका की याद करो। यह मत भूलना कि इस सौभाग्य का कारण टाम काका ही थे। उन्होंने अपनी जान देकर आज तुम लोगों को आजादी दिलवाई। उनकी मृत्यु देखकर मेरे हृदय में बड़ी व्यथा हुई थी। मैंने वहीं उनकी समाधि पर बैठकर परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा की थी कि मैं भी भविष्य में अब कभी दास-प्रथा को आश्रय नहीं दूंगा। स्वयं कभी दास नहीं रखूंगा। मैं ऐसा नहीं करूंगा कि किसी को अपनी संतान से अलग होना पड़े। आज मेरी वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। तुम सब स्वाधीन हुए। देखो, जब-जब स्वाधीनता के सुख से तुम्हारे हृदय में आनन्द हो, तब-तब मेरे परम बंधु टाम काका का स्मरण जरूर करना, उसके परिवार पर कृतज्ञता और प्रेम प्रकट करना और जबतक जीते रहो, तबतक टाम काका की मिसाल सामने रखकर उसपर चलते रहना। टाम काका का साधु जीवन ही उसका एकमात्र स्मृति-चिह्न है। तुम सब टाम काका की भांति चरित्रवान और धर्मपरायण होने की चेष्टा करते हुए अपने-अपने हृदय में उसका स्मृति-मन्दिर बना लो!"

४७ : : उपसंहार

जार्ज ने मैडम डिथो से इलाइजा के संबंध में जो बातें की थीं, उन्हें सुनकर कासी को निश्चय हो गया कि हो न हो, यह इलाइजा ही मेरी बेटी है। उसके निश्चय का विशेष कारण था। जार्ज ने अपने पिता द्वारा इलाइजा के खरीदे जाने की जो तारीख बतलाई थी, ठीक उसी तारीख को उसकी कन्या बिकी थी। इस प्रकार दोनों तारीखों के एक मिल जाने से यह अनुमान पक्का हो गया कि मृत शेल्बी साहब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नें जिस कन्या को खरीदा था, वह कासी की ही लड़की थी ।

अब कासी और मैडम डिथो में बड़ी घनिष्ठता हो गई । वे दोनों एक ही साथ कैनेडा की ओर चलीं । जब मनुष्य के दिन फिरते हैं तब सारी घटनाएं अनुकूल-ही-अनुकूल होती जाती हैं। एमहर्स्टवर्ग में पहुंचने पर इनकी एक पादरी से भेंट हुई। कैनेडा पहुंचने पर जार्ज और इलाइजा ने उन्हीं के यहां एक रात बिताई थी, इससे पादरी साहब उन्हें अच्छी तरह जानते थे। उन्हें इन नवागत महिलाओं का सारा विवरण सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ और साथ ही बड़ी दया भी आई। वह तुरन्त जार्ज की खोज के लिए मांट्रियल नगर जाने को इनके साथ हो लिये ।

गुलामी की बेड़ी से मुक्त होकर जार्ज पांच वर्षों से सानन्द स्त्री-पुत्र सहित माण्ट्रियल नगर में जीवन बिता रहा है । वह एक मशीन बनाने वाले की दुकान पर काम करता है । उसे जो कुछ मिलता है, उतने से उसके दिन बड़े सुख से कट जाते हैं। यहां आने पर इलाइजा के एक कन्या और हुई। वह पांच बरस की हो गई है और उसका पुत्र हेरी ग्यारहवें वर्ष में पदार्पण कर चुका है। इस समय वह इसी नगर के एक विद्यालय में पढ़ता है ।

इनका निवास-स्थान बड़ा साफ-सुथरा है । सामने एक छोटी-सी सुन्दर फुलवारी है, जिसे देखकर घर के मालिक की सुरुचि का परिचय मिलता है । घर में तीन-चार कमरे हैं। उन्हीं में से एक कमरे में बैठा हुआ जार्ज पढ़ रहा है । बचपन से ही जार्ज को लिखने-पढ़ने की बड़ी लगन थी। बहुत-सी विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया था। जब काम से थोड़ा अवकाश पाता, तत्काल पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ जाता ।

सन्ध्या निकट है। जार्ज अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा है। इलाइजा बगलवाली कोठरी में बैठी चाय तैयार कर रही है। कुछ देर बाद वह बोली, "सारे दिन तुमने मेहनत की है, अब थोड़ा आराम कर लो । इधर आओ, कुछ बातचीत करेंगे। इतनी मेहनत करोगे तो तन्दु-रुस्ती खराब हो जायगी ।" इसपर इलाइजा की कन्या ने पिता की गोद में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाकर पुस्तक छीन ली। यह देखकर इलाइजा बोली, "वाह, ठीक किया! छोड़ो किताब को, इधर आओ।" इसी समय हेरी भी स्कूल से आ गया। जार्ज ने उसे देखकर उसके सिर पर हाथ रखते हुए पूछा, "बेटा, तुमने यह हिसाब अपने-आप लगाया है ?"

हेरी ने कहा, "जी हां, मैंने स्वयं लगाया है। किसी की भी मदद नहीं ली।"

जार्ज बोला, "यही ठीक है। बचपन ही से अपने सहारे खड़ा होना चाहिए। खोटी किस्मत के कारण तुम्हारे बाप को लिखना-पढ़ना सीखने की सुविधा नहीं थी, पर तुम्हारे लिए मौका है, इसलिए खूब जी लगा कर पढ़ा-लिखा करो।"

इसी समय जार्ज के दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज़ आई। इलाइजा ने जाकर दरवाजा खोला तो देखा, वही एमहर्स्टबर्ग वाले पादरीसाहब तीन स्त्रियों को साथ लेकर आये हैं। पादरीसाहब इनके एक बड़े उपकारी मित्र थे। उन्होंने निराश्रित अवस्था में इन्हें आश्रय दिया था। इससे इलाइजा उन्हें देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और जार्ज को बुलाया।

पादरीसाहब और उनके साथ आई स्त्रियों ने घर में प्रवेश किया। इलाइजा ने सबको बड़े आदर-सत्कार से बिठाया।

एमहर्स्टबर्ग से चलते समय पादरीसाहब ने मैडम डिथो और कासी से कह दिया था कि तुम लोग वहां पहुंचते ही अपना भेद मत खोल देना। उन्होंने मन-ही-मन एक लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधकर व्याख्यान के ढंग पर जार्ज और इलाइजा को इनका परिचय देने का निश्चय कर रखा था। मालूम होता है, वह रास्ते-भर इसी बात को सोचते आ रहे थे कि इस विषय में किस ढंग से शुरुआत करेंगे। इसीसे जब सब लोग बैठ गये, तब पादरीसाहब जेब से रूमाल निकाल कर मुंह पोंछते हुए व्याख्यान देने की तैयारी करने लगे। पर मैडम डिथो ने भाषण आरंभ होनेके पूर्व ही सब खेल बिगाड़ दिया। जार्ज को देखते ही वह उसके गले से लिपट गई और आंसू बहाती हुई बोली, "जार्ज, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं तुम्हारी बहन एमिली हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काासी अबतक चुप बैठी थी। उसकी भाव-भंगिमा से जान पड़ता था कि यदि मैडम डिथो सब खेल न बिगाड़ती, तो वह पूर्व व्यवस्था के अनुसार मौन धारण किये रहने में बाजी मार जाती। पर इसी समय इलाइजा की कन्या वहां आ पहुंची। वह रूप-रंग में बिलकुल इलाइजा-जैसी थी। वस, इतनी ही उम्र में इलाइजा कासी की गोद से अलग की गई थी। कासी उसे देखते ही पागल की तरह दौड़ी और छाती में दबोचते हुए बोली, "बेटी, मैं तेरी मां हूं। तू मेरी खोई हुई दौलत है!" -कासी ने इसीको अपनी सन्तान समझा!

इनके यों परिचय देने से इलाइजा और जार्ज, दोनों को बड़ा विस्मय हुआ। वे चौंक पड़े। उन्हें सब स्वप्न-सा जान पड़ने लगा। अन्त में हर्ष-मिश्रित क्रन्दन रुकने पर पादरीसाहब फिर खड़े हुए और सारा भेद खोलकर सुनाया। उनकी बातें सुनते समय सबकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। वास्तव में पादरीसाहब की उस दिन की कहानी से उनके श्रोताओं का मन ऐसा पिघला था, जैसा शायद पहले कभी न पिघला होगा।

इसके बाद सब लोग घुटने टेक कर बैठे और वह सहृदय पादरी ईश्वर को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करने लगे। उपासना की समाप्ति पर सबने उठकर परस्पर एक-दूसरे का आलिंगन किया। वे भी मन-ही-मन सोच रहे थे कि ईश्वर की महिमा कितनी अनन्त है। जार्ज और इलाइजा को स्वप्न में भी ऐसे अद्भुत मिलन की आशा न थी, पर ईश्वर ने आज विना मांगे ही उन्हें यह सुख और शान्ति देने की कृपा की।

कैनेडा के एक पादरी के स्मृति-पटल पर भगोड़े दास-दासियों के ऐसे अद्भुत मिलन की सहस्रों कहानियां अंकित थीं। उसकी पुस्तक पढ़-कर पता चलता है कि दास-प्रथा पर लिखे हुए उपन्यासों की काल्पनिक घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के प्रकृत जीवन की घटनाएं अधिक आश्चर्य-जनक होती हैं। छह बरस की अवस्था में सन्तान माता की गोद से बिछुड़ गई है। फिर तीन वर्ष की अवस्था में उसीका अपनी माता के साथ कैनेडा की धरती पर मिलन हुआ है। कोई किसी को पहचान नहीं सकता है। कितने ही भगोड़े दासों के जीवन में अद्भुत वीरता और त्याग के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टान्त दीख पड़ते हैं। अपनी माताओं और बहनों को दासता के अत्याचार से मुक्त करने के लिए वे अपनी जान पर खेल गये थे। एक दास युवक था। पहले वह यहां अकेला भागकर आया, किंतु पीछे से वह अपनी बहन को छुड़ाने के लिए जाकर एक-एक करके तीन बार पकड़ा गया। उसने बड़ी-बड़ी मुसीबतें और संकट सहे। एक-एक बार की कोड़ों की मार से छः-छः महीने खाट पकड़े रहा, पर तब भी किसी तरह उसने अपना निश्चय न छोड़ा। अन्त में चौथी बार की चेष्टा में वह अपनी बहन को छुड़ा ही लाया।

क्या यह युवक सच्चा वीर नहीं है? पर अमरीका के पशु-प्रकृति के अंगरेज उसे चोर समझते थे। न्याय की नजर से देखा जाय तो ये अर्थलोभी गोरे ही असली चोर हैं। अत्याचार-पीड़ित उस युवक का कार्य वास्तव में वीरता का कार्य कहलाने-योग्य था।

कासी, मैडम डिथो और एमेलिन, तीनों जार्ज और इलाइजा के साथ रहने लगीं। कासी पहले कुछ सनकी-सी जान पड़ती थी। वह जब-तब आत्म-विस्मृति के कारण इलाइजा की कन्या को छाती से लगाने के लिए इतने जोरों से खींचती कि देखकर सबको आश्चर्य होता था। पर धीरे-धीरे उसकी दशा सुधरने लगी। इलाइजा अपनी माता की यह दशा देखकर उसे बाइबिल सुनाया करती थी, विशेषतः ईश्वर की दया की कथा सुनाती थी। कुछ दिनों बाद कासी का मन धर्म की ओर मुड़ा। उसके हृदय में भक्ति और प्रेम का स्रोत प्रवाहित होने लगा और बहुत थोड़े समय में उसका जीवन अत्यन्त पवित्र हो गया।

थोड़े समय बाद मैडम डिथो ने जार्ज से कहा, "भाई, अपने पति के मरने से मैं ही उसके अतुल धन की मालकिन हुई हूं। तुम अब इस धन को अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते हो। मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार इस धन का सदुपयोग करना चाहती हूं।"

यह सुनकर जार्ज बोला, "एमिली बहन, मेरी खूब पढ़-लिखकर विद्वान होने की बड़ी लालसा है। तुम मेरी शिक्षा का कोई प्रबन्ध कर दो।"

इतनी बड़ी उम्र में जार्ज की शिक्षा का क्या प्रबन्ध होना चाहिए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब लोग इस विषय पर विचार करने लगे। अन्त में सबकी यह राय हुई कि सब लोग फ्रांस चलकर रहें और जार्ज वहां के किसी विश्वविद्यालय में भर्ती होकर शिक्षा प्राप्त करे।

यह बात पक्की हो जाने पर ये सब एमेलिन को साथ लेकर जहाज पर सवार हो फ्रांस को चल पड़े। जहाज़ का कप्तान बड़ा अच्छा आदमी था। उसने एमेलिन का सदाचार, रूप-लावण्य, विनीत भाव और उसके सद्‌गुणों को देखकर उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की, और फ्रांस पहुंचकर उससे विवाह कर लिया। जार्ज ने चार वर्ष तक फ्रांस में रहकर अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, पर किसी राजनैतिक घटना के कारण उन लोगों को फ्रांस छोड़कर फिर कैनेडा लौट आना पड़ा।

अब जार्ज एक सुशिक्षित युवक है। उसके हाथ का लिखा हुआ एक पत्र हम नीचे उद्‌धृत करते हैं। यह पत्र जार्ज ने कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने के कुछ ही पहले अपने किसी मित्र को लिखा था। शिक्षा के प्रभाव ने उसका हृदय कितना उच्च हो गया था, इस पत्र को पढ़कर उसका अनुमान किया जा सकता है :

"प्रिय मित्र, मुझे तुम्हारे पत्र में यह पढ़कर बड़ा खेद हुआ कि तुम मुझे गोरों के दल में मिलने का अनुरोध कर रहे हो। तुम कहते हो कि मेरा रंग साफ है और मेरी स्त्री, पुत्र, कुटुम्बी कोई भी काले नहीं हैं, इससे मैं बड़ी आसानी से उनके समाज में मिल जा सकता हूं, पर मैं तुम्हें सच कहता हूं कि इनमें मिलने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं है। धनवानों और रईसों पर मेरी तनिक भी श्रद्धा नहीं है। मनुष्य-समाज का इनसे कभी उपकार नहीं हो सकता कि अधिकांश मनुष्य तो पशुओं की भांति परिश्रम से पिस-पिस कर मरें और कुछ लोग बाबू और रईस बने फिरें तथा चैन की बंसी बजावें। ऐसे आदमियों से मनुष्य-समाज का बड़ा अपकार हो रहा है। जिन मनुष्यों को पशुओं की भांति परिश्रम करना पड़ता है, वे किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, जिन्दगी भर मूर्ख बने रहते हैं। इससे उन्हें धर्म-अधर्म का कोई विचार नहीं रहता, वे सदा बुराइयों में फंसे रहते हैं। इन बुराइयों के मूल कारण वे ही लोग हैं, जो उनसे इस प्रकार पशुओं की भांति काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेते हैं। उन लोगों के पाप और दुर्नीति के अवश्यम्भावी कुफल से समग्र मानव-समाज का अकल्याण होता है।

"समाज में इतने पाप, दुःख, अत्याचार और दरिद्रता के फलने-फूलने का क्या कारण है? संसार में सुख-शान्ति क्यों नहीं है? इस विषय पर मैं जितना सोचता हूं, उतनी ही इन रईसों और धनवानों पर से मेरी श्रद्धा घटती जाती है। बड़े आदमी ही इसके एकमात्र कारण जान पड़ते हैं।

"अत्याचार से सताये हुए दीन-दुखियों पर, मानव-समाज के अन्न-दाता पार्थिव-पद-प्रभुत्व-हीन गरीब किसानों पर, निर्बल और निस्स-हाय अनाथों पर ही अब मेरी श्रद्धा है।

"तुम मुझे रईस-मण्डली में मिलाकर शान के साथ जीवन बिताने को कहते हो, पर जरा विचारो तो, यह रईस-मण्डली है क्या? असहायों, निराश्रयों और कंगालों के कठोर परिश्रम की कमाई को घर-बैठे मुफ्त में भोग-विलास में उड़ाना ही रईसी है या और कुछ? इसी का नाम शायद बड़प्पन है। गरीब दिन-रात खून-पसीना एक करके जो कुछ कमाये, उसे मैं छल-कपट से हड़प लूं और मेरे पास जो कुछ है, उसमें से किसी को कानी कौड़ी तक न दूं! मैं विद्वान हूं, पर उन दुर्बलों को उनके कठोर परिश्रम की कमाई के बदले मैं अपनी विद्या का एक कण भी न दूं! ऐसे ही आचरणों को भिन्न-भिन्न जाति के लोग रईसाना व्यवहार कहते हैं। पर तुम्हीं कहो, क्या ऐसे रईसी जीवन से मुझे सुख मिल सकता है? ऐसा बड़प्पन लेकर क्या कोई कभी संसार से पाप, ताप, अत्याचार और दरिद्रता का मूलोच्छेद कर सकता है? कभी नहीं! बल्कि जो कोई इस-रईस मण्डली में शामिल होगा, उसी को समाज में प्रचलित पापों, अत्याचारों और निष्ठुरताओं का पक्ष लेना पड़ेगा। मैं मानता हूं कि इस संसार में सब लोग कभी बराबर नहीं हो सकते, सबकी दशा समान नहीं हो सकती, और मैं यह भी मानता हूं कि सामाजिक वञ्च-नाओं के कारण लोगों की गिरी दशा में कभी सुधार नहीं होगा, वैषम्य बना रहेगा। इससे हमारे लिए यह कदापि उचित नहीं है कि किसी दूसरे का हाथ काटकर उसमें और अपने में भेद उत्पन्न कर लें। कहो, मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या दशा थी ? मैं केवल दासी के पेट से पैदा होने के कारण ही, देश में प्रचलित कानून के द्वारा हर व्यक्ति को प्राप्त स्वाभाविक अधिकारों से वंचित रखा गया। भला ऐसे व्यवहार द्वारा मनुष्य-समाज में परस्पर द्वेष उत्पन्न होने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? अपने पितृ-कुल की ऊँची जाति से मेरी तनिक भी सहानुभूति नहीं है। उच्च जाति वालों ने मुझे कभी किसी घोड़े या कुत्ते से अधिक नहीं समझा। केवल मेरी माता ही थी, जिसकी निगाह में मैं मनुष्य की संतान था। बचपन में जबसे मेरा उस स्नेहमयी जननी से वियोग हुआ; तब से आजतक मेरी उससे भेंट नहीं हुई। वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। उसने कैसे-कैसे कष्ट औरदुःख भोगे, मैंने लड़कपन में कैसे-कैसे अत्याचार सहे और कष्ट उठाये, मेरी स्त्री ने बच्चे को बचाने के लिए किस तरह नदी पार की और किस वीरता से नाना प्रकार के दुःखों और यन्त्रणाओं का सामना किया, इस सबको जब मैं याद करता हूं, तो मेरा मन बेचैन हो जाता है। परजिन लोगों ने हमें इतना सताया, इतने दुःख दिये, उनके विरुद्ध मैं अपने हृदय में किसी प्रकार का द्वेष नहीं रखता, बल्कि ईश्वर से उनके भी कल्याण की प्रार्थना करता हूं।

"मेरी माता अफ्रीकावासिनी थी। इससे अफ्रीका मेरी मातृभूमि है। उन पराधीन, अत्याचार-पीड़ित, अफ्रीकावासियों की उन्नति के निमित्त ही मैं अपने जीवन को लगाऊंगा। देश-हित का व्रत धारण करके प्राण-पण से बलवानों के अत्याचारों से निर्बलों की रक्षा करने का यत्न करूंगा।

"तुम मुझे धर्मप्रचारक का व्रत लेने की राय देते हो, और मैं भी समझता हूं कि धार्मिक हुए बिना कभी मनुष्य की उन्नति नहीं हो सकती, लेकिन क्या इन अपढ़ और गंवारों को सहज ही धर्ममार्ग पर लाया जा सकता है ? अत्याचार-पीड़ित जाति कभी सत्यधर्म का मर्म नहीं समझ सकती। उसकी अन्तरात्मा जड़ होती है।

अत्याचार से पीड़ित पराधीन जाति को उन्नत करने के लिए सबसे पहले देश में प्रचलित कानून का सुधार करना होगा, पराधीनता की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेड़ी से इन्हें मुक्त करना होगा। तब जाकर इनका कुछ भला हो सकेगा। मैं तन-मन से इस बात की चेष्टा करूंगा कि अफ्रीका-वासियों में जातीय जीवन का गर्व आ सके और संसार की सभ्य जातियों में इनकी एक स्वतंत्र जाति के रूप में गणना हो सके। इन्हीं दिनों साइबेरिया क्षेत्र में साधारण तंत्र (जन-शासन) की स्थापना हुई है। मैंने वहीं जाने का निश्चय किया है।

"तुम शायद समझते हो कि इन घोर अत्याचारों से सताये जानेवाले अमरीका के गुलामों को मैं भूल गया हूं। पर कभी ऐसा मत समझना। यदि मैं इन्हें एक घड़ी के लिए, एक पल के लिए भी भूलूं तो ईश्वर मुझे भूल जाय। पर यहां रहकर मैं इनका कुछ भला नहीं कर सकूंगा। अकेले मेरे किये इनकी पराधीनता की बेड़ी नहीं टूटेगी। हां, यदि मैं किसी ऐसी जाति में जाकर मिल जाऊं, जिसकी बात पर दूसरी जातियों के प्रतिनिधि ध्यान दें, तो हम लोग अपनी बात सबको सुना सकते हैं। किसी जाति की भलाई के लिए किसी व्यक्ति-विशेष से वाद-विवाद, अभियोग या अनुरोध करने का अधिकार नहीं है। हां, वह पूरी जाति अवश्य वैसा करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

"यदि किसी समय सारा यूरोप स्वाधीन जातियों का एक महामण्डल बन गया, यदि अधीनता, अन्याय और सामाजिक वैषम्य के उत्पीड़न से यूरोप सर्वथा रहित हो गया, और यदि सारे यूरोप ने इंग्लैंड और फ्रांस की भांति हम लोगों को एक स्वतंत्र जाति मान लिया, तो उस समय हम विभिन्न जातियों की महा-प्रतिनिधि सभा में अपना आवेदन उपस्थित करेंगे और बलपूर्वक दासता में लगाये हुए—अत्याचार से पीड़ित, दुर्दशाग्रस्त स्वजातीय भाइयों की ओर से सही-सही विचार करने की प्रार्थना करेंगे। उस समय स्वाधीन और सुसभ्य अमरीका देश भी अपने मस्तक से इस दासता-प्रथा रूपी सर्वजनघृणित घोर कलंक को धो कर बहा देगा।

"तुम कह सकते हो कि आयरिश, जर्मन और स्वीडिश जातियों की भांति हम लोगों को भी अमरीका के साधारण तंत्र में सम्मिलित होने का अधिकार रहे। मैं भी इसे मानता हूं। हम लोगों को समान भाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सबके साथ मिलने देना चाहिए। सबसे पहली जरूरत यह है कि जाति और वर्ण के भेद को परे रखकर हम प्रत्येक व्यक्ति को योग्यतानुसार समाज में ऊंचे स्थान पर पहुंचने दें। इतना ही नहीं कि इस देश में जन-साधारण को जो अधिकार मिले हुए हैं, उन्हीं पर हमारा दावा है, बल्कि हमारी जाति की जो क्षति इन लोगों के अत्याचार से हो रही है, उस क्षति की पूर्ति के लिए अमरीका पर हम लोगों का एक विशेष दावा है। ऐसा होने पर भी मैं वह दावा नहीं करना चाहता। मैं अपना एक देश और एक जाति चाहता हूं। अफ्रीकी जाति की प्रकृति में कुछ विशेषताएं हैं। अंग्रेजों से अफ्रीकी जाति की प्रकृति बिलकुल भिन्न होने पर भी ये विशेष गुण, सभ्यता और ज्ञान-विस्तार के साथ-साथ अफ्रीकनों को नीति और धर्म की ओर अग्रसर करने में उच्च और महान प्रमाणित होंगे।

"मैं एक लंबे समय से समाज के अभ्युदय की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि हम इस नवीन युग की पूर्व सीमा पर खड़े हुए हैं। मुझे विश्वास है कि आजकल जो भिन्न-भिन्न जातियां भयंकर वेदनाओं से कातर हो रही हैं, उन्हीं की वेदनाओं से सार्वभौम प्रेम और शान्ति का जन्म होगा।

"मेरा दृढ़ विश्वास है कि अफ्रीका धर्म-बल से ही उन्नति के शिखर पर पहुंच सकेगा। अफ्रीकी चाहे क्षमतावान तथा शक्ति-संपन्न न हों, पर वे सहृदय, उदारचेता और क्षमाशील अवश्य हैं। जिन्हें अत्याचार की धधकती हुई आग में जलना पड़ता है, उनके हृदय यदि स्वर्गीय प्रेम और क्षमा के गुणों से पूर्ण न हों तो उनके हृदय की अग्नि को शान्त करने के लिए और उपाय ही क्या है? अन्त में यही प्रेम और क्षमा उन्हें विजयी बनायेंगे। अफ्रीका महाद्वीप में प्रेम और क्षमा के मानवीय धर्म का प्रचार करना ही हम लोगों का जीवन-व्रत होगा।

"मैं स्वयं इस विषय में कमजोरियों का शिकार हूं। मेरी नस-नस में आधा खून गर्म—अंगरेज खून है, पर मेरे सामने सदा एक मधुर-भाषिणी धर्म-उपदेशिका विद्यमान रहती है, यह मेरी सुन्दर स्त्री है। भटकने पर यह मुझे कर्त्तव्य के मार्ग का ज्ञान कराती है, हम लोगों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जातीय उद्देश्य एवं जीवन के लक्ष्य को हमेशा निगाह के सामने जीता-जागता रखती है। देश-हित की इच्छा से, धर्मशिक्षा की कामना से, मैं अपने प्रियतम स्वदेश अफ्रीका को जा रहा हूं।

"तुम कहो कि मैं कल्पना के घोड़ेपर सवार हूं। कदाचित तुम कह सकते हो कि मैं जिस काम में हाथ डाल रहा हूं, उसपर मैंने पूरी तरह विचार नहीं किया है, पर मैंने खूब सोच-विचार कर रक्खा है, लाभ-हानि का हिसाब लगाकर देख चुका हूं। मैं काव्यों में वर्णित स्वर्गधाम की कल्पना करके लाइवेरिया नहीं जा रहा हूं। मैं कर्मक्षेत्र में डटकर परिश्रम करने का संकल्प करके वहां जा रहा हूं। आशा है, स्वदेश के लिए परिश्रम करने से मैं कभी मुंह नहीं मोड़ूंगा, हजारों विघ्न-बाधाओं के आने पर भी कर्म-क्षेत्र में डटा रहूंगा और जबतक मेरे शरीर में दम है, देश के लिए काम करता जाऊंगा।

'मेरे संकल्प के संबंध में तुम चाहे जो कुछ सोचो, पर मेरे हृदय पर अविश्वास मत करना। याद रखना कि मैं चाहे कुछ भी काम क्यों न करूं, अपनी जाति की मंगल-कामना को ही हृदय में धारण करके उस काम में लगूंगा।

तुम्हारा
जार्ज हेरिस"

इसके कुछ सप्ताह के बाद जार्ज अपने पुत्र तथा घर के दूसरे लोगों के साथ अफ्रीका चला गया।

मिस अफिलिया और टप्सी को छोड़कर उपन्यास में आये हुए नामों में से अब हमें और किसीके बारे में कुछ नहीं कहना है।

मिस अफिलिया टप्सी को अपने साथ वारमौंट ले गई। पहले अफिलिया के पिता के घर के लोग टप्सी को देखकर बहुत विस्मित हुए और चिढ़े भी, पर मिस अफिलिया किसी तरह अपने कर्त्तव्य से हटने-वाली नहीं थी। उसके अपूर्व स्नेह और प्रयत्न से दास-बालिका थोड़े ही दिनों में सब की स्नेह-पात्र बन गई। बड़ी होने पर टप्सी अपनी खुशी से ईसाई हो गई। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि, कर्मठता और धर्म के प्रति उत्साह देखकर कुछ मित्रों ने उसे अफ्रीका जाकर धर्म-प्रचार करने की सलाह दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठक यह सुनकर सुखी होंगे कि मैडम डिथो की खोज से कासी के पुत्र का भी पता लग गया।

यह वीर युवक माता के पलायन के बहुत पूर्व कैनेडा भाग आया था। यहां आकर दास-प्रथा के विरोधी, अनाथों के बंधु अनेक सहृदय व्यक्तियों की सहायता से उसने अच्छी शिक्षा पाई थी। जब उसे मालूम हुआ कि उसकी माता और बहन अफ्रीका जा रही हैं, तब वह भी अफ्रीका की ओर चल दिया।

●

वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी। 2029

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी
आगत क्रमांक........ ११५३ ....
दिनांक..............................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri